ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३६४ म अंक १५ जनवरी २०२३ (वर्ष १६ मास १८२ अंक ३६४)

(विदेह www.videha.co.in)



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।


Videha
e-Learning
Gajendra Thakur

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language,

literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Videha e-Journal: Issue No. 364 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्षर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअण खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

मात्र आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ उपस्थापन (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच सँ नै बान्हल जाय तँ त्रिभुवनरूपी उत्तम खेतमे कीर्तिरूपी लत्ती कोना पसरत।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

...

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

२.५.आचार्य रामानंद मंडल- वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाज उर्फ पचपनिया संघर्ष

२.६.योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'-शीघ्र दर्शन

२.७.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-१३)

२.८.जगदीश प्रसाद मण्डल- कनियँ-मनियँ पूँजी

२.९.जगदीश प्रसाद मण्डल- माडपन (धारावाहिक उपन्यास नअम पडाव)

२.१०.रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २१ म खण्ड

२.११.नारायण यादवक ५ टा कथा- कथा-१ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१२.नारायण यादवक ५ टा कथा- कथा-२ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१३.नारायण यादवक ५ टा कथा- कथा-३ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१४.नारायण यादवक ५ टा कथा- कथा-४ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१५.नारायण यादवक ५ टा कथा- कथा ५ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.पद्य खण्ड

३.१.राज किशोर मिश्र- गजल

३.२.जगदानन्द झा 'मनु'- पच्चीस टा रुबाइ

३.३.आशीष अनचिन्हार-२ टा गजल

३.४.आचार्य रामानंद मंडल- २ टा पद्य

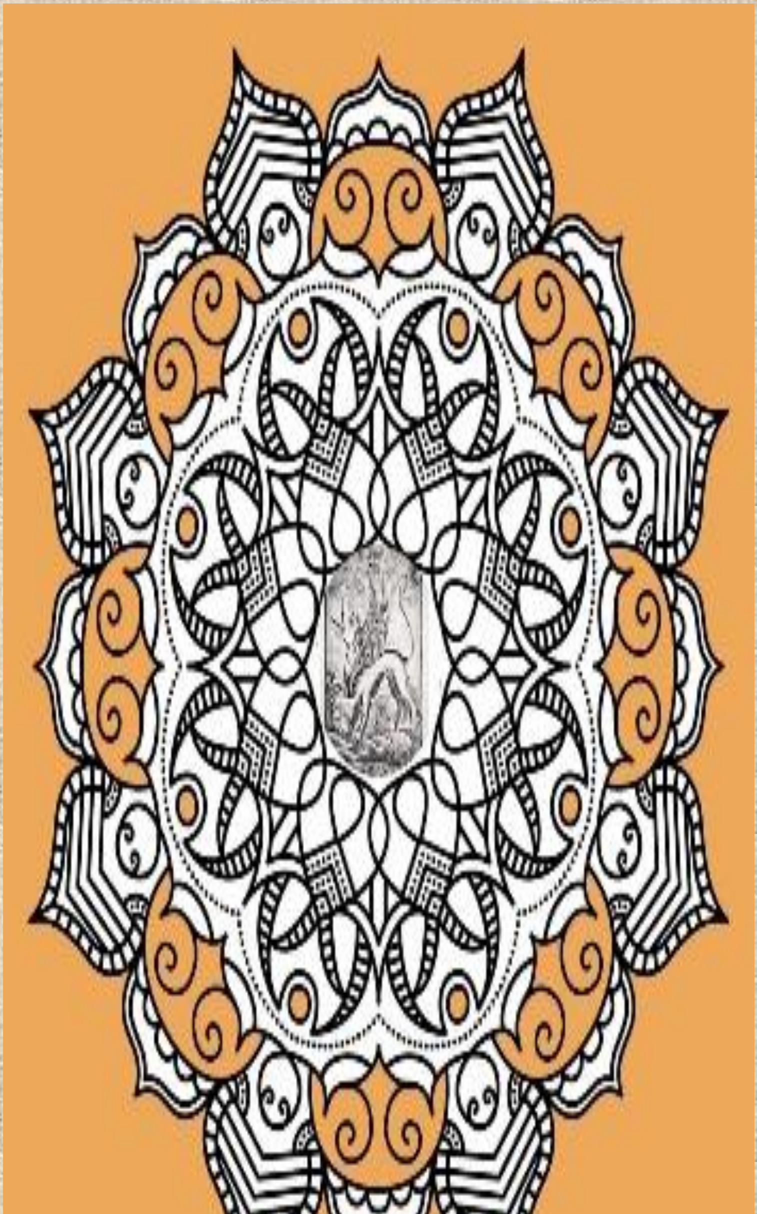
अनुलग्नक १: मैथिलीम छन्म समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- वान लखक यंकज झा यनाशनक नूतन साहित्यिक चानिक खुलासायन या०कीय टियणी)

अनुलग्नक २: मैथिलीम छन्म समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- वान लखक यंकज झा यनाशनक यूनान साहित्यिक चानिक खुलासायन या०कीय टियणी आ किछु प्रमाण)

४. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

अनुलग्नक ३: मैथिलीम छन्म समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- वान लखक यंकज झा यनाशनक यूनान साहित्यिक चानिक खुलासायन किछु प्रमाण)





१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३६३ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१

ऋग्वेदक पुरोहित होता, सामवेदक उद्गाता, यजुर्वेदक अध्वर्यु आ अथर्ववेदक ब्राह्मण; आ एकर सहयोगी पुरोहित सभ, पुत्र-पौत्र सहित एहिक पुरोहित वैदिक कालमे रहथि। आ आब एकटा ब्राह्मण पुरोहित कोना भऽ गेल? उत्तरमे अखनो 'होता' टाइटिल होइ छै आ उनुका ऋग्वेदी, सामवेदी आ यजुर्वेदी ब्राह्मण हिंसक (!)पिप्पलाद संहिताक अथर्ववेदी ब्राह्मणमे विवाह-दान नै करै छथि। दक्षिण भारतमे कतेक आदिवासी समाजक पुरोहित ब्राह्मण बनि गेला। कालीबन्हीक सेवा, भगैत, फूलहासि करैत पुरोहित अखनो छथि, मुदा ब्राह्मण वा ब्राह्मणो, कियो भऽ सकै छथि। जे फील्डवर्क बिनु केने बजता से कहता ब्राह्मण कोना गहबर आ भगता बनत, मुदा ग्राम-नूनपुर (थाना फुलपरासगंज, जिला मधुबनी) मे गहबरक सेवा ब्राह्मण भगैत करै छथि। मिथिलामे पसरल संताल (संथाल) समुदायमे मुर्मु पहिने लयमे सिन्धु नदी घाटी सभ्यताक कालक ग्रन्थक विनती पढ़ैत छथि, से संथाल समुदायक लोक अहाँकेँ कहता। दलित विमर्शमे वाल्मीकि रामायणक उत्तरकाण्डक शम्बूक वधक चर्चा होइत रहैत, एत कनबाक कारण शम्बूकक शिकाइत जे ओ आगाँ नै बढ़ि जाय, आ एहि शिकाइतक निवारणार्थ भगवान राम द्वारा शम्बूक वध। पुरुष-पत्नीआमे विश्वासपरि कथा कहैत-कहैत लेखकीय वक्तव्य दै छथि जे नाजयुगनी चरित्रहीन होइए। ई दुनु ओहिना भेल जेना

अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक किया हाथ पकड़ि लऽ जा सकैत अछि बला वक्तव्य, ई सोशल मीडियामे आ अन्तर्जालपर अहाँकेँ भेटत, जकर कोनो सन्दर्भ मूल अथर्ववेदमे ताकैत रहू नै भेटत, बजनिहार लूफी लगा कऽ नियम्मा, कोनो सन्दर्भ नै देता आ अहाँ अपस्याँत रहू, बन्तन □रू पूरू आचार्य लगनिहारपर नै, अहाँपर। अहाँक ऊर्जाक क्षय भेल मुदा हुनर अन्तर्जाल ठीक कऽ लेलक, याठ निकृत नै भेल। पहिने ओठ पुरुष पत्नीऊपर, संस्कृत आ अनहरूबला विद्यार्थी जकाँ नाजाक दनवानी नहिथि तकर जातिक स्त्रीक विषयमे ओहुना लिखबाक हुनका साधांश हानि? कोनो कलुषित मानसिकताक पनवर्ती लिपिकार अपन भावनाक अनुसार हुनहुन ऊँ कऽ देलकै गँ आॅक टिप्पणीकार आ अनुवादककेँ टिप्पणी दऽ कऽ स्थिति स्पष्ट कऽ देबाक चाही। नाम शम्बूककेँ मानलनि वा शम्बूकक शिकायत कनिहार कलुषित लिपिकार शम्बूककेँ मानलनि? आब ओठ अथर्ववेदपर। अथर्ववेदमे लिखल छै ह नारी, हम सामवेद छी आ अहाँ ऋग्वेद, ह वधू, अहाँक हाथ हम समृद्धि लेल ग्रहण कऽ रहल छी। आ ओहुना ब्राह्मण पनन्यनाक अथर्ववेद आ सांख्य अछि, ब्राह्मण ई गायत्री मंत्र नै पढलथि गीन खाढी आ गँ वनि गेला ननवन, वनवीहन। आ अखुनका घन नायसी सन विश छल 'ब्राह्मणकाम' विश, समानान्तर धाराक ब्राह्मणकेँ घूनवा लेल। कतौ हुनका शारीरिक आ लैंगिक हिंसक, निशांमे नहैबला सन विवरण भेटत मुदा अथर्ववेदमे हुनका याज्ञीक नुयम देखब। अयग्र ऊ सयक नऊक आ शिनरक्त वैश्य सन सहा वर्णित छथि। मुदा अथर्ववेदी ब्राह्मणकेँ सहा हिंसक कहल गेल। कलुषित लिपिकार वदाम ऊयकक प्रवेश कलहि ई भाषा विस्थानी आब पकड़ि रहल छथि। मन्त्रार्थमे महर्षि पतंजलिक

वैज्ञानिक मन्त्र "यज्ञवह् आह तदस्माकं प्रमाणम्" अर्थात् जे शब्द आदि मंत्रक पद कहैत, सेहो हमरा हेतु प्रमाण अछि- जेकर अर्थ बादमे जा कऽ वेद प्रमाण अछि- से कोना भेल से नै जानि। वेदमे सामान्य जन उपयोगी आ निनयऊ साहित्य छल। सभ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्रमे दीक्षि भनि दियौ आ ओही दीक्षिसँ हमरा भनि दिअ। - ई यजुर्वेदमे छै।

सीता अबै छथि, कमला धार पार करऽ चाहै छथि। मुदा मलाह कहै छन्हि जे हमरा इनाम चाही, आ इनामा की गँ सीताक ननदि। सीता कहै छथिन्ह, दलौं, भाग कर, युग-युग धरि। सीताक नैहर मिथिला छियन्हि , मलाह ओतबा हँसी ठट्ठा नै करत। आ से मिथिलाक दुधवंशी सम्प्रदाय गबैत छथि, कानैत आ बूधनक मायसँ हमर सूनल अछि।

गिदरमाराक अलग भाषा होइ छै हौ, लोक सभ ओकरा सभकेँ गिदरमारा आ मगहिया डोम कहै छै मुदा ओ सभ अपनाकेँ बंजारा कहैत, अपन भाषाकेँ बंजारा भाषा कहैत। मुँहपर गिदरमारा कहि कऽ देखियौ, झगड़ कऽ लेत। बंजारा सभ ओ विश्वकेँ नीक आ खराप द्वारा संचालित मानै छथि।

नव्य सभ्य कंगला-भिखमंगाक मोहल्ला बसि गेल छै, ओ मोहल्लामे जाति-पाति नै छै। सिमरा लग बटका दुबला बस्ती छै बंजारा सभक, सूखंगमा। बनैत उजरैत। सतान सभ मधेपुरासँ पूब दक्षिण दूआलकक दक्षिन कनहरामे आ टढियामे रहैत। तीर-धनुषमे माहिर संथाल सभ।

सुभाष चन्द्र यादव मैथिली लोककथा 'एकटा दिनमा खलिउ नउा हऽऽया' कन सम्बन्धम लिखै छथि -"मनुस्मृति म कहल गेल छैक जे व्यवसाय ककरो स्कूल गाउ लव चानि नहि हाऽऽत छैक। ; गहिना ककरो एकटा चीन खा लव कोनो अपनाध नहि हल। ऽऽएह कथाक आत्मनावन थिक। कथा ऽऽी प्रतिमान उपस्थित कनैत अछि जे सरल जीवक माल वनावन हाऽऽत छैक। असहाय आ निर्धना कँ जीवाक अधिकान छैक। एहि संसान म उाकना लल एकटा स्थस (जगह) हवाक चाही।" ऽऽी मनुस्मृति एक ०ाम एहन सहित्य अछि, एकन या० आधुनिक विधि शब्दावलीसँ युक्त अछि, लगैत जन विधिक दृष्टिसँ काना गेय नै छै, मुदा उाप्टे किछु कुन गय सह घासिया दल गेल।

वदक विदेशी राषा अनुवाद सहम मृषिक नाम हटा दल गेल, मुदा मूलम अखनो रह जायत। वैदिक द्रष्टा गँ स्त्री आ शुद्र मृषि सह छथि, तखन शुद्र आ स्त्रीक विरुद्ध नचना क घासियलक? जे शुद्र मृषि कवष ऐलुष वैदिक मृचाक द्रष्टा छथि, जे महिला अपाला वैदिक मृचाक द्रष्टा छथि, स काम-कनाटम किए ०ाऽ नहितथि? मुदा वदम मृषि, दवता आ छन्द यएह तीनटा शब्द सह सूक्त क्रमांकक संग रहत, द्रष्टा हम अहाँ कहै छियहि, मुदा तकना दुनुपयोगक प्रयास हल। वैदिक मृषि स्वयंकँ आ दवताकँ सह कवि कहै छथि। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य ऐ कवि चानाक वाङ्मय मूर्ति अछि। उाऽs आख्यान चाना, आधिदैवतम उत्कीर्ण हल अछि, एनम् उाकना आधिरौतिक राषाम नुप दल गेल अछि। उाना उाऽऽ समएम सह सम्मिलित नुपँ साल हति मृचा या० कनैवलाकँ याजियक

स्वागतमे टर्र-टर्र करैबला बढ़-मण्डूक सन विशेषण अथर्ववेदमे देल गेल छै। मात्र गायनमे असहमतिक स्वनक स्वीकृति छलै। ऋग्वेदमे सेहो मण्डूक गान छै। मन्त्रार्थमे महर्षि पतंजलिक वैज्ञानिक मन्तव्य 'यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्' अर्थात् जे शब्द आकि मंत्रक पद कहैए, सएह हमरा सभ प्रमाण अछि- एकर अर्थ बादमे जा कऽ वेद प्रमाण अछि- से कोना भेल से नै जानि। हमरा लग तँ मंत्रक ऋषि, छथि, देवता छथि, छन्द कवि छथि सूक्तक लेखक, आ सएह हमरा लग प्रमाण अछि। जनक सहस्र गाय कए शर्त पर शास्त्रार्थ राखलन्हि। याज्ञवल्क्य गाय सभकेँ रामि विदा होअए छला आकि गार्गीक प्रश्न शुरू। याज्ञवल्क्यक उत्तरपर ओ प्रतिप्रश्न पूछऽ लगली। याज्ञवल्क्य बजला- अहाँक माथ ने खसि जाय, माथक कटैएक हाँक ने दऽ जाय प्रश्न पूछि-पूछि। मुदा गार्गी तैयो पूछलन्हि- समय काल ककर अधीन। याज्ञवल्क्य बजला- अक्षरक।

जखन साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यताप्राप्त कथित लिटरेरी एसोसियेशन चेतना समितिक पत्रिकाक सम्पादक आइयो लेखमे ब्राह्मणवादी संस्थानक अन्तर्गत जाति-घरान करै छथि। "पचपनिया मैथिली" मे सुभाष चन्द्र यादव ओ सम्पादक महोदयक विषयमे लिखै छथि- "डॉ. रमानन्द झा 'रमण'अपन नाटकक मे टिप्पणी छलाह- 'ब्राह्मण कहैत छथि सोइत छी, साहुकार कहैत अछि बाहर छी। हम की कही जे की छी?' एहि टीप मे साहुकार लग जे विवादन व्यक्त भेल अछि, से आन किछु नहि; जातीय विद्वेष आ घृणाक हार्दिक अभिव्यक्ति थिक। " एकर विषय हम महत्त्व मलंगियाक नाटक सभमे प्रयुक्त अही तरहक शब्दावली पर 30वेँ नहल छी, मुदा

𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒩𑓀𑒑𑒧𑓀𑒔 𑒏𑒰𑒤𑒲 𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒬𑒰𑒮𑒢𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒰𑒤𑒲 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒢𑒻 𑒕𑒻। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒲𑒮𑒧 𑒬𑒞𑒰𑒥𑓂𑒠𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒹𑒧𑒲𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒱𑒏𑓄 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒂𑒪𑒹𑒐𑒧𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒓𑓂𑒑 𑒪𑒱𑒐𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒞𑓂𑒫𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒬𑒴𑒠𑓂𑒩𑒏 𑒁𑒞𑓂𑒨𑒰𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒪𑒰𑒑𑒱𑒏 𑓐𑓑𑓘 𑒬𑓂𑒪𑒼𑒏, 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒮𑒰 '𑒩𑒧𑒝' 𑒂 𑒧𑒪𑓀𑒑𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒯𑒰𑒪 𑒠𑒹𑒐𑒥 𑒏𑒩𑒾𑓀 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒦𑒏 𑒧𑒢𑒮𑒱-𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒖 𑒁𑒏𑒥𑒩𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒞𑒳𑒪𑒮𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒲 𑒠𑒼𑒭 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒨! 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳 𑒬𑒩𑓂𑒧𑒰 𑒣𑓀𑒔𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞-𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒂 𑒬𑒴𑒠𑓂𑒩𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒰𑒿 𑒁𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒏𑓂𑒩𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒰𑒪 𑒩𑒰𑒧 𑒔𑒩𑒱𑒞 𑒧𑒰𑒢𑒮𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑓀𑒔𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒮𑒦 𑒢𑒲𑒏 𑒕𑒻 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒂 𑒬𑒴𑒠𑓂𑒩𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒰𑒿 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳 𑒬𑒩𑓂𑒧𑒰 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱, 𑒮𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒣𑒝𑓂𑒛𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒪𑒢𑒱, 𑒍𑒯𑒲 𑒮𑒦 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰𑒏𑒹𑒿, 𑒯𑒱𑒞𑒼𑒣𑒠𑒹𑒬 𑒢𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒂 𑒯𑒱𑒞𑒼𑒣𑒠𑒹𑒬 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒫𑒯𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒹𑒿 𑒏𑒲 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒮𑒰 '𑒩𑒧𑒝' 𑒂 𑒧𑒯𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒧𑒪𑓀𑒑𑒱𑒨𑒰 𑒧𑒰𑒤𑒲 𑒧𑓀𑒑𑒞𑒰𑒯 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒏𑒩𑒞𑒰? 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠𑒏 𑒅𑒣𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒮𑓂𑒟𑒪𑒣𑒩 𑒄 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲 𑒏𑒩𑒞𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒂 𑒁𑒫𑒯𑒙𑓂𑒚 𑒥𑒪𑒰 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱𑒏 𑒖𑒐𑒢 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒮𑓂𑒞𑒱-𑒣𑒰𑒚𑒧𑒹 𑒣𑒳𑒢𑓁-𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒞𑒐𑒢 𑒏𑒲 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒄 𑒮𑒰𑒡𑓀𑒬 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒩𑒰𑒖𑒣𑒴𑒞𑒢𑒲𑒏 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒧𑒹 𑒑𑒪𑒞 𑒥𑒰𑒞 𑒪𑒱𑒐𑒞𑒰 𑒂 𑒄 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒏𑒰𑒖 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒪𑒱𑒣𑒱𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒱𑒩𑒠𑒰𑒢𑒲 𑒁𑒕𑒱? 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒯𑒱𑒞𑒼𑒣𑒠𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒣𑒝𑓂𑒛𑒱𑒞 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱:

𑒂𑒯𑒰𑒩 𑒢𑒱𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒦𑒨 𑒧𑒻𑒟𑒳𑒢𑓀 𑒔 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒧𑒹𑒞𑒞𑓂 𑒣𑒬𑒳𑒦𑒱𑒩𑓂𑒢𑒩𑒰𑒝𑒰𑒧𑓂 ।

𑒡𑒩𑓂𑒧𑒼 𑒯𑒱 𑒞𑒹𑒭𑒰𑒧𑒡𑒱𑒏𑒼 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭: 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒹𑒝 𑒯𑒲𑒢𑒰𑓁 𑒣𑒬𑒳𑒦𑒱𑓁 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑓁 ॥

𑒂𑒯𑒰𑒩, 𑒢𑒱𑒠𑓂𑒩𑒰, 𑒦𑒨 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒳𑒢 𑒄 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒂 𑒧𑒰𑒪-𑒖𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒹 𑒩𑒓

छैक। मनुक्खक विशेष खाली धर्म अछि जे गाँ ओ सँ विहीन ठाम माल-जाल सन अछि।

२

अन्तर्जाल एवं साइबर युद्ध।

मुख्य खतरा छैक अछि, वाइरस, वोर्म, मालवेयर, स्पाइवेयर, ट्रोजन हॉर्स आ वॉर्मक खतरा।

वाइरस अछि नकलची, अपन कॉपी एकसँ बेसी प्रोग्राम वहाब करैए, ठाना कॉपी अपन अछि प्रोग्राम। सिस्टम, फाइल, हाइल आ पालीमॉर्फिक वाइरस एकर प्रकार छल।

वॉर्म सेहो वाइरस सन प्रोग्राम अछि जे नेटवर्कसँ पसरैए।

ट्रोजन हॉर्स बड कलामी, लागए जे कोनो कॉपीन घातक काज मुदा कऽ देत बीन घातक काज। स्पाइवेयर अछि जासूस जे व्यक्ति वा संगठनक जासूसी करैए। मालवेयर अछि ओ सभकेँ मान वाइरस, वॉर्म, स्पाइवेयर आ ट्रोजन हॉर्सक सम्मिलन जे नेटवर्कक कम्प्यूटरकेँ नुकसान पहुँचाबैए। कोनो एक चीजकेँ किनबाक-बसाहबाक लेल अस्थाए लाककेँ पठाओल बहिसाब कॉपी-पत्र छल वॉर्म।

एही वायरस ओ सभपर लगाम लगबैए। फायरवाल हैकर वा क्रैकर सभकेँ अहाँक कंप्यूटर वा नेटवर्क पर आक्रमण वा अधिकारकेँ चाकबालेल किलाक देबाब अछि।

आ अन्तम रूमन ओथिकल रैकन, ज अछि रैकन वा ब्रैकन सरक वाय, ज अरहाँक रलाऽ लल अरहाँक ओष्टीनायनस आ रायनवालकँ गा३वाक प्रयास करैत, आ जँ स रs (गेलै गँ ओष्टीनायनस आ रायनवालकँ आन मजागेगा करैत नीक प्राग्रामिंगसँ आ गखन रून अटैक करैत। वूमियौ मॉकाव्रिल करैत।

ओकटा अयन छवि वनाउ, जकनासँ नीक लाक प्रम करैत आ ज याथ अछि कर्म0 अछि।

मूदा जना जना अरहाँ आगाँ वढव, समय वीगग रूमना सरमसँ वहूगक अयन मानक छवि दूषिग रूवs लागे छवि आ स राऽऽत उाऽऽ गय सरयन ख्यान दलासँ ज दासन रूमना निषयम की सावैत वा वाजैत। मूदा उा अयन छवि स्नान वा कादिया काल नीका स्नान वा कहू जानकारी गँ दs सकै छथि मूदा की उा रूमन अयन छवि वा याथगा रूमना दs सकै छथि, नै ननन् उा वशीकाल गकन उनटा करै छथि। माना-यिना आ शिउक सहा काखना काल अनायास जेम सम्मिलिग रs जाऽऽ छथि। संगी-साथी, सन-समाज आ सम्बन्धी सहा। उा कम वा वशी सूहन अछि, उाकन गणिग उाऽऽ वह्यासँ नीक-अधला छै, उाऽऽ गज वा वूउवककँ दास्क वनाउ वा नै वनाउ, उाकन दूआन रूम सर जिगलौं वा हानलौं। रूनकन क्रियाकलाय आ वाल ऽऽी सर करैत, मूदा स गखन रूगा न जखन अरहाँ गऽऽयन कान-वाग रवे।

सरूलगा ज दास्कनम सरूलगा राऽऽ, विन् कम्प्रामाऽऽजवला सरूलगा, गऽऽसँ अरहाँक आत्मनिश्वास आगाँ वढगा। असरूलगा लाककँ

हमरासभकें एखन कहब जखन ओ बाह्यतम असफलता होएत। जखन प्रतीतक विश्वसनीयताक बादक साहित्यकें नीचाँसँ ऊपर लऽ गेल आ बादक कें ऊपरसँ नीचाँ। ई बात कऽ कए रचनात्मक साहित्य लिखब आ पढ़बाक मिलल हमरा त्रिपाठीनन्दीजी ऊँचाईसँ सफलतासँ

पुनश्चात लब मूल्य लब सफलता हएत आकि सफलता? आ सुरेश बन्धु यादव सन सुशील सन जिनगी हमरा जिनकर आ एकर मूल्य चुकबाक हएत सफलता आकि असफलता?

ई अपन आत्मविश्वास बनल रहू, अनुशासन अतिश नाखु। पाश्चात सम्पूर्ण वृद्धि करैत रहू, ज एक दिन एहन वीतल जे अहाँक पाश्चात कएल वृद्धि नै हएत ई बुझू ओ दिन बर्बाद हऽ गेल। आ स्थिरप्रज्ञ बनू, आत्मविश्वास राखू। आ ऊँ अहाँमे सभ सफ गुण अछि ई अहाँ समानान्तर धाराक लोक छी, अहाँक स्वागत अछि।

हमर सकाल उठू, घरक काज सेहो करू, जैसँ अहाँ जवाबदेह आ आत्मनिर्भर हऽ सकब। समस्या एलापर सहायता माँगैसँ लाज नै करू आ दोसराक समस्यामे दोसराकें सेहो सहायता करू। शक्तिशाली दुश्मनक सामाँ ठाढ़ हएबाक कठिन अछि, ओ लेल चाही साहस, नीक-अधलाक स्पष्ट दृष्टि आ सत्य, आ अन्यायक खिलाफ कखनो हथियार नै राखू। चिचियेलासँ किया नै सुनए, कऽ कए देखाउ, कल्पनाशक्ति आ उपनाम-उपनामीसँ किछु नै होएत, कऽ कए देखाउ, ज लोकक दै छी स करबा करू।

अन्तर्जालपर सेहो बहुत नास खेल छै, न हक यू बनाउ नहिय

यसानु, अन्तर्जालक अयनाथी सरसँ बचू।

अयनासँ कमजोर आ छोटकँ उनाउ नै, उकरा प्रतारित नै करू, ज किया अहाँ संग ओ करैत एकर खिलाफ शिकायत करू।

जययुन-स्कूट (नकली यत्नन), कम धुँआ वला चूल्हा सन समानान्तर साहित्य सहा अन्वेषण, निष्काम कर्म आ विनु याद/ पुनस्थानक लालचक करैत जा रहल अछि ज ओसँ हम सरस नीक समाज बनावी आगाँ बढ़ावी।

सरम किछु ओलिम्पिक हाइ छै, जना यियही बजबाक ओलिम्पिक। जँ विश्वास नै हुअय तँ उस्ताद स्कूल कs देखियौ। उस्तालल करैक बर्खक प्रशिक्षणक आवश्यकता हाइ छै। गरिमा लाक नृत्य, नाचम सहा छै आ लकडी आ माटि सम्बन्धी ओलिम्पिक सहा छै। उइ कलाक सम्मान करू।

उहो विकासक स्नातक करू जइसँ पर्यावरणक नष्ट नै हाइत अछि, जगक गाछ काटै छी तइसँ दस गुणा गाछ लगाउ।

असगर काज करैम उन लागैत, छोटासँ छोटा काज? मुदा स सरस काल नै स्टार, सरस काल न संग स्टार न समर्थन।

स्कूल कँ विसर्जित जाउ, ओ नीक हुअय गरबा, वा अधला हुअय गरबा।

किछु संगी साथी आ संगठन अहाँकँ दुखी करै छथि, गामस उठबै छथि, हस्तासाहित करै छथि, हुनका विदा करबाक समय आवि

गेल। नीक दिन अखना आवैवल अछि, अधला समय कहियाधनि चलना। अधला समयम सीखल शिआ दुनगामी हाेऽ्रग अछि जेऽ्रसँ हम अपन गलती नै दाहुनावी। काजक वीच विनाम दऽ विन्हन कानव सहा आवश्यक, गाम, सन-कुटुम, दास-महीम उऽ्रOाम ओनाऽ्र-गेनाऽ्र सहा आवश्यक।

विहानिक वाद यनिसाखा देखवा लल गैयान नहु। सरे दिन हओग जादु। आ स हओग जखन अहाँ सरे दिन काना न काना ओक्का गोटक सहायता कनी। सदा अपन विवानकँ लिखि कऽ जमा कनैग नहु। जलखै विनू नागा कन कनु, सात-आO घण्टा सुतु, रोजन ओहुन कनु ज शनीन लल स्वास्थ्यकानी हुअय। मान गैया उवटऽ लागय गँ ध्यान लगाउ, चित्र वनाउ, यढु, संगीसँ गय कनु, घुमु फिनु, संगीतयन नाचु।

जीवन अमूल्य अछि, ओकन सरे उधक प्रति सम्मान नाखु। विनू शिकाऽ्रतक महनति कनु आ स तखन गँ आना कनु जखन ओसँ असफलता प्राप्त हुअय। देखल सयना मान लक्ष्य दिस सरे दिन ओक डग, आ उा उँ मनानंजक लागय गँ वूसु ज अहाँ समानान्तन धानाक लाक छी, अहाँक स्वागत अछि।

कOहँसी, आँखि धनि नै गेल, तामसकँ नूकवा लल, ऽ्री खुशी नै देखलक, ऽ्री हास्यकधिका सूनलाक वादक हास्य हँसी नै छल, ऽ्री दासनाकँ संगी वनावैवला उाकना विश्वास दिआवैवला ज उा हमना लल खाना नै अछि स हँसी नै छल। वृद्ध आ वमानक सहायता कनवाक चाही, यृद्ध आ प्राकृतिक आयदासँ प्रताडित लाक आ देशक

मदति करबाक चाही, ओहो कहियो निरर्थक नै हएत। अहाँक सामाँ स्पष्ट लक्ष्य हेबाक चाही, परिश्रम आ लगनसँ ओ प्राप्त सहज हएत। अस्थायी आ कष्ट पहुँचनिहारक प्रति वजनाइ सीखू, मानवताक प्रति निष्काम भावसँ सेवा करनिहारक प्रति कृतज्ञ रहू। दिव्यांग लोकक प्रति हमरा सहकँ ध्यान राखबाक चाही, हुनका प्रति संवेदनशील रहबाक चाही। दिव्यांक लोक दिव्यांगताक अलाव सहज बहुत रास गुणसँ विभूषित छथि, हमरा ई देखबाक चाही, आ हुनका अपन अधिकार भेटनि तकर भंग देबाक चाही। विश्व स्वास्थ्य संगठनक अनुसार विश्वमे पन्द्रह प्रतिशत लोक दिव्यांग छथि। भारतमे पहिल बेर २००१ मे दिव्यांग लोकक गणना भेल जे मात्र २.१ प्रतिशत अछि, ओहो प्रतिशत विश्वास योग्य नै अछि। सहकर्मी, संगी साथी सेहो बनबाक स्वाव अहाँपर सदिखन रहत, मुदा अहाँ ओकरा दबावमे नै आउ। अपन व्यक्तित्व विकसित करू।

हँसी-ठट्ठा लेल अपन जान गमनाइ नीक नै।

खानमे रसायनिक पदार्थ नानाविधक दूषित करैत अछि। जैविक पदार्थक उपजा बिनु रसायनिक पदार्थक होइत अछि, ओहो बेसी स्वास्थ्यकारी आ बहुतगर होइत अछि।

जिनकामे आत्म-सम्मानक भाव कम छन्हि ओ नीक अनुभव करै लेल दासताक मान्यताक आवश्यकता पड़ैत अछि। हेसबुकपर पाछू कऽ कय लोकक गर्नेबला लेल ओहो गप अछि। कतेक घटना घटित भेल अछि जइमे सेल्फी लै काल व्यक्ति खधाइमे खसि पड़लथि, छातसँ खसि पड़लथि आ मृत्यु भऽ गेलन्हि। तँ मुदा सेल्फी कन प्रयोग अहाँ

नीक उद्देश्य सेहो बनी संग सेहो आदिक उपयोग कऽ सकै छी।

समयक महत्व बुझू, खाली सभा समिति, खास कऽ प्रतिक्रियावादी समिति-संस्था अहाँक बहुत समय खराब कऽ सकैत अछि। कखनो नियत समयसँ ने पहुँचि सकी तँ दुख व्यक्त करबाक ने बिसरू। पाइ हमरा सभकेँ प्रकृतिसँ दूर कऽ देत अछि। करताक मूल इण्डियन अपनाकी कबीला जे हुनका सभ लेल आनन्दित निर्जन उतानाकम नहैत पर्यावरणक लेल कोनक सूक्ष्म सूक्ष्म लोकोक्ति बनल अछि 'तखन जखन आखिरी गाछ कटि जायत, आ सभ धारमे माहुर दऽ देल जायत, तखन जखन छोट-छोट माँछ अहाँ मारि देब, तखन अहाँ बुझि सकब जे अहाँ पाइ ने खा सकै छी।'

सामान्य जीवन जीबू जाहिसँ पर्यावरणकेँ नुकसान ने हुअए, प्रकृतिसँ शान्ति कऽ रहू।

एक दासनासँ मिलि जुलि कऽ रहू, मनुक्ख टा नै, माल-जाल, चिड़ै चुनमुनी, सभसँ, प्रकृतिसँ धानसँ।

आ से जँ अछि तँ बुझू जे अहाँ समानान्तर धानाक लोक छी, अहाँक सौभाग्य अछि।

किया सम्पूर्ण नै हुअए मुदा नीक बनबाक प्रयास तँ कैये सकै छी। हमरा सभकेँ सत्यवादी, ईमानदार आ दयालु बनल रहबाक प्रयास करबाक चाही। ई संसार रहबा योग्य एकटा नीक स्थान बनल रहय तकर प्रयास सभकेँ करबाक चाही।

हमरा सभकेँ खूब पढ़बाक चाही, नव नव चीज सिखैत रहबाक चाही।

3

Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

Pseudo-criticism in Maithili and the case of Kamalananda Jha

The title of Kamalanand Jha's book "Maithili Novel: Time, Society and Questions" (2021) is misleading. It is a collection of some syndicated so-called critical articles on some of his caste novelists. The 263-page book can only be sold in hardbound to libraries where it will rot. Here is a correction, a non-caste writer's work, i.e., Subhash Chandra Yadav's novel 'Gulo', has been dealt with by him in two lines, of course without reading it. I am presenting those two lines here for your entertainment. You must have read *Gulo*, if you haven't already, read it first because then you will have a more entertaining experience. Gulo is available on Videha Archive with the

permission of Subhash Chandra Yadav at this link http://videha.co.in/pothi.htm.

"The weakness of the novel is the author's political bias. The partisanship towards a particular politics does not do justice to the work."

In a novel where politics is not remotely involved, there is no question of 'political bias and partisanship of a particular politics'. Dhumketu and Yatri used political bias or partisanship. Subhash Chandra Yadav's 'Vote' which came out in 2022 and is available with permission of Subhash Chandra Yadav on Videha Archive at this link http://videha.co.in/pothi.htm, is on politics but even there Subhashji's enchanting style obviates the need of any political bias... Read my book 'Nit Naval Subhash Chandra Yadav' which is available at this link http://videha.co.in/pothi.htm. On the other hand, Mr Kamlanand Jha sounds like a spokesperson of some political party or a casteist organisation rather than a literary critic.

Kamalananda Jha's Brahministic bias against Subhash Chandra Yadav is an alarm bell. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist stance to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. In his biodata, he proudly mentions the Maithili translation assignment bestowed on him by the Sahitya Akademi, and this assignment was allotted to him not on account of merit but solely on the ground of his caste title and in lieu of these deeds. For people like him, Maithili-related work is merely a line in their *curriculum vitae*, but it is a question of life and death for the people of the parallel stream. Why did I call Kamalananda Jha a pseudo-critic? Because he is a pseudo-critic. He writes: "After nearly a hundred years of journey, Gaurinath is credited with writing a dignified novel on the dreams, struggles and ironies of inter-caste marriage. So, did Kamalananda Jha take away this credit from Sushil? Is this the culmination of the arrogance of his Brahministic upbringing ("*Through my whims and fancies I can place some literature on top and can downgrade some to the bottom*") or is this

the evidence of his lack of study? Let me take you away from the selfish world of Kamalananda Jha, away from deception and disguise to the sincere world of Sushil's magical literature. Welcome to the world of Sushil's literature. Here is Sushil's 'Gambali' (1982) which is now available in the Videha Archive at the link http://videha.co.in/pothi.htm. In the first line of this novel, even before the novel begins, Sushil writes about the novel 'Gambali': "In support of widow marriage and inter-caste marriage" and here begins the novel. The death of a village woman and then the trouble ensues, who will cremate this village woman? Brahmin community or Yadav community of the village? Dinesh Kumar Mishra's 'Dui Patan Ke Bich Me' is a historical biography of the Kosi River. He has also written historical biographies of other rivers of Mithila like 'Bandini Mahananda,' 'Bagmati Ki Sadgati!', 'Dui Patan Ke Bich Me... (Story of the Kosi River)', Na Ghat Na Ghar, Kamla River, 'Bhutahi River and Technical Herbalism', The Kamla River and People on Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a Ghost River and

Engineering Witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments. Pankaj Jha Parashar, a member of the Maithili Advisory Committee of the Sahitya Akademi, Delhi has plagiarised paragraph after paragraph from his books and has published a novel in Maithili in his name, which pseudo-critic Kamalananda Jha mentions as research of this thief author Pankaj Jha Parashar! Let me clarify here that both the thief writer and the pseudo-critic are in the Hindi department of Aligarh Muslim University. This research is done by Dinesh Kumar Mishra, who is a graduate of IIT, Kharagpur in Civil Engineering (in 1968) and M Tech in Structural Engineering (in 1970) and is qualified for that research. In Hindi, the cut-off for admission is the lowest across universities, otherwise, Kamalananda Jha would have known that this research could be done by a civil engineer only. The Hindi original and Maithili screenshots are attached below. Dinesh Kumar Mishra is not from Mithila, but he has authored the story of all the streams of Mithila. We are grateful to him, and the people of Mithila will remain indebted to him for this. This thief writer Pankaj

Jha Parashar is a habitual offender. More than a decade ago he found a saviour in Mr Taranand Viyogi who wrote that he (thief writer Pankaj Jha Parashar) gets influenced involuntarily stole others' material in his works. Now he has found another saviour in Kamalananda Jha. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist side to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. Communism has suffered a lot from people who became communists to escape the land ceiling.

All books by Dinesh Kumar Mishra are now available in the Videha Archive with his permission:

http://videha.co.in/pothi.htm

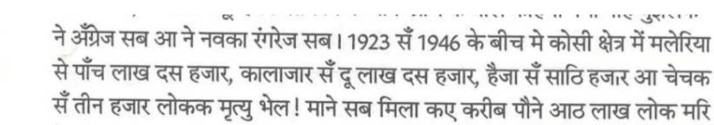
Let us recall here that when Bill Gates was asked whether he was delaying the introduction of the X-Box in India for fear of piracy. His answer was Microsoft never delays the launch of products for fear of piracy. We will continue enriching Videha Archive (http://www.videha.co.in/archive.htm), despite such risks because not all the fish in the pond rot by some rotten fish in parallel

streams. The fishermen here have been and will continue to remove such rotten fish.

The final blow to syndicated pseudo-literary criticism in Maithili.

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): It is noteworthy that between 1923 and 1946, 5,10,000 people died of malaria, 2,10,000 from Kala Azar, 60,000 of Cholera and 3,000 of smallpox in the Kosi region (783,000 total deaths).

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 103)]:


ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): On the Kosi River in Bihar, India, a dam was built by King Laxman II in the 12th century and for this, he received the title of 'Bir' from the people and the embankment of the river was called 'Bir Dam' The remains of this

embankment are still visible in Supaul district, about 5 km south of Bhim Nagar. Dr Francis Buchanan (1810-11) speculated that the dam must have been an outer wall built to protect a fort as it stretched over a distance of 32 kilometres from Tilyuga to its confluence on the western bank of the Dhaus river. Dr WW Hunter (1877) did not agree with Buchanan's contention that the dam was the protective wall of a fort. Quoting locals, Hunter believed that most people did not consider it a fortress wall and according to him it was something else but he was not in a position to say anything. Yet the common impression is that it must have been an embankment built along the Kosi River to prevent the river's current from sliding westwards. People also said that it seemed that the construction of the embankment had suddenly stopped.

The pseudo-critic Kamalananda Jha's saviour of the habitual offender thief Pankaj Jha Parashar quoted the plagiarised work as follows: **(Maithili Novel, Time, Society and Questions pp. 257-258):**

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर' (2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत ब्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ ब्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi)[Jalpranthar 2017 (p. 31)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनैं छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): A glimpse of the horrors of the Kosi River can be seen in the event when the army of Feroz Shah Tughlaq returned to Delhi from Bengal. It is said that when the troops of the Sultan reached the banks of the Kosi, they saw that on the other side of the river, the troops of Haji Shamsuddin Ilyas were waiting, ready for a battle. This was the same Haji Shamsuddin who founded the cities of Hajipur and Samastipur. Feroze's troops

were stranded on the banks of the Kosi somewhere around Kursela. The speed of the river was preventing them from moving forward. It was finally decided to proceed northward along the river and to locate the water where it was navigable. The troops of the Sultan went up about a hundred *kos* and crossed the river near Ziaran, situated at the same place where the river descended from the mountains into the plains. The river was thin, but the flow was so fast that heavy stones weighing five hundred *manas* were floating like straws in the river. On either side of the river where it was found possible to cross it the Sultan erected a row of elephants, and ropes were hung in the bottom row so that if a man loses control he could be rescued with the help of these ropes. Shamsuddin never thought that Sultan's troops would be able to cross the Kosi and when he came to know that Sultan's troops had managed to cross the Kosi, he fled.

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi)[Jalpranthar 2017 (p. 105)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैं नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैं जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैं ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहें फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैं पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(More screenshots will be updated at this link http://www.videha.co.in/investigation.htm so on.)

4

Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

नानायध यादनक याँचटा लघूकथायन द्रमन ठियधी

Five Short Stories by Sh. Narayan Yadav

Sh Narayan Yadav has adjudged the following five short stories as his best:

The New Daughter-in-Law (Navki Putohu)

Communal Harmony (Sampradayik Swabhav)

The Life of a Woman (Kanyak Jingi)

The Change of Heart (Hriday Parivartan)

The Village Unity (Gamak Ekta)

The New Daughter-in-Law (Navki Putohu): The strength of this short story lies in the description of village life, and how every member contributes to earning a livelihood. But the whole harmony gets disrupted with the arrival of a new daughter-in-law, the wife of Anand. Anand's wife Sulekha is from an upper-class family and does not understand the pains of her mother-in-law Radha. But when Radha's Younger son Suresh gets married and his wife Roshni, who is literate, comes to this family, everything gets in order.

Communal Harmony (Sampradayik Swabhav) is a story of how Rehman and Prakash's friendship moves

forwards creating an atmosphere of harmony in the two communities. It may be treated as children's literature wherein a sensitive matter has been treated aptly.

The Life of a Woman (Kanyak Jingi) tells the story of Kusum and the protagonist. But when the protagonist revisits her village after a long time he sees a widow who tells him that she is Kusum.

The Change of Heart (Hriday Parivartan) is a story of a mother and his son. After the death of her husband, she goes to Patna accompanied by his son. The respect that her husband had in the hearts of his students makes her son repentant of his behaviour.

The Village Unity (Gamak Ekta) is a story of a flood-ravaged village life interspersed with the delivery of a baby by Mala. The whole village strengthened the Ring Dam and later admitted her to a hospital.

You may find references to opposition to intra-

caste marriage as regressive, (Navki Putohu- Both were from the same case. They hated inter-caste marriages), but the strength of Narayan Yadav lies in the description of life around him. His delicate treatment of communal harmony, community living, and depiction of unity in the village as well as in families overpowers everything.

ग

संजय दास जीक चित्रकलापर बहुत चर्चा भेल अछि। किछु लोक एकरा अश्लील मानि रहल छथि आ किछु लोक एकरा कलाक स्वतंत्रताक परिचायक मानै छथि। विदेह दुनू पक्षसँ टाइप कएल आलेखक अपील कऽ रहल अछि, आलेख पक्ष/विपक्षक हेबाक चाही। व्यक्तिगत लांछन वा दुश्मनी बला आलेख नै हुअय। अपन आलेख editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

- Gajendra Thakur, editor, Videha (Be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast list.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३६३ पर टिप्पणी

अंक ३६३ पर टिप्पणी

आशीष अनचिन्हार

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र पढ़लहुँ आ एहि संदर्भमे हम अपन कहब जे नागानंद वियोगी वा कमलानंद झा सन प्रबुद्ध लोक आगुओ पंकज पराशर एवं ताहन साहित्यिक चोरक संरक्षण अहिना करताह। कारण ई जे ई प्रबुद्ध लोक सभ सेहो ताही मानसिकताक छथि।

नित नवल सुशील सहु पढ़लहुँ। मैथिली उपन्यास उत्तम ई आलोचना एकटा निकाइ कायम करत से उम्मेद अछि। ओना एहि आलोचनासँ ई नँ साबित होइत अछि जे मैथिलीक आन उत्तम जकाँ मैथिली उपन्यासमे कलकत्ताक एकटा योगदान छै जे सभसँ अलग आ बेसी छै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.गद्य खण्ड

२.१.नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

२.२.नित नवल सुशील (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

२.३.महाकान्त प्रसाद- वीहनि कथा- पियौज

२.४.कुमार मनोज कश्यप- उजल बिऊ

२.५.आचार्य रामानंद मंडल- वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाज उर्फ पचपनिया संघर्ष

२.६.योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'-शीघ्र दर्शन

२.७.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-१३)

२.८.जगदीश प्रसाद मण्डल- कनियँ-मनियँ पुँजी

२.९.जगदीश प्रसाद मण्डल- माउयन (धानानाह्विक उपन्यास नअम यअान)

२.१०.नवीन्द्र नानायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २१ म खण्ड

२.११.नानायण यादवक ५ टा कथा- कथा-१ अङ्ग्यन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन

२.१२.नानायण यादवक ५ टा कथा- कथा-२ अङ्ग्यन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन

२.१३.नानायण यादवक ५ टा कथा- कथा-३ अङ्ग्यन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन

२.१४.नानायण यादवक ५ टा कथा- कथा-४ अङ्ग्यन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन

२.१५.नानायण यादवक ५ टा कथा- कथा ५ अङ्ग्यन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन

𑓒.𑓑.𑒢𑒱𑒞 𑒢𑒫𑒪 𑒠𑒱𑒢𑒹𑒬 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 (𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩)

𑒢𑒱𑒞 𑒢𑒫𑒪 𑒠𑒱𑒢𑒹𑒬 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 (𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩)



दिनेश कुमार मिश्र, मिथिलाक बाढ़ि, धार आ अध्ययन बनाओल छलनि/ बाढ़, सुखाड़ हुनकर बन्दिनी महानन्दा, बागमतीक सद्गति!, दुइ पाटनक बीच.. (कोसी धारक कथा), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिलाक कमला धार, गण्डकी धार आ तकनीकी झाड़-फूकी। दिनेश कुमार मिश्रक सम्पूर्ण पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे: http://videha.co.in/pothi.htm

(साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा पराशर द्वारा दिनेश कुमार मिश्र जीक पोथी सभसँ पन्नाक पन्ना चोरा कऽ अपना नाम उपन्यास छपबाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ई चोर लेखक पंकज झा पराशरक निर्दोष कहै छथि! लिंक http://videha.co.in/investigation.htm पर स्क्रीनशॉट अपलोड कएल गेल अछि।)

बन्दिनी महानन्दा- दिनेश कुमार मिश्र (पछिला अंकसँ आगाँ)

मध्य बिहार (आर दक्षिण बिहार)

बिहारमे गंगाक दक्षिण पटना मैदान मध्य बिहार अछि । दुर्गावती, कर्मनासा, सोन, पुनपुन, फल्गु आदि धार सँ आच्छादित ई क्षेत्र जमीन उत्तर बिहार जकाँ उपजाऊ अछि । कैमूर शृंखला पाथर सन बिनु गाछ-वृक्षक पहाड़ी ई क्षेत्र छै। मध्य बिहारक अर्थव्यवस्था खेतीपर आधारित अछि।

छोटानागपुर अंचल (आर झारखण्ड)

बिहारक गंगक घाटीक दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र पठार आ जंगलसँ भरल अछि आ एकराक पूरा खनिज संपदाक एक भिन्न सँ बसी ई जंगल, पहाड़ आ जमीनक नीचाँ दबल अछि । बराकर, दामोदर, सुवर्णरेखा, किउल, कोयल, औरंगा, अमानत, कन्हर, अजय आ मयूराक्षी आदि धारक ई क्षेत्र, छोटानागपुर आ संथाल परगना, उद्योगक दृष्टिकोणसँ बहुत समृद्ध अछि। कोयला, लोहा, मैंगनीज, अभ्रक, क्रोमाइट, चूना-पत्थर, आग्नेय माँटि, चीनी माँटिक बर्तन, कैनाइट, ताँबा, बॉक्साइट, एस्बेस्टस, डोलोमाइट, क्वार्ट्ज, यूरेनियम आदि ई क्षेत्र रखैत अछि। एतए कारण अछि जे ई इलाकामे कइएकटा पैघ उद्योग अछि। जमशेदपुरमे टाटा ग्रुपक टिस्को आ टेल्को, बोकारोमे स्टील प्लांट, राँचीमे हेवी इंजीनियरिंग कॉरपोरेशन, मूरी (राँची) मे अल्यूमिनियम प्लांट, पूर्वी सिंहभूममे हिन्दुस्तान कॉपर कॉरपोरेशन, सिन्द्रीमे केमिकल फर्टिलाइजर प्लांट, धनबाद-झरिया

कोल माइन्स, सिंहभूम जिला, खलारी आ जमशेदपुरमे सीमित फैक्ट्री सभ ओ इलाकामे स्थापित अछि ।

एतक नीक उपजाऊ जमीन आ निर्बाध जल संसाधन आ अतुलनीय खनिज संपदाक मालिक रहलाक बादो बिहार राज्य देशक अन्य राज्यक तुलनामे विकासक सब स्थापित पैमानामे पिछड़ल अछि।

बिहार-पिछड़ल वर्तमान

एतक प्राकृतिक संसाधन रहलाक बादो ई बिहार गरीब अछि त एकरा लेल ककरा दोषी ठहराओल जायत? सदीसँ एतय रहलासँ उत्पन्न भेल कुंठा या प्रशासनिक, राजनीतिक आ सामाजिक कुप्रबंधनक कारण। अर्थव्यवस्था मूल रूपसँ खेतीपर आधारित अछि, एकटा गय निश्चित रूपसँ बूझल जाइत अछि जे ई खेती कतेक रहत सुव्यवस्थित कएल जाय तखन बिहारक लोक जमीनसँ जुड़ल रहि सकत। समस्या अछि जमीनक मालिकाना हक। ई ठाम ८४.६ प्रतिशत जोतदार लग जमीनक मात्र ३१.१ प्रतिशत अछि। ओतय सँ औसत होल्डिंग ऊपर २ हेक्टेयरसँ बेसी नै अछि। दोसर दिस १५.४ प्रतिशत लोक लग ६३.३ प्रतिशत जमीन अछि। एकर इहो अर्थ छै जे ई खेती-बाड़ीमे कनिया-मनिया गड़बड़ी होइ त बहुत लोकक भारी-भरीक नुकसान होइ। बिहारक खेती बरखापर निर्भर अछि वा भगवान भरोसे। बिहार लगातार सभ साल सुखा वा बाढ़िक शिकार होइत अछि। कखनो काल इहो होइत एके संग आबि जाइत अछि। कखनो एक इलाकामे रौदी आ दोसरमे बाढ़ि आ कखनो पहिने रौदी आ फेर उत्तर ठाम बाढ़ि वा पहिने बाढ़ि आ फेर रौदी। ई

दुनू समस्याक संग रूप घातक अछि। बिहारक भौगोलिक संरचनाक चारू कात धार आ दक्षिण बिहारक पठार क्षेत्रम सूखाक कारण उत्तरम बाढ़क संभावना अछि। मध्य बिहारम हालात बदलैत रहैत अछि। पटना, आरा, रोहतास, भोजपुर, भभुआ आदि जिलाम सोन नहरक कारण किछु खेतीक प्रबंधन होइत अछि, मुदा ई जिलाम सेहो प्रायः बाढ़ि अबैत अछि। मध्य बिहार, गया, जहानाबाद, नालंदा, नवादा, गया आ औरंगाबादक बाकी जिला अक्सर सूखाक शिकार होइत अछि।

बाढ़ि आ बिहार

हम अपन अध्ययन बिहारम बाढ़ि धरि सीमित राखऽ चाहै छी। राष्ट्रीय बाढ़ आयोग (१९८०) क रिपोर्टक अनुसार देशम बाढ़िसँ होअयबला नूकसानम २२.८ प्रतिशत बिहारक हिस्सा अछि। देशम बाढ़िसँ प्रभावित कुल क्षेत्रक मात्र १६.५ प्रतिशत बिहारम पड़ैत अछि। मतलब ई बिहारक अपेक्षाकृत कम इलाकाम बेसी नूकसान होइछ। राष्ट्रीय बाढ़ आयोग (१९८०) क रिपोर्टक प्रकाशनक बाद १९८४, १९८७ आ १९९३ म बिहारम पैघ बाढ़ि आयल अछि, जइम १९८७ क बाढ़ विनाशकारी मानल गेल अछि। ई बाढ़िसँ पूरा देशम बाढ़िक संदर्भम बिहारक दर्जा कनी बढ़ि गेल। एकटा रिपोर्टक अनुसार भारतक सबसँ बेसी बाढ़ि प्रभावित राज्य बिहार अछि। देशक कुल ४०० लाख हेक्टेयर बाढ़ प्रभावित क्षेत्रम सँ ६४.६१ लाख हेक्टेयर बिहारम अछि। ई देशक कुल बाढ़ प्रभावित क्षेत्रक १६ प्रतिशत अछि। ऐ बिहारक भौगोलिक

क्षेत्रफलक ३१ प्रतिशत अछि जे ११३.५० लाख हेक्टेयर अछि। जनसंख्याक हिसाबेँ कुल बाढ़ प्रभावित आबादीक ५६.५ प्रतिशत असगर बिहार राज्यमे अछि। ई तथ्य राष्ट्रीय बाढ़ आयोग द्वारा सेहो स्वीकार कयल गेल अछि । उत्तर बिहारक कुल क्षेत्रफल ५८.५१ लाख हेक्टेयर अछि। ऐ भाग मे ४४.४१ लाख हेक्टेयर क्षेत्र बाढ़ि प्रभावित अछि। ऐ तरहेँ उत्तर बिहारक करीब ७६ प्रतिशत इलाका बाढ़ि प्रभावित अछि।

जँ हम जीवनक गुणवत्ताक माप लेल मात्र साक्षरताकेँ पैरामीटर मानब तँ उत्तर बिहारक हालत पूरा बिहारक संदर्भ मे सेहो सबसँ दयनीय अछि। ऐ ठाम साक्षरताक प्रतिशत बिहारसँ कम अछि। तहिना बिजलीक प्रति व्यक्ति खपतक एकटा आन उदाहरणक लऽ सकै छी- १९७८-७९, १९८०-८१ आ १९८१-८२ मे देशमे बिजलीक प्रति व्यक्ति खपत क्रमशः १५०.१३ किलोवाट, १५५.६२ किलोवाट आ १४३.४१ किलोवाट छलै। दोसर दिस ऐ कालावधिमे बिहारक प्रति व्यक्ति खपत क्रमशः ८१.१५ किलोवाट, ८२.५८ किलोवाट आ ८१.१३ किलोवाट रहल। जँ उत्तर बिहारकेँ अलगसँ देखल जाय तँ ऐ कालावधिमे ऐठाम प्रति व्यक्ति बिजलीक खपत क्रमशः २६.६० किलोवाट, १४८२ किलोवाट आ १३.४३ किलोवाट छल, मान राष्ट्रीय औसतक दसम हिस्सा सँ कम उत्तर बिहारमे उपलब्ध अछि। एकर अलाव आइ-काल्हि बिहारक मोटामोटी ९ लाख हेक्टेयर जमीन पानीक कटाइसँ ग्रस्त छै आ ई सभटा इलाका उत्तर बिहारमे छै, जइ लेल सभ साल ऐ क्षेत्रमे बाढ़ि आ एतुका जमीनक बनावट जिम्मेदार छै। अत्यधिक जल कटाइसँ कृषि उत्पादन आ

कृषिसँ होइत रोजगार दुनुपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ैत छै आ आर्थिक संकट बढ़ैत छै।

घाघरा, गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, अधवारा समूह, कमला, कोसी, महानन्दा मुख्य धार सभ अछि। ई सभ धार अपन मार्ग बदलबाक लेल प्रसिद्ध रहल अछि, जाहिमे कोसीक धारा सभसँ बेसी चलायमान अछि। ई समस्त उत्तरक पानिक निकासीक एकमात्र नदीका गंगाक माध्यमसँ अछि आ ई धार पूरा प्रांतक लेल जीवन रेखाक काज करैत अछि।

गंगा।

दक्षिण बिहारक सुवर्णरेखा घाटीकेँ छोड़ि बिहारक शेष पानिक निकासी गंगाक माध्यमसँ होइत अछि आ तइ लेल गंगा बहुत महत्वपूर्ण भऽ जाइत छथि। गंगा लेल बिहार सेहो कम महत्वपूर्ण नै अछि। गंगाक एकटा नाम जाह्नवी अछि। आधुनिक भागलपुरक सुल्तानगंज लग गंगाक धारामे एकटा पहाड़ीपर भगवान शंकरक मंदिर अछि। कहल जाइए जे जह्नु ऋषिक एतय आश्रम छल। भगीरथ जखन गंगाकेँ अपन पूर्वजक उद्धार लेल कपिल मुनिक आश्रम धरि जेबाक लेल मना लेलखिन तँ गंगा हुनकर पाछू-पाछू चललीह आ जे किछु हुनकर रस्तामे आबि जाइत छल तइपर अपन छाप छोड़ि देलखिन। मुदा आब प्रतियोगिता जह्नु ऋषिक संग छल जिनकर आश्रम गंगा बहावयवाली छली। गंडकक प्रवाह देखि मुनि क्रोधित भऽ गंगाकेँ पीबि गेला। बेचारा भगीरथ कोना तरहुँ ऋषिकेँ गंगाकेँ मुक्त करबाक लेल मना लेलनि, तखन ओ गंगाकेँ

पहाड़ सँ निकालि लेलनि। एहिसँ गंगाक नाम जाह्नवी पड़ल।

गंगा धार उत्तर प्रदेशक उत्तर काशी जिलाक १,०१६ मीटरक ऊँचाइपर गंगोत्री ग्लेशियरसँ उत्पन्न होइत अछि । मूलमे ई धारकेँ भागीरथी कहल जाइ छै, जे देव प्रयाग लग अलकनंदासँ संगमक बाद गंगा नाम लैत अछि आ लगभग २५० किलोमीटर नीचाँ बहलाक बाद ऋषिकेश लग मैदानमे उतरि जाइत अछि। एकर बाद ई धार वाराणसीसँ हरिद्वार, कानपुर, वाराणसी होइत करीब १५५ किलोमीटरक दूरीपर बिहारमे प्रवेश करैत अछि। उत्तर प्रदेशमे ई धारक कुल लम्बाई लगभग १४५० कि.मी. अछि जइमे गंगोत्रीसँ देव प्रयाग धरि भागीरथीक लम्बाइ शामिल अछि । बिहारमे ई धारक लम्बाइ लगभग ४३८ किमी अछि, जइमे ११० किमी उत्तर प्रदेश आ बिहारक सीमा बनबैत ई बहैत छथि।

राजमहल लग बिहारसँ निकललाक बाद गंगा फरक्कासँ ४० किलोमीटर पूर्वमे दू भाग मे बँटैत अछि आ ई दूनू धाराक नाम अलग भऽ जाइत अछि। वाम धार, जे पूर्व दिस जाइत अछि, ओकरा पद्मा कहल जाइत अछि आ भागीरथी नामक दहिना धार दक्षिण दिस बहैत अछि आ मुर्शिदाबाद, वर्द्धमान, चौबीस परगना, कलकत्ता सँ होइत अनेक धारामे शाखाबद्ध होइत सागर द्वीप लग बंगालक खाड़ीमे मिलैत अछि। पश्चिम बंगालमे गंगाक कुल लम्बाइ ५२० कि.मी. छै।

जतऽ एतेक पैघ आ एतेक धार अछि ओतऽ बाढ़ि कोना पैघ बात नै। असलमे ई ऊपरक संरचना एहन अछि जे बाढ़ि आ धारक

मार्ग बदलब एकटा स्वाभाविक प्रक्रिया छिऐ।

उत्तर बिहारक पश्चिम चंपारणक सामश्चन पहाड़ीक ऊपर जमीन आ धानक ढलान कम होबाक कारण बनसातक पानि आसानीसँ नै निकलैत अछि आ येह ऊपर पसरैत अछि। जखन गंगाक स्तर बसी होइ छै तखन ओकर सहायक धारक पानि सेहो ठमकि जाइ छै। पानिक प्रसारक कारण एक दिस खेतम नव माटि जमा भऽ जाइ छै आ जमीनक उर्वरता बढ़ि जाइ छै। कखनो काल ई भयंकर बाढ़ि आबि जाय तँ फसलक संग-संग बहुत नास जान-मालक नुकसान सेहो होइ छै।

उत्तर बिहारम बाढ़िक ऐ समस्याकेँ बूझबा लेल गंगा घाटीक निर्माणक प्रक्रियाकेँ बूझब आ संग ई बूझब जे बर्खा आ पानिक अलग-अलग स्थिति, जकरा जलविज्ञान चक्र कहल जाइए, जरूरी अछि। तखन ई बूझि सकब जे धार कोना अपन धारा बदलैत अछि आ तखन बाढ़िक रूप स्पष्ट हएत।

(अगिला अंकम जारी)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.निग नवल सुशील (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

निग नवल सुशील (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)



सुशीलक रचना संसार: हुनकर रचना संसार छन्हि- घनाठी (उपन्यास) (१९७३), गामवाली (उपन्यास) (१९८२), हामरी (नाटक) (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३) आ अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (२०१६) आ ई सभ पोथी हुनकर अनुमतिसँ विदेह पेटारमे उपलब्ध अछि लिंक www.videha.co.in/pothi.htm पर।

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) मे लिखै छथि- "मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल अन्तर्जातीय विवाहक रचना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।" तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि ललनि? चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा कात स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादुवला साहित्यिक निश्छल दुनियाँमे।

घनाठी (उपन्यास)- सुशील (पछिला अंकसँ आगाँ)

पाँचम खण्ड। ब्राह्मण डॉ. विनायक आ मलाह नर्स कनूप्रिया। कनूप्रिया कहैत, हुनी विवाह असम्भव अछि, ओ नीच जातिक अछि, मलाहक बेटी अछि आ विनायक पैघ लोक। विनायक नै मानैत। आ कहैत जे ओ की करत जे कनूप्रियाक हृदयसँ प्रेम हटत। मुदा कनूप्रिया ओकरा धोखा कऽ विदा भऽ जाइत। मुदा सुलभ उपन्यासकार ओकरा संग करै छथिन्ह सपना सुना कऽ, से प्रेम नँ ओकरा छैह। आ एम्हर विनायक गामस निखसँ सनिख अछि। ओ कनूप्रियाकेँ कायर बूझैत। मुदा उपन्यासकार एकटा लाठी लेने बूढ़ाक प्रवेश ओकर स्वप्नमे करबै छथिन्ह- जे विनायककेँ कहै छथि जे जकरा विनायक सबला बूझि रहल छथि ओ समाजक गह्वायल परिपाटीक चलते अबला अछि, आ अपन चक्र सुदर्शन आ त्रिशूल हुनका दमन करै छनि। साहस टा नै, काजो कऽ कय देखबय कहै छन्हि, खाली मूड़क प्रतिष्ठासँ की हएत? स्त्रीगण समाजकेँ विश्वास नै छै। मुदा विनायक कहैत जे ओकर प्रतिष्ठा सत्य छै। ओ हुनी गय विकनि कऽ कहैत जे ओ हुनी कहैय कऽ रहत। आ ओकर एक खुजि जाइ छै। मलय आ अजीत विनायक केँ घृणा लऽ जाइ छै।

छठम खण्ड- महादेवक हत्याक बाद ओकर श्राद्धक राज लालबाबू नीक जकाँ कयलन्हि। मुदा वारुन बाबू आ पाठक जी ई षड्यन्त्रक कारणसँ अपरिचित नै छथि। महादेवक हत्याक पाछाँ कोन व्यक्तिक हाथ छै, से बूझबाक हुनका सभकेँ कोनो शंका नै छन्हि। मुदा खुलि कऽ विरोध करबाक साहस नै छन्हि। आ एम्हर लालबाबू सभ हिनका दुनूकेँ मिला कऽ राखऽ चाहै छथि आ वारुन बाबूसँ सभा सौजनियाँ जाति लै छथि। एकटा उदाहरण छै जे सामाजिक बेटा नाम

लागि कऽ बुढ़वासँ रहैत करऽ अबै छै। पनगासक बाप सनयु मण्डलक दू साल पहिने मृत्यु भऽ गेलै, श्राद्ध सहक सहटा खर्चा लालबाबू देन नथिन्ह। स पनगासक खानदान नूनक सेनिया दऽ छै। पनगास मैट्रिक पास कऽने छल, लाल बाबू फीस माफ करवा देन नहथिन्ह। डा बैकनर्ड क्लासक अनुदान लल येनबी कान नहय मुदा लाल बाबू उल्टा-पुल्टा बूझा कऽ डाकना अपना लग नाखि ललखिन्ह, तीन बीघा खेत देलखिन्ह मुदा तकन काना लिखा-पढ़ी नै भेल छै। आ अन्तम किछु हाथ बारन बाबूक समधिक स्नागाम- बाद हुनका गिलासम दल गेलहि, बसी दूआन, मुदा हुनका भेलहि शनबा छिनै, छटपटाय लगला जब्बर कऽल मूर्गा जकाँ। छअम खण्ड समाप्त।

डाक्टर नानन अपन मित्र शंकन भगवानक एक अवधेशक नाकिम अछि। अवधेश कपिलश्वर स्थान थाना कऽ भागि जाऽ छल, आ मिडिल पास कलाक बाद भगवान शंकनसँ सह दिन रहैत हाथ गैँय कपिलश्वर हाऽ स्कूलम नाओं लिखन छल। नानन निमाल्ला घाटम भूतनाथ महिनम शंकन भगवानक शनधम जाऽत अछि। आ अवधेश रहैत जाऽ छै, सूपन बाश जनयुम डा पत्नी सुनीता संग नहेऽ। कंगाली वशम नानन! येघ अरुसन अवधेश कङ्गालीकँ पकऽन सीढ़ीपन ०।८ अछि। सातम खण्ड समाप्त।

माती कूकूऽ संग खढिआक शिकान नानन आ अवधेश मिलि कऽ कनय। नानयन बानंट छै। डाकना जमानत बाही। मुदा जकरा चिट्ठी अबै छै, अवधेशक रायक। डॉ. विनायकक बियाह डा सह अपन बहीन प्रमासँ कनबाबय चाहै छला, लाल बाबूकँ सहा पसिन्न

छन्हि। मुदा आब अनधेशकेँ साबय यतौ। विनायक तँ विनायक अछि, मुदा लालबाबू? नाम कहैत ओ बियाह तँ लटकासँ न हो। मुदा यनिनाना दखऽ यउ छै। चिट्ठीम लिखल छै जे लालबाबू जल्दीसँ काज रऽ जाय स चाहै छथि। स शंका उत्पन्न करैत। यदिन तँ ओ नूच्येयाक लारम करिया खुलि कऽ गय्य नै कलनि। आठम खण्ड समाप्त।

कुमकुमक संग कनूधा याOक जीक आंगन जाऽऽत अबैत नहैत, हम-छम बढि गेल छै। लालबाबू कनूधासँ बदली रऽ दासन Oम जबा लल कहै छथि, ओ दर्शास्फयन हस्पाउन कऽ दऽऽत। लालबाबू जाऽऽ छथि। कनूधा कनैत, ओकना दखि कुमकुम सहा कानैत। याOक जी अबै छथि। कुमकुमसँ कनवाक कानध यूछै छथि आ ओ रद खालैत, लालबाबू कनूधायन गमसायल छलखिह, काना कागचयन हस्पाउन ललखिह्न। खण्ड नौ समाप्त।

कनूधा आ विनायकक गयशय। कनूधाक नजनि लालबाबूक हाटा दिस जाऽऽत। विनायक दृढ अछि। दसम खण्ड समाप्त।

याOकजी आ वाहन बाबूक गयशय। याOकजीकेँ काना गय बूझल छन्हि। लालबाबू कनूधाकेँ नाकनी दिनवासँ यदिन मलहासँ काना शर्म मंझनीक गय कनै छला। यूछलायन नाO गेला, तिगनसानि याखनिम जीना दमय चाहैत स कहि दलनि। मुदा काना याखनि जीना लल नै दन छलखिन मलहाकेँ लालबाबू। गखन कान तहन गय छै जे मलहा आ लालबाबूत टा कँ बूझल छन्हि। कनूधाक यढाऽऽ मुजफ्फरपुरम 'कैथोलिक चर्च स्कूल' आ 'चेयमन गर्ल्स स्कूल'सँ हो।

याOकजीकँ कूमकूम यूछन छलह्वि ज कनूप्रा दीदी ककन वटी छथिन, दीदी वावूकँ ञा कहै छलखिन ज ञा गारल वटी छियौ आ नूयैया सहा दलखिन। कनूप्रा कथीयन रुस्फाउन कलक? कूमकूमसँ याOक जी विनायककँ करुवा दथिह्न। विनायक कनूप्रासँ यूछग आ ञा मना नै कs सकग। आ रुन विनायक आ कनूप्राक गयशय, विनायक समाOक बाद कनूप्रायन नै वजनs दग। ञगानरुम खण्ड समाप्त।

अवधेशक येनवीयन नागन कलकत्ताम सक्सेनिटी ञतनाञ्जन अछि। मामिलाक गानीखयन मूजङ्गनयून जाञ्ञ मूदा गाम नै जाञ्ञ। अवधेश संगे शेफालीसँ रुँट रुाञ्ञ छै। गयक क्रमम शेफाली कहै छथि ज अवधेश कागक मैथिल सरकँ नाकनी दियलथिन मूदा नञरु सरे रिनकन निह्वा कनैग नहै छह्वि। शेफाली कहै छथिन ज शेफालीक मामा नकील छथिह्न, ञा कहै छथिह्न ज नागनक जीग रुगै मूदा असली रुयानाक यगा सहा लगवs यञग। नागनकँ निश्वास छै ज असली रुयाना लालवावूक जिनगिया यनगा छै। अवधेश ञकरा आन विठ्ठीक गय नागनकँ कहै छै, विनायककँ कनूप्रा संग लरे रुs गेल छै, ञा ञकनासँ वियाह कनs चाहैञ। शेफालीक यिगा नागनक सक्सेनिटी ॉरुिसन, शेफालीक मामा कमल सनकान छथि नकील। शेफालीक यिगा नाय जी मैथिल आ मागा वंगाली। शेफाली मैथिलीम कञ्ञकरा याथी सहा लिखन छथि। शेफाली आ नागनक घरकैगी! खण्ड वानरु समाप्त।

लालवावू कनूप्राक वदलीक विठ्ठी यOवा दञ्ञ छथि, मूदा विनायक कनूप्राकँ छुट्टीयन यOवा दञ्ञ छथिह्न आ यासमैन *नॉट अवलवल*लिखि

कऽ चिट्ठी घुरा देलन्हि। पाश्चमर नवयुवक अछि आ विनायक ठाकुर ताकरी लगेबाक बहुत प्रयास कर रहथि। लालबाबू परगासक माध्यमसँ करुणाकेँ निपटा करबा देल मुदा हुनकर पत्नीकेँ सुनल दुटा शब्द 'देखिऔं बजाकऽ' उद्वेलित कऽ देने छन्हि। गर्मी तातिल मलय आ अजीत गामपर अछि। परगास बाबि गोटसँ गेल मुदा करुणा दाँत काटि कऽ अपनाकेँ ठोठ ललक। आ ठाकुर विचित्र सुनि मलय, अजीत आ प्रसन सीनीचरक आबि गेलै। करुणा ठाढ़ि बाबुस सँ परगासकेँ चीन्हि गेलै। खण्ड तेरह समाप्त।

करुणाक बदलीक चिट्ठी एकबन न घुरलै, आब हुन लालबाबू कारा थाँत लगा रहल छथि, देखै छथि ठाढ़ि छागहरियाकेँ आब क रखतै। राग बनी एऽ जाए, स वकील करहलकन्हि। करुणा आ परगासक बियाह करा देल आ मामिल खतम। घर घुरै छथि। पत्नी विनायकक बियाहम देनी हुनका द्वारा माँगल जायबला पुरसुर गीस हजार रुपैया आ जयरसँ मारटरकेँ मानै छथि। खण्ड चौदह समाप्त।

मिस्टर राय सस्क बदोलत रागरकेँ ताकरीया एटलै आ जमानत। लालबाबूक पत्नीकेँ एरक लागि गेलन्हि ज करुणा रागरक बहीन छिऐ मुनियाँ, ठाकुर पहुँचीयर चिह्न छै जऽयर ठा घटी बाङ्गा अछि, परगासक मायसँ किछु बजा गेल नहि। लालबाबू पछताऽ छथि ज किए पाऽ लल अति गेला, एर अरधेशक बहीनक संग विनायकक बियाह करा दैतथि। बाताबरी ह्वाऽ, पत्नी विनायक आ करुणाक बियाह एऽ कऽ रहत स कहै छथि, लालबाबू धकल देऽ छथिन्ह, विनायक बीचम आबि जाऽ, लाल बाबू गीगल बिलाति

सन पाछू हटि जाइ छथि। खण्ड पन्द्रह समाप्त।

विनायक संगे माय स्टाफ क्वार्टर चलि गेला। वाहर बाबू, पाठक जी आ मनसूर नदाफ लालबाबूकेँ मनबै लए गेला। परगास बूढ़नक कहिया चल छल, मुदा आब कतहुँ जाइत। कनूधाक बदलीक चिट्ठी हुर अबै छै, सुपौल मसंजर रवाना। कनूधा चिट्ठी निसीन कऽ लेलक। विनायक गुमसा जाइत, ओकरा नीच, बदमाश कहैत, कहैत जे जाति धर्म कतऽ जौ! कहैत जे स्त्री नीच होइत अछि। कहैत नीच! कुलटा! मुदा 'प्राणेश' शब्द सुनितहि विनायक पिघलि जाइत। कनूधा एकटा मोड़ल कागत विनायकक हाथमे दैत अछि। विनायक ओ पढि लज्जित भऽ जाइत, क्षमा मांगैत। कनूधा निजाइन कऽ देलक ईठी गय सौंस पसरि जाइत। लालबाबू खनाइ-पिनाइ शुरू कऽ देलन्हि, जेँ विनायक घर आएत तेँ ओ घर छोड़ि देता, एना धनि लालबाबू ओंट कऽ देलनि। परगासकेँ लालबाबू अन्तिम नाटक खेलबा लए कहै छथिन्ह। खण्ड सोलह समाप्त।

अन्तिम खण्ड अछि खण्ड सत्रह। दुर्गा दसानक दिन। दुर्गापूजामे तीनटा नाटक मंचस्थ कएल जाइत, दूटा मैथिली आ एकटा हिन्दी। आइ मैथिली नाटक छै- 'कुहेस', विनायक नामकुमारक पार्ट अस्वीकार कएलक, ओ ताकूरक पार्ट खेलत। अजित नामकुमारक आ मलय ठव्व शिक्षित युवक शंकरक पार्ट खेलत। बूढ़न ररक बाय सुवंश बनौने अछि। पार्ट खेललासँ लोक ओकरा नै भऽ जाइत, बूढ़न सहकेँ नबाठि दैत अछि। मामिलाक गारीखक बाद नगर सहा अनधेश आ बूढ़नक आग्रहपर दुर्गापूजा देखै लए गाम आयल

अछि। गामम गुलंञ्न छै ज कनूधा मलाह्क वटी नै छिउ, नान कनूधासँ दु-तीन वन गय कलक, उा अन्दाज कनैञ ज ह्रा न ह्रा कनूधा उाकन वहीन मूनियँ न ह्रुअया। स्त्रीगधक गय उाकना मान यउ छै ज नान सन ञनमन छै ञ्ञी छौउी। नान वूब्रन उाञ्ञOाम नह्रेञ। चानि वजेवला छै, नाटक समाप्त ह्राञ्ञवला छै, एसानक कानध दनी एलै। कनूधा अयन यिताकँ सए साल वजा लैग अछि, उा अयना मान आवि जाञ्ञ छथि, अह्रु वन आयल छथिह्न। यनगास नानक यछान (धन अछि। ननगछलीक अन्दम धून छै, गाछक याछाँ उा धयायल अछि। मूदा छह्र (धाखाम लालवावूयन यञल, नान याछूञ छला। ह्रनीछ एs (गलै, लालवावू अस्यगाल ञला। आ ह्रून नह्रथाधाटन आ यधागाया। आ विजयादशमीक नाटक समाप्त।

(अगिला अंकम जानी)

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाउा।**

२.३.महाकान्त प्रसाद- वीह्रनि कथा- यियोज



महाकान्त प्रसाद

वीहनि कथा- पियौज

-उमयी हौ, की हाल सुनबै छैक?

-गोन लगे छी कक्का, नीक छी। अाउ काना दर्शन दलियैक?

-हौ प्रधानमंत्री कहने नहथिन्ह जे नहि खाउब आन नहि खाउ दबैक। गाहन की विचान छहक? हमना गऽ बूझाउ यऽ जे...!

-कक्का उ खाउब-खाआउब मना कउन छलथिन्ह। यानस आ मारनी वाह्व थोउ बन्न कउलन्हि?!

-नौ बहिं, ऊली गऽ बउका पियौज निकलल,जगक साहियौ उगक छाट।

-हुँ स सैह।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒖 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒣- 𑒅𑒛𑓃𑒪 𑒔𑒱𑒅



𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒖 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒣

१ 𑒙𑒰 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰

𑒅𑒛𑓃𑒪 𑒔𑒱𑒅

𑒦𑒻𑒨𑒰𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒏𑒹 𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒹 𑒯𑒹𑒢𑒏 𑒑S 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒞𑒱𑒨𑒰𑒨𑒪 𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒦𑒻𑒨𑒰𑒢𑒢 𑒏𑒹 𑒮𑒳𑒞𑒰𑒯 𑒏S 𑒍𑒑S 𑒗𑒑𑒰 𑒏𑒹 𑒏𑒰𑒢𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒪𑒑𑒾। 𑒦𑒻𑒨𑒰𑒢𑒢 𑒮S 𑒦𑒻𑒨𑒰𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒏𑒹 𑒋𑒏𑒠𑒴 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒪𑒑𑒰𑒫 𑒕𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒋𑒏-𑒋𑒏 𑒙𑒰 𑒑𑒰𑒕 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒯𑒰𑒟 𑒮S 𑒪𑒑𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯.. 𑒣𑒙𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯.. 𑒥𑒜𑓃𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯.. 𑒍𑒑𑒩𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯.. 𑒂 𑒢𑒱𑒞 𑒍𑒏𑒩 𑒥𑒜𑓃𑒥, 𑒤𑒴𑒪𑒥, 𑒤𑒛𑓃𑒥 𑒏𑒹 𑒁𑒐𑒱𑒨𑒰𑒮𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒣𑒰𑒪𑒢-𑒣𑒼𑒭𑒝 𑒪𑒼𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓀𑒞𑒰𑒢 𑒏𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒍𑒯𑒱 𑒮S 𑒏𑒧𑓂𑒧 𑒑S 𑒢𑒯𑒱𑓀𑒋.. 𑒏𑒯𑒴 𑒑S 𑒥𑒮𑒱𑒨 𑒠𑒐𑒩𑒰𑒪 𑒦𑒻𑒨𑒰𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒦𑒻𑒨𑒰𑒢𑒢 𑒏𑒹 𑒋𑒏-𑒋𑒏 𑒙𑒰 𑒑𑒰𑒕 𑒏𑒹

कने छलाह। आ एकरा कारणे सँ ओ गाछी रैयानन क नाम जानल जाय लागल।

आइ राति सँ सौंस गाम दलमलित छलै। रैयानन क गाछ सभ क मारनिहार आओ मशीन सँ धराधर काटल जा रहल छै ...इ सुनितहि रैयाकाका क देहांस उड़ि गेलनि। एँ की सच रालु रैयानन क बचि ललाह आ हमरा जनतब एक नहिं! रैयाकाका क सौंस देह मे जना आगि धधकि गेलनि। गामस सँ बूझबा मे नहिं आबि रहल छलनि जे एकर प्रतिकार कोना करथि। वृद्ध असक्त निष्ठुर धन दलान पर पड़ल टुकुर-टुकुर ताकैत रहैत छलाह। आइ ओहि असक्त शीर्ण काया मे नहिं जानि ओतेक बल कोना आबि गेलनि जे एक साँस मे निष्ठुर सँ उठि गेलाह। मुदा रैन मे ०१८ हवाक सक्त आब बाँचल कहाँ छलनि... एलमला कs खसि पड़लाह। मुँह सँ बस अस्फुट 'र...' बहरेलनि आ इहलोक लीला समाप्त कs गेलाह। लोक बूझिया न पौलक जे ओ कहs कि चाहैत छलाह -- 'रालु कि रैयानन!'

नहुआन मे एन हुकै छलै मुदा गाछ दुहू दिस कटि रहल छल--एक दिस रैयानन मे आ दोसर दिस रूगदी गाछी मे। रालु धनि एखना निर्विकार छलाह।

-कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति: राजग सरकार क उप-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टावर-4, टाइप-5, किदवइ नगर पूर्व

(दिल्ली हाट क सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.७.आचार्य रामानंद मंडल- वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाज केर पचपनिया संघर्ष



आचार्य रामानंद मंडल

वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाज केर परवर्तनिया संघर्ष

मिथिला मे वर्चस्ववादी समाज यानि ब्राह्मणवादी समाज, हाशियक समाज यानि वंचित समाज अर्थात् राज,सालकन (ई नामांकरण ब्राह्मणवादी संस्कृति क देन अछि) पर उवीसी पर वर्तमान मे सेहो सांस्कृतिक सामाजिक स्तर पर वर्चस्व बनौने अछि। मिथिलाक संस्कृति उच्च नीच पर आधारित अछि। जनकवि वैद्यनाथ मिश्रक अनुसार सूद्रा मैथिल-मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ अछि। ई दुनू मिल कें ८०८वर्ष मिथिला पर राज कैलन अछि। बाहर राजा स मिलकें मैथिली क शोषक क राखा बनौलन आ ई शोषित वंचित क राखा न बन पायल। साथे सत्ता, साहित्य आ सांस्कृतिक प्रतिष्ठान पर आइओ तक वर्चस्व बनौने अछि।

लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया मे मिथिला पर गिनियर्सन अपन विचार प्रकट करैत लिखैत अछि कि मिथिला एकटा प्राचीन

इतिहास वाला देश अछि जे अपन परम्परा के आइयो तक बचाबि राखने अछि। अखनो ई भूमि ब्राह्मण एकटा वर्गक आधीन आ वर्चस्व मे अछि। जे असाधारण रूप सँ सत्ता आ कायदा केँ बचाबि राखैँ के दर्प स चूर अछि।

सैकड़ो साल सँ मिथिलाक ई धरती पर बहुत गर्व करैत रहल अछि। आ उत्तर,पूरब आ पश्चिम सँ लगातार आक्रमण केँ सहैत ई अपन पारंपरिक विशेषता बनौने रखने अछि। व अन्य राष्ट्रीयताक लोक सब के समान रूप सँ नै अपनौने अछि।

केदारनाथ चौधरी आवारा नहितन मे लिखैत अछि जे नेहरू जी अपन एकटा भेंट मे हमना बजलैनन कि मैथिली भाषाक उग्र संकुचल,सम्टल आ एकटा विशेष जातिक एकाधिकार मे अछि।

राजनीतिशास्त्रीक विचार अनुसार मिथिला मे दु तरहक संस्कृति अछि। एकटा बाभन कायथक संस्कृति आ दोसर गैर बाभन कायथक संस्कृति अछि। उदाहरण के लेल जनेउ, शादी ब्याह आ अन्य शुभ अवसर पर पाग पहिरनाई, मधुश्रावणी,कोजगरा,नव बधूकेँ टेमी स दागक प्रथा, विधवा विवाह निषेध प्रथा ,शुभ अवसर पर मांसाहार भोजन शामिल अछि। जौँ कि ई सब प्रथा गैर बाभन कायथक संस्कृति मे नै अछि।

पं गोविन्द झा लिखैत छथि जे मिथिला मे दुटा समाज अछि। जे एक दोसर स अपरिचित आ अंजान छथि।

𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒂 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒹𑓀 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒱𑒪𑓂𑒏𑒳𑒪 𑒁𑒪𑒑 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒂 𑒏𑒰𑒨𑒮𑓂𑒟 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏 𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒂 𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒝𑒱𑒢𑒱 𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒏𑒩𑒝 𑒖𑒏𑒰 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒁𑒕𑒱।

𑒂 𑒫𑓀𑒔𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒹𑓀 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒱𑒧𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒨𑒰𑒢𑒲 𑒫𑒖𑓂𑒖𑒱𑒏𑒰, 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒨𑒰𑒢𑒲 𑒁𑓀𑒑𑒱𑒏𑒰,𑒣𑒴𑒩𑒥𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒨𑒰𑒢𑒲 𑒚𑒹𑒚𑒲 𑒂 𑒂𑒢 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒐𑒢𑒏𑒱 𑒫𑒖𑓂𑒖𑒱𑒏𑒰 𑒂 𑒁𑓀𑒑𑒱𑒏𑒰 𑒧𑒹 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒦 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑒖𑓂𑒖𑒱𑒏𑒰,𑒁𑓀𑒑𑒱𑒏𑒰 𑒏 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒏𑒫𑒱𑒖𑒢 𑒏 𑒣𑒠𑒰𑓀 𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒩𑒞𑓂𑒢𑒰𑒏𑒩𑒧𑒹 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒬𑓂𑒫𑒩 (𑓑𑓓𑓒𑓔)𑒏𑒻𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒰𑒫𑒖𑒴𑒠 𑒌 𑒫𑒖𑓂𑒖𑒱𑒏𑒰, 𑒁𑓀𑒑𑒱𑒏𑒰 𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒹𑓀 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒢𑒻, 𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒕𑒰𑓀𑒙𑒱 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒫𑒖𑓂𑒖𑒱𑒏𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒔𑒪 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒪𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 ,𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒣𑒩𑓀𑒔 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒹𑓀 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒢𑒻 𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒪𑒾𑒙𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪।

𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒫𑒩𑓂𑒔𑒮𑓂𑒫 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒏 𑒫𑓀𑒔𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏 𑒥𑒾𑒠𑓂𑒡 𑒞𑒟𑒰 𑒏𑒥𑒲𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮 𑒁𑒣𑒩𑒱𑒔𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒐𑒻 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒮𑒩 𑒢𑒻 𑒕𑒼𑒛𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒹 𑒫𑓀𑒔𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒞𑒹𑒢 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒮𑓀 𑒁𑒢𑒖𑒰𑒢 𑒕𑒟𑒱। 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒏 𑒥𑒪 𑒣𑒩 𑒫𑓀𑒔𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏𑒹𑓀 𑒧𑒰𑒢𑒮𑒱𑒏 𑒑𑒳𑒪𑒰𑒧 𑒥𑒢𑒻𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒖𑒏𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒦𑒲 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒏 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰 𑒮 𑒦𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒃𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒧𑒹 𑒫𑓀𑒔𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏𑒹𑓀 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒖𑒧𑒰𑒢 𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒑𑒰𑒨𑒏 𑒣𑓀 𑒧𑒰𑓀𑒑𑒻𑒢 𑒐𑒫𑒰𑒮, 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒩𑒲𑒬𑓂𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒢𑒰𑒟 𑒢𑒰𑒟 𑒩𑒒𑒳, 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒬𑒯𑒲𑒠 𑒩𑒰𑒧𑒤𑒪 𑒧𑓀𑒛𑒪 , 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒢𑒴𑒣 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒬𑒯𑒲𑒠 𑒕𑒥𑓂𑒥𑒰 𑒮𑒯𑒢𑒲, 𑒬𑒯𑒲𑒠 𑒣𑒴𑒩𑒝 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒂 𑒬𑒯𑒲𑒠 𑒧𑒟𑒳𑒩𑒰 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱।

लखक सह यत्रकान अनविंद दास अयना ०कटा आलख म लिखन छथि कि ॅ्कासवीं सदी कँ दासन दशक म री मैथिली राषा साहित्य म वारून आ कायथ क ही उयस्थिगि दिखाॅी दग अछि। मैथिली राषा क म हाशि७ यन क लाग जिनकन राषा मैथिली अछि अदृश्य अछि।

ॅ्गिहासकान यंकज कुमान मा लिखन छथि आधुनिक कालि म खास आजादी क वाद विद्यायगि (गौनवशाली मैथिल संस्कृगि क प्रगीक चिह्न वन क उरून लैन अछि।

अॅ् आधान यन मिथिला म दुं नंग क मैथिल अछि ०गो वारून आ दासन सालकन। मैथिली री दुं नंग क ०गो वारून कँ मैथिली आ दासन सालकन क मैथिली। संस्कृग क नाटक म निम्नवर्गीय याव क राषा क अयभ्रंश वना दल जाॅ्ग नहि। गहिना विद्यायगि री जन सामान्य क लल गीग गाना आ उच्च वर्ग क लल युनुष यनीक्षा लिखनन। वर्ग रद क आधान यन ०हन नवना संस्कृग आ मैथिली साहित्य म यायल जागि अछि। आजुक समय म री मैथिली क संस्कृगनिष्ठ आ शास्त्रीय राषा वनाव क षड्यंत्र चल नहल अछि। ज जन सामान्य साहित्य आ संस्कृगि स वंचिग नहि।

मिथिला म ०ग उच्च नीच आ छुआछूग क राव हे कि वारून दलिग वर्ग क आॅ् गक यूजा या0 आ संस्कान न कनन्नेग अछि। दलिग क ॅ्हां राजन क सवाल न अछि। सालकन क यूजा या0 आ संस्कान कनन्नेग अछि। यनंच आॅ् धनि सिद्ध अन्न (राग,दाल)राजन

नै करैत अछि। एतबे कार्यक्रम (चुरा,दही, चीनी, मिठाई आ फल)करैत अछि।

मंदिर मे दलित गढ़ी (मंदिर के चबूतरा) पर त चढ़ सकैत नहि। सालकर मंदिर के गर्भगृह मे नै जा सकै अछि। केवल जनकधानी जा सकैत अछि।

वंचित समाज के अस्तित्व घटनाय कें नै चाही। कारण मैथिल आ मैथिली रक्षी त वंचित समाज सेहो अछि। अपन संस्कृति आ समाज के हित मे निर्णय आ निः संकोच साहित्य सृजन करबाक चाहि।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व० राजधन मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवरी 1960 योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह रासा के र बांटिया। २०२२ प्रकाशित रचना - समिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैगजीन)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता- पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढ़ी राज्य-बिहार पिन-843302*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'-शीघ्र दर्शन



योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

शीघ्र दर्शन

पृथ्वी पर एक लोकनि द्वारा बनाओल भगवानक घर, अर्थात् मठ-मन्दिर, मे भगवानक दर्शन कठिन भऽ जाइत छैक। दर्शनार्थी लोकनिक भीड़क कारणे मन्दिरक व्यवस्थापक सब भगवान कँ कोठा धरा मे बन्द कऽ कए राखि देने छथि आ दर्शनार्थी कँ भगवानक अधिक दर्शन लेल कोठा घंटाक कष्ट सहैत ठाढ़ बनाओल लाइन मे लागि चलए पड़ैत छैक। कोनो लाइन कोनकटा होइक आ कोनो घंटाक बाद भगवानक दर्शन होएत से निश्चित करैत छैक ओहि मठ-मन्दिरक प्रसिद्धि पर। भगवान ओतहि, नुप एक, बुझू मूर्तिओ मे बहुत

बेसी अन्हार नहि भेल छल मठ-मन्दिर मे अपन हुनकर दर्शन करैत छी तहि पर निर्भर करत ओ लाइन कतेक रहत आ कतेक लग सँ हुनकर दर्शन होएत।

सब गाम मे एकटा शिव मन्दिर रहैत छैक, जतए ग्रामीण लोकनि भोर सँ पूजा-पाठ करैत छथि, शिवलिङ्ग पर अपन श्रद्धा भरि जल ढारैत छथि, हुनका पँजिआबैत छथि, अपन गीत-प्रार्थना सुनबैत छथि, किओ टोकनिहार नहि ओ जल्दी करु, हटि जाउ आदि। तहिना गामक भगवती मन्दिर मे घंटाक घंटा बैसल रहु, पाठ करु, किया नहि टोकत। एकर विपरीत देखि लियौक भला बैद्यनाथ धाम मे, काशी विश्वनाथक मन्दिर मे, सोमनाथ मन्दिर मे, वैष्णो देवी मन्दिर मे, कामाख्या मन्दिर मे आ अन्य तथाकथित प्रसिद्ध मन्दिर सब मे। मन्दिरक प्रसिद्धिए अबैत छैक ओतए दर्शनार्थी लोकनिक भीड़ सँ आ कि एहि प्रचारित कथ्य सँ ओ फलाँ मन्दिर मे पूजा-अर्चना अथवा दर्शन कला सँ मनोवाञ्छित फल भेटैत छैक।

अपना देश मे तिरुपतिक पठार मे तिरुमल पहाड़ी पर अवस्थित भगवान वेङ्कटेश्वरक मन्दिर दर्शनार्थीक भीड़क लेखें विश्व मे सबसँ प्रसिद्ध अछि जतए दर्शन लेल साधारणतः आठ-दश घंटा लाइन मे लागब जरूरी छैक। एही कारण यद्यपि आन सब तीर्थ भेल (गेल छल, हम ओतए जेबा सँ परहेज करैत छलहुँ मुदा भगवान जखन जिद कऽ कए बजा लेलनि तखन अपन कोन उपाय? मान्यता छैक जे कोना देवी-देवता जखन भक्त कँ बजबैत छथिन तखन लोकक

एखन ओहि मन्दिर दिस ठाढ़ छैक आ हुनक आशीर्वादक फलस्वरूप यात्राक सबटा कष्ट कटैत जाइत छैक।

भगवान वेङ्कटेश्वरक इच्छा आ बंगलोर मे रहैत कर्नाटक राज्य पर्यटन विकास प्राधिकरणक 'शीघ्र दर्शन' बला आकर्षक विशेष पैकेज। तिरुपति बालाजीक दर्शन आ सेहो शीघ्र ! पैकेज मे वर्णित समयानुसार मात्र तीन घंटाक भीतर दर्शनक आश्वासन। जेना बुझियौ कोनो वरदान भेटऽ बला हाइक आ कि कोनो जैकपॉटक निश्चित टिकट रहए। एहि बेर हम दुनू प्राणी हुनक दर्शन करबाक लेल तैयार भैए गेलहुँ। बंगलोर सँ राति मे बस चलैत छैक, अहलभोर तिरुपति पहुँचि जाइत छैक, एकटा होटल मे पहिनहि सँ व्यवस्था कएल रहैत छैक। एक-दू घंटा मे नित्यक्रिया सँ निवृत्त भऽ कए जलपान कऽ लैत अछि लोक। तखन पहिने तिरुपतिए मे अवस्थित माता पद्मावती (जे दक्षिण भारत मे भगवान बालाजी अर्थात् विष्णुक प्रिया लक्ष्मीक रूप छथिन) क मन्दिर मे दर्शन करैत अछि। तखन तिरुमल पहाड़ी जा कए भगवान बालाजीक दर्शन करैत घुरि अबैत अछि, रस्ता मे दिनक भोजन सेहो भेटैत छैक आ प्रायः आठ बजे साँझ तक बंगलोर घुरि अबैत अछि। पैकेज मे शीघ्र दर्शनक लेल 300 टाकाक विशेष टिकट आ गाइडक सुविधा सेहो सम्मिलित छैक।

बस बस। भगवान बालाजी कँ हृदय मे राखि पैकेज क दूटा टिकट कटा लेल। 11 अक्टूबर 2022 कँ राति मे बंगलोर सँ बस सँ विदा भेलहुँ। बस बुझु दुइए बजे राति मे तिरुपति पहुँचि गेलैक। होटल

शहरक बाहर रस्ताक कात मे छलैक। सब गोटे उतरि कऽ अपन अपन रूमक चाबी लऽ गेलहुँ। होटल ठीकठाक, जकरा निम्न मध्यवर्गीय बजट होटल कहल जाइत छैक, कमरा मे साफ सफाइ मे कोनो शिकाइति नहि, उज्जर तौलिया, दूटा साबुनक टिकिया, गरम पानिक गीजर आदि सब किछु, दूटा कुर्सी आ एकटा छोट टेबुल पर्यन्त।

ठीक चारि बजे टुर गाइड सब कमरा मे केबाड़ ठकठका देलखिन। बाहर निकलि देखल जे बेसी लोक पहिनहि सँ जलपान करैत। जलपान शुद्ध दक्षिण भारतीय स्टाइल मे भरि यथा मारका उत्तपम, इडली, वड़ा, उपमा, पोंगल आदि चटनी साम्भरक संग सब किछु। लोक प्रायः सब किछु खेलक। हमरा ओतेक भोर जलपान करबाक इच्छा नहि भेल, श्रीमतीजी अपन रुचि सँ किछु खेलनि, चाह पीबि सब गोटे बस मे बैसलहुँ। बस शहर दिस विदा भेल।

हमसब पहुँचलहुँ पद्मनाभ मन्दिर। उतरिते देखल थलकमलक गुच्छा लेने लोक सब ठाढ़, सब केँ बजबैत पकड़ैत, पचास टाका दाम। पहिने एकटा महिला कर्पूरक पैकेट सेहो धरा देलनि, ओहो पचास टाका। अपन सौ टाका उड़ि गेल। तकर बाद देखल सूचना जे पैंट पहिरि दर्शन वर्जित, शुद्ध भारतीय पोशाक चाही। ओतहि दोकान मे विभिन्न दामक लुंगी भेटैत, अढ़ाइ सौ मे एकटा कीनल आ पैंटक उपर लपेटि लेल। वाह रे व्यवहार ! लुंगी बेचनिहारक धंधा भेलैक कि देवी-देवता केँ ठकनाइ? अस्तु, एहि सब मे तर्क क अवसर नहि भेटैत छैक। मन्दिर प्रशासन कानून बना देलकैक, मानए

पड़त। गाड़ीक नम्बर बता देलनि आ कहलनि जे घुमला पर पीला नम्बर गेट सँ बाहर निकलि जाएब तऽ बस ठाढ़ि भेटत।

मन्दिर मे प्रवेशक लेल 25 टकाक टिकट लेबए पड़ैत छलैक। कैमरा बाहर नहि, टिकट लेल कैमरा पैघ लाइन नहि छलैक। टिकट लेलहुँ आ लाइन मे लागि गेलहुँ। लाइन बड़का पैघ तऽ नहि मुदा पचास व्यक्ति तऽ हमरा बस कऽ छलाह। एहन किछु आन बस आएल छलैक। धुसकैत रहलहुँ। करीब दू घंटाक बाद एकटा प्रतीक्षालय मे बैसा देल गेल। देखल करीब पाँचसौ लोकक बैसक लेल चलब स्टेनलेसक [illegible] बला कुर्सी लगाओल। साधारण घेरा आ एकटा गेट। एहन छओटा प्रतीक्षालय अगल-बगल बनल। मन्दिर प्रशासनक सिपाही सब एकटा प्रतीक्षालयक गेट खालि करीब पच्चीस-बीस मिनट चुकि जाइत छलाह तखन दोसर क गेट खोलैत छलाह। भीड़ कँ कन्ट्रोल करबाक लेल उत्तम उपाय।

किछु प्रतीक्षाक बाद हमरा सब क नम्बर आबिए गेल, चलैत गेलहुँ, दक्षिण भारतीय मन्दिरक रीतिक अनुसार एतहु दूर सँ दर्शन करबाक छल, तहिना कएल। हाथक थलकमल एक [illegible] सब जमा करैत छलैक, हमहुँ सब ओतहि राखि देलियैक, कर्पूर आगि मे देलियैक आ आयस आबि गेलहुँ। एन पीला नम्बर गेट तक अबै मे आ बस तकै मे किछु समय तऽ लगब कएल मुदा आन लोक सब तऽ आबा निश्चिन्त छलथि। हमरा सबहिक पहुँचलाक बाद करीब आरो पच्चीस-बीस मिनट लगलैक बसक सब यात्री कँ जमा करबा मे, तखन बस विदा भेल तिरूमल पहाड़ी दिस।

पूरा नक्शा तिरुपति शहर कें देखैत जा रहल छलहुँ। मात्र एकटा जिला स्तरक शहरक हिसाबें जगह बहुत विस्तृत आ साफ-सुथरा। बिहारक कोनो शहर सँ तुलना करब व्यर्थ। बस मे सब गोटे कें गाइड महोदय शीघ्र दर्शन बला टिकट बाँटि देलखिन आ बर बर चेता देलखिन जे बिना परिचय पत्र के मन्दिर मे प्रवेश नहि होएत। करीब चालीस मिनट बाद हम सब पहुँचलहुँ तिरुमल पहाड़ीक नीचा अलिपिरि ट्रान्जिट बस स्टैण्ड, जतए आन्ध्र प्रदेश राज्य परिवहन के अपन बस लागल छलैक। कहल गेल जे अपन जरूरी सामानटा लऽ लैत जाउ, बाकी बंगलोर सँ आएल ओही बस मे छोड़ि देबाक अछि, ई बस नीचे मे रहतैक, पहाड़ी पर जेबाक लेल आन्ध्र प्रदेश राज्य परिवहनक स्थानीय बस लेबए पड़त। ई स्थानीय बस यात्रीक लेल ऊपर-नीचा करैत रहैत छैक राति दिन तँ ओहि मे कोनो सामान नहि छोड़बाक छैक।

सएह करैत गेलहुँ, शीघ्र दर्शन मे किछुए घंटाक तऽ बात छलैक, लोक कतेक सामान लेत? पानिक बोतल जरूर राखि लेल संग मे। स्थानीय बस सँ कनि आगू गेलाक बाद एकटा चेकपोस्ट पर उतरए पड़ल, एतए सामानक एक्सरे जाँचक संग सिपाही लोकनि द्वारा लोकक शरीरक जाँच कएल गेलैक जहिना हवाइ अड्डा पर होइत छैक। तकर बाद ओहि कात जाकए फेर बस मे सवार होइत गेलहुँ। करीब पौन घंटाक बाद हम सब बालाजी मन्दिर परिसर मे बस अड्डा पहुँचलहुँ। एतए एकटा शॉपिंग काम्प्लेक्स छलैक जतए तीर्थयात्री लोकनिक लेल सनसवानीक सामान रहैत आ किछु भोजनालय सेहो। पैघ गाछ सब के चारू कात सीमेंटक चबूतरा

बनाओल। एतहि एकटा दोकान मे हमरा लोकनि जूता-चप्पल आ मोबाइल जमा करबाक व्यवस्था कएल गेल। एकर बाद अगिला किछु घंटा धरि पएर चलबाक छल। मोबाइल नहि रहला सँ आब फोटो सेहो नहि लऽ सकैत छलहुँ। मन्दिर मे मोबाइल, कैमरा आदि निषिद्ध छैक।

एखन करीब सात बाजल छलैक। गाइड महोदय एतबा कहि जे प्रायः एक घंटा प्रतीक्षा करए पड़त हमरा लोकनि कें छोड़ि कतहु निपत्ता भऽ गेलाह। टूर पैकेजक प्रोग्राम मे दर्शन लेल निर्धारित समय छल आठ बजे सँ एगारह बजे धरि। मुदा लोक कें कोनो हड़बड़ी नहि छलैक। लोक सब अपन अपन गप्प लगा लेलक आ बैसि गेल। बैसल बैसल किछु गप्प करबाक छलैक से अपन अपन रुचिक अनुसार चाह-काफी पीबऽ लागल। हम आब पैंट खोलि अपन नव लुंगी कें नीक जकाँ पहिरि लेलहुँ। जखन शुद्ध स्थानीय ड्रेसक नियम एतहु छलैक तखन किएक अनेरे पैंटक उपर डोरा लपेटने रहितहुँ? करीब आठ बजे हमहुँ जलपान कऽ लेलहुँ आ प्रतीक्षा करैत रहलहुँ।

करीब साढ़े आठ बजे गाइड महोदय उपस्थित भेलाह आ हमरा सब कें पद्मनाभस्वामी मन्दिर चलबाक लेल कहलनि। मान्यता छैक जे तिरुमल देवस्थान मे भगवान वेंकटेश्वरक दर्शन सँ पहिने भगवान पद्मनाभस्वामीक दर्शन करबाक चाही तखन वेंकटेश्वर भगवानक दर्शन सुफल होइत छैक। रस्ता मे ओ किछु बातो जे रहल छलखिन मुदा मात्र कन्नड भाषा मे। बस मे ओ अंग्रेजी, हिन्दी सब बजैत

छलाह मुदा एखन बिसरि गेलाह जे कन्नड़ नहि बुझनिहार तीर्थयात्री सेहो बस मे छलखिन। अस्तु, हुनका पाछू पाछू चलैत हम सब लाइन मे लागि गेलहुँ। ओतऽ गाइड अलग भऽ गेलाह। भीड़ बहुत बेसी तऽ नहि तैयो मन्दिर तक घुसै मे आ दर्शन करै मे प्राय: आधा घंटा लागिए गेल। एकरा समयक सदुपयोग सेहो कहल जा सकैत छैक।

ओतऽ सँ बिदा भेलहुँ मन्दिर परिसरक एकटा कक्षं जाहि मे देखल प्रसाद बला लड्डुक शीलक खाली डब्बा क ढेर लागल। प्राय: एक मीटर लम्बा आ आधा मीटर चौड़ा डब्बा कतेक छल से कहब कठिन, तैयो हजार सँ ऊपर रहल हेतैक। एहि सब दर्शनीय वस्तु कँ देखैत पहुँचलहुँ ओहि गेट लग जाहि सँ शीघ्र दर्शनक टिकटधारी लोकनि प्रवेश करैथि। ओतऽ बस भीड़। शीघ्र दर्शनक टिकट मात्र हमरे सबहिक बसक यात्री लग तऽ नहि न छलनि, ओहुना अनका पर्यटन कम्पनी कतेको बस भरि कऽ तीर्थयात्री सबकँ अनने छल आ सबहिक संग ओ तीनसौ टाकाक टिकट छलनि। ओतबे नहि, बहुत चालू लोक अपनहि इन्टरनेट सँ शीघ्र दर्शनक टिकट कटौने छलाह सेहो ओहि प्रवेश करबाक लेल आबि गेल छलाह। लगैत छल आब फोकटिया दर्शन करनिहार कम संख्या मे हेताह, आ 300 टाका क शीघ्र दर्शन करनिहार बेसी। आजुक परिस्थिति मे 300 टाका बहुत बेसी नहिए हेतैक।

स्थिति कँ देखैत जकरा जाए ठऽर लगलैक, बाट धयलक। कतेक काल लोक ठाढ़ रहत? आ एखन तऽ असली लाइन बाँकिये

छलैक। ओतए गार्ड महोदय बेर बेर भीतर गेट पर सुरक्षा कर्मचारी सबकेँ जिज्ञासा करथिन गेट खोलबाक समय लेल, मुदा ने हुनका कोनो समुचित उत्तर भेटनि आ ने हमरा लोकनि बुझि पाबी जे अगिला खेला कखन शुरू होएत। टूरक प्रोग्रामक हिसाबेँ समय बीतल जा रहल छलैक, आठ बजे सँ एगारह बजे क बीच दर्शन होबाक छलैक मुदा ओतए साढ़े नओ बजे गेटो खोलबाक कोनो सुरसार नहि। आ एहि गेट सँ कतेक दूर पर भगवान छथि से अज्ञात।

अन्त मे करीब पौने दस बजे गेट खुजलै आ लोकक भीड़ भीतर मे ढुकि गेल। एखन तँ लोक सड़क पर छल। जकरा जेना सक्क छलैक तेना तेजी सँ चलि रहल छल। हम सब अपनहि रंगेँ चलैत रहलहुँ। सड़क पर लोक बिना कोनो पाँती बनौने जहि-तहि चलि रहल छल। पाँती बनबैक कोनो इन्तजाम सेहो नहि देखा रहल छलैक। आब हमरा सबहक बस क यात्री लोकनि छिड़िया गेल छलाह। ई कने चिन्ताक विषय छल मुदा पचास गोटे कँ संग बान्हि कऽ राखब सेहो सम्भव नहि छलैक, ताहू मे सब उमेरक लोक, नवयुवक, नवयुवती सँ लऽ कऽ हमरहु सँ उमेरगर व्यक्ति सब बस मे छलाह। प्राय: सात-आठ मिनट चललाक बाद एक ठाम रेलिङ्ग बनल छलैक जाहि मे लोक ढुकि रहल छल। ओतए कोनो सुरक्षा कर्मचारी नहि, भीड़ बेसी आ धक्कामुक्की सेहो। अपना देश मे भीड़ मे अनुशासन राखब असम्भव होइत छैक। एक बेर तँ बुझाएल जे भीड़क रेला मे खसि पड़ब। मुदा कहुना दुनू गोटे अपना कँ सम्हारलहुँ। तकर बाद तँ भीड़क संग चलैत रहलहुँ।

गति साधारण, बस एकाध किलोमीटर प्रति घंटाक हिसाबें। आगू बसाएल ते कतेक ठाम दू दिस सँ अबैत लोकन एक होइत छलैक। एहेन स्थल पर हेन धक्कामुक्की होइत जाइत छलैक। नक्षा सब पाँत घुमावदार ते किछु बुझब कठिन कि कतेकटा लोकन छलैक। खुला जगह मे सड़कक कात यदि एहन लोकन नहि रहैक तऽ लोक कहिया सकैत छलैक जे दू किलोमीटर कि तीन किलोमीटर लम्बा लोकन छैक मुदा एतए आगू कि पाछू अहाँ मात्र पचीस-पचास फूट तक देखि सकैत छलियैक। बीच मे कतहु लोकन नुकिया जाइत छलैक। प्रायः आधा घंटा चललाक बाद ते ऽऽलाका सब आएल जहि मे जगह जगह शौचालयक व्यवस्था बनल। लोक लोकन छाडि कए आवश्यकता होला पर शौचालय जा सकैत छल मुदा जगहक पछुआ जेब कठिन।

बीच-बीच मे कतहु सँ शासन लोकनक मल हऽ जाइत छलैक आ हेन धक्कामुक्की शुरु। अपन संगी कँ संग राखब एहन समय मे कठिन होइत छलैक, खास कऽ कए बयसाहु लोकक लेल। गोटेक घंटा चललाक बाद देखल कतहु कतहु ऽऽमर्जेन्सी गेट बनल। एक व्यक्ति कँ बच्चा तक न कानऽ लगलनि ते हुनका ओहि गेटक व्यवहार करहिं पड़लनि बहराबाक लेल। कतेक बानह बड हम सब पहुँचलहुँ जहि ऽऽलाका मे जाए कुर्सी बला प्रतीक्षालय सब बनल छलैक। कुर्सीक व्यवस्था जहिना जना स्थान मे पश्चात्मी मध्हिन मे देखल छलियैक मुदा अन्दर ऽऽी ते हॉल बस येघ आ उपर सँ नीचा तक सीढ़ीक जुथम गोलनीनुमा बनाबट। हॉल मे टीवी पर □नलोकन दर्शनक दृश्य चलैत। गर्भगृह मे पूजागनी लोकनि पूजाया0

ओ दृश्य आ तकरा नजदीक सँ देखबाक अवसर ओहि टीवी पर्दा पर छलैक। ध्वनि मुदा बन्द कएल छलैक।

लोक ततेक ने थाकि गेल छल जे दर्शन मे होइत देरी कें गमित। कुर्सी पर बैसि रहल। जकरा जगह नहि भेटलैक से सीढ़ी सब पर छिड़िया गेल। कतेको व्यक्ति बिस्कुट, भुजा आदि निकालि उदरस्थ करए लागल जे आगुक यात्रा लेल ऊर्जा भेटैक। थाकल रहला सँ किछु कें निन्न सेहो लागि गेलैक। हॉल मे हम सब गैलरीक ऊँचका भाग सँ प्रवेश कएने छलहुँ। नीचा हॉलक बाहर दासन कात दर्शनार्थी लोकनि मन्दिर दिस चल जा रहल छलाह। कतेक पैघ लाइन तकर कोनो अनुमान नहि। लोक कें लगै जे अगिला मिनट मे ई लाइन शेष होएत आ हमरा लोकनिक नम्बर आओत मुदा से होइ नहि।

एहि हॉल मे हमरा लोकनि करीब पैंतालीस मिनट तक रुकलहुँ। तकर बाद हम नीचा बला लाइन मे लागि घुसकए लगलहुँ। किछु कालक पश्चात एक ठाम देखल प्रवेशपत्र चेक करबाक काउन्टर सब बनल। एतए लाइन काउन्टरक हिसाबें बँटि गेल। काउन्टर पर काज बहुत मन्थर गतिएँ भऽ रहल छलैक। एहि लाइन मे हमरा बसक किछु यात्री लोकनि भेटि गेलाह। आश्वस्त भेलहुँ जे बस हमरा सब कें छोड़ि कए जाएत नहि।

करीब एक बजे हम सब काउन्टर पर पहुँचि अपन आधारकार्ड देखाओल। ओकरा टिकट मे देल विवरण सँ मिलाओल गेल आ

एखनहि आगू बढ़बाक अनुमति भेटल। ओखनहु भगवान बालाजी दूर छलाह। घुसकैत रहलहुँ। आब हम सब छिड़िया गेल आ बसक यात्री सब सँ सम्पर्क टूटि गेल। जतए मन्दिरक मुख्य स्थान छलैक ओतए हम नाकि दल गेल। एकटा गेट, भीतर गेनिहार आ बाहर एनिहार दुनू लेल। किछु किछु मे लोक कँ दुनू दिस ठाढ़ल जाइत छलैक। कहुना करीब पौने दु बजे हमसब अन्ततः गर्भगृहक सामने पहुँचलहुँ जतए सँ दिव्य मूर्तिक दर्शन होइत छलैक। सामने भगवानक मूर्ति देखि लोक कँ सब मनोकामनाक पूर्ति भेल जाइत छैक। "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" मंत्रोच्चारणक संग माथ झुका हुनका प्रणाम कएल। एतेक काल एक लाइन मे घुसकैत रहबाक फल भेटल।

लोक कँ एतए किछुए सेकेण्ड रुकबाक अनुमति, किन्तु जेना सुनने छलियैक जे लाइन मे घुसकैत लोक अधिक दर्शन सुख पबैत अछि आ जाहि एतहुक व्यवस्था सँ हम कलकत्तिया सब दक्षिणेश्वर कालीक मन्दिर मे पूर्ण परिचित छी, से नहि छलैक। लोक लाइन मे नहि छल, एक दोसरा कँ धक्का सेहो नहि दैत छल, एं कोनो स्वयंसेवक सब बाजथु, लोक एहि कात ओहि कात भऽ कए दर्शन सुख प्राप्त करबाक प्रयास करैत छल। लोक थेथर, एतेक कष्ट सँ एऽ लोक जिनगी मे एक बेर एतए पहुँचैत अछि, शीघ्र दर्शनक व्यवस्था रहितहुँ कतेक घंटा लाइन मे लागल रहल, एखन कोना किछु सेकेण्ड मे दर्शन सुख छाड़ि दिअए? हमहुँ दुनू गोटे कहुना जतेक सम्भव भेल अपन मानचा सम्हारैत रहलहुँ। ई व्यवस्था परिवर्तन मात्र आइक लेल हमरा सबहिक समय भेल छलैक आकि आब एहिना रहैत

ठीक स कहब कठिन। हम ककरा एकरा मादे किएक पूछबैक? किन्तु एतेक तऽ निश्चित जे जहिना बहुत आन तीर्थस्थल मे हमरा संग होइत रहल अछि, एतहु भगवान बालाजीक विशेष कृपा भेल गेल आ दर्शन सुख प्राय: आधा मिनट तक भेटल। हम मान मानि कए भगवान वेङ्कटेश्वर कें हृदय मे ध्यान धेने "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" क जाप करैत संग हुण्डीक बाट धेलहुँ। मन्दिर प्राङ्गण क हुण्डी बला रस्ता मे एक ठाम मन्दिरक एकटा कर्मचारी लड्डू प्रसाद बँटैत, ओ लड्डू एतुका प्रसिद्ध लड्डू सँ बहुत छोट, बूझू गामक दोकान क पँचटकहिया लड्डूक आकार, किन्तु स्वादु एक। एहि प्रसाद कें उदरस्थ कएल।

हुण्डी मे गेटसँ बहराएब सहज आसान नहि छल, कारण बूझिए गेल छिऐक गेट एकटा। हुण्डी बला लोक लाइन मे सहज नहि लागए चाहैत छल। न कोनो बाधा छलैक आ न कोनो व्यवस्था। मात्र गेट लग रस्सीक ढाठ दूटा स्वयंसेवक पकड़ने। एना मे जे होबाक छलैक स भेब कलै, जखन रस्सी उठाओल गेलैक लोक बाहल पानिक धार जकाँ बेहिसाब जान मारलकै आ एकटा महिला खसिए पड़लीह। संयोग जे ओ कात मे छलीह आ हुनक आत्मीय सब तुरन्त हुनका सम्हारि लेलकनि नहि तऽ पैघ दुर्घटना भऽ सकैत छलैक।

गेटक बाहर निकलि कए गेलहुँ असली लड्डू प्रसाद लेबाक लेल। शीघ्र दर्शनक टिकट मे एकटा लड्डू सामिल छलैक। टिकट देखाउ, लड्डू लिअऽ। अतिरिक्त लड्डू लेल पचास रूपैयाक हिसाबें

अधिनिक गुणगान करियौक। काउन्टर कर्मचारी बस दऽ, ड्रम सँ लड्डू निकालि लोक कें देबा मे न्यूनतम समय लगबैत। एतऽ लड्डुक ड्रम सब एक के उपर एक गेंटि कऽ राखल। जखन एकटा ड्रम खाली भेल, उठा कऽ नीचा राखि देलक, ओकर नीचा बला ड्रम सँ बाँटऽ लागल।

हजारो खाली ड्रम, जाहि मे लड्डू बनैत छल होयत, से गऽ देखिए लेने छलियैक, लड्डू वितरण व्यवस्था देखि ओहुका व्यवस्थापक लोकनिक प्रशंसा करने बिना कियो नहि नहि सकैत अछि। येह हॉल मे करीब तीसटा काउन्टर बनल। तेँ सब काउन्टर पर दस-पन्द्रह लोकक लाइन लागल छलैक। प्राय: एक मिनट लोक कें लगैत छलैक अपन कूपन देखबा मे, अधिनिक लड्डुक पैसा देबा मे आ अपन लड्डू उठएबा मे। हमरा सब कें लाइन मे करीब पन्द्रह मिनट लागिए गेल मुदा शीघ्र दर्शनक चारि घंटाक तुलना मे ई किछु नहि छलैक।

भगवान बालाजीक दर्शन भेल, प्रसाद भेटल, आब ई गोड़ बाग भेल जे एगारह बजक बदला दू बाजि गेल छलैक। एही दर्शन लेल लोक दिनक दिन एतए लाइन मे ठाढ़ रहैत अछि, सुति पर्यन्त रहैत अछि। तकर बाद घुमनीक दर्शन महत्वहीन भऽ जाइत छैक। नहस्य नामांव सहो नहि। मात्र अपन जगह, जाएऽ ड्राफा-चप्पल आ मोबाइल राखल छल, तकबाक क्रम मे लोक कें जिज्ञासा करबा मे होबाक समस्या बूझाएल। जना विश्वप्रसिद्ध तीर्थस्थल छैक तना सबहिं हिन्दी अंग्रेजी बूझनिहार लोक नहि। बल्कि पुलिस सहो

तेलुगु छाड़ि आन भाषा नहि बुझैत। इशारा सँ जगहक दर्शन करैत काज चलाओल। रौद तिक्ख भऽ गेल छलैक आ एतक काल खुला पएर चलैत आब हमर धर्मपत्नीक तरवा मे कष्ट होमए लागल छलनि। हराइत भोतिआइत कहुना हुनका सम्हारैत ओहि अड्डा पर पहुँचिए गेलहुँ जाए भोर मे बस सँ उतरि झोरा रखने छलिऐक।

एतए पहुँचि पहिने तऽ दोकान सँ मोबाइल लेल। ओ लाला हाथ मे अबिते आश्वस्त भेलहुँ जे आब बस छुटियो जाएत तऽ कहुना बंगलोर पहुँचिए जाएब आ सामान तऽ बंगलोर मे बस तिया सँ लेल जा सकैत छलैक। मोन भेल होटल मे भोजन कऽ ली। बेरा भऽ गेल छलैक, भूख लागि गेल छल किन्तु सहयात्री लोकनि कहलनि जे भोजनक इन्तजाम टूर पैकेज मे छैक आ देर-सबेर भेटब करत। अस्तु, मोन मारि कए भोजनक विचार छोड़ि देल। लोक एतए अपना हिसाबें सनेसबारी किनैत गेल।

एकटा फोटोग्राफर कहलनि फोटो खिचबा लै लेल। सभ एतए फोटो तऽ भेल नहिए। अपना कैमरा सँ मन्दिरक फोटो आ कि कोनो सेल्फी आदि असम्भव छल। तखन ओ फोटोग्राफर हमरा दुनूक फोटो लेलनि, कम्प्यूटर मे मन्दिरक विस्तृत पृष्ठभूमि के चित्र पर ओकरा फोटोशॉप द्वारा जोड़ैत हमरा एकटा तथाकथित फोटो बना देलनि। एतुका इएह सबूत आ पैघ सनेस।

किछु प्रतीक्षाक उपरान्त बस विदा भेल, तीवा (गेला यन अयन वंगलाग वला बस म सवार भेलहुँ। यद्यपि बहुत दूरी भs (गेल छलैक तथापि दिनुका भोजन क व्यवस्था उड़ी स्टेल म कएल छल जाए भोजना म नूकल छलहुँ आ जलपान कए छलहुँ। साढ़े चारि बजे भोजन कयो (गेलहुँ। शीघ्र दर्शन बहुत शीघ्र तs नहि भेल, तथापि भगवान बालाजीक ख्याति कँ देखैत दु-तीन घंटा दस-सवन काना पैघ बात नहिए कहल जायत। शीघ्र दर्शन शब्द तएक आकर्षक छलैक जे हमरा सन अनेकी कँ बालाजीक दर्शन म पहुँचाएब दलक। कए बसी समय तक गुरुल नहेए पड़ल आ किछु कए थाकि (गेलहुँ, तएव कष्ट। उपलब्धिक आगू ई सभ तुच्छ छल। कहल जाइत छैक जे तीर्थस्थान म कष्ट भेल यन कहल भेटैत छैक।

घनमूहाँ बसा घनमूहाँ बनद जकाँ कए तज चलब कयो छैक। कनीव दस बजे नाति म वंगलाग पहुँचि (गेलहुँ। शीघ्र दर्शन यात्रा समाप्त भेल।

-सम्पर्क- ब्लॉक 8, फ्लैट 2बी, डायमन्ड सिटी नॉर्थ, कोलकाता 700055, मोबाइल 9831037532

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खंड-१३)

निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (भाग- १३)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम् ए, नैहर - खराजपुर,दरभङ्गा, सासुर - गोढ़ियारी (बलहा), वर्त्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँऽ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।
मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण अग्नि शिखा (भाग - १३)

पूर्व कथा: दानव राज केशि सँऽ पराजित इन्द्र के देवर्षि नारद राजा पुरुरवाक वीरता के संबंध मे जानकारी देने छथि एवम हुनका सँऽ सहायता मंगबाक निर्देश देने छथि ।

आब आगू:

देवर्षि नारदक अमृत वृष्टि सन मधुर वाणी वायुमंडल मे गूँजि रहल

छल,ओतय ॐ समय उपस्थित सएह देवगण,अप्सरा गण कर्ण-गन्धर्व क मार्ग सँ प्रविष्ट होमयवला ध्वनि अमृत वर्षा जकाँ मधुर आवाज क पूर्ण गंभीरता सँ ध्यान मग्न होइत अपन मस्तिष्क समय हृदय म स्थान दऽ रहल छलाह-

"एहि समय सूर्यमंडल पर साता द्वीपक अधिपति सम्राट पूनूनवा छथि । ओ पूनूनवा ज वंश वंशक मणि छथि । हुनक पराक्रम क समक्ष काना अन्य नरेश्वर नहि ठाढ़ रऽ पाओल। हुनक महती शक्ति सँ दानवनाग काशि क सामना पूर्वहि म रऽ चुकल अछि । ओ मार्ग म उगल भान सन अपन सएह कँ करैत गेलथि आ काशि क पराजित कऽ देलाह । काशि हुनका सऽ रयरीत पाताल लोक म ओहन न नुकायल कि रहन ओ कहिया पृथ्वी दिस ताकहु क हिम्मत नहि कलक।

पूनूनवा स्वयं सएह नरेश्वर क शासन संचालनक शिखा देल । आब पृथ्वी पर काना देश ओहन नहि छैक जकर प्रजा निर्धन होय । अराजकता क नामोनिशान नहि छैक। सएह दिशा म शांति क साम्राज्य स्थापित अछि ! अमन चैन क वंशी बजैत अछि । ॐ सब पूनूनवाक दूरदृष्टि आ समझदारी सऽ रहल अछि । ओ एक सय आठ अश्वमेध यज्ञ कलथि । कतेका आन आन आन यज्ञ ओ कलथि । किंवा ओ चाहितथि तऽ स्वर्गक सत्ता पर्यंत अपन बाहुबल सऽ उधा मात्र म पलटि दितथि,मुदा ओ सूर्यमंडल क शासन सँ सन्तुष्ट छथि । पूर्व जन्मक तपस्या क कारण ओ तऽ स्वयं महा प्रतापी छलाह,तदापि ओ एहि जन्म म अपन घोर तपस्या सँ भगवान विष्णु क प्रसन्न कऽ ललनि । एकर कारण हुनका ओहन अपरिमित शौर्य आ बाहुबल प्राप्त भेलनि कि आहां सन सहस्रां क असगर दम

ओ दृ-लुण्ठित कs सकैत छथि । ओ अत्यन्त सुन्दर छथि । हुनक सौंदर्य के समक्ष स्वयं कामदेव अपना के हीन बुझि लज्जित रहैत छथि । हुनक समतुल्य सौंदर्यमयी नारी पृथ्वी पर नहि रहलीह,जाहि कारण ओ एखन धरि अविवाहित नहि ब्रह्मचारी बनल छथि । ब्रह्मचर्यक प्रताप हुनक तेज संs संयुक्त भs हुनका त्रिलोक मे अद्वितीय बना देलक । आकाश-गंगा पर्यंत पाताल-लोक मे हुनक यशो गान करैत अछि ।

सुनलहुँ किछुए दिन पूर्व दानवराज बलि अपन पुत्री स्वर्णरेखाक विवाहक प्रस्ताव लs स्वयं हुनका समक्ष गेल छल एवं पुरुरवा ओहि प्रस्ताव के अस्वीकृत कs देलथि । दानवराज बलि ओहि प्रस्ताव के द्वारा पुरुरवा के अपन पक्ष मे करबा हेतु प्रयत्नशील छल ,एवं पुरुरवा ओकर प्रस्ताव के अस्वीकृत कs ओ संभावना समाप्त कलह्नि । कतिक साधु देवेन्द्र ! कहीं ई राजा पुरुरवा ओकर प्रस्ताव स्वीकृत कs लेत रहितथि तखन स्थिति कतेक भयंकर होइत ? ई बात तs अहूँ के बुझाइत होयत कि पुरुरवा यदि ओकर सहयोगी भs जइतथि,तखनि त्रिभुवनक अधिपति बनबा मे हुनका कनियो विलम्ब होयतनि । एवं हुनका स्वर्गक अधिपति बनबाक लालसा नहि छनि। आ हुनक सौम्य चरित्र हुनका दानवराजक कोनहु प्रकारक सहयोग करबा संs दूर रखलक। राजा पुरुरवा के शारीरिक सुंदरता,हुनक गुण आ पराक्रमक दर्शन कराइत हमर सामर्थ्य संs बाहर के बात अछि। ताहि संs एखनहि मे आहाँ संतोष करू । हुँs हमर अनुरोध नहि आज्ञा अछि कि आहाँ पुरुरवा संs सहायताक याचना करू, जहि संs आहाँक प्रभुता पुनः आहाँ के प्राप्त होयत । दानव राज बलि के हस्तगत स्वर्ग लोक संs समाप्त

रऽ जाॶा। "

ॐछ्र दनर्षि नानदक वाग सँऽ अर्थंग प्रसन्न रऽ (गलाह। ह्नक चिंगा मटि (गलनि ओ उचिग अनसन यन नानद क मार्गदर्शन सँऽ संगाष व्यक्त कयलथि। मृनिनन नानद क अर्यर्थना कनैग ओ कहलथि

-

" अयनक आस्ना शिनाधार्य अछि दनर्षि हम ओखनहि सूसन क ह्नाना ह्नका दानन क सँग दनगाक यृद्व म ह्नक सहायगाक यावना हगु आमंत्रण यत्र यठनैग छी। "

"हँऽ ओहि कार्य म शीघ्रगा कनू,आव स्नर्गक प्रगिष्ठा अहिंक हाथ म अछि" - नानद वाजि उठलाह ।

नानद मूनि क मार्गदर्शन म ॐछ्र ओक यत्र यूनूनना क नाम लिखलथि गयश्चाग सूसन क हाथ म ओ यत्र सौंयि ह्नका अनकां प्रकान सँऽ समस्या-वृसाकऽ यूर्ण्ञ यन यठौलथि ओकन वाद ओ दनर्षि नानद सँऽ स्नर्ग लाक म निश्राम कनना हगु आग्रह कनऽ लगलाह यनंच ह्नक आग्रह क दनर्षि नानद अस्नीकृग कऽ दलथि। की किनका आग्रह यन नदीक प्रनाह ठहनल अछि ? चलगि यवन किनका ॐछ्रा यन थस्हल अछि ? सग्यूरुषक कार्य अछि संसान क कल्याण हगु निचनण कनैग नहनाॐ सहिगाक कथन उचिग अछि - 'चनैनगि-चनैनगि' ।

ॐछ्र क प्रसन्न दखि सरट दनगाक मृख यन प्रसन्नगाक नखा यसनि (गल। ह्नकन सवहक मृख दखि वृसाॐग छल किंना ओ सरट ओखनहि दानन गण क यनास्त कऽ आवि (गल हाथि अयन स्नामीक प्रसन्नगा म प्रसन्न रनाॐ,दृ:ख म दृ:खी नहनाॐ ओनं प्रग्यक अनसन यन ह्नकन साथ दनाॐ ! यैह गऽ आश्रिगक यनम

धर्म थिक !

नानद मूनि आयस जयना रुगु उद्यग रुs गेलारु रुनका निदा कनना रुगु किछ दुन गक ॐइ रुनका संग गेलारु, गदूयनांग रुनका दंडनग प्रणाम कनैग रुनका निदा कलथि रुनकन प्रस्थान कला उयनांग ॐइ अयन प्रासाद क दिशा म गमन कलथि ।

अयन कऊ म यहुँचि ॐइ धर्मयत्नी शची क सँग प्रम यूर्ण संलाय म मगन रुs अयन ओक दिनक चिंताक समाधान कनs लगलारु आॐी वहुग दिनक वाद निश्चिंग रुs अयन यत्नी संs प्रमालाय कs नरुल छलारु ॐइ वहुग दिन संs यत्नी शची क रुनक दर्शन नहि रुल छलनि। आॐी रुOग् रुनका अयन ओक निकट दखि शची प्रसन्ना संs उफुल्ल रुल छलीरु ।

चिंता एकटा एहन मानसिक व्याधि थिक ज उयहान स्वनूय शानीनिक दुर्वलगा सहज प्रदान कनैग अछि। मानसिक शांगि नष्ट कs दैग अछि,क्राध क जन्मदाग अछि,वुद्धिक हनण कs लैग अछि, जीवन-चर्या वदलि दैगअछि,आ उन्नगिक मार्ग अवनूद्ध कs अकर्मण्यगाक औषधि यियानैग अछि।

"यूनूनवा" नाम दनग_गणक लल दधीचिक अस्थि क सदृष नाऊसगण संs यनिग्राण रुगु सम्यूर्ण अवलंवन वनि गेल रुनक शौर्य गाथा सुनि दनगागणक रुदय म ॐर्षाग्नि प्रज्वलिग रुल छलनि। मुदा उहि रुदय क एक कान म आशा क दीय प्रज्वलिग छलनि। नाऊसगण संs यनिग्राण प्राप्त कनना रुगु ।

गंधर्व एवं किन्नन यूनूनवाक गुणगान अयन मधून स्वन लहनी म कनs लगलारु रुनक मधून गीग म सँग दमय अप्सनागण आवि गेलीह। घृगाची,गिलाप्तमा,नंगा, मनका, कृगस्थली,यूणजीकस्थल

प्रम्लोचा,अनुम्लोचा,पूर्वचित्ति,सहजन्या, चित्रलेखा अन्यान्य अनेकों अप्सरागण क मुख पर पुरुरवाक नाम छल । किछु ईर्ष्या क संग त' काना-कानी निश्चय क संग पुरुरवाक तुलना क' रहल छलीह । परंच हुनका सबहक मध्य एक गोट एहन अप्सरा छलीह,जे अपन हृदय स्थल क अपन दुनू हाथ सं दाबने सबक रूप दृष्टि सं निरखि रहल छलीह । हुनक मुख पर नहि त' पुरुरवाक नाम छल आ न कोनो प्रसन्नता । ओ किछु-किछु हेरायल बिसरायल सन अपना क अनुभव क' रहल छलीह । बुझाइत छल किंवा पुरुरवाक गुणगान सं हुनका हृदय मे काँट चुभचुभ करै लागल होइक,जे काँटक लहरि सन दर्द पुरुरवाक नाम ल' निकलि लहरि सम पूरा शरीर मे दौड़ैत होइक। ओ सब किछु देखि रहल छलीह,सुनि रहल छलीह,परंच शव सन निश्चल भेल छलीह ।

हुनक एहि दशा पर सखी चित्रलेखा अनेको बेर आँखिक संकेत कयलथि, हाथ सं खींचि सचेत मे अनबाक प्रयास कयलथि,मुदा ओ अपन होश हवास बिसरायल किछु करबाक स्थिति मे नहि छलीह । कोनो आनन्द मे ओ विचरण क' रहल छलीह। ओ छलीह उर्वशी - स्वर्गक सर्वाधिक सुंदरी अप्सरा ! सर्वश्रेष्ठ अप्सरा ! प्रेमकीट हुनका घायल क' गेल छल । भला ई बात चित्रलेखा कोना बुझि सकितथि ? पुरुरवाक अद्वितीय व्यक्तित्व उर्वशीक हृदय पर अपन अधिकार क' लेने छल । ओ शौर्य आ सौंदर्य क मणिकांचन संयोग सं निर्मित ओहि आकृति क एक बेर अपन दृष्टि सं प्रकट रूपें देखि अपन नेत्र क धन्य करै चाहैत छलीह। उर्वशी क प्रतीत होइत छल जेना हुनक शरीर सं हृदय निकलि धरातल पर पुरुरवा क निकट चलि गेल होय । मात्र निश्चल निर्जीव

शरीन स्वर्ग लोक म नहि गेल हाया ।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.८.जगदीश प्रसाद मण्डल- कनियाँ-मनियाँ पूँजी



जगदीश प्रसाद मण्डल

कनियाँ-मनियाँ पूँजी

बीतल दू सालक दशा जहिना सभ गाम-गामक भेल तहिना मनमोहनक सेहो भेल। मनमोहनो तँ ओही मिथिलाक एक अंश रूपक धनी अछि किने।

जे मनमोहन दस साल पहिने, अन्न-तीमन-तरकारी, आम-केरा इत्यादि फल-फलहरी गामक पूर्ति करैत मनमोहनवला बाहरियो आमदनी करैत छला ओऽ मनमोहन गामक दशा देखै-जोकर नहि अछि। ठाम दूनू प्रश्न अछि। एक दिस गाममे बाट-सड़क-बिजलीक सुविधा भेल अछि तँ दोसर दिस गामक खेतीमे बिलैनी सेहो लागल अछि। बाढ़िक बचाउ ले एक दिस कोसी-कमला छहर-बान्हक गारंटी भेल तँ दोसर दिस गाममे सड़क-बान्ह भेने पानिक जमाव नहि भऽ रहल अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, सेहो भेब कएल अछि। जिलाक एहेन स्थिति बनि गेल अछि जे सरकारी कार्यालय तकक कागज-पत्तर पानिमे नष्ट भऽ गेल। कारण जे अछि, कनि बाल, कनि

बाल हो नामा।

जहिना मनमोहन गाम-समाजक गति होइत तहिना अपना गति नइँ होइत से करा नइँ कहब। गामक सभ जनैत छैथ जे मात्र बीघा भरि जमीन अछि। जइँ बल किछु दिन पूर्व एक परिवार ठाढ़ छल। गामम बाहर-सड़क तँ भेल मुदा उपजाउ भूमि उपजौ-जोकर नहि बनि सकल। अपना ताग शक्ति नहि जे भेनाइँ कऽ सकब। असाध काज गाम-गामम परसिथ गेल अछि। सिर्फ माटिक उपनक मान उपजक टा नहि, माटिकेँ समतूल बनाएब सेहो होइय गेल। आइक मशीनी युगम एहन स्थिति बनल रहए, ता दूरस्थ नहि तँ सौराथ करा कहल जाएत। जखन मनुक्ख बनि मनुक्ख जन्म लइँ छैथ तखन जँ पाँच गोटक परिवार सहानि गाम-समाज ल किछु न करैथ, ओहो तँ दूरस्थे कहल जाएत। मुदा मन-मन बूझनहि की हएत। आन गाम जकाँ मनमोहना चारू दिससँ घेरा गेल। बच्चाक विद्यालय बन्न भऽ गेल, अस्पताल बन्न भऽ गेल। काज-उद्यम बन्न भऽ गेल। एहन एक गामम नहि गाम-गामम भेल।

नव-धव अपन बंगलामे नोकरी परकठनहि छलौं। मान स्वास्थ्यार्थिक काज, काज खतम भऽ गेलइँ। गाम आबि एकटा दोकान शुरू कलौं। करब जे दोकानमे कमाइँ कहन होइँए? एकर जबाब तँ पएह न दब जे ठाढ़ करा छी। तीन सालक जे समय रहल ता बहुत किछु सिखबा करब कलक। ठाम सिखाएबक मान बदला लब नहि, लुनिसँ अछि। बिजली एन बिजली-कारावानक किछु लुनि सीख ललौं। माबाइँल स किछु सीख ललौं, गाड़ी-सबारी बठन थाड़-थाड़ ताकन मनम्भत करब सीख ललौं। एहन निवान अपन कौलक जीवनसँ जानि गेल छलौं जे पूजी श्रम छी नहि कि धना। ताना,

ओहेन प्रतिबन्ध तीन-चारि सालक बीच बनल अछि नहि कि एहूसँ पहिने छल।

अपना मानैत छी जे अखन एकर जे गाम बसल अछि ओ बहुत कठिन दौरक बीच बसल अछि। ओठाम मृतकुट्टीम ओतब करैत जे हजारो बर्खसँ अपना सभक पूर्वजकेँ गुलामीक जिनगी गुजारलैन। गुलामीक जिनगी करैत रहलहुँ छी, एकरा पबबैक प्रयास होइत गेल अछि।

गाम आबि, असगरमे काजक पथान लगा देलौं। जहिना चैत-बैशाखक रौदमे गुनू गृहिणी अपन घरक अन्नकेँ रौदमे पसारि सुखबै छथि। किसानी जिनगी छी, नाकनिहारनाक नहि, तेँए मन पड़ए न करैलक जे गाम तँ गाम छी, तहिठाम जेँ असगरा ओत समस्याक निमन्त्रणाक स्थान ओ। तब, बाल-बाधक प्रतिफल नहुँ न छी। एखन तँ ऐहीहा हब करैत जे गामक ओंगला मुहना बनि आगुए-आगुए चलए लगल।

अखन एक गाम किसानक गाम कहबैत आबल अछि। जहूसँ किसान शब्द ओत तँ सम्मानित होइत गेल अछि जे जगत, जनक जननीसँ लऽ कऽ आइक प्रतिनिधिक जे ऊँच कोटिक श्रेणी छथि ओहो अपनाकेँ किसान प्रतिनिधिसँ जुड़ल सम्मान अपन अभिनन्दनमे कहैत छथि।

आन गाम जकाँ मनमोहनाक उपजाक मान उत्पादनक प्रवास प्रतिशतसँ उपर जमीन मनि गेल अछि। ओठाम भूगोलक धोखाम नहि पड़ब जे मनुभूमिक मान होल उपजसँ मानल भूमि। अपना ओठाम मान मिथिलांचलमे कुल भूमिक तिहाइसँ बसी भूमि जल-जमावसँ ग्रसित अछि, तैसंग नन-निरायक तिक्कनीए उनटल

अछि। ज धनरी वनरूमसिया रूल, वनरूमसिया रूल, वनरूमसिया गीमन-गनकानी आ वनरूमसिया अन्न गकक धनरी मिथिलाक धनरीकँ वना नन अछि, जेOाम वच्चन (वल) सन रूल अछि, गेOाम अकO-वकO वान-साउ लगा धनरीकँ अजवानि दव, ऽ्रीह कगीसँ उविग नहि अछि।

किसानी जीनन दूनू दिस अछि। मारिसँ उयज कनेवला सह्ह आ यानिसँ उयज कनेवला सह्ह, अयना सरकँ यूर्नांचलक मान वंगलाक किसानसँ किसानी जीनन सिखउ यउग। अयना सरसँ वसी वनखा वंगालम हाऽ्रउ आ अयन सर जकाँ मारिया अछि। जहिना गंगाकागम चक-चक वालू वक्ष्मनसँ रागलयून गक दखै छिउ गहिना वंगालक मूर्शिदावाद गक अछि। मूदा ज 'जाना माना यान' मिथिलाक नामी-गनामी छल गेOाम अखन वंगला यान वंगालसँ मँगा कS खाऽ्र छी, उकना की कहवै? मिथिला छी, लाक यान खव कनग, अगिथि-अयागगकँ खुउव कनगैन। गामक वीचम, मान मनमाहन गामक वीचम ज चानू दिससँ नस्ता आवि मिलल अछि, उाना अखुनका रागाम चौक-चौनाहा सह्ह रूल, मूदा अखन गक मनमाहनवला उाकना चौवट्टीउ कहै छैथ। अयन गँ उाऽ्रOाम जमीन नहि, मूदा दाकानक नामयन समाज (गौआँ) सहमगि दलैन ज गामक ऽ्री मूनाम जगह छी, उOाम दाकान खालू। गामम दाकान रून (गौउँकँ न लाट हाऽ्रउ। अयना मनम विसनास वनल छल ज उहन कानून गँ अछिउ ज जकन घन गकन जमीन। जँ अयना गकन सवूग नऽ्र अछि गँ यनचा नूयम दल जाऽ्रउ। संयाग उकटा ऽ्रीह छल ज मनमाहनम उहन संस्थान अखना जीनिग अछि ज घन वनवैल वाँस, खट ऽ्रयादिक सहयाग समाजम हाऽ्रग नहल अछिया। वकगीगग

शहर सँ कम देख पड़ैत मुदा सामाजिक शहर जीवित अछि। ओना, पहिलुका ठीक विपरीत बनि गेल अछि, मुदा किछु रहल, अपना सँ घर (दलानक घर) बनबैमे त कतौ जमीनक समस्या रहल आ त घर बनबैक। हमरा सुन-सान, माल दलान करैक सुन-सान देख पाल-साल गेल आ हाँऽऽ-हाँऽऽ कऽ अपन दलान करैक घर ठाढ़ कलक।

बहुत सँ नहि, माल रखबाक बाड़ी बाउलक ओसारा जकाँ सँ नहि, मुदा दिआरी पाललिक नाओ-खढ़क उसारी जकाँ ओसारासँ बसी धूँआक बीच, जहिना दियासली पाबैत मनोल जाइ छ्हि गामक किसानी जीवनमे कालावाली जीवन सहल छीहे। ओना, घूमन्तू शहर माल पथियामे समान लऽ माथपर उठा अंगन-अंगन जनुनियाल बरू बबैक बलैत समाजमे बलिये गहल छल।

चौकपर पछिम नुखिय दलान बना, अपन कालावान शुरू कलौं। जहिना दिन दलान शुरू कलौं, ताहि पछुलका साँझ, दिनबन्धु राय दलानपर पहुँचला। छठ-पाँचम पड़ि गेलौं, काल्हि लक्ष्मीक पूजा कलाक पछाति त दलान ओठाबब आकि ताहिसँ पहिनहि लाककँ बाद पीआ पान खुआ ओठा लब।

एकटा बात दिनबन्धु रायक सम्बन्धमे सुनल छल जे जखन अपनाकेँ कतौ काज करैत देखता, तखन ओ त बादक आग्रह माल छैथ आ न गप्प-सप्प करबाकँ पसिन करै छैथ। तहिम काजधानी जँ कतौ प्रश्न पूछबैन सँ मुहँटा सँ नहि कहता, हाथसँ कैनिया कऽ देखा दता। ताँइ मनमे विसबास जमल छल जे सामाम माल दिनबन्धु रायक सामाम लन्नु-खन्नु जँ करैत लगब तखन ओ अपन पहिनहि कहि दता जे बाद-गादक जागल नहि कनियहल। अपन धर्मा बाँचि जाएत

ओ धरा बाँचि जाएत। सएह कहलौं। हाथम माटि-पानि लगल दिनबन्धु रायकेँ कहलथिन-

"राय साहेब, गोड़ लगै छी। अहीं सभक सभा ल दोकान शुरू कहलौं अछि।"

ठाना, बजला पछाति अपन बूझि पड़ल ज बसी बजा गेल। आब ओ अपन बात बजत कि हमरा असीनबाद देत। मुदा पहिने नञि भेल ज पहि विश्वास दिनबन्धु राय बजला-

"बौआ, गेलह नयाल कयान गेल संगे। मुदा पाही सभ न अपन जन्मभूमिकेँ मातृभूमि बनबैक शक्ति छलक। पाञ सबहक न गाम-समाज सभ किछु छिअ।"

दिनबन्धु रायक विचार सुनि मन पता हुअ लगल आ डयरा हुअ लगल। पन-डयन शब्दक अर्थ समाजम खुशीसँ लल जाइत। नव वस्त्र वा नव खलौना यला पछाति ज बच्चाक ओझान (हान-हान) हाइत, ओ पन-डयनक हाइत।

जहिना गामम, तहिना लुनि-ढंगम अपन साहाअना बौपइ पँ नहि छी। मुदा जहि गपिसँ गाम उनैट-पुनैट भेल अछि पहिम अपन जान बँचत कि जाएत स विचारनीय अछिए। दिनबन्धु रायक विचारक प्रवाहम अपन प्रवाहित होइत हँसि गेलौं कि बजा गेल-

"हँ स पँ छिऔहिय राय साहेब।"

एकाएक दिनबन्धु रायक मनक विचारम दोसर प्रश्न उठि गेलैन, ओ बजला-

"पूजी कत लगेलह अछि?"

अखन तक अपन मन असथिर नहि भेल अछि ज लुनि-ढंग पूजी छी कि नुयैआ-यैसा। गय-सयक क्रमम लुनियाकेँ पूजी बूझै छी आ

नुपेउा-याञ्ञकँ, मुदा उा ककना ल, ज कनग गकन ल ना। उाना, ककना लग स्रुसि नञ्ञ वजे छी, मुदा वाल-वाधकँ नौसेकाल नञ्ञ वजे छी, सत्य कना नञ्ञ करुव। मुदा कानावान गँ कानावान छी, मिसिया रनि स्रुसि अनुचित छीरु। वजलौं-

"राय साहेव, याञ्ञ-कौउीक यूजी कम अछि, मुदा साञ्ञकिला आ माटन साञ्ञकिलक रंगठी, मावाञ्ञल-कम्प्युटनक खाल-खाल, नव-धव विजलीक आगमन अनस्थाक लुनि सत्य अछि, गैसंग समाजसँ गनकानी उयजेनिरुानसँ उधानीक आश्वासन सत्य रटल अछि।"

दिनवन्धु राय वजला-

"समाजक ज नुय-नखा अछि गञ्ञम रनयुन यूजी छरु। गैसंग किछु आना क्रियमाण निवानक यूजी सत्य छरु।"

पूछलयेन-

"स की राय साहेव?"

मुस्की दै दिनवन्धु राय वजला-

"यहिल छी, एकाग्र रs काज कनव आ दासन छी, आमदनीक हिसावसँ यनिवानक संग अयन निर्माण कनव। उाना, जहिना शुनुक समाजम किया अयन डौजान निर्मित कs जीवन वढौलेन आ किया शनीन वल वढला, गहिना गँ आञ्ञया अछिए।"

-

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुवनी जिलाक वनमा गाममे 5 जुलाई 1947 ञ्ञस्वीमे रलैन। मण्डलजी हिन्दी एवं नाजनीति शास्त्रमे एम.ए.क उपाधि यावि जीविकायार्जन रुनु कृषि कार्यमे संलग्न रs

बुद्धि पूर्वक समाज सेवाम लागि गेला। समाजम व्याप्त बुद्धिवादी एवं सामन्ती व्यवहार सामाजिक विकासम हिनका बाधक बुझि पड़लैन। फलत: जमींदार, सामन्तक संग गामम पुनर्जागरण लड़ाइ ठाढ़ भऽ गेलैन। फलत: मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिम व्यतीत कलाह। 2001 ईस्वीक पछाइत साहित्य लेखन-कार्यम एला। 2008 ईस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिम हिनक रचना प्रकाशित हुअ लगलैन। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधाम हिनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़ आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थम प्रकाशित छैन। मिथिला-मैथिलीक विकासम श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ई अपन सतत क्रियाशीलता आ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साओन दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यम समग्र योदान लेल एस.एन.एस. ग्लोवल समिनती द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना

धर्मिणाक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु ख्याति-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल राजनीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. वावू साहेव चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादमी पुरस्कार- 2021' तथा साहित्य ओ संस्कृति महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामरूल मंडल विचार मंच द्वारा 'अमर शहीद रामरूल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022'

रचना संसार : 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जO एकांकी माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सूखाएल पोखरिक जाइO, 7. सतभैंया, 8. चूनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ेए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुलेख, 34. मोड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम क्षण, 37. कुण्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतभाए, 41. समरथाइ, 42. तामक तमघैल,

43. वीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सतभैंया पोखरि, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. एकमात्र, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़ैनगर हाथ, 60. लजबिजी, 61. उकड़ू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. डभियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. मुड़ियाएल घर, 73. वीरांगना, 74. स्मृति शेष, 75. बेटीक पेन्शन, 76. क्रान्तियोग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79. दोहरी हाक, 80. सुभिमानी जिनगी, 81. देखल दिन, 82. गपक पियाहुल लोक, 83. दिवालीक दीप, 84. अप्पन गाम, 85. खिलौंत भूमि, 86. चिन्तनक विकार, 87. बौनस खाक बौनस उपज, 88. समयसँ पहिने चेत किसान, 89. रौक, 90. गामक आशा टूटि गेल, 91. पसेनाक मोल, 92. कृषियोग, 93. हारल बरुना जीतल नूय, 94. नहे जाकर पनिजान, 95. कर्णक रंग कर्मक संग, 96. गामक सूरत बदैल गेल, 97. अन्तिम परीक्षा, 98. धनक खर्च, 99. नीक ठकान ठकलौं, 100. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 101. संचरण, 102. रनि मन काज, 103. आएल आशा चलि गेल, 104. जीवन दान गाथा 105. अप्पन साथी- लघु कथा संग्रह।

ऐ नवनायन अयन

मंगाबी editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.९.जगदीश प्रसाद मण्डल- माउयन (धानानाविक उपन्यास नअम यआन)



जगदीश प्रसाद मण्डल

माउयन (धानावाहिक उपन्यास)

नउम यउान

दस वर्खक पछाति कामसनक जीवन जेना ठढ़ि कऽ समतल भूमि जकाँ बनि गेलैन। न उ दनी आ न उ कनार नहलैन। लाहाक बनल ऊँजन एक निश्चित अनधिक लल हाऽउ। एकना एना उपयाग कनैक अछि जे अयन पानिवानिक जीवनक संग पुजीक जिनगीक सहा कना जीबि बनि चलत ऽ दिस कामसनक नजैन गेब न कलैन। स्वर्गक कल्पवृक्ष जकाँ जे मांगब, जे मांगब हएत नहत एक उप पाँच वर्ख धनि दनु बुक्षन एनपुन आमदनी कामसनकेँ दलकैन। छोट-मोट पाट गँ सामान्य नुपँ लगित अछि मुदा अस्वस्थ शनीन जकाँ जखन ऊँजन अस्वस्थ हुअ लगलैन, तखन एक-एक पाटक टुटा-फुट आ मना-मनम्मतिक खगता हुअ लगलैन, जेऽसँ आमदनीक अधिकांश भाग, अधिकांश भागक दु नुप पहिल गाती

कम चलब आ शासन यार्ट कीनैक खर्च, गाड़ीओ दिस जाए लगलैन। मुदा ऐवा कामसनक मनसुवाम मिसिया हनि उगमगाहट नहियेँ एलैन। ऐसंग ऊँीहा हलैन जे द्रव्यनक बैंक लानकँ बंगाल सनकान मारू क' दलकैन।

जीवनक आमदनीम कमी, मान आर्थिक कमी, नहिा कामसन अपन जे छनि समाजम वना ललैन अछि ऐऊम कमी नहि हुअए, ऐकान यूर्णिक शक्ति हलँ जीव किए न हल हानि, मुदा ऊऊ जीवाकँ अपन मनम दावि आनक मनम अपनाकँ उहिना जीनि नखला, जना क0-यूाली नाव हाऊए। खाऊ-यीवैक नस्फूसँ ल' क' उाटे-यहिनैक कयड़ाक संग यानिवानिक वनहानक नख-नखानम कमी सहा आवए लगलैन। जऊसँ अपना आ यनिवानाकँ अकासक ऐगगन दिनम दखाए लगलैन। उाना, सूरज्ञा जे बी.ए. यास छैथ, यगिक मनावगकँ सहा आ मनीवैगक दावकँ सहा वूसैा नहली, मुदा जहिना यगि यत्नीक आगू आ यत्नी यगिक आगू अनाव नहि वाजए चाहै छैथ गहिना सूरज्ञा सहा सरकिछ वूसिा किछ न नहि वाजए चाहै छली। मनम संगाखक गाछ हनियाएल नहव कनैन जे अपन सीमा वूसि सरकँ जीवाक चाही। जखन घनक (यनिवानक) गानजन यगि छैथ ऐखन हुनका काजम किछ वाजव मान दखल हव, यत्नीक लल अनुचिा छीह। कगी-कगी हाऊा अछिए।

उाना, कामसनक मनम चिड़चिड़ायन सहा हनयुन जागिय चूकल छलैन। गाम-समाजक गँ अपन ऊज्ञा-प्रगिष्ठा अछि जे समग्र नुयम नहल अछि, उाना एकत्र नुयम सहा अछि, नहवा कना न कनगा। समग्र-सँ-एकत्र आ एकत्र-सँ-समग्रक वीचक आवा-जाही सरक जीवनम लगल नहिा अछि। गामक वगलक गामम मान यलानयूनक

सटल दुलानपुर गाममे दुनियाँलाल नामक एकटा वकील छथि। समाजमे दुनियाँलालक अपन पहचान छैन जइ पहचानक रूप सदा रहिते छैन जे मुभठ बजनिहार हुनका लग आबि सत्य बात सुनबा करैए आ बजबा गेँ करिते अछि। तेँ डर डरेन बजनिहार किए न हुअए जे बाघकेँ बिलाइक रूपी करैत होउ।

दुनू गामक चौकपर, माने दुलानपुर आ पलानपुरक बीच, दसटा दोकानक चौक अछि जकरा पलानपुरबला पलानपुरक चौक बुझै छथि आ दुलानपुरबला दुलानपुरक चौक बुझै छथि। संजोग एल जे कामसन सदा सानक एकाग्र काज करि डाही चौकक एकटा चाहक दोकानपर पहुँचल छला आ दुनियाँलाल सदा पहुँचला। गनमाएल कामसन चाहक दोकानपर पहुँचिते जोनसँ बजला-

"दुलानपुरबलाकेँ जनानक काना ठीक नहि अछि.!"

खगल लोकक मनमे असंतोषसँ जहिना होइए जे की एटा, काए एटा; तहिना कामसनकेँ सदा मनमे जनमियेँ भेल रहैन। घरबीए धानक पानि जकाँ कामसनक दिन-दुनियाँ धीरे-धीरे निच्चाँ उतरए लगलैन। चाहक दोकानपर बैसल दुनियाँलाल बिना किछु बजनहि कामसनक गप्पा पकैड़ पुछलकैन-

"की दुलानपुरबलाकेँ जनानक ठीक नहि अछि?"

संस्कारसँ कामसन अपनाकेँ डाइ सीमापर स्थापित कऽ लेने छथि जे सत्य समाजक वकील सत्य होइए। कामसनक मनमे किछु दिन बनल रहलैन जे पछुआएल समाजक बीच पहिल इंजीनियर छी, कलकत्ताक माटि-पानिमे अपन नालानस्था बीतल अछि। मुदा स सरए निचान धीरे-धीरे मनसँ विलीन एऽ भेलैन, आ मनमे नाया भेलैन जे अपना पाइबला छीह आ संगिया-साथी पाइपबला छथि।

जहिना दुनियाँलाल गप्पा यकेठ कामसनकँ पूछलकैन गहिना कामसन अपना गप्पाम मिझा मानि छाठवध लगला कि दुनियाँलाल गनाक-द मूँहपन धकटा थायन मानि पूछलकैन-

"अहाँ ॐजीनियनिंगक शिजा यौन छी, वठवढियाँ, मुदा समाज की छी, कना वनल अछि आ कना वनल आगु मूहँ दोगेग चलग, धहुन निचान गँ हुन मनुक्खम धवा चाही। स जाव धनि नहि ठौग गाव धनि गँ समाज लठखठाॐग नहग किन? गैवीच ज अहाँ वकीक काजकँ सामाजिक नुयम वूमि वजै छी, गगवा वूमैक अनगगि नहि अछि।"

मूँहम थायन लगला यछाॐग कामसनक मनम जना चग जगलैन। जॐसँ अपन कमी मनम जनुन धलैन मुदा लाकक वीच ज थायन मूँहम लगल छलैन, गकन निसनिसी मनम नहव कनैन। वजला-

"गाम-गामक सय लाक वौक-वौनाहायन वॐजाग हाॐध।"

दुनियाँलाल वजला-

"की न्यायालय चलिकऽ हठियाधव.! आकि समाजम दस गानकँ वॐसाकऽ हठियाधव?"

दुनियाँलालक निचान सुनि कामसन सकसका गेला। दुनियाँलालकँ अखन गक कामसन नहि चिह्निन, स आॐ चीह्नि गेला। गैवीच दुनियाँलाल पुन: वजला-

"समाज छी, सरकँ धकOाम नहव अछि।"

दुनियाँलालक निचान ज 'समाजम सरकँ धकOाम नहवाक अछि' सुनि कामसन चुप नहि गेला। चाह यीव पुन: अपन काजयन यहुँचला। गखन दुनियाँलालक मनम उOलैन ज ॐीहा वागक जानकानी गँ लिअ् यठग ज कामसन धहुन वाग वाजल किध। संजाग

बनल, संजोग कि बनल जे गाम-समाजमे एना होइत अछि जे जखन दु गोटेक बीच कहा-कही होइत तँ दुनू अपना-अपना नफा समाज दिस बढ़ब करैत गेल समाजोकेँ जना प्रगतिशीलक नफा सहा बनि गेल अछि। रामलाल सेहो अपन विचारकेँ जनबैत बालक दोकानपर पहुँचला। रामलालकेँ देखते दुनियाँलाल बजला-

"रामलाल भाय, अहाँ बहुत दिन जीब।"

जहिना कौआ खिस्सा-पिहानी वा कौआ पाथी पढ़ए लगै छी, तैबीच जहिना कौआ पात्र बन-बन आगुमे अबैत रहै छैथ तिनकर जेनादा बसी रहैत जाइ छैन, तहिना रामलालकेँ देख दुनियाँलाल बाजल छला। अपन व्यथित कथाकेँ रामलाल सुनबैत बजला-

"दुनियाँ, तोहर माल आन गाममे जे हुअ मुदा दुलारपूर्वक तँ भिनमोर्य हम तारे बुझै छिअ। गामक बात छी, ताहीं सएह नै देखबहक।"

रामलालकेँ बुझल नहि जे दुनियाँलाल एक थायर कामसनक मूँहपर मानि चुकल छैथ।

आइ-माइ, रामलालक मूहसँ सुनि, किसूनलाल चनियबैत बाजल-

"रामलाल भैया, अहूँ नाम जकाँ बड़ मायावी छी, कखनो ब्रह्म बनि जाइ छी तँ कखनो बनबासी आ कखनो सीताक खोजमे गाछा-बिरीछसँ पूछए लगै छिऐ, तँ कखनो रामलला सेहो बनि जाइ छी.। साम-साम बाढ़ि जे कामसनक संग की भेल अछि?"

मनक पीड़ाकेँ सुनि जहिना किया डाकन पीड़ायनकेँ पकड़ए चाहै छैथ, जहिसँ पीड़िताकेँ जे पीड़ायन हटै छैन तहिना रामलालकेँ सेहो भेलैन। हलसैत बजला-

"किसून ब्रह्मानक काज करै छैथ। एतराम्स अधा पाइ दS देन

छलिऐन। काज रला यछाब्ब्ग जखन हिसाब कनए लगलौं गखन एतराम्म याब्ब जाउव छाति दन छैथ। "

नामलालक निवान सुनि दुनियाँलाल घटनाकेँ विसनजन कनव नीक वूसलैन। ओँ एहन-एहन घटनाक गिनती कनए लगव गखन आ वूझै छी आ आब्बधनि वौदह हजान लगाब्ब दुनियाँक धनीयन रल अछि, स वात नहि अछि, एक-एक गामक एहन ब्बतिहास अछि आ वौदह हजानसँ वसीए लगाब्ब रल अछि। खाएन आ अछि, घटना विसनजन कनैत किसुन लाल वजला-

"राय साहेव, छाउ ओ वातकेँ। काजक वन अछि अयन-अयन दुनियाँ दखए चलै चलु। "

दिनुका राजन कनैल जखन कामसन एला गखन सुरेन्द्रा राजन कनैकाल वजली-

"तॉननास्कावला गीनु वब्बाकेँ वयानती दैत कहलक अछि आ यनसु धनि ओँ फीस नहि जमा कनव गँ निद्यालयसँ निकालि दव। "

जहिना काना संसानात कानम यतित मनकानि दब्बए तहिना कामसनक मन मनैक उठलैन। मनैक ब्बी उठलैन आ अयन कलकत्ताक उाब्ब कौलजम यढन छी जब्बम सुराष वावू, निधानचन नाय आदि अनका वंगालक नत्न यढन छैथ, यत्नी सहा रागलयूनक टी.एन.वी. कौलजसँ ग्रेज्एशन कन छैथ। तैOाम वाल-वब्बाकेँ तॉननास्का सन निद्यालयसँ वयानती रट नहल अछि.!

कामसनक मन टूटए लगलैन। टूटैत मन वनजीदादाक उा वात आब्ब मानैल तैयान रS ग्रैलैन अछि आ वात कामसनकेँ ब्बजीनियनिंग कौलजम प्रवेश यवै दिन वनजीदादा कहनै छलखिन आ 'कामसन, दृढ संकल्य ल दृढ यथाक खगता अछि, ओँ स नहि

भेल तखन आइ संकल्पकेँ रहि-जाइक अनिश्चितता बनल रहैत।'

-

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे 5 जुलाई 1947 ईस्वीमे भेलैन। मण्डलजी हिन्दी एवं राजनीति शास्त्रमे एम.ए.क अर्हता पाबि जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यमे संलग्न भऽ रुचि पूर्वक समाज सेवामे लागि गेला। समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी एवं सामन्ती व्यवस्था सामाजिक विकासमे हिनका बाधक बुझि पड़लैन। फलत: जमीन्दार, सामन्तक संग गाममे पुरजोर लड़ाइ ठाढ़ भऽ गेलैन। फलत: मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे व्यतीत केलाह। 2001 ईस्वीक पछाइत साहित्य लेखन-क्षेत्रमे एला। 2008 ईस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हिनक रचना प्रकाशित हुअए लगलैन। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यिक मौलिक विधामे हिनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़े आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन। मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ई अपन सतत क्रियाशीलता आ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्था सभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा "गामक जिनगी" लघु कथा संग्रह लेल "विदेह सम्मान- 2011", "गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादमी द्वारा- "टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011",

मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साउथ दरभंगा द्वारा- "वैदेह सम्मान- 2012", विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा "नै धारैत" उपन्यास लेल "विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014", साहित्यमे समग्र योगदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल समिति द्वारा "कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015", मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- "वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" सम्मान- 2016", रचना धर्मिताक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु शारदा-मण्डल द्वारा- "कौमुदी सम्मान- 2017", मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा "स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान- 2018", चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध "यात्री चेतना पुरस्कार- 2020", मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा "राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020", भारत सरकार द्वारा "साहित्य अकादमी पुरस्कार- 2021" तथा साहित्य आ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा "अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022"

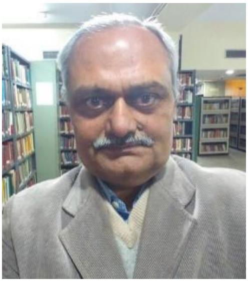
रचना संसार : 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सरोवर, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उठान-पटान, 21. जिनगीक जीत, 22.

जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. मोड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम भीख, 37. कुण्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतमाए, 41. समझौता, 42. तामक तमघैल, 43. बीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता- बीहनि कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सतभैंया पोखैर, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. भकमोड़, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़ैनगर हाथ, 60. लजबिजी, 61. उकड़ू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. डभियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. मुड़ियाएल घर, 73. बीरांगना, 74. स्मृति शेष, 75. बेटीक पैरुख, 76. क्रान्तियोग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79. दाहनी हाक, 80. सुभिमानी जिनगी, 81. दखल दिन, 82. गपक पियाहुल लोक, 83. दिवालीक दीप, 84. अप्पन गाम, 85. खिलतोड़ भूमि, 86. चितवनक शिकार, 87. बौनस खेतक बौनस उपज, 88. समयसँ पहिने चेत किसान, 89. शौक, 90. गामक आशा टूटि गेल, 91. पसेनाक मोल, 92. कृषियोग, 93. हारल चेहरा जीतल रूप, 94. नइ जाकत पनिचान, 95. करमक रंग करमक संग, 96. गामक सूरत बदैल गेल, 97.

अन्तिम यनीञा, 98. घनक खर्च, 99. नीक 0कान 0कलौं, 100. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 101. संबनध, 102. रनि मन काज, 103. आउल आशा चलि गेल, 104. जीवन दान गथा 105. अयन साती- लघु कथा संग्रह।

अयन मंगाबु editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २१ म खण्ड



नवीन्द्र नारायण मिश्र

मातृभूमि (उपन्यास)- २१ म खण्ड

२१

दोसर दिन भोर नागबाबा पाठशाला आबि जयन्तसँ भेंट केलनि।

"हम बापस जानकीधाम जा रहल छी। भेल जे जएबासँ पहिने अहाँक भेंट कए ली।"

"अहाँ अएलहुँ तँ हमरा बहुत उत्साह भेल। हमरा इच्छा छल जे अहाँक सामने पाठशालाक काजकेँ आगू कएल जाए। एक बेर शुरू भए जेतैक तँ चलैत रहतैक।"

"एतेक आसान बात नहि अछि। एहिठाम बहुत तरहक बातसभ छैक। एहिमे बड़का-बड़का लोकसभक हाथ छैक। अहाँक शोधग्रंथ लए कए सेहो बहुत षडयंत्र भए रहल अछि। अहाँकेँ तँ स्वयं बूझल अछि जे जानकीधाम धरि मे लठैतसभ अहाँक पाछाँ कने छल। "

"तखन की कएल जाए?"

"हमरा विचारसँ एहि शोधग्रंथकेँ कालीकान्त लग पठा दिऔक। ओतहि एकर निगरानी होएत आ तकरबाद आगूक कार्यक्रम सेहो तैयार कएल जाएत।"

"मुदा ओ कालीकान्त लग जाएत कोना?"

"बढ़िआँ होइत जे अहाँ हमरा संग चलितहुँ। तावत एहुठाम माहौल शांत रहतैक।"

"ठीक छैक। "

साँझमे जयन्त नागबाबाक संग शोधग्रंथ लए विदा भए गेलाह। जयन्तक नागबाबा संग जाइत देखि सौंस उत्तिवानिटोल उमड़ि गेल। सभकेँ होइक जे जयन्त तंग भए लखनपुर छोड़ि रहल छथि। ओना ओ बात जयन्त ककरो कहने नहि रहथिन।

ककरो यश नहि चलैक। मुदा जखन नागबाबाक संग धानक काज ओ यहूँ बलाह त सुधाकर अपन लठैतसभक संग थानासँ छूटि कऽ आबि गेल छल । हुनका लोकनिकेँ जाइत देखि ओकर प्रसन्नताक अंत नहि छल ।

"नागबाबा! धन्य छी अहाँ । ई काज जँ यहिना करैत रहितहुँ त ओकर स्वाद नहि होइत । खैर! कोनो बात नहि । हम त जयन्तकेँ यहिना करैत रहितैक ज गामक लोकनिक ओकरा सन विद्वानकेँ रहऽ जोगर नहि अछि । ओकरा जानकीधाममे रहब ठीक होयत । ओहुना आब पाठशाला के जाइत अछि? बालकसभ अंग्रेजी माध्यमक इस्कूलसभ खुजि गेल छैक । लोक दस बीस कऽ अपन बाल-बच्चाकेँ प्राइवेट इस्कूलमे पढ़बऽ चाहैत अछि ।"

"नागबाबा किछु नहि जबाब देलखिन, न जयन्त किछु बजलाह । सुधाकर विजयी मुद्रामे लठैतसभक संग आगू बढ़ि गेलाह । गामसँ जयन्तक जएबाक समाचार क्रमशः सौंसे पसरि गेल। ई बात गोविंदक कान धरि सेहो पहुँचल । पहुँचैक रहैक । थोड़ेब कालक बाद गोविंदक माधवसँ भेंट भेलनि ।

"जयन्त गाम छोड़ि कऽ जा रहल छथि।"-गोविंद बजलाह।

'से तूँ कोना बुझलहक? -माधव पूछलकनि ।

"सौंसे गाममे हल्ला छैक । लोकसभ धानपर करमान लागल अछि । हुनका लौटबाक आग्रह कऽ रहल अछि ।"

"तँ की ओ मानि नहि रहल छथि?"

"चलहु ने। ओतहि जा कऽ सही बातक जानकारी भेटि सकैत अछि।"

माधव आ गोविंद बाबक कात पहुँचैत छथि। ओहिठाम लखनपुर दुनूटोलक लोकक करमान लागल छल। सभ एतब बाजि रहल छल -

"ई तँ बहुत खराब भेल। एहन विद्वान लोककेँ अपन डीह-डाबर छोड़ए पड़ि रहल छैक।"

भीड़केँ चीरैत दुनू गोटे जयन्त लग पहुँचलाह। ओ सभ जयन्तक पैर पर खसि पड़ैत छथि।

"हम किन्नहु अहाँकेँ वापस नहि जाए देब। ई तँ बहुत भारी अन्याय होएत। हमरासभकेँ जीबैत ई कदापि नहि होएत।"

"अहाँसभ परेशान नहि होउ। थोड़ेदिनक बाद जयन्त स्वयं गाम वापस आबि जेताह। जानकीधाममे किछु जरूरी काज छनि। तकरबाद आगुक बात-विचार कएल जेतैक।"

"ओ हमरा दुनू गोटेकेँ संग जएबाक अनुमति देथि तखन हिनका जाए देबनि।"

"कोनो हर्ज नहि । जँ अहाँ सभकेँ सङहि इच्छा अछि तँ चलि सकैत छी । मुदा गौंनासरकेँ तँ मनाउ ।"

गोविंद,आ माधव जयन्त आ नागबाबाक संग विदा भऽ गेलाह । गौंनासर बड़ीकाल धरि ई दृश्य देखैत रहि गेलाह ।

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अरेर डीह, मातृक: सिन्धिआ झाठी, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्पेशल मेट्रोपालिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. रसायन विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०१७ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४. हुसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि रहल अछि

सरवकिछु(उपन्यास) २२.नाष्ट्र मंदिन(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि नरूल छलि वसुधा(उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.नानायक यादवक ७ टा कथा- कथा-१ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन समीक्षा सीरीज

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि नानायक यादवक ७ टा कथा अध्ययन रूपमे समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



नारायण यादवक ३ टा कथा

कथा १

नवकी पुतहु

आनन्दक विआह बड़ धूम-धामसँ भेल छल। कनियाँ अति सुन्नरि, तँए दान-दहेज कम भेटल छलैन। आनन्दक पिताश्रीक धारणा छल-

"कद ऊँची, नाक लम्बी और रंग गोरी हो त आओ, नहीं त वापस जाओ।"

अही आधारपर कनियाँक चुनाव भेल छल। कनियाँक आगत-स्वागतमे आनन्दक माए साधारणी परेशान छली। मनमे हलचल रहैन जे पुतहु औत तँ काम-काजमे मदद करत। सेवा सुश्रुषा करत। भानस-भात करत। माल-जालक देख-रेख सेहो करत। बाधसँ आएब तँ एक लोटा पानि लाबत आ बिअनि होंकत...। आदि-आदि सभ टहल-टिकोरा करत...।

आइ आनन्दक माए बाबा बेसी बड़ खुश छथि। खुश ऐ लेल नहि जे आनन्द कनियाँ लए कऽ आबि रहल छथि, खुश ऐ लेल जे आनन्द बिआह करैले तैयार नहि भऽ रहल छल। बिआहक उमेर भऽ गेल छलै। उमेर ढलल जा रहल छलै। ओ बिआह नइ करबाक लेल अनेको बहाना बना रहल छल। कहैत छल नोकरी लागत करब, आ जखन नोकरी लागि गेल तँ कहए नोकरी लागलक बहाना करैत रहै छल। बाबाक आग्रहपर बिआहक लेल तैयार भेल छल। तेँ बाबा खुश छली।

ओ दिन आबि गेल जखन आनन्द अपन पत्नीकेँ अपना घर अनलक। मारते गाड़ीक अवाज सुनिते अगल-बगलक दाइ-माइ लोकनि सभ अपन-अपन काम-काज छोड़ि-छोड़ि कनियाँ देखए आबए लगली। ननदिवाली सासुर सँ भटकी-मटकी बीछि रहल छली। ओहो सभ किछु छोड़ि दौगल एली।

लोढ़ावाली बच्चाकेँ दूध पियाबैत छली से बच्चाकेँ कनहि दौगली। रोटीवाली आ धोतीवालीकेँ आमक टुकला लेल झगड़ा होइत रहै, ओहो दुनू झगड़ा छोड़ि कनियाँ देखए लहरल निकलि एली। बाबा बथान माजै छली। बथान माजब छोड़ि कनियाँक परिछनक लेल सामग्री ओरियाबए लगली। सभ दाइ-माइ जमा भऽ गेली। माथपर दौना जइमे दीप जरैत छलै, लय मिलैत बहुत गीत गबैत मारते गाड़ी लग, पहुँचली। गीतक बोल छल-

"ओहे शुभ-क लगनमा शुभ हे शुभ...।"

पाँच-सात गोट सधवा मौगी सभ कनियाँक परिछन केलक। तकर बाद कनियाँक ननैद नूपुर दाइ कनियाँ-वरकेँ आँगन लए गेल। जतेक दाइ-माइ लोकनि आएल छली ओ सभ अपन-अपन घर दिस विदा भेली।

बादमे कनियाँक टीका-टिप्पणी हुअए लागल। सिसवानिवाली काकी जे सभसँ बूढ़ि छली ओ बजली-

"गे दाइ, आइ एक एहन कनियाँ नइ देखल नहि। देखही न ककरा देख कऽ माथा मैयलकै। हमर पुतहु एहन नहोए न गै छोड़ए लगा कऽ जी खींच लेतौ। कहू गै ससुरक लाज केलकै।"

ननौरीवाली बजली-

"एकरा कहीं मौगी होइ छइ..!"

नैयन भेजावाली बजली-

"बी० कइन चाकन-चौरस छै, जना गामा पहलमान होइ!"

गुलछर्रा छोड़ैत सभ अपन-अपन घर गेल। नाथा भेलसा घरमे जा वहर-पुतहुक लल खूब नीक तीमन-तरकारी बनौलक। पायस, पिलौनी, पिलकानक तरुआ थारीमे सजा वहर आनइ आ पुतहु सुलखा लल ओकरा काठीमे पहुँचली।

माएकेँ देखा आनइ बाजल-

"माए, अखन आठो नहि बाजल अछि आ तूँ खाना लऽ कऽ

𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒾𑒿। "

𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒯𑒿 𑒥𑒙𑒰,𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒞 𑒂𑒋𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒢𑒱 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒏𑒐𑒢 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩 𑒯𑒹𑒞𑒲। "

𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒙𑒹𑒥𑒳𑒪𑒣𑒩 𑒟𑒰𑒩𑒲 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒔𑒰𑒣𑒰𑒏𑒪𑒣𑒩 𑒮𑒿 𑒋𑒏 𑒪𑒼𑒙𑒰 𑒖𑒪 𑒂 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒢𑒱 𑒏𑓄 𑒙𑒹𑒥𑒳𑒪𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏।

𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒂 𑒅𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒹 𑒥𑒢𑒾𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱। "

𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒻-

"𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒧𑒰𑒿 𑒥𑒢𑒾𑒢𑒹 𑒯𑒹𑒞𑒲। "

𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒪𑒹 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒲। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒚𑒰𑒧𑒋 𑒞𑒿 𑒂𑒿𑒑𑒢𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒂 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒣𑒩𑒯𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒼𑒏𑒩 𑒁𑒕𑒱। "

𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒂 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪।

𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒥𑒲𑒔-𑒥𑒲𑒔𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒣𑒩𑒮𑒢 𑒠𑒋 𑒠𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢। 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞

एल। नाथा ड़0 एनि एक डग यानि आ एकटा गिलास आनि टवूलयन नाखि दलखिन।

आनन्द आ सुलखा यूनव-यष्ठिमक गय-सय्य कर्नो कखन सुगली स नाथा नहि वूमि सकली।

नाथा एान उ0 अँगना-दनवज्जाम मा७ लगौलक। घन आ आँगनम रिनाञ्जलवला यानिसँ याष्ठा लगौलक, गकन वाद नसाञ्ज घनम ञा सए वनगन-वासन सए सारु कलक। चारु वनौलक। दु कय चारु यहिन सुलखा आ आनन्दक हगु ठनलक। चारु लऽ कऽ आनन्दक का0नीक दनवज्जा खटखटलक आ वाजल-

"वटा आनन्द, उ0। दखु सुनुज एगवान निकैल गेल छैथ। चारु यीव लीअ गखन सुगव।"

दनवाजा खुजल नाथा चारुक द्व टवूलयन नाखि वारुन आवि गेली। एक कय चारु अयन वटी नुयम लल आ एक कय चारु अयन वासुग लए यीअ लगली।

आनन्द आ सुलखा सहा चारु यीवै नहैथ। सुलखा नौगुका राजनक आ अखुनका चारुक प्रशंसा कर्नो वजली-

"आनन्दजी, अहाँक मा७ अनमाल नम्र छैथ। हिनका हाथक चारु आ राजन गँ मुहँसँ नहि छूटैग अछि।"

आनन्दजी वजला-

"सुलेखा, माउकेँ सेहो लुरि छन्हि। ओकरा बड़ी छन्हि। देखियौ ने उनका सेहो लुरि सिखा देने अछि। हमरा बहिनकेँ कोन लुरि ने अछि। सभ्भे सेहो माय्क देन अछि।"

गामक चारूक वृद्धा लोग नूयम रोजीक कोठरीम प्रवेश कली आ बजली-

"रोजी, हमर चर्चा किए करै छी।"

सुलेखा उठौने बजली-

"हम अहाँक चर्चा किएक करब। अहाँक रोजीय अहाँक चर्चा करैत अछि।"

आनन्दजी बजला-

"बहिन, कनी रोजीकेँ अपन लुरि सेहो सीखा देबीन।"

रोजी बद-द बजली-

"हमरा कोन लुरि नहि अछि। जे हम अहाँक बहिनसँ लुरि सिखब। ओ अपन लुरि अपन लग राखथु।"

नूयम अपन रोजीक हाव-भाव, बात-विचार आ अहंकारकेँ सोचि चुकल छला। ओ चारू मीठो अपना कोठरीम चलि गेला।

आनन्द अपन खटी-पलथीकेँ देखैत बाथ-बान जाउ लगला। नाथा जल-बानिडानक जलखै लउ खायन पहुँचाबउ लगली। नाथा

ओम्हरसँ माल-मवेशीक लेल एक पथिया घास नेने अबैत छली। राधाकेँ मनमे होइत रहैत छल जे पुतहु खाना बना कऽ रखने हेती। मुदा पुतहु तँ जलखै कए जे सुतै छली से सासुकेँ बाधसँ एलाक बाद आ भोजन बनलाक बाद उठै छली। उठि स्नान कए अपनसँ खाना परसि बिनु ककरो खुऔनहि अपन खा कए पुनः कोठरीमे बन्द भऽ जाइत छली।

ई गपहुँ बहुत दिन बीति गेल मुदा सुलेखामे कोनो सुधार नहि भऽ सकल। कएक बेर आनन्दो कहि कऽ थाकि गेल छला। सुलेखा घरक [illegible] बिगाड़ए लागल। सासु-पुतहुमे मन-मुटाव बढ़ि गेल। राधाक मनमे भेल छलैन जे पुतहु एती। सेवा करती। कपड़ा-लत्ता साफ करती। मुदा सभ मनोरथ...। सेवा करनाइ तँ दूर जे प्रेमसँ बात नहि करैत छलैन।

राधा भोर उठि सभ घर-दुआरकेँ झाड़ूसँ साफ कए पाछा लगा मालमवेशीक लेल चारा लाबए चल गेल। जखन ओ बाधसँ आबैथ तँ सुलेखाकेँ सुतल देखलैन। मन तँ घोर भऽ गेलैन। मनमे एकटा आशा लागल रहैत छलैन जे घर जाएब तँ सुलेखा एक लोटा पानि आनि आगाँमे देती। बिअनि डोलेती। मुदा एकोटा मनोरथ पूरा नहि भेल।

पुतहुकेँ सुतल देख राधा अपनसँ चापाकलपर जा हाथ-पएर धोलैन। रसोइ घर खालि नाश्ता परसि कए हुनाम बैस नाश्ता कए लैत छली। राधा सुलेखाक खातिरदारी करैत-करैत उबि चुकल छली। बिना किछु बजनहि। किछु ठाढ़ाइत हुन भनसा घर खालि भानस करए लगली। मुदा सुलेखा सुतल रहली।

राधा मनमे सोचै छली जे बेटा खेतसँ आबए आ राजन समयपर नहि रहतै तँ सुलेखाकेँ गारि-फज्झति करत। आइ बेटासँ शिकायत करबाक उचित मौका देख रहल छल। तेँए सुलेखाकेँ सूतल छोड़ि देलक।

सुलेखाक नीन अचानक टूटि गेल। ओ हड़बड़ाइत भनसा घर गेली। ओतए देखलैन जे सासु भनसा बना रहली अछि। सुलेखा बजली-

"चूल्हा लगसँ हटथिन ने हम भानस बना लइ छी।"

राधा चूल्हा लगसँ नहि उठली। सुलेखा मुँह बिजकबैत अपना कोठरीमे जा सुति रहली।

आनन्द खेतमे काम-काजकेँ सलटिया जखन कलौ बेरमे घर ऐला तँ देखै छैथ माए खाना बना रहल अछि आ सुलेखा अपना कोठरीमे सूतल अछि। माएसँ पुछलखिन-

"माए, भानस तूँ बना रहल छँ! सुलेखाकेँ किछु भऽ गेलैहेँ की?"

राधा अपन बेटाक मुँहसँ एहेन बात सुनि तमसाएल मुद्रामे बाजल-

"कनियाँकेँ की हेतै। हम तँ तोरा सबहक नोकरानी छीहे।"

आनन्द तामसमे सुलेखाकेँ उठौलक आ ओकरा गारि-फज्झति करए लागल। सुलेखा मानएवाली नहि। ओहो आनन्दक तरहा-पुरखाकेँ उकटए लागल।

आनन्द खेतसँ थकमाएल आएल छल, तमसाएल छलाह सुलखाकेँ एक-दू थापड़ लगा देलक। आब तँ सुलखा जान-जानसँ कानए लगली।

कानब सुनि अगलसिया-बगलसिया जमा भऽ गेल। नाथो भनसा घरसँ दौगल एली। ओ बच्चाकेँ तेँढ़-भेटकान देबए लगली। आनन्दकेँ हाथ पकैड़ कोठलीसँ बाहर कली। ओ सुलखाकेँ बाझए लगली।

पुतहु ऐंध बापक बेटी तँए ओ ककरो तान-बाना सहएबाली नहि छली। नाथोकेँ गारि-फझ्झैत करए लगली। बात दिनानुदिन तनाव ओ अशान्तिक तरह बढ़ए लागल। सुलखा दू दिनसँ किछु न खेने छली।

नाथोक काम-काज बढ़ि गेल। आब तँ आनन्द ओ आनन्दक माइयो परेशान रहए लागल। दुनूकेँ डर होमए लगलैन जे कहीं आत्महत्या न कऽ लिअए। कतेक बूझेला-सूझेलासँ ओ घटनाक जिम्मेदारी अपना ऊपरमे लए दुनू माय-पूत गलती सुलखासँ मानलक, तखन सुलखा जे दू दिनसँ भूखल-पियासल छल। दतमैन कलैन ओ मुँह धोलैन। ओ पछाइत भोजन कलैन।

नाथो हानि मानि सभ कार्य पूर्ववत करैत रहल। धीरे-धीरे दुनू पति-पत्नीमे मिलान भेलैन्। आनन्द बाजल-

"सुलखा सभ माइ-बापक इच्छा होइ छैन जे पुतहु घरक काम-धन्धाकेँ देखैथ ओ सासु-ससुरक सेवा करैथ।"

आनन्दक ओकर बजनाइये समाप्त नहि भेल छल कि बिच्चेमे सुलेखा बाजि उठल-

"हम अहाँ-सबहक नोकरनी बनि नहि आएल छी। हमर बाप कहने छला जे हमरा एकटा भिखमंगा। ओतए बियाहि देलक।"

कहैत सुलेखा कानए लगली।

सुलेखा धनिक घरक बेटी। कहियो शासन करनाइ ने सुनू जे अपन कयल नहि सारू करैत छल। ओ प्रकारे ओ अपन मर्जीसँ काम-काज करैत छल।

नाथाक इच्छा छल जे पहिने हमरासँ पूछैथ जे खानामे की सभ बनबाक अछि। कोनक चाउर, कोनक दालि... इत्यादि इत्यादि। मुदा सुलेखा अपन मर्जीसँ खाना काज करैत छल। अपना मन मुताबिक रसोइ बनबैत छल। ओ खाना दासनकेँ पसिन होइ अथवा नहि।

एक दिनक बात छी। सुलेखा गनुआ छानि रहल छल। इहो देख नाथा बाजल-

"छानि कऽ खबाक छह ने बापकेँ कहक जे एक टीन गल देतह।"

तखन सुलेखा जबाब देलक-

"दिनकर बाप कहियो एक किलो गल देने छलैन।"

नाथा सुलेखाक जवाब सुनि तिलमिला कऽ रहि गेली।

ई प्रकारे सासु आ पुतोहुमे कोनो-कोनो छोटा-छोटा बातपर कखनो बहसबाजी शुरू भऽ जाइत छल।

नाथा अपन मन मसोसि कऽ रहि जाइ छली। कामकाजी नाथा दिन-प्रति-दिन चिड़चिड़ा स्वभावक होबए लागल। ओना, ओहन बात नहि छल जे आनन्द अपना पत्नी सुलेखाकेँ नहि समझाबैत छल। परन्तु सुलेखा अपना सामने ककरो मानए ने दैत छल। एवम् प्रकारेण पति-पत्नीमे सेहो मन-मुटाव बढ़ि गेल।

सुलेखा अपना पतिदेवकेँ ननक बना देने छल। सुलेखा रुपती छल तेँ दहेजमे छूट भेल छल। ओकरा अपन सुन्दरता आ बापक सम्पत्तिपर घमण्ड छलैन। ओ अपनाकेँ घरक मालकिन आ अन्य सदस्यकेँ नौकर बूझैत छल।

नाथा टूटि चूकल छल। एक तँ काम-काजक बोझ, दोसर छोटा-छोटा बातक लेल रोज-रोज खट-खट होइत छल।

ओमहर दोसर बेटा सुमन प्रतियोगिता परीक्षामे दिन-राति लागल रहैत छल। बी.ए. पास कऽ चूकल छल। टीईटी परीक्षामे सेहो नीक अंक आनल रहए। तेँ ओ शिक्षक भऽ गेल छल। मुदा सुमन अपना घरमे जेठ भाइक पत्नी जे बड़का घरक बेटी छल, ओकर किरदानी देख रहल छल। तेँ हारि ओ सोचैत छल जे हम कोनो मध्यम वर्गक परिवारक लड़कीसँ शादी करब। लड़कीक शील-स्वभाव नीक होइ। काबिल होइ। घरक काज-कर्ममे निपुण होइ।

ओहन गुणवाली लड़कीसँ शादी करबाक साहस छल।

सुरेशक पिताजी आब वृद्ध भऽ गेल छला। ओ बेटी पुतोहुक व्यवहारसँ तंग त आजिज भऽ गेल छला ओ ब्लड-प्रेसरक शिकार भऽ गेला। सुरेशक माइकेँ जतेक प्रसन्नता बेटा बड़ाक विआह करैमे छल ताक सुरेशक विआहमे नहि। ओ गोनू झाक बिलाड़ि जकाँ पाकि चुकल छली। तेँए छोटका बेटाक विआहक चर्चा नहुँ करै छली। आ राधाकँ कोनो विशेष जिज्ञासा नहियेँ छल।

संयोगवश भवानी प्रसादजी अपन बेटी रोशनीक कथा लऽ कऽ एला। सुरेश पहिनहिसँ ओहू परिवारकेँ जनैत छल। भवानी प्रसादक पुत्र सुरेशक संगी छल। तेँए सुरेश भवानी प्रसादक ओहूठाम जाइत-अबैत छल। रोशनीक शील-स्वभावसँ सुरेश ताक त प्रभावित छल जे एको बेर नाकर-नुकुर नहि कएलक। कथाक मंजूरी दऽ देलक।

दूनू परिवार स्वजातीय छल। अन्तरजातीय विवाहसँ ओ घृणा करैत छल। एमहर राधाकेँ कोनो उत्सुकता आ प्रसन्नता नहि छल। ओ मन-मन सोचैत छल बड़की पुतोहु तँ सभ गुन गोबर कय देलक। आब छोटी की करत ओ भगवान जानैथ...।

सुरेशक विआह भेल। वर-कनियाँ घर आएल। राधाक मन टूटल छल तेँए ओ परिछनमे नहि गेल। लाचार भऽ पितियाइनी सुलेखा वर-कनियाँक परिछन कए घर लौलक। राधा तबियत खराबक बहाना करैत छली। रोशनीकेँ जखन पता लागल जे सासु माँ बीमार छैथ तँ ओ कोहबर घरसँ निकैल सासुक कमरामे गेल आ पहिल

नाधाक यञन छवि प्रधाम कलक ञा पूछलक-

"माँ, गवियग ठीक अछि की नहि।"

ञकाञक नवकी पूगाहुकँ दख नाधा लजा (गली। ड0 कs वैसैग वजली-

"कनियाँ, माथम दर्द रs नह्ल अछि।"

नाभनी गुनन्ग रिक्स लञ सासुक माथम लगोलक। ञा किछु काल धनि यञनकँ सहा दवोलक। आङ्ख वञ रूगीसँ सुलखा खुव नीक जकाँ रानस-राग कञ नाभनीकँ राजन यनासि खवाक लल रैग वाजल-

"कनियाँ, खाना खा लीअ, कखन खन रुञव कखन नहि।"

नाभनी वजली-

"जखन सासु माँ राजन कनगी गकन वाद रुम राजन कनव।"

गयन सुलखा वजली-

"माँक गवियग खनाय छैन, जखन ङ्ङ्खा रुगैन खा लगी।"

नाभनी अयन खाना लञ खुद सासु माँक कमनाम (गली ञा ञक कौन राग दालिम मिला राथम लञ वजली-

"माँ, छाटकी पूगाहुक राथसँ ञक कौन खाना खाथू।"

कहैत हाथ सासु माँक मुँहमे देलक।

राधाक एक कौर भातसँ सर दुख दुन भऽ गेल। भजन करैत कहलक-

"बेटी, जाउ अहूँ भजन कए लीअ।"

"नहि माँ जाबत अहाँ नहि खाएब ताबत हमहूँ नहि भजन करब।"

राधा छोटकी पुताहुक जिद्दकेँ नहि टारि सकल। राधा राति भरि भजन केलक। राधाक खाना खेलाक बाद रोशनी झट हनि कोठरीसँ बाहर भेल।

पछाइत सुलखा आ रोशनी मान दुनू दियादनी संग-संग भजन केलक। भजन केला बाद सुलखा सुतबाक लेल अपना कोठरीमे चल गेल। आ रोशनी एक लोटा पानि लए सासु माँक कोठरीमे जा राखि देलक आ सासु-माँक पएर दबाबए लागल।

राधा जखन बाजल-

"जाउ कनियाँ, अहाँक आइ पहिल दिन अछि, थाकल ठेहियाएल हएब। अराम करू गे।"

तखन रोशनी सासु-माँकेँ बिछौन सानि मशहरी लगा कए अपन कोठरीमे आराम करक लेल चल गेली।

राधा मन-मन रोशनीकेँ आशीर्वाद दऽ रहल छल। आ सोचैत छल।

एनिश्चम ज आँगा दूअ७ मूदा अखन गँ अवो दनी ७ाक खागिनदानी गँ कलका नाधा छाटकी यूगाहुक यनिछधम नःः (गली गकन आव यथ्रागाय दूअ् लागल छलेना नाभनी साजाग दनी छेथ ज हमना घनकँ सूनर्ग वनौग...। य७ह सन सावेग-निवानेग नाधा कखन सूगि नहली स नहि जाःःना

नाभनी आ नाधाक वीच ज क्रियाकलाय हाःःग छल स सूलखा दखेग नहला सूलखा अयन सास्-माँक अदखाःः-वदखाःः नाभनीकँ सूनाव७ लगली। नाभनी सूलखाक काना वागक जवाव नहि दःः छलखिना

नाभनीकँ अयन विआहक यूर्वहिसँ सूलखाक किनदानी सूनभक माथ्रमसँ वूसल नहेना एग नाभनी उO सा२ लs कs घन-आँगनकँ वाहन७-साहन७ लगली। हनीव नहि एलाक कान(ध जखन सूलखा अँगना वहानेग दखलक गँ उकना यहिन एलेन ज नाधाआन दिनूका जकाँ आँगनम सा२ लगा नहल अछि। मूदा जखन आगाँ व८ल गँ नाभनीकँ वाढेन लगवेग दखलक गँ आश्चर्यचकिग हाःःग वाजल-

"कनियाँ, अहाँ काल्हिय ७लौं आ आःःय वाढेन यकै७ ललौं। कहू गँ अहाँक मा७-वाय की कहगा। ७ाक काज कनाःः काना जनूनी छःः!"

नाभनी वजली-

"वहिन, ःःी गँ हमन अयन काज अछि। हम नःः कनव गँ क कनगा। "

सुलखा चुप नहि भेली। बाबा राम उठि बाधसँ घास आनए गेल छली। छोटकी पुतहुक व्यवहारसँ बाबा गदगद छली। तँए राति खुब मनसँ सुतला छली।

बाभनी घर-दुआरिकेँ बहारि एकटा टोकनीमे बासन-सासन उठा रहल छली। तावत बाबा घास लऽ कऽ आँगनमे प्रवेश कयलनि। आकि बाभनी देखलक, चट बाढ़नि छोड़ि सासुक माथपर सँ घासक छिट्टा लऽ घास रखैक जगहपर जा कऽ राखि आएल।

बाबा बाभनीकेँ कहए लागल-

"तूँ कतेक बढ़नी भेलह। हम अखनो तँ साउ लगा दितौं।"

ई कहैत बाभनीक हाथसँ बाढ़नि लेबए लगली। मुदा बाभनी बजली-

"माए, आब अहाँकेँ काज करैक जमाना नहि अछि। अहाँ बैसू, आराम करू आ हम सभ काज करब।"

बाबा मुसकाए लागल। तावत बाभनी सासुक लेल एक लोटा पानि आ एकटा दतमनि आनि हाथमे थम्हबैत बजली-

"सासु-माँ, ई दतमनि करैथ हम तावत जलखै बना दैत छिऐन।"

जलखै तैयार भेल। स्कूलक लेल राजन आ टिफिन सेहो तैयार करलक। किएक तँ स्कूलकेँ विद्यालय जेबाक छलैन। आनन्द आ बाबा जलखै कऽ अपन-अपन काजमे लागि गेल। एमहर बाभनी अपन जेठ दियादनीकेँ मान सुलखाकेँ हुनक कोठरीमे जलखै लऽ कऽ

पहुँचली।

सुलेखा आ नागनी संगे जलखै कलेन। आ दुनू अपना-अपना काजमे लागि गेली। नागनी नाथाक आश्रमसँ वरी काजकेँ सम्हारि लेलेन। सुलेखा नागनीक व्यवहारसँ आहत होइत रहली आ मन-मन अपनाकेँ अपराधी मानि पश्चाताप करैत रहै छली। नागनीक स्नान, निद्रा आ चालि-चलन ओकरा घमण्डकेँ गति देलक।

नाथा आब सकुन महसूस करए लगली। हुनि घरम खुशहाली आबए लागल। एक दिन नागनी अपन घरक सभ काम-काज निपटा शयन कए सुतल छली।

तावत नागनी कोनीम चौकीपर सुतल नाथाक पएर दबा रहल छली। ओही समय ग्लानिसँ मर्माहत सुलेखा करैत उठि कमराम घूसल आ बाजल-

"माए, ई अहाँगिनकेँ क्षमा कए दीअ। अहाँ हमरा सबहक सुख-सुविधाक लेल एतेक दिन-राति खटैत रहै छी। माए, हमरासँ अहाँकेँ बड़ कष्ट भेल। हम अहंकारी भऽ गेल छलौं। नागनी हमरा घरक साक्षात लक्ष्मी छथि। एतेक पढ़ल-लिखल भऽ कऽ ई हमरा सबहक सेवा करै छथि ओहीसँ हमरा नागनीसँ शिक्षा भेटल जे परिवारक सदस्य खास कए सासु-माँ सँ बढ़ि ई संसारम किछु नहि अछि। तँए हमरा सभ अहाँगिनकेँ माफ कए दीअ।"

करैत सासु-माँकेँ पएर दबाबए लगली। नाथा बजली-

"बेटी रातक हेनाइल ओँ साँझमे घर आबि जाए तँ ओकरा हेनाइल नहि कहल जाइ छै।"

आनन्द पढ़ल-लिखल युवक, सब तमाशा देख रहल छल। बाजल-

"माइ, सुलक्षणाकेँ माफ कए देलीन। कुल आ नीक खानदानक बेटी छारकी कनियाँ हमरा घरकेँ साक्षात् लक्ष्मी छैथ। मध्यम घरक बेटी ओहन होइत अछि जे बिगड़ल घरकेँ सुधारि दैत अछि।"

ई कहैत आनन्दक आँखिसँ नोर खसए लागल।

-नारायण यादव, पत्नीक नाम : श्रीमती सुमित्रा देवी। जन्म : 14 जनवरी 1956, पिताक नाम : स्व. नारायण यादव। माताक नाम : स्व. महेश्वरी देवी। दादाक नाम : स्व. रामा यादव। नानाक नाम : महान स्वतंत्रता सेनानी स्व. राम लखन सहोता। जन्म स्थान : तुमना, मूल गाम : तुमना, पो.- तुमना, भाया : नुरुपुर, प्रखण्ड : अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी (बिहार) मातृक : नरही, थाना : खजौली, पेशा : अध्यापन, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक, मात्र पठनपाठन आधारित जिनगी। शिक्षा : एम.ए. (मैथिली), लेखन : कथा, कविता आ आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित।

मोबाइल नं: 9939041116, 9430631993, 8541096004

सम्प्रति: प्रकाशित कृति : खाली घर (कथा संग्रह), प्रकाशित/अप्रकाशित अन्य कृति : (1.) नारी दुसलक नानाकेँ (कविता संग्रह), (2.)

बाबा नाम केवलम (कथा संग्रह) , (3.) समझौता (कथा संग्रह), (4.) नवकी पुतहु (कथा संग्रह)

ई रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.नागेन्द्र यादवक ७ टा कथा- कथा-२ उत्पन सम्पादकीय

समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन समीक्षा सीरीज

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि नारायण यादवक ७ टा कथा अध्ययन हेतु समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



नारायण यादवक ७ टा कथा

कथा २

साम्प्रदायिक सद्भाव

कानपुर शहरमे छोट-पैघ बहुत मोहल्ला अछि। अइ शहरमे हरेक जाति,धर्म, सम्प्रदायक लोक रहैत अछि। ऐ शहरमे एकटा हिन्दू बाहुल्य मोहल्ला अछि आ एकटा मुस्लिम बाहुल्य।

दुनू मोहल्लाक बीच किछु उग्रवादी, कट्टरपंथी मुल्ला पण्डित रहबाक खाधि खोधि दैत अछि। एक-दोसराक खूनक प्यासा हेबामे, एक-

दोसर बनल रहैत अछि। एक मोहल्लाक लोक दोसर मोहल्लामे नहि जाइत अछि। ई आ आतंकक माहौल हरदम बनल रहै छइ।

हिन्दू मोहल्लामे सुरेश नामक व्यक्तिकेँ एक मात्र पुत्र अछि जकर नाम अछि प्रकाश कुमार। प्रकाश अति मेधावी छात्र अछि। सुरेश कर्तव्यनिष्ठ, इमानदार, निश्चल आ निष्ठावान व्यक्ति अछि मुदा गरीब अछि। गरीब रहितो हिन्दू समाजमे सुरेशक बड़ मान्यता छैन। प्रकाशक व्यवहार आ मेधापन खूब ऐ मोहल्लाक लोक सभ चन्दा दऽ ओकरा पढ़बाक लेल सहयोग करैत छला।

प्रकाश आठमी पास कऽ नौमीमे नाओं लिखौलैन। ओइ कक्षामे रहमान नामक एकटा लड़का सेहो पढ़ैत छल। रहमानक पिताक नाओं सुलेमान छिऐन। सुलेमान धनी-मनी ओ नामी टाइपक लोक छैथ। मोहल्लावासीक कल्याणक बात सदिखन सोचैत रहै छैथ। रहमान, सुलेमानक एकलौता बेटा अछि। ओ महा उदण्ड तथा इर्ष्यालु स्वभावक लड़का अछि। पढ़ैमे मन्द गुसकौल, मुदा फुटबॉल-क्रिकेटमे चैम्पियन अछि। खेलमे ओहन लड़का ओइ पञ्चायतामे कोनो दोसर नहि छल।

प्रकाश आ रहमान एक्के वर्गमे पढ़ैत अछि। दुनू दू धाराक लड़का तेँए दुनूमे मोहल्लाक वातावरणक अनुसार एक-दोसराक जानी दुश्मन बनल रहैत अछि। रहमान वर्गक उदण्ड लड़का सबहक एक टोली बनौने छल।

प्रकाशसँ ओकरा जलन होइत रहै छइ। गुरुजी आ छात्र लोकैनक

बीच रहमानसँ बेसी प्रकाशक मान्यता छलइ। जइल रहमान प्रकाशसँ ईर्ष्या करैत छल। रहमान प्रकाशकेँ नीचा देखबैले ओकरा मारबाक तैयारीमे लागल छल। ई बातक जानकारी प्रकाशकेँ भऽ चुकल छल। प्रकाश मन-मन सोचलक जे बुधिसँ काज लेबाक चाही। प्रकाश धीरे-धीरे रहमानसँ दोस्ती करैक प्रयासमे लागि गेल।

एक दिन विद्यालयक क्रिया-कलापक निरीक्षण हेतु जिला शिक्षा पदाधिकारीक आगमन भेल। वर्ग शिक्षक अपन-अपन वर्गमे छात्र लोकनिकेँ ई सूचनाक जानकारी दए चुकल छल। छात्र लोकनिकेँ ई बातक जानकारी सेहो दए देल गेल छल कि सब किलासमे पदाधिकारी बच्चा सबसँ पृथक-पृथक प्रश्न पुछथिन।

आब रहमान छटपटाए लागल, जेना बिनु पानियेँ माछक दशा होइत अछि। रहमानकेँ तहन सन हुअ लगलै। पदाधिकारीक प्रश्नक जबाब केना देल जा सकैत अछि। ई गुनधुनमे लागल छल रहमानक तखन प्रकाशपर नजरि पड़लै। प्रकाशसँ दुश्मनी छलै। ओकरा ओ मदद करैल केना कहत। मनमे संकोच भऽ रहल छलइ।

प्रकाशो ई ताकमे छल कि रहमानसँ दोस्ती कोन हिसाबे करी। दोस्ती ई लेल जे रहमान धनीक बापक बेटा अछि। रहमानक पिताक दबदबा ई पंचायतमे छल। दोस्ती आ दुश्मनी बनाबनीएमे होइत छइ। दुनू एक किलासमे छल। प्रकाश गरीब बापक बेटा छल तेँए ओ बुधिसँ काज लेबाक ताकमे छल। आइ रहमानकेँ अधिक चिन्तित देख प्रकाश इशारासँ ओकरा बजौलक।

रहमान। अही ताकमे छल जे प्रकाशसँ मदद करा रहल। रहमान आ प्रकाश गुफ्तगू करए लागल। प्रकाश रहमानकेँ सलाह दैत कहलक-

"अहाँ आइ हमर बगलमे बैसब। हम सभ प्रश्नक जवाब अपना हाथपर लिख, हाथ अहाँक आगूमे राखि देब। अहाँ देखि कए जवाब दए देबै।"

आब रहमान बड खुश छल। खुश ई कारणे जे आब हमरा अपमानित नहि हुअ पड़त। आदेश-निर्देश आ मूसिबत एलापर शत्रुता मित्र भऽ जाइत अछि।

बाढ़ि एलापर जहिना सभ जीव जन्तु जखन एकटा टिला ऊँचगर स्थानपर शरण लैत अछि तँ नाग-नेवल, दुश्मनी सभटा मित्रतामे बदलि जाइ छै तहिना रहमानकेँ हेतैन।

प्रकाश अपन बुधिक प्रयोग रहमानपर करलक। वर्गमे अगुलका बेंचक पाछुवला बेंचपर बीचमे दुनू गोरे बैसल। दुनूकेँ एकठाम आ एक बेंचपर बैसल देखि वर्गक सभ छात्र अचम्भित भऽ गेल। वर्ग शिक्षककेँ सेहो ई टटका मित्रतापर आश्चर्य हेतैन, ओ अति हर्षित भऽ गेला। हर्षित ई लेल जे रहमान उदण्ड छल।

उदण्ड छात्रक संग तेज आकि मित्रासँ आना छात्र सभ साथ देबए लगैत छै। जखैन-तखैन वर्गमे हल्ला-हसाद करबए-वला छात्र रहमान आइ विद्यालयक शिष्ट, अनुशासित छात्रक मित्र भऽ गेल। एसँ खुशी आर की।

निर्धारित समयपर जिला शिक्षा पदाधिकारी नवम वर्गमे प्रवेश कएलनि। पहिने निराहारी बनि पदाधिकारी विद्यालयक निरीक्षण करैत छला। पुना दिन विद्यालयमे दऽ एक-एक छात्रक प्रगतिसँ अवगत होइत छला आ विद्यालयक सर्वांगीण विकासक लेल मार्ग निर्देश करैत छला।

शिक्षाक गुणवत्तापर सबहक ध्यान रहैत छलैन। शिक्षका कर्तव्यनिष्ठ आ परिश्रमी होइत छला। मुदा आइक दिनमे गुणवत्तापर विशेष ध्यान आ काम नियमित देखना जाइत अछि। छात्र कम आ शिक्षकक संख्यामात्र रहितो एका घण्टी किलास नहि चलैत अछि आ न पदाधिकारीए ध्यानदान छैथ।

निरीक्षणक क्रममे विद्यालयसँ सेवा शुल्क, गाडी भाड़ा बहाना विद्यालयक प्रधानसँ चुंगी असूल करै छैथ। पदाधिकारी लोकैनक कारणा मूल्य विद्यालयमे नहि नहि भेल अछि।

भ्रष्टाचार सीमा पार कऽ चुकल अछि। उपरसँ नीचा धरि भ्रष्टाचारमे आकण्ठ डूबल अछि। जेना मकानक सीढ़ीक सफाइ नीचावला पौदानसँ नहि कएल जा सकैत अछि। उपरका पौदानसँ साफ कएलासँ पुना सीढ़ीक सफाइ होइत तहिना भ्रष्टाचारक खात्मा उपरसँ सम्भव अछि।

वर्तमान आ प्रकाश वासन वृंचयन एकठाम बैसल छला। पदाधिकारी छात्र लोकैन सभसँ प्रश्न पूछए लगला। छात्र लोकैन यथासम्भव जवाब देबए लागल। वर्तमानक बारी एलैक। पदाधिकारी वर्तमानसँ प्रश्न

पूछलैन-

"शिक्षक के अशिक्षित नहीं बनानेवाला गुरु कौन होता है?"

रहमान प्रकाशक बामा हाथपर लिखल जवाब देख बाजल-

"पोथी।"

पदाधिकारी-

"अंग्रेजी के सिंगुलरमे कितने अक्षर होता हैं?"

रहमान किछु सोचैत उंगरीपर गिनैत प्रकाशक हाथपर देख उत्तर देलक-

"आठ।"

हुनक छात्रसँ तीन प्रश्न पूछबाक छलै तँए तेसर प्रश्न पदाधिकारी पूछलखिन-

"एक से नौ तक का योगफल कितना होता है?"

रहमान किछु सोचबाक आकृति करैत हाथ मूँहकेँ चमकबैत आगूमे प्रकाशक हाथकेँ देखैत बाजल-

"पैंतालीस।"

जिला शिक्षा पदाधिकारी तीनू प्रश्नक सही जवाब सुनि बजला-

"यह लड़का बड़ा जिनीयस है।"

रहमानक प्रशंसा पदाधिकारीक मुँहसँ सुनि वर्ग शिक्षक आ वर्गक छात्रसभ आश्चर्य चकित भेला। तावत प्रकाश जे अपना हथेलीपर जबाब लिखने छल तकरा खूब नीकसँ मेटा देने छल। ई करिश्माकेँ वर्ग शिक्षक आ दुनू छात्र जानि सकल।

आब प्रकाश आ रहमानमे मित्रता बढ़ए लागल। दुनू एक-दोसरकेँ दिलोजानसँ मानए लागल। वर्ग शिक्षक सेहो बड़ खुश छला। खुशी ई लेल छला जे रहमान विद्यालयकेँ तनाव ग्रस्त बनौने रहै छल। आब प्रकाश निर्भीक भऽ पठन-पाठन करए लागल। रहमानकेँ सभ विषयक तैयारी करबए लागल।

रहमानमे हठात् ई परिवर्तन देख रहमानक अब्बा सुलेमान एकर राज जनबाक प्रयास केलैन। बेटासँ पूछलखिन। रहमान सभटा वृतान्त अब्बाजानकेँ कहि सुनौलक। सुलेमानकेँ प्रकाशक प्रति सिनेह जागल। समय-समयपर सुलेमान प्रकाशकेँ उपहार रहमानक हाथे भेजए लागल।

ई बातक जानकारी प्रकाशक पिताजीकेँ सेहो भेलैन। दुनू अभिभावककेँ एक-दोसराक पुत्रक प्रति सिनेह-भाव जागल। प्रकाश रहमानकेँ दिशा निर्देश आ रहमान प्रकाशकेँ अपन खेलबला कौशलसँ दक्ष बनबए लागल रहैत छल। रहमानक दिन घूमि गेलै। सभ अवारापनी, बदमाशी छुटि गेलै। हदीशक एक पाँति छै- 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलल्लाह।'

किछु दिनक बाद रमजानक मास आबि गेल। मुसलमानक बच्चासँ बूढ़ धरि, सभसँ जनानी एक अल्लाहक इबादत करए लागल। रहमान सेहो इस्लाम धर्मक नमाज करै छल। रमजानक अवधिमे प्रकाश रोजा खोलबाक (इफ्तार पार्टी) हेतु नाना-नाना समान रहमानक हेतु घरसँ लाबि दैत छल।

एहि दिन रोजाक बाद ईद पर्व आबि गेल। रहमान, प्रकाशकेँ ईदक खुशीमे दाबत देलक। आब प्रश्न छलै जे एक टोल-वासन टोलक जानी दुश्मन बनल रहैत छल। प्रकाश ओतऽ टोल केना जाए, ओ पसोपेशमे छल कि एकटा उपाय सुझलैक। प्रकाश पाजामा-कुर्ता पहिर दुपहरमे रहमानक ओतए पहुँचल।

रहमानक माए-बाबूजी प्रकाशकेँ देख बड़ खुश भेल। प्रकाशक खूब आदर-सत्कार भेल। खूब सेवा-मिठाइ खुऔलक। दुनू मित्र साँझ धरि खेलाइत-धूपाइत आ गप-सप्पमे लागल रहल। मुन्हारि साँझ भऽ गेल।

प्रकाश घर आबक लेल धड़फड़ाइत सीढ़ीसँ नीचा उतरए लागल, आकि सीढ़ीसँ पएर पिछड़ि गेलैक। सीढ़ीपर लुढ़कैत निचला पौदानपर गिरल। कपार फुटि गेलैक। बहुत रास खून बहलैक। रहमानक पिता सुलेमान अपन बानिबकिया गाड़ीसँ प्रकाशकेँ डाक्टर लग लऽ गेलैक। क्लिनिकमे डाक्टरकेँ खूनक आवश्यकता पड़लै। सुलेमानक खूनक जाँच भेल। प्रकाशक खूनसँ मिलल। आवश्यकतानुसार सुलेमान अपन खून दऽ प्रकाशक जान बचौलक आ सए दवाइ खरीद दवाइयक संग प्रकाशकेँ घर पहुँचौलक।

𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒬 𑒦𑓄 𑒐𑒳𑒬 𑒦𑒹𑒪𑒰। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒚𑒲𑒏 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒖𑒰𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒂 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒠𑒼𑒮𑓂𑒞𑒲 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒬𑒻𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒾𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪𑒏। 𑒂𑒥 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒂 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪।

𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒼𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒥𑒢𑒱 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒼𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬, 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒒𑒩𑒣𑒩 𑒣𑒰𑒥𑒢𑒱𑒧𑒹 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒪𑒹 𑒢𑒼𑒞 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒥𑒴𑒮𑒿 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒣𑒳𑒕𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒣𑒰𑒖𑒰𑒧𑒰-𑒏𑒳𑒩𑓂𑒞𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒒𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰।

𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒣 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒮𑒿 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒐𑒴𑒥 𑒢𑒲𑒏-𑒢𑒲𑒏 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒾𑒪𑒏। 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒐𑒴𑒥 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒢𑒾𑒪𑒏। 𑒮𑒰𑒿𑒗 𑒣𑒯𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒲𑒝𑒏 𑒙𑒼𑒪𑒲, 𑒯𑒼𑒪𑒲 𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒢𑒰𑒔𑒻𑒞 𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒮𑒛𑓃𑒏𑒣𑒩 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒂 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒲𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒨 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰।

𑒤𑒑𑒳𑒂𑒏 𑒑𑒲𑒞 𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒲𑒝- '𑒥𑒳𑒩𑒰 𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒼 𑒯𑒼𑒪𑒲 𑒯𑒻' 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏𑒹𑒿 𑒩𑓀𑒑𑒮𑒿 𑒮𑒩𑒰𑒥𑒼𑒩 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒬𑒩𑒰𑒩𑒞𑒲 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒩𑒱𑒬𑓂𑒞𑒹𑒠𑒰𑒩 𑒖𑒰𑒢𑒱 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒩𑓀𑒑 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒠𑒾𑒑𑒪। 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢 𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒛𑒩𑒮𑒿 𑒢𑒯𑒱, 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒥𑓂𑒥𑒰𑒖𑒰𑒢𑒏 𑒛𑒩𑒮𑒿 𑒩𑓀𑒑𑒮𑒿 𑒥𑒿𑒔𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒰𑒋𑒪। 𑒑𑒪𑒲𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒕𑒼𑒩𑒣𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒃𑒢𑒰𑒩 𑒕𑒪, 𑒃𑒢𑒰𑒩 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒒𑒹𑒩𑒪 𑒕𑒪। 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢 𑒦𑒰𑒑𑒻𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒍𑒯𑒱 𑒃𑒢𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒐𑒮𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪। 𑒯𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒦𑒹𑒪। 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒖𑒲 𑒠𑒾𑒑 𑒏𑓄 𑒋𑒪𑒰। 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒃𑒢𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒴𑒠𑒱 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒱 𑒢𑒲𑒔𑒰 𑒅𑒞𑒩𑒪𑒰। 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢𑒏

कपार फूटि गेल छल। रहमानकेँ सुरेश ईनारसँ निकाललक। अपन अंगा पाछासँ ओकरा फूटल कपारकेँ बान्हलक आ तुरन्त डाक्टर लग गेल।

रहमानकेँ जाबा डाक्टर लग लऽ जाथि ताबा माथसँ बहुत खुन बहि चुकल छल। रहमानक प्राण बँचनाइ मुश्किल भऽ गेल। देहसँ खुन निकलि चुकल छल।

डाक्टर इलाजक हेतु खुनक आवश्यकता बतौलक। खुनक जाँच भेल। रहमानक खुन प्रकाशक माइक खुनसँ मिलल। प्रकाशक माइक खुनसँ रहमान ठीक भेल। आ आधा रातिक पहरमे सुरेश रहमानकेँ लए ओकरा घरपर पहुँचा सुलेमानकेँ सभटा वृतान्त सुनौलक। सुलेमानक मात्र एक गोट सन्तानक रक्षा सुरेशजी कएलनि।

ईद यानिक दिन सुलेमान सुरेशक बाटकेँ बँचौने छला। सुलेमानक मनमे उठल- कत भेला गँ हा भेला...।

गरीब रहमान मुँहमंगा इनाम सुरेशकेँ देबए चाहलैन। मुदा गरीब रहितो सुरेश एकरा पाप बुझलक।

भिनसरमे सुलेमान दवाइक दोकानसँ रहमानक लेल दवाइ खरीदबाक लेल गेल। सभ दवाइ खरीद अनलक आ रहमानकेँ दवाइ खुएबाक हेतु ओकरा बिछान लग गेल तँ रहमान भाव-विभोर भऽ बाजल-

"अब्बाजान, प्रकाशक माताक खुनसँ हमर जान बँचि सकल अछि

आ अहाँक खूनसँ प्रकाशक जिनगी आपस आबि सकै छइ। तेसँ तँ ओकरा साबित भऽ गेल जे हिन्दू-मुसलमानक खूनमे कोनो फर्क नहि अछि। तँ दुनू सम्प्रदायक बीच दुश्मनी किए छै। अल्लाजान, दुनू टोलक बीच साम्प्रदायिक सद्भाव कायम करबाक प्रयास किए न करै छी। "

रहमानक ओकरा बुद्धिमतापूर्ण बात सुनि सुलेमान अवाक् रहि गेल।

-नारायण यादव, पत्नीक नाम : श्रीमती सुमित्रा देवी। जन्म : 14 जनवरी 1956, पिताक नाम : स्व. राजेश्वर यादव। माताक नाम : स्व. महेश्वरी देवी। दादाक नाम : स्व. गेला यादव। नानाक नाम : महान स्वतंत्रता सेनानी स्व. राम लखन सर्टैंता। जन्म स्थान : झमना, मूल गाम : झमना, पो.- झमना, भाया : फुलपरास, प्रखण्ड : अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी (बिहार) मातृक : नरही, थाना : खुटौना, पेशा : अध्यापन, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक, मात्र पेंशनपर आधारित जिनगी। शिक्षा : एम.ए. (मैथिली), लेखन : कथा, कविता आ आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित।

मोबाइल नं: 9939041116, 9430631993, 8541096004

सद्य: प्रकाशित कृति : खाली घर (कथा संग्रह), प्रकाशित/अप्रकाशित अन्य कृति : (1.) नारी दूसलक नानाकेँ (कविता संग्रह), (2.) बाबा नाम केवलम (कथा संग्रह) , (3.) समझौता (कथा संग्रह), (4.) नवकी पुतहु (कथा संग्रह)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१३.नानायक्ष यादवक ७ टा कथा- कथा-३ अङ्ग्रेजी सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन समीक्षा सीरीज

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि नारायण यादवक ७ टा कथा अध्ययन हेतु समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि।- सम्पादक



नारायण यादवक ७ टा कथा

कथा ३

कन्याँक जिनगी

बी.ए.क छात्र छलौं। गरमीक छुट्टी छल। मन बहलबै-ले अपन जेठ बहिनक गाम गेल रही। पाँच दाइ-बहिनमे सबसँ जेठ बहिन, माइ-बाबूक बड़ दुलारु छली। बड़ धूम-धामसँ नामी-गामी परिवारमे विआह भेल छलैन। बहिनक जेठ ससुरकेँ एकटा बेटी छलन्हि। ओकर नाओं कुसुम छल। नाम सन सुन्नर सेहो छली कुसुम। ओ मैट्रिक प्रथम श्रेणीसँ पास कऽ इन्टरमे पढ़ैत छली। सोलह वर्खक ओ मैथिल ललना, जेकर सुन्दरता विद्यापतिक कवि कल्पना कामिनी आ इन्द्र भगवानक उर्वसीसँ उपमा प्राप्त करैवाली आ हम 20-22 वर्खक कौलेजक छात्र। जखन दीदीक गाम पहुँचलौं तँ ओ सुन्दर हाथमे लोटा लऽ हाथ-पएर धोबाक लेल पानि अनलक। हम हाथ-

पएर की सोचब, ओहि सुन्दरीक मुख-मण्डलकेँ एकटक निहारैत रहलौं। दीदी हमर भावनासँ अवगत होइत बजली-

"बौआ, ई हमर ननदि छथि। ई अहीं गामक कनियाँ छथि। हम एकर विआह अहींसँ करा देब। जँ इच्छा हुअए तँ।"

ई बात सुनि हम भाव-विभोर भऽ गेलौं। मनमे नाना प्रकारक उमंग जागए लागल। ओ सुन्दरी हमरा संग मजाक करैत बजली-

"की हम एहन वरसँ विआह करब।"

मजाकमे तँ ओ ई बजबाक छलै से बाजि गेल मुदा कुसुमक हृदयमे हमर स्थान प्रियतमक रूपमे वास करए लागल। जहिना हमरा लेल ओ अनमोल रत्न सन सुन्दर छली तहिना हुनका लेल हमहूँ। ओहो हमरा आगत-भागतमे लागि गेली। दुनूक एक-दोसराक प्रति आकर्षण स्वाभाविक छल।

ओ आइ हमरा स्वागतक लेल अपनसँ छप्पन प्रकारक व्यंजन बनौलक। दीदी दोसर काजमे बाझल छली। कुसुम झट-द हमरा भोजन करबाक तैयारीमे जुटि गेली। घरमे पीढ़ी दए भोजनक आग्रह करए लगली। हाथमे पानि लए हमरा लग ठाढ़ भऽ बजली-

"पाहुन, भोजन करए चलू।"

हमहूँ भूखल छलौं। भोजनक प्रत्याशामे छलौं। आ मनमे कुसुमक सान्निध्यक जिज्ञासाक प्यास करैत छलौं। भोजन करैले उठलौं। पीढ़ीपर आबि बैसलौं।

कुसुम थारीमे राजन साँ० हमरा आगूमे देलक आ एकटा बिजेन लऽ बगलमे बैस पंखा डोलबए लगली। हम प्रेमसँ राजन खाए लगलौं। पंखा डोलबैत कुसुम बजली-

"की पाहुन, तीमन-तरकारी स्वादक पाग बनल अछि कि नै?"

"स्वादक पाग कियेक ने रहत, कारण बनौलक के अछि। आइ धरि एहन सुस्वादु राजन नहि खेने छलौं।"

अपन प्रशंसाक शब्द सुनि कुसुमक साहस बढ़लै आ हमरासँ पूछलक-

"छुट्टी कतेक दिन आर अछि जे जाइक लेल अखनसँ व्यग्र छी। की एतए मन नइ लगैत अछि?"

हम पुनः जबाब देलौं-

"एतए मन नहि लागत तँ कतए लागत, कौलेजक हास्टलमे। जतए राशन आनिकें आ दालिमे निम्बक पानि नइ छइ।"

हम खाइत छलौं आ बतियाइत छलौं। ताही क्रममे एकटा सजमैनक बीआ हाथमे आबि गेल। हम मजाक करैत बजलौं-

"ह काइली ह काइली, हमर बियाह करउ।"

तँ बीआ कुसुमक देहपर चलि गेल। ई प्रक्रिया तीन बेर केलौं। तीनू बेर बीआ कुसुमक ऊपर गेल। हम बजलौं-

"कुसुम,काइली तँ अपन निर्णय सुना देलक।"

ई सुनि कुसुम लजा गेली। कुसुमा मजाकमे बजली-

"हम एहन दुलहासँ बियाह करब!"

ओना, ओकरा मनमे होइत नहि जे कखन हम ओ दुलहाकेँ अपन हिस्सा बना ली। हमरा मनमे होइत छल जेँ लोक आ गामजियनक सहमति होइत तँ हम कुसुमकेँ अपन अर्द्धांगिनी बना ली। एहन स्थितिमे प्रेमी आ प्रेमिका घनसँ हरान रऽ जाइत अछि। आ प्रेम बिआह कऽ लैत अछि।

दीदीक गाममे मन लागए लागल। कुसुमक प्रेम हमरा प्रति आ हमर प्रेम कुसुमक प्रति दिनानुदिन बढ़ए लागल। दुनू खूब बतियाइत नहि। आ खूब खेलाइत नहि। खूब मन लगैत नहए। कहा कौलेज खुजेक दिन लग आबि गेल से नहि जानि पलौं। एक दिनक नास्ता आएल छलौं आ दस दिन बित गेल।

हम कौलेज अबैक तैयारीमे लागि गेलौं। कुसुम खिन्न मन हमरा तैयारीमे सहयोग करए लगली। हम दीदीक गामसँ बिदा भेलौं। कुसुमकेँ हमरासँ बिछुड़बाक बड़ कष्ट रऽ नहल छलै, ओ छटपटाए लगली। आइ ओ बड़ उदास बुझना जाइत छली। बिदा होइत काल एकटा टिफिन-कैरियर हमरा हाथमे दैत ढबढबाएल आँखिये बजली-

"ई बटखर्चा छी। एकरा राखि लिअ। बाटमे भूख लागत तँ खा लेब। आ यादन अहिना अबैत जाइत रहब।"

कौलेज आबि गेलौं। बहुत दिन बीति गेल। कुसुमक धियान मनसँ हटि गेल।

ओम्हर कुसुमक पिताजीक देहान्त भऽ गेल। दीदी सेहो बहिनोइक संग दिल्ली चलि गेली। कुसुमक माइक हालत दयनीय भऽ गेल। बहुत मास जमीन-जत्था कुसुमक पिताक इलाजमे बिका गेल। कुसुमक विआह दहेजक कारणे योग्य वरसँ नइ भऽ सकल। कुसुमक दुलहा महा शराबी आ जुआरी निकलल। जेकर जे कुसुमक गहना-गुड़िया आ जमीन-जत्था छल, सभटा बेच कऽ पीब गेल। अन्तमे कुसुमक भाग्य फुटि गेल आ खानदानक बेमारीसँ घरवलाक मौत भऽ गेलइ।

जवानी कुसुम अनाथ भऽ गेली। सासुरक नौजवान लड़का सबहक कुदृष्टि कुसुमपर पड़ए लगलै। कएक बेर ओकरा पटएबाक नाकाम प्रयास भेल छल। ओ अपनाकेँ अनाथ बूझि सासुर छोड़ि नैहरमे आबि रहए लगली।

हमहूँ पढ़ि-लिखि कऽ नोकरी करए लगलौं। विआह-शादी भेल। बाल-बच्चा सेहो भेल। किछु दिनक बाद दीदीक गामसँ एकटा निमंत्रण-पत्र आएल, जेहिमे हमर भागिनक विआहक उल्लेख कएल गेल छल।

भागिनक विआहमे भाग लबाक लेल दीदीक गाम एलौं। एतए एलाक बाद कुसुम मन पड़ि गेल। कुसुमक खोज केलौं। एकटा विधवा सन मौगीसँ भेट भेल। हुनकासँ कुसुमक हाल-चाल पुछलौं

कहलथिन-

"हमरा कुसुमसँ मिला दीअ।"

ओ कानए लगली आ बजली-

"याहुन, हमहीं कुसुम छी।"

हम अवाक् भऽ गेलौं। बड़ कष्ट भेल कुसुमक दुर्दशा देख कऽ। सोचए लगि गेलौं- एक दिनमे कोना परिवर्तन भऽ गेल! कन्याँक जिनगी कतेक सस्ता अछि..!

-नारायण यादव, पत्नीक नाम : श्रीमती सुमित्रा देवी। जन्म : 14 जनवरी 1956, पिताक नाम : स्व. नाजेश्वर यादव। माताक नाम : स्व. महेश्वरी देवी। दादाक नाम : स्व. भोला यादव। नानाक नाम : महान स्वतंत्रता सेनानी स्व. राम लखन सहेता। जन्म स्थान : चमना, मूल गाम : चमना, पो.- चमना, भाया : नुनथुन, प्रखण्ड : अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी (बिहार) मातृक : ननहौ, थाना : खुटौना, पेशा : अध्यापन, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक, मात्र पेंशनपर आधारित जिनगी। शिक्षा : एम.ए. (मैथिली), लेखन : कथा, कविता आ आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित।

मोबाइल नं: 9939041116, 9430631993, 8541096004

सम्प्रति: प्रकाशित कृति : खाली घर (कथा संग्रह), प्रकाशित/अप्रकाशित अन्य कृति : (1.) नाती दुलरूआ नानाक (कविता संग्रह), (2.)

बाबा नाम केवलम (कथा संग्रह) , (3.) समझौता (कथा संग्रह), (4.) ननकी पुतहु (कथा संग्रह)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१४.नारायण यादवक ७ टा कथा- कथा-४ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेह लेखकक आर्काइव रचना आ अध्ययन समीक्षा सीरीज

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि नारायण यादवक ७ टा कथा अध्ययन हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



नारायण यादवक ७ टा कथा

कथा ४

हृदय परिवर्तन

गिरधारी बाबू एक बहुमुखी प्रतिभाक धनी, मिलनसार, कर्त्तव्यनिष्ठ सरकारी विद्यालयक प्रधानाचार्य छलाह। सेवाकालक दरम्यान ओ बहुतोकेँ उपकार कयने छलाह। कतेको असम्भवसँ असम्भव काम आसानीसँ करा दैत छलाह। विद्यालयक हरेक गति-विधिपर हिनक ध्यान रहैत छलैन्हि। छात्रसँ लय शिक्षक धरि सभ कियो हिनकासँ खुश रहैत छल। हिनक व्यक्तित्व आ कृतित्वसँ विद्यालयक आस-पासक लोक सभ खुश रहैत छल। छात्र आ अभिभावककेँ जे कोनो विद्यालयक कार्य रहैत छल ओ अपन काम बूझि पूर्ण करा दैत छलाह।

इलाका भरिमे हिनक यश पसरल छल। हिनक अवकाश प्राप्तिक उपरान्त विदाइ समारोहमे इलाका भरिक लोक आयल छलाह। प्रशस्त भोज आयोजन कयल छलाह। सेवा निवृत्तिक लाभ हेतु जिला पदाधिकारी कार्यालयक चक्कर लगबय लगलाह। बहुत दिनक बाद जिला कार्यालयसँ हिनक कागजात महालेखाकार कार्यालय पहुँचल।

आब गिरधारी बाबू पटनाक चक्कर लगबय लगलाह। बड़ कठिनसँ पेंशन चालू भेलैन्हि। धन-परिवार नीक जकाँ चलय लगलैन्हि। दुटा बेटा आ दुटा बेटीक शादी-बियाह सेहो नीक परिवारमे भेल छल। सभ तरहेँ ठीक ठाक छल। किछु दिनक पश्चात ओ स्वर्गवासी भय गेलाह। पत्नी जीवित छलथिन्ह। बेटाक संग अपन गाँवमे रहैत

छलीह। गिरधारी बाबूक देहांतक पश्चात सरकारी नियमानुसार हुनका पत्नीकेँ पेंशन भेटक चाही। ताहि हेतु किछु आवश्यक कागजपत्र हुनका पत्नीकेँ हस्ताक्षर करऽ पड़तन्हि। एहि लेल दूनू मायपुत महालेखाकार कार्यालय पटना जयबाक हेतु विचार करय लगलाह।

आइयो धरि न बेटा आ न माय पटना गेल छल। कोनो शहरो सेहो नहि गेल छल। शहरक चहल-पहल विचित्र छल। माय बेटा सोचमे पड़ि गेल। कोना पटना जायत। पेंशनक आब ई व्यवस्था नहि अछि। आब तँ सभ कार्य बैंकक माध्यमसँ भऽ जाइत अछि। बेटाक स्वभाव एहेन छल जे हुनक बापयन मायकेँ डँटैत रहैत छल। ओ हमेशा मायसँ नाराज रहैत छल।

जखन पेंशन हेतु पटना जयबाक लेल बेटाकेँ कहलैन तँ बेटा झुझलाइत मायकेँ डाँटय लगलाह। बेटा मायकेँ माय नहि बुझैत छल। ओ हमेशा गारि-फज्झति सेहो करैत छल। माय बेटाक द्वारा देल कष्टकेँ सहन करैत रहलीह। माय बेटाक ओ हमेशा खातिरदारीमे लागल रहैत छलीह। बेटा मायक महत्व नहि बुझि रहल छल। बेटा उदास रहय आ मायकेँ नीक नहि लगैत अछि।

मायक नजरिमे जवान बेटा बच्चे रहैत अछि। माय संसारमे सभसँ दुर्लभ वस्तु थिक। जकर तुलना संसारमे कोनो वस्तुसँ नहि कयल जा सकैत अछि। तँ गिरधारी बाबूक पत्नी अपना बेटाकेँ नासमझ जानि ओकर सभ गलतीकेँ बिसैर जाइत छलीह। माय बजलीह-

"बेटा, पेंशन घर चलयबाक हेतु सहारा अछि। तँ ओकरा चालू

नहि कनायब गँ गुजन कोना चलत। यटना गँ जवाक छह।"

वटाकँ यटना जयनाम यत्नभानी वूमना जाङ्ग छलैह। मायक वात सुनि वटा कर्कस स्वनम वाजल-

"ओ कोना गाम-घन छिऐ ज ककना ओहिठाम नहि जाऊ। ओ गँ शहन छैक। शहनक लोककँ कामसँ फूर्सत कहाँ नहैत छैक। शहनम ओक दोसनासँ ककना मतलब नहि नहैत छैक। शहनम किया मनि जाय किया जी जाय, ओकय सरट गहल छैक। वहुत यढला लिखला लोक सरटा निठल्ल छैक। ओक दोसनाकँ ठकै-फूसियबैम लागल नहैत छैक।"

माय वजलीह-

"वटा, ओतय धर्मशाला गँ छैक। होटल गँ छैक। ओतहि नहि जायब।"

मायक वात सुनि वटा मायकँ डँटैत कहलक-

"तू चुप नह। अनन्त दिमाग नहि खनाब कन।"

माय चुप भऽ गेल। किछु सोचैत वाजलि-

"कोनहुना पूछैत-पाछैत पटना ओ.जी. □हिस चलिय जायब।"

दोसन दिन गिनधानी वाबूक वटा यटना जयवाक हेतु ऊहनसीटी ट्रेनक टिकट कटा अनलक गँ मायकँ कहलक ज माय, टिकट भऽ गेल। माय वाजलि- वटा, वटखर्चा किछु वना लीअ। वटा हेन

मुस्काकय बाजल ओतहि कोनो होटलमे खा-पीब लेब। माय हुनि असथिर मनसँ प्रेमसँ बाजलि-

"बेटा, होटलक भोजन बसिया-तसिया रहैत आ पैसा सेहो अधिक लागत।"

मायक बात सुनितहि बेटा ध्यानसँ बाजल-

"जा जे मन होइ छौ से कर।"

माय बाटखर्चाक वास्ते पूरी, तरकारी, पेड़ा बनौलक। जयनसँ कनेक नून, हरियरका मिरचाइ आ अचार सेहो एकटा झोरामे लय लेलक।

सुबह 6 बजे जयनगरसँ इण्टर सीटी ट्रेन जे १२ बजे पटना पहुँचै छैक से ट्रेन पकड़लक। रेल गाड़ी मधुबनीसँ साढ़े छह बजे खुजल। माय बेटा ट्रेनमे चढ़ल। एहि इण्टर सीटीमे भीड़-भाड़ कम नहैत छैक तँ दुनू माय बेटा मन पसन्द सीट खोजि कऽ बैसल। खिड़की लगक सीट बढ़िया बुझलैक तेँ दुनू आमने-सामने बैसल। गाड़ी द्रुत गतिसँ चलय लागल।

गाड़ीक बाहरक वातावरण, प्रकृतिक सौन्दर्यताकेँ निहारए लागल। आइ धरि माय बेटा एहन दृश्य नहि देखने छल। इण्टर सीटी समस्तीपुर पहुँचल। इंजन आगुसँ काटि पाछाँमे जोतल गेल। मुजफ्फरपुर होइत १२ बजे पटना पहुँचल। पटना स्टेशनसँ उतरि स्टेशनसँ बाहर आयल। दुनू माय बेटा महावीर मन्दिर पहुँचल।

येन-हाथ (धाय वजनंग नलीक युजा कयलेन्हि। प्रसाद चढौलेन्हि। हुन दुनू माय वटा स७कयन आयल।

७करा नटाही वार धयन जा नहल छल। वटा-वटाहीकँ टाकलक-

"हमना महा लखाकान कार्यालय जयवाक अछि स काना जायव नाफ्ना वना दीअ।"

वटाही वाजल-

"७हि0ामसँ टम्पू यकि७ लीअ आ ड़ा टम्पू आन. ब्लॉक चौनाहासँ आग। मा७यन डानि दग आ अहाँ डाहि0ामसँ दहिना वगलम महा लखाकान कार्यालय चलि जायन।"

दुनू (गाट टम्पूयन चढल आ किछु७ दनम महा लखाकान □फिस यहुँचि (गल। ककनासँ यूछि अहन जाय लागल। (गटयन वैसल सियाही टाकलक-

"कहाँ जा नह हैं? यहल यनमिशन ल लं तव अहन जाउ(ग।"

वटा दडिगवनिया नुमम (गल आ अयन सट कागजात यनमिशन दनिहान कर्मचानीकँ दखा दलक।

कर्मचानी यंशनवला कागज दखि ७करा यनमिशनवला यूर्जा थमा दलनि। डा यूर्जा लय सियाही लग (गल। सियाही यूर्जा दखि अहन जाऽुक लल आदश दलक। तावत कर्मचानी लाकनिक टिफिन समाप्त टs (गल छल। कैंनटीन खाली टs (गल छल। दुनू माय-यूतकँ

सुख बसी लागि गेल छल। दुनू कोचिंगमे गेल। एकटा रूम खाली छल, कुर्सी, टेबुल सभ लागल छलैक। आगाँ पानि पीबाक नल सभ लागल छल। दुनू माय-पुत आइ कोचिंगमे जा कय कुर्सीपर बैसि टेबुलपर झोलासँ पुनी सत्ती निकालि दु चार अखबार पर पन्ना लगाओय बैसल छल आकि दुटा सज्जन व्यक्ति आइ कमरामे प्रवेश कयलैह।

पहिने ओ दुनू माय-पुतकेँ देख हँसलैह। ओ दुनू सज्जन माय बेटाक मनोदशाकेँ सोचि आइमे सँ एक सज्जन बजलाह-

"मायजी, यँशनवला स्थानमयन साओन कनक लल आयल छी?"

मायजी बजलीह-

"हँ बेटा।"

फेर दोसर सज्जन बजलाह-

"माओजी घनसँ बटखर्चीमे की सब बना कS लेने छी। बहुत नसीनवलाकेँ मायक हाथक भोजन स्वाद अछि।"

ई बात सुनि माय बजलीह-

"बौआ, जखन हमरा अहाँ माय कहलहुँ तखन हमरा हाथक बनौल पुनी, सत्ती, पना जनून खा लीअ।"

मायजी आरो दुनू आदमीकेँ पुनी, सत्ती, पेठा पपनपन पनासि आगाँ बढा देलक।

दुनू सज्जन नलपर सँ हाथ धोइ, खाय लागल। खयलाक बाद भोजनक प्रसंशा करैत बाजल-

"मायजी, मजा आबि गेल। एतेक स्वादिष्ट भोजन जीवनमे पहिल बेर खयलहुँ।"

सज्जन बजलाह-

"मायजी, अहाँक बेटा बड भाग्यशाली अछि जे अहाँ सन माय ओकरा भेटलैक। आइ हमरा अपन मायक स्मरण आबि गेल।"

आ ओहि सज्जनक □खिसँ नोर टपकय लागल।

दुनू सज्जनक बात सुनि गिरधारी बाबूक बेटा जे रहन हमरा अपन मायपर गुमसाएल रहैत छल। मनहि मन सोचय लागल जे एहि दुनू सज्जन जे अनजान छथि, ओ हमरा मायकेँ एतेक सम्मान देलक आ हम समीपमे रहितहुँ मायक ममताकेँ नहि बुझि सकलहुँ।

बेटाक मन ग्लानिसँ भरि गेल। ओ मनहि-मन पश्चाताप करय लगलाह। ओहि सज्जनमे सँ एक सज्जन बजलाह-

"माँजी कनेक काल रहनु। हम पुनः □हिससँ आबि रहल छी। अहाँक काज करा देब। कोनो कष्ट नहि होमय देब।"

ओ सज्जन कनेक कालक बाद एकटा फाइल हाथमे लऽ माय लग अयलाह आ बजलाह-

"माय अहाँ लग जे कागज अछि ओ लाउ।"

ओहि हानमकँ यँगनवला कागजसँ सए मिलान कऽ सए हानमम दल थौनाकँ एनलक। कागज हाथम लय मायकँ संग कय □हिस पहुँचल। मायसँ □हिसनक सामनम हस्ताक्षर कना कागज (फार्म) जमा कय दलथिन्ह। दस मिनटम सए काज कना माय सहित ओ सज्ञान वाहन अयलाह। वटाक लल ई काम व७ कठिन वूसना जाइत छल। माय आ वटा व७ खुश छल। माय ओहि दुनू सज्ञानकँ हृदयसँ आशीर्वाद दलैन्ह। वटा साचय लागल ज मायक नूनम एतक शक्ति छैक ज चूटकीम हमन काज एऽ गेल। माय ओहि दुनू सज्ञानकँ आशीर्वाद दैत वजलीह-

"वटा, अहाँ लाकनिक उपकानकँ हम जीवन एनि नहि एुइल सकै छी।"

तहियन दुनू सज्ञान वाजल- "माय, हम अहाँक नमक ज खयलहुँ। हम सए अहाँक वटा समान छी।"

ई वात सुनैत वटाकँ शर्मसँ माथ झुकि गेलैक। वटाकँ ई एहसास हलैक ज माय ओकना जन्म दलक, पासलक, पाललक आ हाथ पकड़ि चलनाइ सिखौलक। अपन दुध पिआ हमना एतकटा वनौलक। आ हम ओहि मायकँ तिनस्कान कनैत छलहुँ। हमनासँ वढ़ि एहि संसानम किया पापी नहि अछि। ओ दुनू सज्ञान मायसँ विदा लैत अपन काजपन चलि गेल।

ओ दुनू सज्ञान गिनधानी वावुक नामपन मायक सए काम कना दलक। किएक ताँ ओ दुनू सज्ञान गिनधानी वावुक शिष्य छल। ओ

सज्ञान लोकनि गिरधारी बाबूक पत्नीकेँ चिन्हैत छल। मुदा अपन परिचय नहि देलक।

आब गिरधारी बाबूक बेटा जे मायकेँ हमेशा तिरस्कृत करैत छल एकर हृदय परिवर्तन भय गेलैक। आ मनहि-मन शपथ खयलैक जे मायकेँ जीवन भरि सेवा करब। मायक पैरपर खसि पड़लाह आ हवा ढकार भय कानय लगलाह। बजलाह-

"माय, हमरासँ बड़ पैघ गलती भेल। हमरा जे दण्ड देबाक छौ से दय दे।"

माय बेटाकेँ हाथ पकड़ि उठौलक आ करेजासँ लगा लेलक। बेटाक हृदय परिवर्तन भय गेल।

-रामायण यादव, पत्नीक नाम : श्रीमती सुमित्रा देवी। जन्म : 14 जनवरी 1956, पिताक नाम : स्व. राजेश्वर यादव। माताक नाम : स्व. महेश्वरी देवी। दादाक नाम : स्व. भोला यादव। नानाक नाम : महान स्वतंत्रता सेनानी स्व. राम लखन सहैता। जन्म स्थान : ठुमना, मूल गाम : ठुमना, पो.- ठुमना, भाया : रुद्रपुर, प्रखण्ड : अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी (बिहार) मातृक : ररही, थाना : खुटौना, पेशा : अध्यापन, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक, मात्र पेंशनपर आधारित जिनगी। शिक्षा : एम.ए. (मैथिली), लेखन : कथा, कविता आ आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित।

मोबाइल नं: 9939041116, 9430631993, 8541096004

सद्य: प्रकाशित कृति : खाली घर (कथा संग्रह), प्रकाशित/अप्रकाशित अन्य कृति : (1.) नारी दुसलक नानाकेँ (कविता संग्रह), (2.) बाबा नाम कमलम (कथा संग्रह) , (3.) समझौता (कथा संग्रह), (4.) ननकी पुतहु (कथा संग्रह)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१७.नारायण यादवक ७ टा कथा- कथा ७ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन समीक्षा सीरीज

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि नारायण यादवक ७ टा कथा अध्ययन हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



नारायण यादवक ५ टा कथा

कथा १

गामक एकता

माला एक सप्ताह पहिने अपन सासुर आलापुरसँ नैहर मधानी आयल छलीह। किऐक तँ ओकरा बच्चा होनिहार छैक। साओन मास बितैत आठम चढ़ल छैक। पहिल बेर माइक सभसँ अधिक आत्मीय होइत अछि। प्रसव वेदना माइक मुँह देखलासँ कम भय जाइत अछि। प्रायः देखल गेल अछि जे संतानोत्पत्तिक समयमे नैहरे नीक होइत छैक।

नामधनी काका हकासल पियासल, दौगल दौगल घर अयलाह आ हँफसैत अपन पत्नीसँ कहलैन्ह-

"आइ अखन मालाकेँ सासुर आलापुर लज दियौक। किऐक तँ बड़ जोर बाढ़ि आबि रहल छैक। अपना सभक घर काँचीक कठ्ठन

यन अछि। गामक चानु काग निंग वान्न अछि। ओ निंग वान्न यन यानि लायलय कय नहल अछि। कखना निंग वान्नकेँ गाड़ैन अयना गामकेँ दहा देग। गँ मालाकेँ सासुन रुज दियौक। कमसँ कम ओगय गँ ओकन जान वाँचि जैक। नदीक यानि वढि नहल अछि। जमहुन गाकु ओमहुन यानिय-यानि देखा नहल अछि।"

ओहि इलाकाम सए साल वाढि अवैग अछि। वाढि की ओगैक, आरुद् नियग आ मुसिवग आवि जाइग अछि। काशीकहा लाकक जीवन वनसाग हानि वड कष्टप्रद हय जाइग अछि। जान माल सदिखन खगनम नहैग अछि। काशीकहाम खगीय सएक जीवनक सहाना अछि। सालम गीनटा रुसल नीक जकाँ उयजैग अछि। (गहूँ, मकइ, धान आ ओकन अगिनिक सनसां, गाओ, नाइ, धनियाँ, याज, लहसुन, गीसी आओन अजमाइनक खगीसँ ओगुका लाक सए समृद्ध नहैग छथि। नकदी रुसलक महत्व किछु आओन छैक। कवल वनसागम किछु कष्ट सहय यडैग छन्हि। खगीक प्रधानगा ओगय मुख्य अछि। कहवी छैक उत्तम खगी, मध्यम वाद्य, निषिद्द चाकनी हीख निदान। इ वाढि खगीकेँ चौयट कय दलक अछि।

माला ओक सप्ताह यहिनहि अयन सासुनसँ ओगय आयल छलीह। ओकना वच्चा हानिहानी छैक। सागम विग आठम चढल छैक। वटीक लल माय सएसँ प्रिय आ आत्मीय लाक हाइग अछि। प्रसव वदना माइक मुँह दखलासँ कम हय जाइग अछि। प्राय: दखल जाइग अछि ज वटीक संगानायणिक समय नैहन नीक हाइग छैक।

माइ जाक यगनसँ दख हाल वटीकेँ कनैग अछि ओगक सासु

नहि। माय आ सासुमे बड़ अन्तर छैक। मायक ममता जेहन बेटी पर रहैत छैक ओहन ममता सासुकेँ नहि रहैत छैक। कखनो-कखनो ओहो देखल गेलैक अछि जे सासु अपना मायसँ पुतोहुकेँ प्रसवक समय बेसी देख-रेख करैत अछि।

एहन कम सासु अछि। अधिकांश सासुकेँ पुतोहुक प्रति भावना खराब रहैत अछि। तेँ मालाकेँ ओकर माय अपना ओहिठाम बजा लेलकन्हि। संगमे दु सालक एकटा बेटा सेहो छल। मालाक मायकेँ पता नहि छल जे एहन भीषण बाढ़ि औतैक। नहि तेँ बेटीकेँ नहि अनितथि। गर्भवती रहबाक कारणे मालाकेँ लोभ छल। जे नैहरमे रहब। एतय अस्पतालमे भर्ती करा देबैक।

मुदा हाय रे देवक चक्र जे बाढ़िमे घरसँ निकलब कठिन भय गेल। माय गुमसुम बैसि सोचि रहल छलीह, जे आब की करक चाही? मालाकेँ सासुर भेज दियैक की नहि। एहि तनावमे पड़ल छलीह। सासुर भेजनाइक अर्थ भेल अपन मानहानि। बेटीकेँ सभ दिन सासु दियादनीक उपराग सुनय पड़ैत। सासु दियादनी ई कहितथि जे देखलियौ ताना माय-बापकेँ जे बिना विदागरी करौनहि सासुर भेज देलकौ। किछुओ दिन नहि राखि सकलहुँ।

माय ई सोचि दृढ़ निश्चय कयलक जे अपन मरब तेँ मरब मुदा बेटीकेँ सासुर नहि भेजब। ईहो सोचय लगलीह जे हरेक साल बाढ़ि अबैत अछि। सरकार आ प्रशासन बाढ़िक नाम पर लूट-खसोट करैत अछि। बाढ़ि नहि आओत ओकर स्थायी समाधान नहि करैत छथि। बाढ़िक जँ स्थायी समाधान भय जायत तेँ आइ

ई दिन देखबामे नहि अबैत।

मालाक बाबूजी हर ओकरा मायकेँ टोकलक-

"जँ बाढ़ि चलिया जायत तँ पानिकेँ घटैमे एक दू मास लागि जायत। तँ मालाकेँ आइये सासुर भेज दियौक। दु-चारि दिनक झंझट नहि अछि। ई कैक दिनक संकट अछि। "

मुदा मालाक मायक मन नहि मानैत छल जे हम मालाकेँ सासुर भेज दी। ओ सोचैत छलीह जे अपन भूखल रहब तँ रहब मुदा बेटीकेँ कोनो कष्ट नहि होमय देबैक। बिना विदागरी कनोनहि कोना सासुर जाय देबैक। जीवन भरि हमरा बेटीकेँ लोक उलहन उपराग देत।

मालाक माय अड़ल रहलीह। ओ मालाकेँ किन्नहुँ नहि सासुर भेजबाक पक्षमे छलीह। मालाक माय आ बाबूजीमे बतंगड़ होमय लागल। मालाक माय अड़ल रहलीह। इज्जत प्रतिष्ठाक सवाल अछि। हम कोना बेटीकेँ सासुर भेजब। दुनू प्राणीमे जान-जानसँ बात होमय लगलैक। आस-पासक पड़ोसिया लोकनि जमा भय गेल। सभ दुनूक बात बुझलक।

समाजक लोक सभ मालाक मायक पक्षमे बाट देलक। किछु कालक बाद पूरा गामक स्त्री-पुरुष जमा भऽ गेल। सभक विचार भेल जे सभ कियो मिलि निंग बान्हपर सँ जे पानि गाममे आबक लेल झिनझिनाइत छल ओकरा रोकबाक उपाय करक चाही। सभ कियो मिलि खलिया सिमेंटक बोरामे माँटि भरि बान्ह पर जमा करय

लागल। पानि ज बान्ह पन हल्लुक गाममे अबैत छल से बन्द भय गेल। तनि नाति पुना गौं□ जागल नहि गेल। बाना-पन-बाना हमय लागल निंग बान्हकँ गाक न मजगुत कयलक ज न बान्ह टूटल आ न ओकरा नदी पानि गामपम आयल। गौं□-घंनुआ आ समाजक कठिन महनतसँ गाममे पानि नहि आयल।

दु-चारि दिनक बाद बाढ़िक पानि कम हमय लागल। गौं□ सभ कहय लागल-

"माला हमरा गामक बेटी अछि। हमरा सभक बेटी अछि। ओकरा बिना सासुनवलाक बिदागरी कोना काना सासुन जाय देबैक। गामक नन-हँसाय नहि हमय देबैक। ओकरा नजाक हमु जाक नाति जागय पड़त ओकर नाति जागब। मुदा अपना इज्जतकँ बुन्ऽ नहि देब। माला हमरा गामक इज्जत अछि। हमर मर्यादा थिकीह।"

पुना गाँवबला दु तीन दिन तक कठिन परिश्रम कय पानिकँ गाममे नहि आबय देलक। नस-नस पानि कम भय गेल आ बान्ह सेहो मजगुत भऽ गेल। गौं□ सभक निचान भेलैक जे प्रसव काल धनि माला ओतय नहीह।

किछु दिनक बाद बाढ़िक पानि कम भय गेल। मालाकँ बच्चा जन्म लेबाक समय लगिचा गेल। माला बड कमजोर छलीह। मालाक पिताक हालत दयनीय छल। ओकरा ओतक उपाय नहि छलैक जाहिसँ मालाकँ अस्पतालमे भर्ती कराओल जाय। जहिना गाममे बाढ़ि नहि आबय तकरा नाकक लेल ग्रामीण ओकरा प्रबल छल तहिना

पुना गाँव एक रहय किछु आर्थिक मदद कय मालाकँ अस्पताल पहुँचौलक। मालाकँ पानि चढ़य लगलैक। मालाक स्वास्थ्यम सुधार भेलैक आ ओ स्वस्थानिक दुय बच्चाकँ जन्म देलक। पुना ममानी गामक लोक खुश छल। अस्पतालक डॉक्टरकँ सभ बातक जानकारी भेलैक। डॉक्टर साहेब सेहो हनयुन मदद कयलन्हि। दवाईक व्यवस्था अस्पतालसँ भय गेलैक। डॉक्टर साहेब कहलाह जे ग्रामीण एकताम ओ शक्ति छैक जे कठिनसँ कठिन काममकँ आसान बना दैत अछि। ग्रामीण जीवनम सामाजिकताक ऐहन मतलब नहोत छैक जे अपन दु:ख काटि दोसरकँ सुख प्रदान करी।

-नारायण यादव, पत्नीक नाम : श्रीमती सुमित्रा देवी। जन्म : 14 जनवरी 1956, पिताक नाम : स्व. राजेश्वर यादव। माताक नाम : स्व. महेश्वरी देवी। दादाक नाम : स्व. भोला यादव। नानाक नाम : महान स्वतंत्रता सेनानी स्व. राम लखन सहेता। जन्म स्थान : तुमना, मूल गाम : तुमना, पो.- तुमना, भाया : नुनपुर, प्रखण्ड : अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी (बिहार) मातृक : ननही, थाना : खुटौना, पेशा : अध्यापन, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक, मात्र पेंशनपर आधारित जिनगी। शिक्षा : एम.ए. (मैथिली), लेखन : कथा, कविता आ आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाम प्रकाशित।

मोबाइल नं: 9939041116, 9430631993, 8541096004

सद्य: प्रकाशित कृति : खाली घर (कथा संग्रह), प्रकाशित/अप्रकाशित अन्य कृति : (1.) नारी दूसलक नानाकँ (कविता संग्रह), (2.)

बाबा नाम केवलम (कथा संग्रह) , (3.) समझौता (कथा संग्रह), (4.) ननकी पुतहु (कथा संग्रह)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.पद्य खण्ड

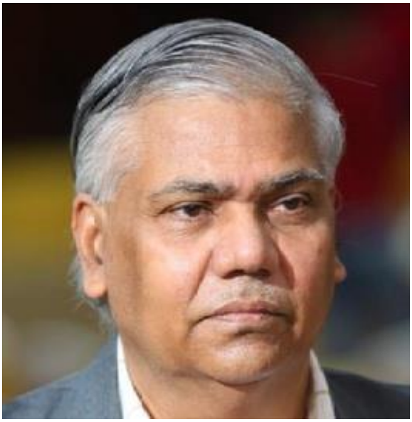
३.१.राज किशोर मिश्र- गजल

३.२.जगदानन्द झा 'मनु'- पच्चीस टा रुबाइ

३.३.आशीष अनचिन्हार-२ टा गजल

३.४.आचार्य रामानंद मंडल- २ टा पद्य

३.१.राज किशोर मिश्र- गजल



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जनरल मैनेजर (सिविल), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अन्धरा ठाढ़ी, पो. अन्धरा ठाढ़ी, मधुबनी

गजल

माँ एल नहि छथि धरा हि सँ,

आ' न वा दल, द्रुनका सँ नना ज,
मा र्गिु कँ थ्रसि ग कलक अिछ ,
ना द्रु -कगु क अिछ ज्ञ्ी का जा।

संपूर्ण गरुन ,यसनल अ्ह्मा न ,
लगेेछ ,नि शा क कृष्नूयखा।
दि नस वनि गेल ना गि अिछ ,
घूघूआ्ज नरुल अिछ शामख,

ज्ञ्जा गक मरा थ्रा गि ष्यिं त,
थ्रा गि मंय कनथि प्रि ला क,
द्रुनका अष्ठेग प्रका श का ना कs,
मना नरुल अिछ शा क?

ह्लटगा र नरि जँ गम -या श सँ,
रs जा जा जग म प्रलय,
जी गि जा जा गि मि न ,आडान
रs जा जा डाकन जय।

दि ना कन असा थकि ग रल,
रs गेल ह्ठथि डा असरा य,
अह्मा नक कवजा म नसूधा ,
अिछ गम क ज्ञ्ी करुन अ्या य?

मूदा , जी ि का ना जा ७ग अह्वा न?
प्रका श गऽ ,ह्रा ॢॢग अछि अजय,
कि ह्र७ का ल क वा द म,
जा ि यअ्डालक जी गक' (प्रया।

मूक्र स्ला ह गमि स्मा सँ,
यूनि उगला नर म दि ना कन,
ह्वा क ज७ह, स७ह स्लैक ,
गम, रून ॢॢजा गक चा कन।

डाहि ना , कहि डा ,यूर्णि म ना ि ,
रऽ जा ॢॢ ह्रथि गहन-ग्रसि ग ना कश,
ॢॢजा नि आ सा गी घा न गमि स्मा ,
चा ननि नहि कनि का नहि जा ॢॢह्र (शषा।

गहन गऽ यनि धा म अछि ,
दूर्घटना ,खगो लक दा आनि ,
७म्रन ,ड(Oह्र समूद्र म ,
नमहन -नमहन जा आनि ।

खग्रा स म गऽ ॢॢजा ग स्रयं ,
रऽ जा ॢॢग अछि डा अना थ,
दूख्प्रहा न वा ह्रल -ह्रकल नहि ,
यउग अछि पृथ्री क मा था।

नि स्हा नक खा ज उयना न्द म,
चलल ,यना गरुन क हनु,
ग्रुधक द्या खी कि उा न अछि ,
नहि ना हु ,आ' नहि कनु।

नि (शेष यनि स्थि ि खा(गा ल क,
सूर्य उा पृथ्वी क वी च ऊँ चा न,
अ‍ॅंटकौठ ननि -ञ्जा ा, नक्ष म,
सूर्य गरुनक ञ्जरु अछि प्रमा ध।

ऊँ, नि नम्रा न् आ चछु वी च म,
पृथ्वी आवि (गली ह,
ओहि का नध सँ चछुगरुन,
नि ध्नभ्रि न र्टु यअउाली ह।

0। ८ नहेँा नहि अछि यनि स्थि ि ,
वदलेँा,चलेँा नहेँा अछि ,
मनुखक जि नगी क सहया ि नी ,
आ, कखना ठलेँा नहेँा अछि ।

दना नहि ठथि ठूटल गरुन सँ,
वदलेँा नहेठ , ओहि ना क' समय,
गरुन -उगना स ह्रा ञ्जा नहेठ,

यना जय करवना ,आ करवना जय।

गा कक' चा रही वा ट उगना सक,
ठा ओ न करवना रा थ आसक।

टूटगे सि बू म जा आनि क वल,
आयस जगे ,प्रलय क जडला।

दखवे , नि कलगे , ॐजा ग अह्वा न सँ,
30गे संगी ग, नी धा क टूटल गा न सँ।

मनूटुमि म रूटगे या नि क धा न,
चलेग छेक उमद यन संसा न।

कमजा न यओगे रमनक आनन्द,
वंधन सँ मूक्ति क, छ का ना थगी।

वि ओना -वि रा नि क टूटगे टा ढ,
उाकन सँ का ना , रूटगे समा ढ।

ओले गरून
उगना स रले,
चलि (गले, गरून।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.२.जगदानन्द झा 'मनु'- पच्चीस टा ग़ज़ल



जगदानन्द झा 'मनु'

पच्चीस टा ग़ज़ल

ग़ज़ल 1

आँचर नहि उठाबू आँखिसँ पीबय दिअ

हम जन्मसँ पियासल कनेक जीबय दिअ

क कहै ग अछि निसाँ शनावम व७ अछि
कनी अयन प्रमक निसाँम जीवय दिअ्

नूवाॐ 2

हम यीलौं गँ लाक कहलक शनावी अछि

कहु ७ग७अ् क नदि वहसल कवावी अछि

वूमलौं अहाँ सर दुनियाक (0कदान

हमना आँखिसँ दखु् की खनावी अछि

नूवाॐ 3

यीव नै शनाव गँ हम जीव काना कय

हाटल कनजकँ हम सीव काना कय

सगना जमाना रल दुश्मन शनावक

सवहक सांमा गँ आव यीव काना कय

नूवाॐ 4

पीलौं शराब गे दुनियाँ कहलक बताह

बिन पीने छी दुनियाँ रहल अछि कटाह

ई नहि पीलक कहाँ अछि ओकरा महल

गे पिबिऔ क' किऐक नहि बनि जाउ घताह

रुबाइ 5

रहल नहि सिनेह गे शराब पीलौं

दर्शन हुनक हरदम गिलासमे कलौं

के कहैत अछि शराब छैक खराब 'मनु'

बिन हुनक नहियौं शराब सँ हम जीलौं

रुबाइ 6

ढोलक धम-धमा-धम बजैत किऐक छै

घुँघरू खन-खना-खन खनकैत किऐक छै

दुनू दीपनसँ छैक एकासन खाली

दुनू अयन गप्प नहि बूझैत किऐक छै

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 7

𑒣𑒲𑒪𑒾𑓀 𑒢𑒯𑒱 𑒑𑒿𑒏𑒲 𑒕𑒻 𑒖𑒢𑒰𑒥 𑒏𑒴𑒮𑒥 𑒏𑒲

𑒥𑒱𑒢 𑒣𑒲𑒢 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒧 𑒏𑒩𑒥 𑒑𑒿 𑒏𑒩𑒥 𑒏𑒲

𑒋𑒏 𑒠𑒰𑒮𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒋 𑒁𑒕𑒱 𑒐𑒴𑒢 𑒣𑒲𑒥𑒻𑒞

𑒐𑒴𑒢 𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒖𑒢𑒰𑒥 𑒣𑒲 𑒏𑒨 𑒠𑒹𑒐𑒥 𑒏𑒲

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 8

𑒑𑒼𑒩𑒲 𑒑𑒰𑒪𑒏 𑒏𑒰𑒖𑒩 𑒖𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒩𑒻𑒞
𑒕𑒾𑓀𑒩𑒰 𑒮𑒋 𑒮𑒑𑒩 𑒙𑒰𑒨 𑒑𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒩𑒻𑒞
𑒣𑒋𑒪𑒏 𑒥𑒛 𑒩𑒰𑒑 𑒏𑒰𑒖𑒩 𑒢𑒱𑒬𑒰𑒢𑒰𑒮𑒿

𑒑𑒰𑒪𑒏 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒧 𑒏𑒰𑒑 𑒖𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒩𑒻𑒞

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 9

𑒏𑒰𑒖𑒩 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒏𑒨 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒧 𑒥𑒮𑒰 𑒪𑒱𑒁
𑒧𑒱𑒞 𑒥𑒢𑒰 𑒏𑒨 𑒏𑒢𑒲𑒏 𑒏𑒩𑒹𑒖𑒮𑒿 𑒪𑒑𑒰 𑒪𑒱𑒁
𑒋𑒢𑒰 𑒖𑒳𑒢𑒱 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒢𑒐𑒲 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒒𑒳𑒧𑒰𑒅
𑒂𑒿𑒐𑒱𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒢𑒲𑒨𑒰 𑒏𑒰𑒖𑒩 𑒥𑒢𑒰 𑒪𑒱𑒁

रूबाइ 10

खुसियाउँ कनी अहाँ इशाना कनितहुँ

रनि जीवन हम अहीँक वारम नहितहुँ

मुस्कीम अहाँक अयन मान लुटा क'

गनहठीयन जान लन हम अवितहुँ

रूबाइ 11

अनकन घन जउ हाथ सकै सर किया
दासनक कनजा गानि हँसै सर किया
अयना यन ज वियगि उलै कउखना
माथा यकति हिचूकि-हिचूकि कनै सर किया

रूबाइ 12

कान विधि मनि कय हम नूयैया कमलौं

सुख चैन निन्न त्यागिकँ अपन हमलौं

गाम घरक सबटा सऽन संबंध त्यागि

बिन कसूर बाहन वनवास बितेलौं

रुबाइ 13

घाट-घाट पर सूतल कतेका लोहि अछि

साउध लोककँ मान लेन माहि अछि

धर्मक नाम पर खुजल कतेक दोकान

टाका लऽ छनम सस्ता पाप धोवि अछि

रुबाइ 14

बाबूजीक कनजम सदिखन रहलहुँ

हुनक तन मन धन सगरो हम पओलहुँ

नौद यानि दादीसँ सदिखन बचलहि

सबाक बड़म हम पनदश रगलहुँ

रुबाइ 15

एक जान सबटा बाबूजी छलथि
ओ किछु छी जखन बाबूजी कहलथि
अपन नहि दुख हमर पर देलथि
सुधि अपन बिसरि हमरा मनुख बनलथि

रुबाइ 16

ओ जन्म देलथि आ कहलथि गदहा

ओ पासलथि आ मानलथि गदहा

गदहा जँका सगरा जिन्दगी बितलहुँ

जिनका बियाहलहुँ आ बुझलथि गदहा

रुबाइ 17

मैथिली साहित्यक आँच सुलगैत अछि

सगरा नव विधाक ज्वाला पजरैत अछि

कोटि नमन जिनकर बिछल जाबैत अछि

निर्दलक बारल आगि 'मनु' लहकैत अछि

हाइकू 18

सिस्टम आइकेँ किए बबाल बनल अछि

नेता सभ गोँ एकटा जयाल बनल अछि

बड़ बड़ बाघन बिल्ला नाच चलबैए

जनताक प्राध्यन सवाल बनल अछि

हाइकू 19

गामक अधिकारी एला सैंया हमर

कोना क एकरौ कियाक बैंया हमर

सभक पटीक माल आब हमर छैक

सैंया लऽ लथिन सभटा बलैंया हमर

हाइकू 20

साँननिया पिया अहाँ ई की कएलहुँ

साउन बदल छाडि चलि काना गएलहुँ

बहल हवा शीतल सिहरैए हमर मन

काना नरव बिनु अहाँ वूमि नै पएलहुँ

नूवाई 21

(गानी गान मुस्कीम छी जरुन रनल

नै एना मूँह खाल कए घायल पनल

ऊँ निकैल गएलौ फूलमऽ सन हँसी

वाटयन रटए काका छाँडा मनल

नूवाई 22

नैइटा हाथम करुन लकीउ छै

नै माय वाय ई करुन गकदीन छै

(वा (वा कs ऊँO कय लकीउ खीएलै

नै सूनलक किया ई दूनियाँ वहीन छै

रुबाइ 23

कर्जा लय क जीवन हम जीब चाहल छी

हारल अपनकेँ कहुना सीब चाहल छी

सब किछु लुटा कय 'मनु' अपन जीवनकेँ

निर्लज जकाँ हम गारि पीब चाहल छी

रुबाइ 24

अभिमन्यु जकाँ चक्रव्यूहमे फसलौं
नै बचब सिख हम अर्जुन बनि पएलौं

'मनु' जीवनकेँ एही महाभारतमे
सगरो ठाम हम जीवन रन देखलौं

रुबाइ 25

हम जनैत छी की अहाँ प्रकाशित नही

अहाँक सुख लेल खुशीसँ हम आँच सही

बातीकेँ जनैत ओही दुनिया देखलक

गेल बनि हम गँ जनलौं दूख कागक कही

-जगदानन्द झा 'मनु', ग्राम पोस्ट - हरिपुर डीहटोल, मधुबनी। मोबाइल- 92124 61006

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.३.आशीष अनचिन्हार-२ टा गजल



आशीष अनचिन्हार

𑒠𑒳 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪

𑓑

𑒩𑒒𑒳𑒣𑒞𑒱 𑒩𑒰𑒒𑒫 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒩𑒰𑒧
𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒔𑒳𑒏𑒾 𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑒏 𑒠𑒰𑒧

𑒮𑒳𑓀𑒠𑒩 𑒮𑒳𑓀𑒠𑒩 𑒔𑒏𑒧𑒏 𑒢𑒑𑒩
𑒅𑒣𑒙𑒪 𑒫𑒱𑒪𑒙𑒪 𑒮𑒦𑒯𑒳𑒿𑒏 𑒑𑒰𑒧

𑒑𑒩𑒠𑒢𑒱 𑒐𑒰𑒪𑒱𑒢 𑒋𑒏𑒻 𑒩𑓀𑒑
𑒮𑒼𑒢𑒰 𑒔𑒰𑒿𑒠𑒲 𑒪𑒰𑒯𑒰 𑒢𑒰𑒧

𑒣𑒴𑒕𑒪 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒻 𑒋𑒏𑒻 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢
𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒠𑒹𑒪𑒏 𑒗𑒴𑒧𑒪𑒲 𑒂𑒧

𑒅𑒖𑓂𑒖𑒩 𑒬𑒼𑒦𑒱𑒞 𑒣𑒲𑒨𑒩 𑒪𑒰𑒪
𑒯𑒩𑒱𑒨𑒩 𑒟𑒰𑒏𑒢𑒱 𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒒𑒰𑒧

𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱𑒧𑒹 22-22-22-21 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒁𑒕𑒱। "𑒩𑒒𑒳𑒣𑒞𑒱 𑒩𑒰𑒒𑒫 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒩𑒰𑒧" 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒝𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒔𑒱𑒞 "𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒩𑒰𑒧𑓁 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒨𑒝𑒧𑓂" 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑓀𑒬 𑒁𑒕𑒱।

𑓒

𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒣𑒢𑒰

हिंदु मुस्लिम चमना वरना

साहित्य आ कि राजनीतिम
अविग नहलौ अदना यदना

अधनगियाम हमहुँ दखल
जकै हलै अनघा वदना

नान नान नान नान नान
आव लिखन नहथिन निधना

दुख हटल नहि मुँहदखा॰॰
दुक्ख नहि हमन मुँहवजना

सभ पाँतिम 22-22-22-22 मात्राक्रम अछि। दु टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानल गेल अछि। ॰॰ वहन मीन अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.४.आचार्य नामानंद मंडल- २ टा पद्य



आचार्य नामानंद मंडल

२ टा पद्य

१.

महाकवि कालिदास

मिथिला म महाकवि

छथिन कालिदास रहलन महान।

उच्चै0 दुर्गा स्थान

मधुवनी स्लैन हूनक 0ाम।

संस्कृा याठशाला क

नहलन मूर्ख अनुवन छात्रावास ।

काटि नहलन नह

बै0ल गाछ क डाल।

देखिलन धूर्त पंडिा

विद्योामा स हारल पंडिा।

छल स यानिग्रहन

कनैलन कालिदास क संग।

𑒮𑒳𑒯𑒰𑒑𑒩𑒰𑒞 𑒧𑒹 𑒋𑒪

𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒐 𑒏𑒰𑒪𑒱𑒠𑒰𑒮 𑒮𑓀𑒑।

𑒋𑒧𑒢 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒱𑒪𑒢

𑒖𑒾𑓀 𑒥𑒢𑒥 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒖𑒢।

𑒒𑒴𑒧𑒱 𑒁𑒨𑒪𑒰 𑒣𑒰𑒚𑒬𑒰𑒪𑒰

𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰 𑒋𑒢 𑒁𑒢𑒴𑒫𑒰𑒢𑒰।

𑒂𑒨𑒪 𑒮𑒰𑒫𑒢 𑒮𑒰𑓀𑒗

𑒔𑒧𑒏𑒻𑒞 𑒑𑒩𑒖𑒻𑒞 𑒥𑒩𑒮𑒻𑒞 𑒧𑒹𑒒।

𑒂𑒨𑒪 𑒥𑒰𑒜𑒱 𑒢𑒠

𑒛𑒴𑒥𑒪 𑒔𑒰𑓀𑒔𑒩 𑒐𑒹𑒞 𑒐𑒪𑒱𑒯𑒰𑒢।

𑒏 𑒥𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒠𑒲𑒨

𑒧𑒻𑒨𑒰 𑒏 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢।

𑒮𑒦 𑒏𑒻𑒪𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩

𑒥𑒰𑒪𑒹𑒑 𑒧𑒴𑒩𑒐 𑒏𑒰𑒪𑒱𑒠𑒰𑒮 𑒠𑒲𑒨।

𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒠𑒲𑒨

𑒣𑒰𑒪𑒻𑒢 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒧𑒴𑒐 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒐।

𑒐𑒳𑒬 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒢 𑒫𑒩𑒠𑒰𑒢

𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒢 𑒂𑒕𑒼 𑒢𑒰𑒑।

𑒮𑒦 𑒖𑒨𑒧𑒰 𑒏𑓀𑒚𑒰𑒑𑓂𑒩

𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒮𑒩𑒮𑓂𑒫𑒞𑒲 𑒥𑒮𑒑𑒹𑒪 𑒏𑓀𑒚𑒰𑒑𑓂𑒩।

𑒏𑒰𑒪𑒱𑒠𑒰𑒮 𑒏𑒫𑒱 𑒧𑒯𑒰𑒢

𑒩𑒔𑒪𑒢 𑒁𑒦𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒬𑒰𑒏𑒳𑒢𑓂𑒞𑒪𑒧 𑒧𑒰𑒪𑒫𑒱𑒏𑒰𑒑𑓂𑒢𑒱𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩।

आ रचलन मेघदूतम

रचलन ऋतुसंहार कुमारसंभव रघुवंशम्।

भेलन विख्यातमा यियान

प्रसिद्ध ए भेलन संसार।

मिथिला मे कवि महान

नामा महाकवि कालिदास महान।

२.

कवि आदि विद्यापति नाओं

कवि आदि विद्यापति नाओं।

जन्मलन मधुबनी बिस्फी गाओं। १।

दसम शताब्दी काल आओं।

मिथिला नाओं विद्यापति याओं। २।

बिना महगाइक घन अछि।

कुल भूषण नाछि कहलाछि। ३।

नित नव कविता बनाछि।

नित विद्यापति नाच कराछि। ४।

समाज मे नवजागरण कराछि।

ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकर चर्चा करछि। ५।

मिथिला म विद्यापतिगीत गाछि।

एह न जान विद्यापति याछि। ६।

मैथिल चर्चा न करछि।

वाएन विद्यापति क समस्छि। ७।

मिथिला मैथिली जागरण हांरुछि।

घर घर विद्यापति गाछि। ८।

मिथिला धन धन हांरुछि।

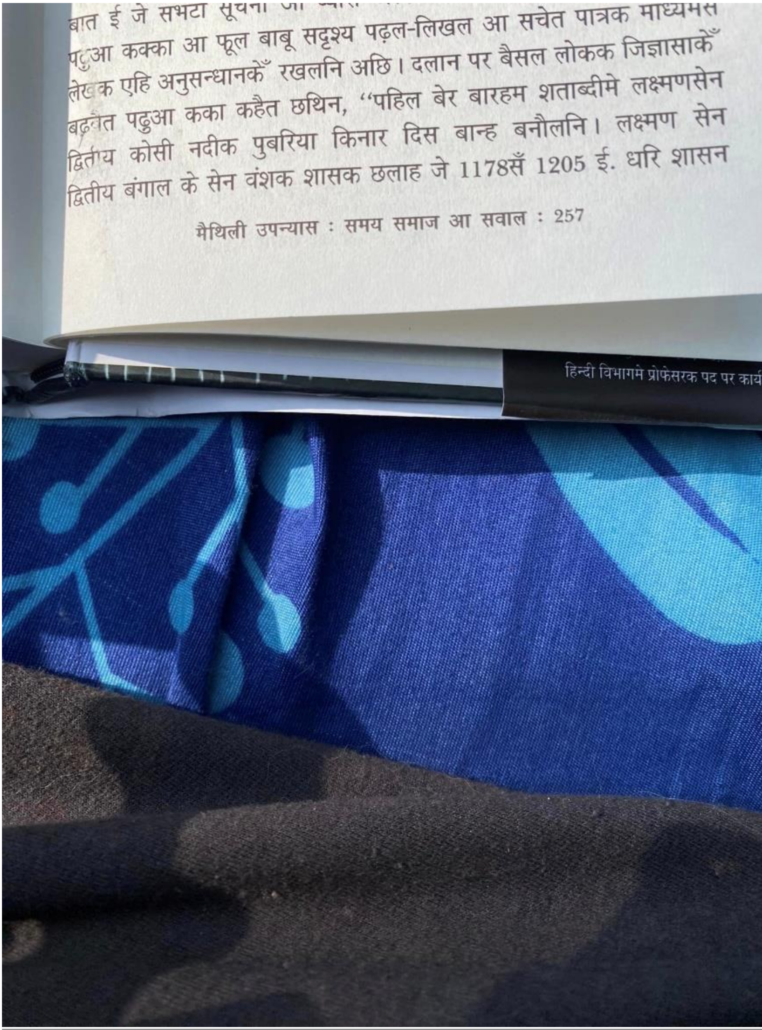
नामा आदिविद्यापति चर्चा करछि। ९।

-आचार्य रामानंद मंडल, सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजवंश मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवरी १९५० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह रासा क त वांटिया। २०२२ प्रकाशित रचना - समिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पता-ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता-पिपरा सदन, मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढ़ी राज्य-बिहार पिन-843302

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अनुलग्नक १: मैथिलीमे छन्द समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- ज्ञान लेखक पंकज झा प्रकाशनक नूतन साहित्य ज्ञानिक खुलासायन पाठकीय टिप्पणी)

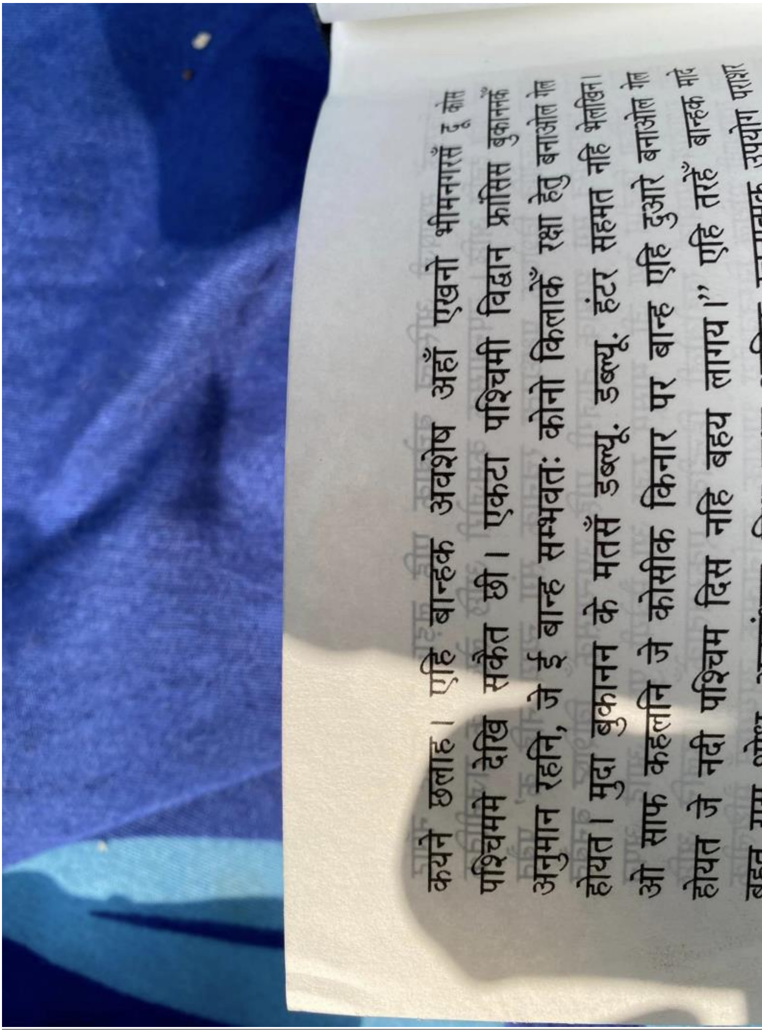
विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). http://videha.co.in/ **अंक ३६२-३६३ क रिपोर्ट पर टिप्पणी**



बात ई जे सभटा सूचना आ

पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ
लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ
बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, ''पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन
द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन
द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257



कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे बहुत रास शोध, अनुसंधान, मिथ तथा आदिक रचनात्मक उपयोग पराशर

भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

....

उयन्यासकान क छथि, यंकज यनाभन (जल प्रांगन उयन्यास)

दुखद

Rabi ndraChaudhary

....

वड दुर्रांग्ययुर्ण, आयम्फिजनक आ आयनाधिक कृत्य..

KumarManoj Kashyap

....

ॐीसर यदि वङ्ग विंगिग छी।

R N Mshra

....

दुर्रांग्ययुर्ण

Kal pna J haPat na

....

आदिन्नवा..! रून ॐी क छैथ?

यंकज यनाभन (जल प्रांगन उयन्यास)

हे भगवान..! ई ठीक बात छैथ।

Umesh Mandal

....

Gaurinath:

नीक। ओहुना बात कें देखान करब जरूरी

पंकज पराशर (जल प्रांतर उपन्यास)

ठाकुर ग लखकीय जीवन बानी पर टिकल छै आ एकरा प्रश्रय देव'बाला सभ मैथिली मे कम नहि।

....

ओहुना बात लोक सभ मैथिली आर मिथिला के अहित करय मे सदैव आगू रहैत छथि

JhaPrasanna

....

एकरा कोर्ट मे लs जवाक चाही

योगेन्द्र पाठक वियोगी

+91 98310 37532

....

SubhashChandraYadav: I condemn it. The thief must be exposed.

....

अति दुखद, निन्दनीय

Manoj Pathak

....

सादर आग्रह।

काट कए सकैत छलहुँ। यहेतु (स्रोत) क चर्चा करनाइ आवश्यक छल। नै त साहित्यिक चोरी मानल जायत।

RamanandMandal

....

धन्यवाद।

VidehaKeshavBhardwaj Delhi

....

Nabo Narayan Mishra

दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति

....

Mukund Mayank

Oh

....

प्रदीप पुष्प

बहुत सुन्दर बात।

....

Abhilash Thakur ·

घृणित कार्य! लज्जा जनक

....

Ajit Kumar Jha

एना नहि लाजो नहि लगैत छैक जेहन प्रवृत्ति वाला महानुभाव सभ कें। जेहन लोक सभ कें लेल सभहक अलग सँ पुरस्कारक घोषणा होयबाक चाही। एहि तरहक करबाक लेल अपन कें साधु वाद ।

....

Ramesh Kumar Sharma

यूनस्कान यावे क जलुवाजी रुगे

....

Kunal

उयन्यास आ एकन लखकक नाम घाषित कनू

....

Ashish Anchinhar

Kunal जी, ऊँ काना समाप्य याठक ओी प्रश्न यूछन नहिएथि एखन हमना नीक लाएगो।

प्रवुद्ध याठक उा लखक वर्गसँ ओी प्रश्न ओवाक मएलव छै ज स्थिगि गंरीन रुs एगेल छै। उाना जखन यूछिय दलहुँ अछि एखन ओकन उन्दन अछि- याथी, जलप्रांएन, यंकज यनाशन। ओहि याथीक गदगदी आलाचक, कमलानंद झा।

....

Kunal

Ashish Anchinhar धन्यवाद ।

ओना सार्वरीम जकां छओ ज वस गंरीन आनाय लगाउाल जाओ छओ मृदा नाम नओ लल जाओ छओ। ओना हमना दाओयाक्रासी क चनम लगओओ। ओी अनसाहांग छी ।.........

आव नाम ल एगेल छओ। ए हमना लगओओ ज यंकज यनासन (उयन्यासकान) आ कमलानंद झा (आलाचक) क वाजक चाही ।

....

Lakshman Jha Sagar

ओहन चानक सामाजिक वहिस्कान हवाक चाही। आगि यानि ढाओ0

दवाक चाही। मुँह म कानी चून लयि क गदहा यन सनआम घूनवाक चाही। ओहन कुदशा काय दवाक चाही ज हन श्मा ओहन घृणित काज नै कनय।

....

Chitragupta Chitragupta

अयन्द दूखद

....

जगदानन्द झा 'मनु' ·

मिथिला मैथिलीम साहित्यक चानी जगजाहिन अछि। मूदा आव साहित्य अकादमी आ डाकन लकक द्वाना.... वहुत निंदनीय काज, ओहन ओहन लाककँ अनश्य दखान कनवा चाही

....

श्रीधनम

ओही यंकज यनासन, हम त' यढवाक आवश्यकता नहि वूझलहुँ। यणिताक नाम यन मात्र ज्ञगाउ छनि हिनका लग।

....

आशीष अनचिह्नान

निग नवल दिनश कुमान मिश्र यढलहुँ आ ओहि संदर्भम हम अगव कहव ज गानानंद नियागी ना कमलानंद झा सन प्रवुद्ध लाक आगुआ यंकज यनाशन एवं डाहन साहित्यिक चानक संनक्षणम अविग नहगाह। कानण ओही ज ओही प्रवुद्ध लाक सत सहा डाही मानसिकता कन छथि।

....

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com**यन**

पाठ।

अनुलग्नक २: मैथिलीमे ठक्क समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- चोर लेखक पंकज झा पराशरक यूनान साहित्यिक चोरिक खुलासापर पाठकीय टिप्पणी आ किछु प्रमाण)

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). http://videha.co.in/ अंक २६-३० क रिपोर्ट पर टिप्पणी (प्रसंग- चोर लेखक पंकज झा पराशरक पहिलुका साहित्य चोरि)

....

kellner@ucla.edu"

Dear Gajendra, thanks for the detective work. was there a response? best regards,

Douglas Kellner, Philosophy of Education Chair

Social Sciences and Comparative Education, University of California-Los Angeles, Box 951521, 3022B Moore Hall, Los Angeles, CA 90095-1521, Fax

310 206 6293, Phone 310 825 0977 http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html

…………………………

dear Gajendraji, apnek mail milal. Pankajjik kritya janike bar dukh bhel. Ahi se maithilik nam kharab hoyat achhi. Apnek kadam ekdum uchit achhi.- **Rajiv K Verma**

…………………………

These People are hellbent to bring down the literary discourse down to the gutter. Now you have been receiving mails like one. We are with you and i have forwarded your mails to Maithili speaking people all across the country. Sir I have sent the link of Parashar's duplicacy to several people along with Pranabh Bihari who had traslated that article. I had telephonic conversation with him also and he was quite upset over Parashar's duplicay. Pranav is my junior and a good friend of mine. since you have referred Pranav who had traslated that article it is

unfortunate that he was misused by Parashar. But i must congratulate you for exposing scam run by Parashar and his team. Parashar, though must not be blamed if he lifted the article of Nom Chomskey . Now i must doubt the artistic sensibility of Parashar who is now a pseudo-- intellectuals. I am amazed that how did he dare to publish the article of Nom Chomskey as his own. God bless him no more. - **VIJAY DEO JHA**

....

dhanyvad. muda ehne lok sabjagah aadar pabait achi. -**shridharam**

....

अहां कँ सूचनार्थ य(0न छी (किछु घूमिण काज यंकज यनाशनक) ज यंकज यहिनहा ॐ सव काज कनैग नहय छलैग। - **aavinash**

....

Dear Gajendra g, You are doing very well in the field of collecting all the documents related to the Maithili. Videha. Com realy a adventureous collection. I will also find some time to learm

the article published through the videha. Now your detective style theft the sleeping of many of the so called literary personnel. Go a head. jai Maithili jai Mithila- **Sunil Mallick**, President, MINAP, Janakpur

....

your efforts are commendable. Any such ghost writer or fake identity holder must be boycotted from literature at once Thanks.- **shyamanand choudhary**

....

Namaskar. Chetna samitik sachiv ken mailak copy hastgat kara del achi.- **Dr. Ramanand Jha' Raman'**

....

प्रिय गजेन्द्र जी , चेतना समिति हिनका सम्मानित कएलक अछि सेहो हमरा ज्ञात नहिं। यद्यपि हमहु चेतना क स्थाई सदस्य। ऊ हा. मुदा निंदास्पद घटना तँ ई थिक तँ दुखी कयलक। कतिपय नव मैथिल-प्रतिभाक आकलन-मूल्यांकनक हमर अपन संग्रहो स्नराव, ओहि दुर्घटनाक बाद तँ आब चिंता मे ध' देलकय। देखी, हम अपन निश्चित रहलहुँ। बहुत दु:खद दृश्य। सृजन निरुद्ध

साहित्यिक सन्दर्भ मे स्त्री घटना आधुनिक मैथिलीक बहुत कनुय प्रसंग क' क' स्मरण कैल जायत- सस्नेह,- **गंगेश गुंजन.**

....

PRIYA MAITHILJAN, APPAN BHASHA- SANSKAR-SANSKRITI KE ASMARAN KARU AA EHAN VIVADAASAPAD LEKANI B KARANI KE VIRAM DIYA. ESWAR KE SAKCHI MANI - DIL PAR HATH RAKHI AA KULDEVI KE ASMARAN K-K YAD KARU KI SACHHAI KE KATEK KARIB CHHI.NIK BATAK LEL MANCH KE UPYOG KARI TA UTTAM DHANYABAD.SAPREM- **PK CHOUDHARY**

....

Gajendra babu, pankaj puran chor achhi. Ham sab okar likhit ninda das sal pahine aarambh me kene rahi. Okra ban k kay ahan nik kayal. Chetna samiti ke seho samman wapas lebak chahi aa okar ninda karbak chahi.- **subhash Chandra Yadav**

....

प्रिय ठाकुरजी! (माननीय संपादक), “विदेह स्त्री-पत्रिका” [मैथिली], एखन धरिक उपलब्ध सामग्रीक आधार पर हम अपनहिक संग आओब परसिन्न करब। - **शंभु कुमार सिंह**

....

Dear Gajendraji,

I fully agree with you that we must fight against blatant cases of wrongful appropriation.

हां अपन मल मं लिखन छी ज निदह आकाॢन स संबंधित लखक'क सबटा नचना हटा लल जायत। अहि स आकाॢन सं ॢी प्रसंग सहा, एकन साक्ष सहा मटा जायत। हमन मत ॢी जा साक्षव नहवाक चाही निक आ अधलाह दून् गनहक काज'क। अहां अध्यसन कामंट आ निंधय सहा आकाॢन म जा क संबंधित नचना क यास्ता-सिक्रायहन क नूय म रनिष्ठा'क या0क'क लल सूनजित नाखि सकैत छियहि। ॢी दाहनवाक वहूत औचित्यक नहि ज निदह निक लागि नहल अछि आ अहांक यनिश्रम एकदम दखा नहल अछि। ॢीति,सदन। - **Sadan Jha**

....

Thank you.- **Nishikant Thakur**

....

Thanx Gajendraji, for your immediate response. I must congratulate you for the work you have done to save the sanctity of the literature world as a whole. I feel proud for the person like you who

shows the courrage to bell the cat. If the so called writers like Parasharji are there to spoil the sea, on the other side it is very hopeful sight to have a person like you who is alert enough to take care of such filth & keep the sea clean. Thanx for enlightening me on the subject. Regards- **Bhalchandra Jha.**

....

यंकज यनाशनकन ७हन कार्य यन ममनश अवैग अछि कनीव वीस-यचीस साल यहिलुक घटना, जहिया आकाशवाणी दनरंगासँ म,म,डॉ, सन गंगानाथ झाक ७कमात्र मैथिलीक कानूनिक यदकँ ७क गोट कवि द्वारा अयन कहि प्रसानिग क७ दल गेल छल, ज वादम (सजग श्रोगा द्वारा सूचना दलाक वाद) आजन्म वैन क७ दल गेलाह। कहवाक गाग्यर्य ज जँ हम मैथिल दनरैगा- मधुवनीम गंगानाथ वावूक यदकँ अयन कहि सकैग छी गँ ऊ्री कान वउका गया निश्चय ७हन नचनाकानकन सङ्ग क७गन ङग ऊOा७व आनश्यक ।- **ajit mishra**

....

Dear Gajendrajee, We should take strong step to prevent such intellectual cheats. My support is always with you.- **K N Jha**

....

This seems to be a dangerous trend and we should also try and refrain from publishing anything from such authors. Regards,- **Prof. Udaya Narayana Singh**

....

प्रियवर ठाकुर जी, मैथिल साहित्यकार आब साहित्येतर क्षेत्रमे सेहो क रहल छथि, ई जानि अपार प्रसन्नता भेल | पंकज पराशर क नकारात्मक बुद्धिक पूर्ण उपयोग करबाक लेल हम नोबेल पुरस्कार सँ सम्मानित कराय चाहैत छी |- **बुद्धिनाथ मिश्र**

....

Sampadak Mahoday, Apne ehi prakarak durachar rokwak lel je prayash ka rahal chhee ohi lel dhanyabad.Ehen blackmailer sa maithili ken bachayab aawashyak achhi, Sadar- **SHIV KUMAR JHA**

....

गजेन्द्र भाइजी, नमस्कार ! मैथिली मे ओहि तरहक काज लगातार भ' रहल अछि । किछु व्यक्ति ओहि धंधा मे अग्रसर छथि । मैथिलीक सम्पादक लोकनिक अनभिज्ञताक फायदा कतेक अंग्रेजी पढनिहार तथाकथित साहित्यकार लोकनि उठा रहल छथि । पंकज जीक पहिल

म छयल लख क हम सहा यढ्न र्हा आ किछु दिनक वाद हम नट यन मूल लखकक आलख क सहा यढलहू। हमना ग' आश्चर्य लागल छल ज यंकज जी आलखक कम स कम शीर्षक ग' वदलि लौगथि मुदा हुनका ओगक स्मान नहिगनि गखन की छल। ओगव नहि , हिनक वहुग नास कनिग अंग्रजी साहित्य स' हन-हन कयल गल अछि। खैन ! ज कनथि ... । मुदा ओहि वन कहावग ठीक हावाक चाही " सौ सानान क ग' ओक लाहान क " । प्रकाशन म ज रो किया व्यक्ति गलती क' नहल छथि हुनका गंरौन क्रिमिनल वूसवाक चाही । धयनाद ओहि लल अहाँ क ज ओगक जानदान गनीका स' ओहि गद्य क उठलहू ।- अहाँक- प्रकाश चन्द्र (**प्रकाश झा**, मैलानंग)

....

pankaj parashar vala prasang bar dukhad laagal. - **kamini**

....

□□□□□□□ □□□, □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□. हमन मनगव ओगव, ज ओक वन अहां दखान क दलहूं, आव छाति दल जाउ. हिन्दीया म ओहिना र नहल छै. वन वन आ खनाव राषा म लिखल मान क दुखी कनैग अछि. हन लागैग अछि ज अहि म समय कियैक नष्ट कनी? हिन्दूस्तान म जाणि आ सहा मैथिली स जाणि नयि जाओग.

हम एखनो नहि मानैत छलहुँ मुदा आब 30 बरख स मैथिली म लिखलाक बाद आब देखल जे एक ठाम 1 मैथिली साहित्य म लिली जी, उषा जी आ शेफालिका जी क बाद यदि किछ नाम लैत अछि त हमर. 2 एखनो कोनो पत्रिका वै छै त हमरा लग रहबाक आग्रह होइत छै. 3 एखनो हम ठाम सक्रिय छी आ निरंतर लिखि रहल छी. 4 दुखद जे हमरा बाद (सुस्मिता पाठक आ ज्योत्स्ना मिलन क हम अपन दुनिया बुझैत छी) क बाद एहन कोनो सशक्त कलम, महिला लेखन नहि आएलए. 5 स्त्री स्थिति रहलाक बादो, आब जहन हम देखै छी, त पाबै छी जे हमरा पर, हमर रचना पर अथवा हमर रचना पर किछु नहि लिखल गेलए, बाह ठा मारन रानाज रहथु अथवा आन किछ. जहन हमर दशक कम चर्चा होइत छै, तीन चारिटा नाम पर सविस्तार चर्चा होइत छै, जाहि म हमर नाम नहि रहैत छै. हमर नाम मात्र सहर्ष लल जाति दल जाइत छै. 6 एक दिन म मात्र नमध जी हमरा पर एक गोट लेख लिखलन्हि. हम ठकना पुन: टाइप करबा क अहां लग पठायब. 7 जाति पाति धर्म आ क्षेत्र पर कहियो ध्यान नहि देलाक कारणे त कही हमर स्त्री स्थिति नहि छै, आब हमरा स्त्री साबवा म आबि रहल अछि. 8 हमर पिउक, जे स्वयं हिन्दी क ख्यातिलब्ध कथाकार छथि, हमरा बुझन रहलाह जे हम मैथिली म लिखब बन्न क; दी, कियैक त हम गैर मैथिल (जाति विशेष) स नहि छी, तँ हमर लेखन क कहियो मैथिल सब नहि नोटिस करताह, कहियो किछु नहि करता.. अपन भाषाक प्रति प्रेम क आग्रह कारणे हम हुनकर बात नहि मानलियै, लिखैत गेलहुँ, मुदा आब लागि रहलअए जे हुनकर कहबी सही छलन्हि की? 9

एखनो की हाल छै मैथिली मे, देखियौ. ओकरा विरुद्ध किछु करियौ. मैथिली मे जे पैघ पैघ संस्था छोड़ू, चेतना समिति सनक, सभ बर विद्यापति पर्व मनबैत छथि. लाखो खर्च करै छथि, मुदा नीक लेखक कर पोथी सभ बर 5-7 टा निकालैथ, से नहि होबैत छन्हि. 10 हमरा एहेन जानकारी के मानविक विद्यापति हॉल किराया पर चढै छै. तकरा मे कोनो आपत्ति नहि, पर ओकरा से किछु आय होबै. मुदा ओकरा मैथिलीक काज अथवा नाटक आदि लेल मांगल जाए, त; नहि एटै छै. यदि ओकर शुल्क चुका दी, तहन त किरायाक रूप मे किछ ल' सकैत छै. एकरा सभ के उजागर करी. 11 व्यक्ति से संस्था पैघ होइत छै. जेंक संस्था सभ छै, तकरा पर लिखी, साहित्य अकादमीक मैथिली विभाग सहित. 12 लिली रेक सभटा रचनाक अनुवाद अधिकार हमरा देने छथि. हुनक साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त पोथी 'मरीचिका' कर हिन्दी अनुवाद लेल पिछला 2-3 साल से हम लिखि रहल छी. साहित्य अकादमीक पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य'' मे हम पिछला 25 साल से अनुवाद सहित छपि रहल छी. मुदा हमरा से अनुवादक नमूना मांगल गेल. ओहि कुर्सी पर जे स्वनाम धन्य बैसल छथि, हुनका हमरा मादे नहि बुझल त कोना मैथिल साहित्यकार से पुछि सकैत छलाह. [illegible] तहिना एलै, जेना एक बेर एक गोट चैनल हृषिकेश मुखर्जी से हुनकर बायोडाटा मंगने छल आ एखनि पढल समाचारक अनुसार आ. जानकी वल्लभ शास्त्री से हुनकर बायोडाटा पद्मश्री लेल मांअगल गेलैय. 13 अपन विनम्रता दर्शाबैत हम लिली जीक दु तीन टा कथाक हिन्दी अनुवाद हम पठा देलियन्हि. तैयो [illegible] पर कोनो विचार नहि. लिखला के बाद हमरा कहल गेल जे हम लिली

जी स साहित्य अकादमी क अनुवादक अधिकार दियाव म मदति करी. आब राज्जी, अहां क अनुवाद स मतलब अछि न, आ जरुर हम अनुवाद क; क रव' लल गेयान छी गरुन अकादमी क किअयेक अधिकार चाही? अज्जी लल ज अकादमी अयन यसीनक आदमी क अनुवाद लल द; सकय. ओखनि धनि उकना यन नियटाना नयि रलेय. अकादमी स रुन काना यत्र नयि आओल अछ. अनुवाद गेयान नाखल छै. लिली जी आव वहुत वूझग र; (गल छथि. हुनक मात्र ज्जयेर ज्जच्चा छै (आ वहुत स्वाराविक) ज हुनकन याथी सर हुनका सामा म प्रकाशित र; जाओ. 14 लिली जी क याथी हिन्दी म आनवाक (श्रय हमन अछि, ज्जी मनितहुं उकना नकाँति कनाओ मैथिल समीक्षक आवश्यक नयि वूसेत छथि. ओकना यन लतु. 15 मैथिली क रानगीय स्थानयी० स यूस्फक प्रकाशन लल हमही आगां ओलहुं आ प्रयास जी आ लिली जी क याथी वहान रलै.रानगीय स्थानयी० स मैथिली यूस्फक प्रकाशन क (श्रय हमन छहि, ज्जीहा मनेत उकना नकाँति कनाओ मैथिल समीक्षक आवश्यक नयि वूसेत छथि. ओकना यन लतु. गजब्ब जी, मैथिलीक ज्जी सर मानसिकता यन आश्वलन कनी जाहि स नवनाकान आ वनिष्ठ नवनाकान सर क अयमानित नयि हाव' यजै. अहां चाही त' ओकना विरुद्ध यन द' सकै छी. हम दासन वात सहा लिखि क य०ायव. मुदा हम रुन कहव, ज हम व्यक्ति क नयि संस्था आ व्यक्ति क मानसिकता क दाष दवहि. लाक यठथू आ यूवाथू ज्जी स्वनामधन्य सर स ज जकना स अहां क (गलौंसी अछ, तकना यन अहां लिखव आ जकना स नयि अछ, ज मौन राव लिखि

नहलत काना निनिआद म यतल वगेन, हुनका लल ऊी ब्यनहान?
-**निरा नानी**.

....

Shri gajendraji, good work. Anha sa ehina neer khshir vivekakak ummeed lagatar banal rahat. chor ke ehina dekhar kelak baad dandit seho karbak prayas karbaak chahi. anha bahut raas neek pahal ka rahal chhi. Saadhuvaad.- **manoj pathak.**

....

We should be greatful to Pankaj Parashar that he did not lay claim on the magnum opus of Kavi Vidyapati. I know him very well and his group as well. They have no love for Maithili in fact they are the moles planted by vested Hindi writers to damage maithili. Parashar and likes are the distructive lots and they are the culprits for agonising senior writers of Maithili those who dedicated their life for Maithili language and literature. I have no sympathy for him I cant say, even, God bless them. - **Chitra Mishra**

....

गगनानन्द नियोगी: (मिथिला सृजन: ज्ञान-ज्ञलाञ्जि २०१०, वर्ष-१, अंक-२): हुनक (पंकज पराशरक) अनेक रचना एहना छनि जकरा जन्म दोसरक काव्य रचना पढ़लाक अनन्तर भेलनि अछि। कविता ओ पनियुर्धाः हुनक थिकनि मुदा किछु लोटकेँ ई करबाक अवसर भेटि गेलनि जे ओ पंकज चोर-कवि थिकाह। हम देखैत छी जे चोर समीक्षक भेल ओ हाथ, चोर-कवि ओ कदापि नहि छथि। मुदा एना किएक भेल? एहि दुआरे भेल जे आनक रचना पढ़ि कऽ अपन अनुभूतिमे उतारैत काल ओ आनक आरोमंडलसँ गना आक्रान्त छलाह जे नकर छाप कविताक पृथम देखार पड़ि गेल। ई वस्तुतः सिद्धाक कमी थिक, जकरा श्री रचनाकार नविन-नविन सिद्ध कऽ सकैत अछि।

....

गोपीनाथ (अनलकान्त)- सम्पादकीय अंतिका अक्टूबर-दिसंबर, 2009- जनवरी-मार्च, 2010- पंकज पराशर प्रसंगमे- हुँ, दंद-फंद करैबला किछु लोक सब ठाम पहुँचि जाइ छै आ गलत लोक एहेन् अपन धूर्त्ता आ चोरि कला देखबै छथि। मुदा एकरा असलियत उजागर करब असंभव नहि रहल। "विदेह"क गजेन्द्र ठाकुर एहन एक "पूजा" (पंकज मा उर्फ पंकज पराशर) क असली चेहरा हाल मे देखालनि।

....

श्री पंकज झा पराशर पहिनहियेसँ एहि सभमे संलग्न अछि, हरेकृष्ण झाक कविताकेँ हिन्दीमे, बिना अनुमतिक, छपबै छथि; श्री गप आन पृष्ठ हाइप अछि कारण विस्थापित झा जीक कविता सङ्ग श्री पंकज झा पराशर एकटा हिन्दी पत्रिकामे बिना अनुमतिक छपबओलक (श्री सूचना हरेकृष्ण झा जी द्वारा प्राप्त भेल, जे विदेहमे छपलाक बाद पंकज झा पराशर हुनका फोन कऽ कय टॉर्चर कएलकन्हि जखन ओ बीमार रहथि। हरेकृष्ण झा जी फोन द्वारा सङ्ग सूचित कएलन्हि, हम कहलियन्हि जे की श्री सूचना विदेहसँ हटा दी? तँ **हरेकृष्ण झा** जी कहलन्हि, नहि दियौ, सत्य जे छै, से श्रीमान छैक- सम्पादक)। श्री पंकज झा पराशर कएक बेर, कलक मुद्दा ओ बेर तँ ओ अपन नाम दासनाक रचना छपबा लेलक, अनुवादक नूतन नै। -सम्पादक)

<u>नवका आलेख-वहस-पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक- पर किछु पाठकक विचार:</u>

SHIV KUMAR JHA TILLOO JAMSHEDPUR said...

Ramesh jee ken dhanyavad,satya gapp bajwak saahas "MITHILA" me aabi rahal achhi neek laagal,chhadma lokpriyatak khatir lok kichu ka sakait achhi..Pankaj Parasharak..aab charch karab seho nahi sohay laagi rahal..jatek ninda kayal jay kum parat.Muda RAMESH BABU HU APNE SABH NINDA KARAY

CHHEE AA KICHU LOK KAHAIT CHHATHI PANKAJ JEE JUG-JUG JIWATHU,ONA HAMHU HUNAK DIRGHA JEEVANAK KAAMNA KARAIT CHHEE,PARANCH SABHAK JE JUG-JUG JIWAK KAAMNA KAYAL JAY MATRA PANKAJ PARASHARAK LEL NAHI.."SARBE BHAWANTU SUKHINAH", RAMESH BABU APAN LEKHANI KEN GATI NIRANTAR RAKHAL JAY...

Rama Jha said...

ehi vyakti pankaj parasharak ekta ehane ghrinit message ekta mahila je hamar mitra chathi, ke bhetal chhai, etek ghrinit je etay nai likhi sakai chhi, apan rachna ke dosar bhasha me mool kahi prakashit kaenai chori te nai bhelai, muda okara svayam dvara anoodit kahi prakashit karebak chahe, mool maithili se dosar bhasha (hindi aadi me), va dosar bhasha (hindi aadi se) maithili me.

आशीष अनचिन्हार said...

जहाँ धरि चोराअन- घटना अछि ओहि ठामक विद्वानसं कएल जाए ताक कमा। मुदा नमश राष्ट्र निरतानीक कान भाषा म समीक्षा कएल जाए हिन्दी म की मैथिली म। रचना हिसाब एकै रचना क दु- तीन भाषा म मूल कहि प्रकाशित करब सेहो चोरि भेल। एहू

यन (ध३ान ह्ल जा७।

अयन मंगाय editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

नमश

वहस-यंकज यनाशनक साहित्यिक चानि मैथिली साहित्यक कानी अध्याय थिक

निदह-सदह २ (२००९-१०) सँ यंकज यनाशनक साहित्यिक चानि आ साहित्यन अयनाधक यायक घैलक महा-निश्चाट रुल अछि। ई यैघ (श्रय यत्रिकाक सम्यादक श्री गजेन्द्र ठाकुरकँ जाइत छनि। हुनकन अयनाध यक७वाक चाना कन जाक प्रशंसा कयल जाय, कम हायत। "निदह"क मैथिली प्रवन्ध-समालाचना- अंक, अइ याल-खाल लल क७क यूग धनि निलम्बित रुs कs निवद्ध नहत, स "समय कँ अकानैत" कहव कठिन अछि।

साहित्यम चौर्यकलाक उदाहरणा यहिनहुँ अवैत नहल अछि (गाटयगना। मुदा ७क वनक चानि यक७ा (गलाक वाद प्रायः चानिक आनायी साहित्यकान मौन-व्रत धानण कनैत नहलाह अछि आ मामिला ठंढाइत नहल अछि।

मुदा गाहि यनम्यनाक नियनीत अइ वनक चान 'सिद्ध चान' निकलल अछि आ निगत ७क दशकसँ निनन्दन चानि कनैत जा नहल अछि- सद्द काटिकs। आ गहन महाचानकँ मैथिलीक साहित्यकान आ संस्था सए गनहुठीयन उठा-उठा कs यूनस्कृत कलक अछि आ समीक्षाक

चासनीमे चानायल कविता सबकेँ बानि देल गेल अछि।

विदेह-सदेह-२ प्रमाण-पुरस्सर अभियोग टा नहि लगौलक, अपितु एहन महत्वाकांक्षी असामाजिक तत्वक विरुद्ध साहित्यिक दण्ड आरोपित कऽ अपन "बाल्तरस" सेहो प्रदर्शित कएलक अछि। एक दशकमे तीन बेर पकड़ायल चोर प्रायः "उपन उरिल" होइत अछि आ अपन अनुचित। सीमाहीन महत्वाकांक्षाक पूर्ति लेल अपन नवीन संसर्गीय व्यक्तिकेँ सीढ़ीक रूपमे उपयोग करैत अछि आ स्वार्थ-सिद्धिक उपरान्त अपन पएर सँ ओही सीढ़ीकेँ नीचाँ खसा दैत अछि। एहन ओकरा अपन ट्विटर-फेसबुक-वाल वा पत्रिकामे तानिक निकृष्टतम रूपमे उतारऽ मे कनियों देरी नहि होइत छै। ओ नाम बदलि-बदलि कऽ तानि पढ़ैत अछि आ अपन प्रशंसामे जे.एन.यू.क छात्र-छात्राक पोस्टकार्ड लिखबामे अपस्याँत रहऽ जाइत अछि। ओ हिन्दीक काना बेटका साहित्यकारक बेटीक संग अपन नाम जोड़ि विवाहक वा प्रेम-प्रसंगक खिस्सा गढ़ि लऽ लऽ कऽ प्रचारित करैत अछि। एहन प्रवृत्ति कएटा आओर तिकड़मबाजमे देखल गेल अछि जे हिन्दीक पेघ-पेघ नामक माला जपि कऽ म०ओमा० होअय चाहैत अछि। वस्तुतः ई चिन्ताजनक तथ्य थिक जे मैथिलीक नव-तुरकेँ हिन्दीक पेघ-पेघ नामक बैशाखीक एतेक जरूरति किएक होइत छनि?

"विदेहक" "स्वनिर्वाचनीक विवरण" पढ़ि कऽ नाइयाँ ठाढ़ रहऽ जाइत अछि। पहिल-८६ आ आगन्तु-२३ मे जे पोल खुजल छल, अइ तथाकथित साहित्यकारक, तकरा बाद मैथिली साहित्यसँ बाजि देल जबाक चाहैत छल। मुदा बिडम्बना देखू जे चयन समिति सम्मानित कऽ देलक। "मैथिल ब्राह्मण समाज", नहिका (मधुबनी)

सन आँखिगर संस्थाकेँ चकचोन्ही लागि गेल, जखनकि संस्थामे विश्वास साहित्यकार उदयचन्द्र झा "विनोद" आ पढ़ाकु प्रशंसकगण छथि। ई संशयविहीन अछि जे पुरस्कृत करबामे विनोदजीक महत्वपूर्ण भूमिका रहल छैक। "विदेह" द्वारा रहस्योद्घाटन कएलाक बादहु एखन धरि चेतना समिति अथवा मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिकाकेँ अपन पुरस्कार वापस करबाक वा आन कोनोटा कार्रवाइ करबाक बेगरता नहि बूझा रहल छै आ सभ गुम्मी लधने अछि। एहन "जड़-संस्था" सभ मैथिली साहित्यक उपकार करैत अछि वा अपकार? ई कोना मानल जाय जे पहिल-८६ वा आरम्भ-२३ अइ दुनू संस्थाक कोनो अधिकारी वा साहित्यकारकेँ पढ़ल नहि छलनि?

ई आश्चर्यजनक सत्य थिक जे मैथिलीक कएटा पैघ साहित्यकार पंकज पराशरक कृत्रिम काव्य आ आयातित शब्दावलीमे फँसि गेलाह अछि। "विलम्बित कएक युगमे निबद्ध" क भूमिकामे अपना विदेशी साहित्यकारगणक तीस-चालिस टा नाम ओहिना नहि गनाओल गेल अछि, अपन कविताकेँ विश्वस्तरीय प्रमाणित करबाक लेल आँखिगर चोर एना कऽ सकैत अछि। सम्भावना बनैत अछि जे डगलस कलनन जकाँ ओहू सभ कविक रचनाक भावभूमिक वा शब्दावलीक चोरिक प्रमाण एही काव्य-पाथीमे भेटि जाय। अंततः मि. हाइटेक कार (ठकार? मैथिलीमे गाँ लोक विश्व-साहित्य कम पढ़ैत अछि। एकर नाजायज फायदा कोना ब्लैकमेलर किएक नहि उठाओत? आखिर टन्ना-पालिटिक्स की थिक- टेकनिकल पालिटिक्स थिक, सेहो किए? एकरा बदौलत माँसा दऽ कऽ पाकिस्तानक यात्रा कयल जा सकैत अछि। "टन्ना-पालिटिक्सक" बदौलत किरण-यात्री पुरस्कार, वैदेही-

माहेश्वरी सिंह "महेश" पुरस्कार, एतेक धरि जे निदिताजीक अकादमीयोक पुरस्कार लेल जा सकैत अछि। प्रदीप बिहारीक सुपुत्रक रातिज-कका सम्बन्धक मर्यादाक अतिक्रमण कयल जा सकैत अछि। प्रो. अनुज कमलक "नव लोकक मं" संधमानी कऽ कऽ "समय कँ अकानल" जा सकैत अछि। आन तँ आन, अहाँ टेकनिकल पॉलिटिक्सक बदौलत जीवकान्तजी सन महारथी साहित्यकारसँ "निलम्बित करैक युग..." पोथीक समीक्षा लिखवा कऽ "मिथिला दर्शन" (ग) सन पत्रिकामे छपवा कऽ स्थापित आ अमर भेल जा सकैत छथि। मैथिली साहित्यक सभसँ पैघ सफल औजार थिक "टका पॉलिटिक्स"!

ईहो मानल जा सकैत अछि जे मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ आगस्त-२३ आ पहिल-८६ कालकातामे नहि देखल होइन्हि। मुदा जीवकान्तजी नहि पढ़ने हेताह से मानबामे असौकर्य भऽ रहल अछि। जीवकान्त जी तँ प्रयाग शुक्लक "वसुन्धरा मे सूर्योदय" आ ओही शीर्षकक नारायणजीक कविता (वसुन्धरामे सूर्योदय) सेहो पढ़ने हेताह जे छपल अछि मैथिलीमे। तखन पंकज पराशरक समुद्रसँ असंख्य प्रश्न पुछऽबला कविताक शब्दार्थ किएक नहि लगलनि जे समीक्षामे कलम तोड़ि प्रशंसा करऽ पड़लनि वा करा देलनि? एकरा "प्रायोजित समीक्षा" किएक नहि मानल जाय? की प्रयाग शुक्ल वा नारायणजीक समुद्र विषयक कवितासँ बेसी मौलिकता पंकज पराशरक कवितामे देखलनि जीवकान्तजीकेँ? ओहू सभ कविताक कवियोँ "छाया"क शंका नहि देलनि समीक्षककेँ? "सत्ताक सत्ता मर्मान्तक पुकार"क नोटिस लेबऽबला समीक्षककेँ साहित्यिक चोरि असत्य आ मर्मान्तक पीड़ादायक

नहि लगलनि? आब जीवकान्तजी सन समीक्षकक "पोजीशन स्ट्राँग" भऽ जेतनि से अन्दाज तँ मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ नहियेँ रहनि, उदय चन्द्र झा "विनोद" केँ सेहो नहि रहनि। ई अभिज्ञान तँ पंकज पराशर टाकेँ रहल हेतनि? बेचारे "पराशर" मुनिक आत्मा स्वर्गमे कनैत हेतनि आ पंकजसँ जनमल जातक कमल अछि सब अविश्वसनीय यथार्थक सामना करैत हेताह। पराशर गोष्ठी भऽ कऽ तीन बेर छापि कराए "पराशर" महाकाव्यक रचयिता स्व. किरणजीकेँ सेहो करबैत हेतनि। आखिर जीवकान्तजी साहित्यिक चोरिक नोटिस किए न लेलनि, जखनकि हुनका विचारेँ "मैथिलीक समीक्षक प्रायः मूर्खता पीबिकऽ विषवमन करैत अछि"(विदेह-सदेह-२-२००९-१०)/ विनीत उत्पल-साक्षात्कार आ जीवकान्तजी स्वयं पंकज पराशरक चोरिवला कविता-पोथीक समीक्षक छथि, अपितु चौर्यकला प्रवीण कविक घोर प्रशंसक छथि। तखन अइ समीक्षा-आलेखमे अन्तर्निहित असीम-प्रशंसा साकांक्ष-पाठककेँ "विष-वमन" कोना न लगैत? हुनका सन "पढ़ाकू" समीक्षक-पाठककेँ "स्ट्राँग पोजीशन"मे अननिहार "एक्सपर्ट आ हैबिचुएटेड" साहित्य-चोरसँ प्रशंसा आ पुरस्कार दुनू पाबि जाय तँ मैथिली-काव्यक ई उत्कर्ष थिक वा दुर्भाग्य? अंततः विदेह-सदेह टा किएक विरोध करलक एहि घटनाक? आन कोनो पत्रिका किएक नहि करलक? डॉ. रमानन्द झा "रमण" ईहरनटपन विरोध करैत छथि तँ घर-बाहर पत्रिकामे किएक नहि जकर ओ सम्पादक छथि? चेतना समिति, पटना सम्मानित करैत अछि एहन-एहन साहित्यकारकेँ तखन अपन पत्रिकामे कोना विरोध करत, जखनकि पुरस्कार आपसो नहि लैत अछि, जानकारी भेलाक वा साकांक्ष साहित्यकारक अनुरोध प्राप्त भेलाक बाद? नचिकेताजी

रचयत निष्ठा करबाह आ "विदेह"मे छपत तँ "मिथिला दर्शन"मे किएक नहि निष्ठा वा सूचना छपल? कारण स्पष्ट अछि- जीवकान्तक समीक्षा पंकज पराशरक काव्य-चोरीपर छपल, तखन ताहि चोरीक बानि कयल कविताक निष्ठा केना छपत? बाजू लोग साहित्यिक आदर्श, मर्यादा आ नैतिकताक धज्जी उड़ि रहल अछि- पितामह आ आचार्यगणक समझ आ (अनजान मे सही) हुनका लोकनिक द्वारा। मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिका; चेतना समिति, पटना आ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीमे अन्तरः कोन अन्तर अछि वा रहल? एहन नामी पुरस्कारक संचालन आ चयनकर्ता महारथी सभकेँ नव लोककेँ पढ़बाक बेगरता किएक नहि बुझाइत छनि? बिना पढ़ने पुरस्कारक निर्णय वा समीक्षाक निर्णय करैत उचित, जखन कि ई चोरि तेहन बतक चोरि थिक आ से छपि-कऽ हस्ताक्षरित भेल अछि। एकरा वरेण्य आ नवीन साहित्यकारगण द्वारा काव्य-चोरि, आलेख-चोरिकेँ प्रश्रय देल जायब किएक नहि मानल जाय, जखनकि आनन्द, मैथिल-जन, पढ़ल आ विदेह-सदेह पढ़िनहि छथि चुकल छल? की साहित्यिक चोरिकेँ प्रश्रय देब, दलाल वर्गकेँ प्रश्रय देब नहि थिक? एहन सम्मानप्रायुक्त नव कविकेँ प्रश्रय देब मैथिली साहित्य लेल घातक अछि वा कल्याणकारी, जकरा मौलिकतापर तीन बेर प्रश्न चिह्न लागल होइक? की चोरीक आकर्षक गद्य देखि वा विदेशी कविगणक नामावली (भूमिकामे) पढ़ि कऽ समीक्षा लिखल जाइत अछि वा पुरस्कारक निर्णय लेल जाइत अछि? ई से भेल हो तँ सब किछु "ठीक छै होइ"?

अइ सबसँ तँ जीवकान्तजीक बात सत्य बुझाइत अछि जे

समीक्षकगण दारू पीबि कऽ वा पैसा पीबि कऽ वा मूर्खता पीबि कऽ समीक्षा लिखैत छथि। तँ लल्लनक "टेक्नोपालिटिक्स" गँ छपि गेल "पहल"मे छापा कऽ। आब जीवकान्तजी, रमान नंजनजी अथवा हिन्दी जगतक आन साहित्यकार-सम्पादकसँ पुछथु जे नाम छापलीनला नवना कारण गेल, की हल, कोन नामँ छपल? पंकज पराशरक नामँ कि पदीय विद्यानीजीक सुपुत्रक नामँ (अनुवाद नुपम)। [illegible]ी निसर्व एखन नहि हल गँ हनिश्चम पुनः एकटा साहित्यिक चानिक पाल खुजल? अंगाः एकटा माँछकँ कएटा पाखनिकँ प्रदुषित कनए दल जाय आ स कए वन? उदय-कान्त वनि कऽ गानि पढनाक आदति गँ पुनान छनि डॉ. महावान काँ। ककना "सनीसृप" कहि सकैत छथि (मैथिल-जन) आ काना पनिनानम घाँसिया कऽ निष नमन कऽ सकैत छथि। [illegible]श्चायसक सर गुणसँ पनिपूर्ण डॉ. पॉल वावाकँ चानिक हनिश्चनाशी कननाक वएका गुण छनि गँ हिनका नामी फूटवॉल टीम द्वारा पासल जाएत अछि, जाहिसँ "विश्व-कप"कँ दौनान अएह "अमाघ अस्त्रक" उपयाग अपना हिसावँ कयल जा सकय।

सहनसा-कथागोष्ठीम पठित हिनकन पहिल कथाक शीर्षक छल- हम पागल नहि छी। [illegible]ी उद्घाषणा कननाक की वगनता नहैक- स आएह लाककँ वूसा नहल छैक। अविनाश आ पंकज पराशनक मामाजी गहिया हिनकन कथाकँ "टियर्णीक"क्रमम मैथिली-कथाक "टर्निंग प्वाइन्ट" मानन छलाह। आएह जा "टर्निंग प्वाइन्ट" ठीक एक हिसावँ "टर्निंग प्वाइन्ट" प्रमाणित हल, कानण कथाक जाहि शीर्षकम सँ "नहि" हटि गेल अछि, हिनकन गवाना चानिसाँ हिनकन पहिल चानि (अनुप कमलक कविता- नए हलाक मँ) क

निन्दा प्रस्तावमे "मामाजी" आ डॉ. महेन्द्रकेँ छोड़ि, सहरसाक शेष सभ साहित्यकार हस्ताक्षर कऽ "आनन्द"केँ पठौने छलाह। आइ ओ हस्ताक्षर नहि करनिहार सभ कण्ठी कारि कऽ बाम-दहिन ताक-झाँक करबाक लेल बाध्य छथि। द्वेष-चरित्र आ घृणा मानदण्डक परिणाम सेहो होइत अछि। अविनाश तखन तँ दरबार भऽ जाइत छथि जखन ओ विदेह-सदेह-२ मे लिखैत छथि जे "एकरा सार्वजनिक नहि करबै"। हुनका कऽ सूचना देबाक कोन बेगरता? पंकज पराशरसँ सम्बन्ध खराब होबाक डर वा कोनो "टेक्नायालिटिक्स"(?) कर चिन्ता?

विदेह-सदेह-२ क पाठकक संदेश तँ कएटा साहित्यकारकेँ दरबार कऽ दैत अछि। जतय राजीव कुमार वर्मा, श्रीधरम, सुनील मल्लिक, श्यामानन्द चौधरी, गंगेश गुंजन, पी.के.चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, शम्भु कुमार सिंह, विजयदेव झा, भालचन्द्र झा, अजित मिश्र, के.एन.झा, प्रो.नचिकेता, वृद्धिनाथ मिश्र, शिव कुमार झा, प्रकाश चन्द्र झा, कामिनी, मनोज पाठक आदि अपन मुखर भाषामे प्रखरतापूर्वक निन्दनीय घटनाक निन्दा कएलनि अछि, ताहि अविनाश, डॉ. रमानन्द झा "रमण", विभारानीक पाँयल-पायल शब्द आश्चर्य-भावक उद्रेक करैत अछि। मुदा संतोषक बात इहो अछि जे पाठकक "प्रबल भाव-भंगिमा" साहित्यकारनाक "मंहायल आवाज"क कोनो चिन्ता नहि करैत अछि। विभारानी तँ कमाल कऽ देलनि। एहि ठाम मैथिली भाषा-साहित्यक एक सय समस्या गनबाक उचित स्थान नहि छल। इहो ओराठ काल खाराठ आ महादेवक विवाह कालक लगनी भऽ गेल। कोनो चोर चर-चर अपन कु-कृत्यक परिचय दऽ रहल अछि आ हुनका समय नष्ट करब बूझा रहल छनि आ चोरकेँ दरबार कलासँ

दुःख भऽ गेल छनि? ओ अपन प्रतिक्रियामे कतेक आत्म श्लाघा आ हीन-भावना व्यक्त कयलनि अछि से अपन पत्र अपन ठाढ़ भऽ कऽ पढि कऽ बुझि सकैत छथि। दिल्लीयामे एहिना भऽ गेल अछि, तँ मैथिलीमे मारू कऽ देल जाय? आब दिल्लीसँ पुछि-पुछि कऽ मैथिलीमे कोना काज होयत? निभानानी ग्रामना वहुमकँ ग्रामना मिलन कना करैत छथि? हुनकर उपजा कोना मानल जाय? ओ सभ साहित्यिक कार्यक्रममे नागल जाइत छथि, सम्मान आ पुनस्कार पबैत छथि, याठक द्वारा पठित आ चर्चित होइत छथि। समीक्षाक शिकाइत की उद्धनर्णीय (?) साहित्यकारकँ मैथिलीमे नहि छनि? समीक्षाक दुःस्थिति सभ जातिक मैथिली साहित्यकार लेल एक रंग विषम अछि। ओइ म जातिगत विरुद्ध एना भेलए जे ब्राह्मण-समीक्षक, आनक्षणक दृष्टिकोणेँ निम्न जाति (?)क साहित्यकारक किछु वर्णीत समीक्षा (सहो सकारात्मक रूपेँ) कयलनि अछि। समीक्षा आ आलोचनाक विषम स्थितिक कारणेँ जँ नैराश्यक शिकार भऽ जाय लेखक, तँ लेखकीय प्रतिबद्धताक की अर्थ नहि जायत? विभाजीकँ बूझल नहि छनि जे हुनका लोकनिक बाद मैथिली महिला लेखनमे कामिनी, नूतन चन्द्र झा, वन्दना झा, माला झा आदि अपन गतनक संग पदार्पण कऽ चुकल छथि। हुनका त कामिनीक कविता संग्रह पढ़ल छनि आ न "ऽऽजातियाक अछैठ झाज"। हुनका अपन गुनहनक वात मानि दिल्लीमे जाइसँ क कहिया नाकलकनि? ओ गेला छथि दिल्लीमे। मातृभाषाक प्रनधा अद्वितीय होइत छै। मैथिलीक जड संस्था अथवा समीक्षक सभपन प्रदान करबामे हमना कोना आयधि नहि, मुदा अर्थलाभ तँ एतय नगण्य अछिए। सामाजिक सम्मान विभाजीकँ अवश्य भेटलनि अछि। समाजमे "जड"लोक छै तँ "चान"

लोक सेहो छैक। हुनकासँ मैथिली भाषा-साहित्य आ मिथिला-समाजकेँ पैघ आशा छै, हीनभावना वा आत्मश्लाघासँ ऊपर उठि काज करबाक बेगरता छैक। सक्षम छथि ओ। हुनका श्रेय लेबाक होउसँ बँचबाक चाही। अन्यथा साहित्य अकादमी प्रतिनिधि, दिवालियापन कर शिकार ज्ञानीगण आ मैथिलीक सक्षम साहित्यकारक की की अन्हेर नहि जायत? निर्णायकक विचलनक दिशा हमरा चिन्तित आ व्यथित करैत अछि। ओ दमगर लिखैत छथि, सशक्त रचना कएलनि अछि, आइ ने काल्हि समीक्षकगण कलम उठएबा पर बाध्य हएब करताह। समीक्षकक कर्त्तव्यहीनतासँ की लेखक निराश हो?

पंकज पराशरक शृंखलाबद्ध साहित्यिक चोरिपर सार्थक प्रतिक्रिया देब काज साहित्यकार लेल अनुचित नहि अछि कतहुसँ। साहित्यकार लेल साहित्यिक मूल्यक प्रति ओकर प्रतिबद्धता मुख्य कारक होइत अछि आ हेबाक चाही आ तकरा देखार करबाक "चालुनसा" हेबाक चाही। "चाही"बला पक्ष साहित्यमे बेसी होइत अछि। एहन-एहन गम्भीर विषयपर साहित्य आ समाजक "बुद्धी" एहन घटनाकेँ प्रोत्साहित करैत अछि आ जबदाह जतेकेँ बढ़बैत अछि, भाषा-साहित्यकेँ बदनाम तँ करैत अछि। जाधरि पंकज पराशरक चोरि-कार्यक समीक्षा लिखल जाइत रहत, निर्णायकक मूल-रचनाक समीक्षा के लिखत? ककरा जरूरी बुझैक? निर्णायकी अपन तँ समीक्षा प्रायोजित नहि करबौती? सक्षम लेखकक व्यवहारक अपन स्तर होइत छै। तँ संगठित भऽ चोरिक भर्त्सना हेबाक चाही।

राजकमल चौधरी आ आन लेखकक रचनाक चोरि पंकज पराशर प्रसंग

पंकज पराशर उर्फ अनचिन्हार कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ □□□ 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ.....

Parashars Intellectual Theft

पाठकक सूचनाक बाद ई पता चलल अछि (आ ओकर सत्यापन कएल गेल) जे एहि लेखकक ई एहि तरहक पहिल कृत्य नहि अछि। ई लेखक पहिने सेहो □□□□□□□ □□□□□□□ क □□□□□□□□□□□□□□ क पंक्तिशः अनुवाद मूल लेखकक नुपम नामसँ ज्ञानरंजनक हिन्दी पत्रिका "पहल"मे (धोखासँ छपवओलक। एकर पता चललाक बाद "पहल"मे एहि लेखकक रचनाक प्रकाशन बन्द कऽ गेल। एहि सम्बन्धमे विस्तृत आलेख विदेहक अगिला अंकक सम्पादकीयमे देल जाएत।

२.एहि सभ घटनाक बाद पंकज पराशरकेँ विदेहसँ बैन कएल जा रहल अछि। विदेह आर्काइवसँ "विलम्बित कइएक युगमे निबद्ध" पोथीकेँ हटाओल जा रहल अछि आ एकरा ई-पब्लिशिंग द्वारा एहि पोथीक (डगलस केलनर बला घटनाक्रमक बाद) जाँच किछु चुनल लेखक-पाठक द्वारा कएल जएबा धरि रहत। प्रकाशककेँ सेहो उचित पुलिसिया कार्यवाही (यदि आवश्यक हुअए तँ) लेल एहि समस्त घटनाक्रमक सूचना दऽ देल गेल अछि।

३.पाठक डगलस केलनरसँ ई-मेल □□□□□□□@□□□□□.□□□□.□□□ पर "पहल" पत्रिका वा एकर सम्पादक श्री ज्ञानरंजनसँ □□□□□□.□□□□□@□□□□□.□□□, □□□□□□□□□□@□□□□□.□□.□□

वा info@d□□□□□□□.□□□ पर आ दैनिक जागरणसँ □□□□□□□□□@□□□□□□.□□□, □□□□□□□□@□□□□□□.□□□, □□□□□□□@□□□□□□.□□□, □□□□□@□□□.□□□□□□.□□□ पर सम्पर्क कए विस्तृत जानकारी लऽ सकैत छथि। उपरोक्त कतरनक आर्टिकल गूगल सर्चपर □□□□□□□□□□□□□□□ टाइप कए पाबि सकै छी आ पढ़ि सकै छी। पहिल पत्रिकाक वेबसाइट □□□.□□□□□□□□.□□□ पर सेहो पहिल पत्रिकाक पुरान अंक सभ आस्ते-आस्ते देबाक प्रारम्भ भेल अछि।

विस्तृत जानकारीक लेल सुधी पाठकगण अहाँक धन्यवाद। भविष्यमे सेहो एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि होअए ताहि लेल अहाँक पारखी नजरिक आस आगाँ सेहो रहत। एहि तरहक कोनो घटनाक जानकारी हमरा ई-पत्र □□□□□□□□□@□□□□□.□□□ पर अवश्य पठाबी।

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

अन्तर्जालपर ब्लैकमेलिंग विरुद्ध गूगल, विद्याजगत आ ब्लागरानीकेँ सूचित करू, साइबर क्राइम आ ब्लैकमेलिंग बाबत लेल सेहो दण्डक प्रावधान छै, विशेष जानकारी □□□□□□□□□@□□□□□.□□□ पर सम्पर्क करू। अहाँसँ प्रकाशन, ब्रूजयपन, पत्रिका आ दिल्लीक गणमान्य लेखकगण/ प्रोफेसर/ विश्वविद्यालय आदिकेँ एहि घटनासँ सूचित करबाक अनुरोध अछि। विशेष जानकारी लेबाक आ देबाक लेल □□□□□□□□□@□□□□□.□□□ पर सूचित करू।

Reply 01/26/2010 at 01:56 PM

2

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

you may also brought this episode before sanjay@jagran.com

Thanks readers.

Reply 01/26/2010 at 12:25 AM

3

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

But this time he has not used his name as maithil, mithila aa subodhkant but as Pankaj Parashar pparasharjnu@gmail.com

Reply 01/25/2010 at 09:48 PM

4

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

The same blackmail letter has been sent by the blackmailer to my email address which has been spammed through ISP ISP address 220.227.163.105 , 164.100.8.3 aa 220.227.174.243 and has been

forwarded for taking Police action immediately.

Reply 01/25/2010 at 09:45 PM

5

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

Professor Kellner has thanked me for this detective work, but it all your efforts dear reader.

Reply 01/25/2010 at 08:21 PM

6

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

pahal=- 86, aarambh -23 aa arunkamalak naye ilake me ka sambandhit prishtha pathebak lel dhanyavad pathakgan.

Reply 01/25/2010 at 08:16 PM

7

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

http://www.gseis.ucla.edu/courses/ed253a/newDK/intell.htm ehi link par douglas kellner ke lekhak anuvad pahal-86 ke page 125-131 par achhi-soochnak lel dhanyad pathakgan.

Reply 01/24/2010 at 08:16 PM

8

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

ehi ghatnakram me kono pathak lag je Arun Kamal jik kavita "Naye Ilake Me" hoinh aa Aarambh (ank 23, maithili magazine editor Sh. Rajmohan Jha (March 2000) me prakashist maithili kavita "Sanjh Hoit Gam Me" te kripya ggajendra@gmail.com par soochit karathi- Dhanyavad.

Reply 01/24/2010 at 08:02 PM

9

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

ehi ghatnakram me bahut ras aar jankari aa dher ras samarthan debak lel dhanyavad pathakgan.

Reply 01/23/2010 at 11:40 PM

10

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

निदेहक याठकक सूवनाक वाद ई्ी यग वलल अछि (आ डाकन सयायन कजल (गेल) जे एहि लखकक ई्ी एहि गनहक यहिल कृय नहि अछि। ई्ी लखक यहिन सहा □□□□□□□ □□□□□□□ क □□□□□□□□□□□□□□□ क यंकिंशः अनूनाद मूल लखकक नूयम नामसँ ज्ञाननंजनक हिन्दी यत्रिका "यहल"म (धाखासँ छयवडालक, प्रदीय विहानीक वटा प्रधन विहानीसँ अनूनाद कनवलक आ कहलकै जे अनूनाद छयवा देव मूदा अयना नामसँ छयवा ललक, प्रधनकेँ कहलकै जे अनूनाद निजक हs गेल आ हन हना गेल । गकन यग वललाक वाद "यहल"म एहि लखकक नवनाक प्रकाशन वन्द हs गेल। एहि सम्वन्धम निस्तृ आलख निदेहक अगला अंकक सम्यादकीयम देल जाएत।

२.एहि सब घटनाक वाद यंकज यनाशनकँ निदेहसँ वैन कजल जा नहल अछि। निदेह आर्काइ्नसँ "निलम्वित क्ट्क यूगम निवन्ध" याथीकँ हटाडाल जा नहल अछि आ एकटा ई्नब्रायनी ब्राना एहि याथीक (उगलस कलनन वला घटनाक्रमक वाद) जाँच किछु चूनल लखक-याठक ब्राना कएल जएवा धनि नहग। प्रकाशककँ सहा उचित यूलिसिया कार्यनाही (यदि आनश्यक हूअए गँ) लल एहि समस्त घटनाक्रमक सूवना दs देल गेल अछि।

३.याठक उगलस कलननसँ ई्-मल □□□□□□□@□□□□□.□□□□.□□□ यन "यहल" यत्रिका ना गकन सम्यादक श्री ज्ञाननंजनसँ

□□□□□□.□□□□□@□□□□□.□□□, □□□□□□□□□□□@□□□□□.□□.□□ वा info@deshkaal.com पर आ दैनिक जागरणसँ □□□□□□□□□□@□□□□□□.□□□, □□□□□□□□□@□□□□□□.□□□, □□□□□□□@□□□□□□.□□□, □□□□□@□□□.□□□□□□.□□□ पर सम्पर्क कए विस्तृत जानकारी लऽ सकैत छथि। उपरोक्त कलमनक आर्टिकल गूगल सर्चपर □□□□□□□□□□□□□□□ टाइप कए ताकि सकै छी आ पढ़ि सकै छी। पहिल पत्रिकाक वेबसाइट www.des□□□□□.□□□ पर सेहो पहिल पत्रिकाक पुरान अंक सभ आस्ते-आस्ते देबाक प्रारम्भ भेल अछि।

विस्तृत जानकारीक लेल सभी पाठकगण अहाँक धन्यवाद। भविष्यमे सेहो एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि होअए ताहि लेल अहाँक पारखी नजरिक आस आगाँ सेहो रहत। एहि तरहक कोनो घटनाक जानकारी देमए ई-पत्र □□□□□□□□□@□□□□□.□□□ पर अवश्य पठाबी।

Reply 01/22/2010 at 12:03 PM

11

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

out of these three addresses of the spammer i.e. pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com the address pkjpp@yahoo.co.in, is fails verification test and

addresses pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com stands verified and confirmed.

Reply 01/21/2010 at 10:00 PM

12

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

the htpps host matches reliance communications and the corresponding email ganghar at gmail dot com and maithilaurmithila at gmail dot com is fake ids related with the actual spammers id i.e.pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com

Reply 01/21/2010 at 08:50 PM

13

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

The office premise has been located, the blackmailer works in Dainik Jagran, Process to file complaint against Cyber Crime Act is being

initiated and the organisation being taken into confidence.

Reply 01/21/2010 at 06:13 PM

14

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

maithil, mithila aa subodhkant nam se abhadra aa blackmail karay bala blackmailer ke cheenhi lel gel achhi,ISP address 220.227.163.105 , 164.100.8.3 aa 220.227.174.243 aa ban kayal ja rahal achhi, agan ohi organisation se seho sampark kayal jaayat jatay se ee email aayal achhi.

Reply 01/18/2010 at 11:19 PM

15

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

comment moderation lagoo kayal ja rahal achhi

Reply 01/18/2010 at 09:27 PM

16

सुबोधकांत said...

अविनाशकेँ सेहो 220.227.174.243 आइ.एस.पी.सँ एहि प्रकारक ई-पत्र अबैत रहै मुदा ओ मामिला खतम क□ देल गेलथिन। ओ टिप्पणी सभ एखन धरि ठीक तहिना एखनो देखल जा रहल अछि।

पंकज पराशर उर्फ.....डगलस केलनर उर्फ अरुण कमल उर्फ...

डगलस केलनरक नीचाँक आलेखकेँ पंकज पराशर द्वारा चोरि सिद्ध कएलाक जे एक दशक पहिने एहि लेखक द्वारा अरुण कमलक चोरि सँ आइ धरि हुनकामे कोनो गुणक परिवर्तन नहि आएल छन्हि। हँ, आब ओ पटना विश्वविद्यालयक प्रोफेसरक रचना चोरबासँ आगाँ बढ़ि गेल छथि आ कैलिफोर्निया वि.वि.क प्रोफेसरक रचना चोराबए लागल छथि। एहि सन्दर्भमे हमरा एकटा खिस्सा मोन पड़ैत अछि। २०-२२ बरख पुरान सत्य कथा। दरभंगामे रहैत रही, छात्र हम आ हमर एकटा पितिऔत भाइ साँझमे ठाढ़ रही। सामने सरदारजीक घरक बाउण्ड्रीमे खूब लताम फड़ल छलैक। हमर पितिऔत भाइ हुनका इशारा दऽ कहलखिन्ह जे दस टा लताम आनू। ओ बाहर दसटा लताम तोड़लन्हि आ आबि रहल छलाह आकि रस्तामे हमसभ देखलहुँ जे एकटा छोट बच्चा संग हुनका किछु गप भेलन्हि आ ओ पाँचटा लताम ओहि बच्चाकेँ दऽ देलखिन्ह। जखन सरदार जी अएलाह तँ कहलन्हि जे ओ बच्चा हुनका बेटा कहि सम्बोधित कएलकन्हि आ पाँचटा लताम माँगलकन्हि- से कोना नहि दितियैक- सरदारजीक कहब छलन्हि। आब पंकज पराशर प्रसंगमे की कहल से देखी। प्रदीप बिहारीजीक बड़ा प्रशंसककेँ पंकज पराशर नोम चाम्स्की आ डगलस केलनरक रचना दैत छथिन्ह आ तकर अनुवाद करबा लेल कहै छथिन्ह। बेचारा जान लगा कऽ

अनुवाद कऽ देने छथि, ओही सावि ज जिनका उा चर्चा करै छथि- ज क्रान्तिकारी विचारक छथि (मार्क्सवादी!!!) स काला नीक पत्रिकाम ओही अनुवाद छपवा देथिन्ह। मुदा छह मासक बाद चर्चाजी करै छथिन्ह ज नाम चाम्स्की वला नवना हना गेल आ तगलस कलनन वला नवनाक अनुवाद नाञि नीक नहउ स निजक्र ह ऽ गेल। मुदा क्रान्तिकारी कवि (चानूक्का सहा विवनघ नीचाँम अछि) दूनू नवना पहल पत्रिकाम प०। दै छथि- पहल-८६ म तगलस कलनन वला नवना छपिगा छथि (आ स अनुवादक नुयम नहि ननन् मूल लखकक नुयम) आ उा वैन सहा कऽ दल जाइ छथि। हमन सनवन जी ७कटा वर्चा ज्ञाना दैया कहलायन याँचटा लगाम उाकना दऽ दै छथिन्ह मुदा हमन पनाभनजी हागिजाक याँचटा लगाम निर्लज्जतासँ छीनि लैत छथि।

आ हम दूनकन खिजवीन गखन कनै छी जखन उा विदहम आइतन्दिटी वदलि हमना गानि पठैग छथि- दूनकन नियल आइतन्रीटी नाढट कनै छी। हन सहसँ गप कनै छी आ पा०कक सहयागसँ आनद, पहल क पूनान अंक हटि जाइग अछि जाउ हिनकन कूकृत्य छन्हि।।

Douglas Kellner

Philosophy of Education Chair

Social Sciences and Comparative Education

University of California-Los Angeles, Box 951521,

3022B Moore Hall, Los Angeles, CA 90095-1521, Fax 310 206 6293

Phone 310 825 0977, http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html

Intellectuals, the New Public Spheres, and Techno-Politics

The category of the intellectual, like everything else these days, is highly contested and up for grabs. Zygmunt Bauman contrasts intellectuals as legislators who wished to legislate universal values, usually in the service of state institutions, with intellectuals as interpreters, who merely interpret texts, public events, and other artifacts, deploying their specialized knowledge to explain or interpret things for publics (1987; 1992). He thus claims that there is a shift from modern intellectuals as legislators of universal values who legitimated the new modern social order to postmodern intellectuals as interpreters of social meanings, and thus theorizes a depoliticalization of the

role of intellectuals in social life. ....

अनुप्र कमल

Arun lives in Patna where he teaches English at the Science College of Patna University.

नउ ञ्लाक मं

जहाँ नाज वन नह नय नय मकान

मैं अक्सन नास्ता स्कुल जाता हूँ

खाजता हूँ नाकता यीयल का यउ

खाजता हूँ ढहा हूआ घन

ऊीन जमीन का खाली टूकडा जहाँ स वायं

मूडना था मूष

हिन दा मकान वाद विना नंग वाल लाह क स्नाटक का

घन था ञ्कमंजिला

चल दता हूँ

या दा घन आगा Oकमकाता

नाज कुछ घट नहा है

यहाँ स्मृति का स्मासा नहीं

एक ही दिन में यूनानी पढ़ जाती है दुनिया

जैसे बसंत का गया पतझड़ का लौटा हूँ

जैसे वैशाख का गया सावन का लौटा हूँ

कौन पूछा -

क्या यही है वो घर?

आ चला पानी ठहरा आ नहा आकाश

शायद पूकान ले काठ्ठी पहचाना ऊपन से देख कर

मैथिली भाषा-साहित्य क पाठक आ लेखक बंधु कें की एहि प्रश्न सबहक उत्तर अवश्य जानबाक चाही। पंकज झा पराशर उर्फ पंकज पराशर उर्फ अनुष्ठ कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ..... नामक एहि व्यक्तिक बहुत नाम कहा चिट्ठा –जना एम.ए.म प्रथम श्रेणीम सर्वोच्च स्थान?? पत्रकारिताक

कार्स?? ॐ्री सए नटवनलालक गर्जयन!! ञ.७न.यू.क ल७कीसँ हिन्दी अनूनाद कना७व ञ ७हिसँ नाकनी एटि ञ७ौक आ रून गकना अयना नामसँ छयवा लव, प्रधनसँ ञ७गलस कलननक आ नाम चाम्श्लीक अनूनाद कनवा७व आ अयना नामसँ छयवा लव, अनूध कमल, श्रीकान्ह नर्मा, ॐ्लानानी सिंह, गजन्द्र ठाकुन आदिक नवना चानि कनवा। ॐ्री सए लखक सएसँ हूनकन यनिनानजनसँ कहै छथि ञ अनूनाद लल कथा-कनिना दिअ आ रून गकना चाना कs अयना नामसँ छयवा लौग अछि। हिन्दीम वैन एलाक वाद मैथिलीक सना! गौनीनाथकँ यहिन गानि यठै छथि आ रून लिखिग मारूी मँगै अछि। यंकज मा यनाशन ञरू यंकज यनाशन क ॐ्री हाल छै ञ नमध कूमान सिंहकँ ञाकनायन कनिना लिखै यठै छथि ..ककनासँ की चाम्न छी ञ अनिद्रा यैसि गेल? अनिनाश कँ गानि , श्रीधनम आ अनलकान्ह कँ गानि , नामदन मा कँ गानि , नाजमाहन मा आ नाजनहून लाल दास कँ गानि , सूएाषचन्द्रयादन-कदान कानन-गानानन्द मा गनूध- प्राहसन महेन्द्र- नमश सएकँ गानि- मैथिली सर्जनाम नामदन माकँ गानि यठैग सहनसा चिठी आ सहनसा सएक साहित्यकानकँ गानि यठैग नामदन माकँ चिठी, ॐ्री दूनू चिठी संगे छयल!! चानक सीना ञा७वाक ७हिसँ नीक ञदाहनध एटव माश्किल।

यंकज मा यनाशन ञरू यंकज यनाशन ञरू अनूध कमल ञरू ञ७गलस कलनन ञरू ञदयकान्ह ञरू ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 ञरू.....क यथार्थी # आखिनी सहन यन निकलन गक / # यूनश्चानासूकी आभाञँ / # वञ वाजान # मनध जल / # नाम्रि स नाम्रि गक # साला

सब हँसकर निकल जाता है अपने को अकेला पीछा छोड़कर / # दस्त विह्व / उर्फ श्वान नुप संसार हे ढूँकर द सब मान उर्फ कुश कुष्ठ चाहिए ...की नौकर के लिए उर्फ गायत्री उर्फ कामिल चायक उर्फ अपन कानी मूँह उर्फ माइल्ला लाइन उर्फ पानुकान उर्फ उदय प्रकाश उर्फ पदल उर्फ नवि रुपम उर्फ निनाला उर्फ नवीअल पंसा।

पंकज पराशर उर्फ अनुप्र कमल उर्फ उगलस कलनन उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ..... दिनकर नियल आइडेन्टिटी दस नाटक करै छी आ ई आब अरिपत्र छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड नहि अपन कुकृत्यक सजा भुगताक लेल।

एहि ब्लॉकमलनक डॉ. जकील आ मिस्टर हाइड वला चरित्र मैथिल सर्जनाक विरोधमे मैथिल-जन पत्रिकामे एक दशक पहिने उजागर भs गेल छल मुदा लोक दिनका पासी नहल।

आतङ्कम सदा ई एकटा चिट्ठी मैथिलीक सम्पादकक विरोधमे दलहि ज छथि गेल आ ऊकर घृणित राजाक कारण राइ साहेब नाजमाहेन माफ माफी माँगए पड़लहि आ हुन ई मिस्टर हाइड सदा ऊहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी मँगलहि।

एकटा आग्रह आ आह्वान: सुरेश कर्ण आ समस्त मैथिली-प्रेमी-गण- एहि मिस्टर हाइडक ब्लॉकमलिंग आ एक्यूजक ध्यान अहाँ सबकेँ मैथिली छाडि कs जएबाक आवश्यकता नहि अछि, कारण पापक घैला भरि गेलाक बाद ई आब अरिपत्र छथि अपन

शेष जीवन मिश्रन हाऽऽत नहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

जे.एन.यू.क छात्र-छात्रा सभसँ पाइकाठि पर साइन लऽ डाकियन अपन रचना लेल प्रशंसा-पत्र पठबैत घूमैत अपनाँ कथित गोल्ड मेडलिस्ट(!!!)। पहिल कथा गोष्ठीमे जखन श्री सहनसाम सभसँ पूछल गेलै छथि जे साहित्यकार बनबासँ की-की सभ फायदा छै तखन श्री एकटा पाइ आ पुरस्कारक लेल अपनाँ मैथिल पुत्र-पौत्रीक प्रतिनिधित्व करै छथि, जे राजमार्ग मा जीक शब्द मैथिलीसँ प्रेम नञि करैत अछि। श्री मिश्रन हाऽऽत सेहो डाहि सम्पादकसँ लिखिताम माफी मँगलन्हि आ जखन डा मार कऽ देलखिन्ह तखन हुन हुनका गारि पढ़ब शुरू कऽ देलन्हि। हमनासँ लिखित मल-माफी अस्वीकार भेलाक बाद मिश्रन हाऽऽतक माथ खराब भ्रष्टाचारिक। जे सरकारी नौकरी वा ऽऽत्कम-टैक्स, कस्टमस श्री ब्लैकमेलर नहितोऽ गौँ देश जनुन वचि दैत।

पंकज पराशर उर्फ अमूल्य कमल उर्फ तगलस कालनन उर्फ उदयकान्त उर्फ ??? 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ राजकमल चौधरी.....उर्फ...

कतेक उर्फ एहि लेखकक बनत नहि जानि... राजकमल चौधरीक अप्रकाशित पद्य (आब विदेह मैथिली पद्य २००९-१० मे प्रकाशित पृ.३९-४०) “बही-खाता”क एहि धूर्त्ता, चोरि कला आ दंद-फंद करैबला पंकज पराशर..उर्फ..उर्फ.. [गोविन्दनाथ (अमलकान्त)क एहि चोर लेखकक लेल प्रयुक्त शब्द- सम्पादकीय अंतिका अक्टूबर-दिसंबर,

2009- जनवरी-मार्च, 2010- पंकज पराशर प्रसंगमे-] हुनका “हिसाब” नामसँ छपवाओल गेल- देखू

राजकमल चौधरी

बही-खाता

एहि खातापर हम घसैत छी

संसारक सबटा हिसाब

...

...

हमर सबटा अपराध, स्नान...सँ लीखल जाएत

अछि एक्कान सबटा जाता

ई हम्मर लालबही थिक जीवन-खाता

जीवन-खाता

पंकज पराशर उर्फ अनुप्रा कमल उर्फ डगलस कलनन उर्फ उदयकान्त उर्फ □□□ 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ राजकमल चौधरी.....उर्फ...

हुनका एकरा अपना नामसँ एहि तरहेँ चलाओल गेल

हिसाब

हिसाव कहिग रनी (Oान यन

उगाहूल रेल नहेग अछि

किगाव

ज रनि जिनगी लगवेग छथि

नाञ्ञ-नाञ्ञ क हिसाव-

दुनिया-जहान सँ रूनाक वनल

अंगाঃ वनि कS नहि जाञ्ञग छथि

हिसावक किगाव।

२००६

ओहि लखकक खोँसा कS अयशब्दक प्रयाग वन्न नहि रेल अछि आ ञ्ञी नाम वदलि-वदलि ओखना ओहि सरु कार्यम लिष्क अछि, आव ञ्ञी अयन धंधा-चाकनी सहा वदलि लन अछि। स्पष्ट अछि ज ओकना निन्नुब कउगन उग उOाउाल जओवाक आनश्यकगा अछि। उयनका समष्क जानकानी अहाँ गुगल, विहा जगाकँ दी स आग्रह आ गकना नीचाँ ञ्ञी-यग्रयन सहा अग्रसानिग कनी सहा अनुनाधा।

vc.appointments@amu.ac.in,
bisaria.ajay@gmail.com, vedprakas_s@yahoo.co.in,
tasneemSuhail@gmail.com,
rajivshukla_hindi@yahoo.co.in,

merajhindi@gmail.com,

ashutosh_1966@yahoo.co.in,

ashiqbalaut@yahoo.in,

abdulalim_dr@rediffmail.com,

zubairifarah@gmail.com, RameshHindi@gmail.com

पंकज पराशर उर्फ अमृत कमल उर्फ जगदीश कलानन्द उर्फ उदयकान्त उर्फ □□□ 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ.....

DO YOU KNOW "Fake Sahityakar" PANKAJ KUMAR JHA ALIAS PANKAJ PARASHAR.DO YOU KNOW WHAT THIS FAKE GOLD MEDALIST DID AT VASANT MAHILA COLLEGE, KADAMBINI, DAINIK BHASKAR AND DAINIK JAGRAN ? DO YOU KNOW WHAT HE DID WITH HIS FAMILY, FRINDS AND COLLEAGUES.

READ the following to believe it. this mentally corrupt should be treated in the same manner...

pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com besides other fake emails used by Pankaj Parashar on ISP ***220.227.174.243"***

See his level.

अहां कं सूचनार्थ य(0न छी जे यंकज यदिनहा ॐ सव काज कनैग नहय छलैओ। - **aavinash**

<u>ओहि चान लखक यंकज यनाशनक दिमागी हालगिक असली नुय ओगs सहा रटग जाओ ड़ा नाम वदलि-वदलि अयन यूनना मालिकक कम्प्यूटनसँ घृधिग यास कनै छल (सारान-अविनाश)।</u>

Search Comments *220.227.174.243*

- **All**
- Pending (0)
- Approved
- Spam (0)

Search Comments: 220.227.174.243 [Search Comments]

[ ] [Apply] [ ] [Filter]

	Author	Comment	In Response To
☐	ranvijay ranvijay@rediff.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/09/02 at 5:07pm भूँ व मादनवाद, नंगी की औलाद जिसका gauravshaali इतिहास होगा। वही (श्रेष्ठ की वाग कनेगा। न मादनवाद....ग़ साल आदिवासी मादनवाद क्या वाग कनेगा। (श्रेष्ठ की, साल vanmaanush अयनी शकल दखि है किगनी	In Response To

	Author	Comment	In Response To
		क्नूय लगी हे गन सूअन साथी अविनाश की गनह, मादनवाद....bhaunkna वंद कन....	
	ranvijay ranvijay@rediff.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/09/02 at 5:11pm अव मादनवाद jagdeeshsvar चार्ुवेदी, उर्फ नंडी की डौलाद, मादवाद किस naali में येदा हूआ था सिवाय आलावना डौन वकवादी क गुम कूछ आगा हे मक लौंड.....कूछ काम कन जिसस सवका रला हा मादनवाद या गा नया नया कंयूटन वलाना सीखा हे या अयन वलाकानी दास्त avinaash क साथ milkar वूदाई का धंधा वला नहा हे इसीलिए इगना रोंं नहा हे माक लौंड...	जनसत्ता क वान में अर्धसत्यां स वचा 22#
	वार्तिक सत्य binnst@yahoo.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/31 at 3:42pm जा आदमी हन मर्ज की दना जागि का ही समम्भगा हा, जागिवाद क धंधे में ही गल-गल गक डूवा हा उसका क्या शेष कूछ वचा नह गया हे क्या? जेस नंग सियानां का कम स कम प्रकाश जाशी डौन आलाक गामन जेस सम्मानित डौन विद्वान यत्रकान की आलावना कनन का काई नैतिक अधिकान नहीं हा। नहना डौन जहनवूमी रााबा स इस कथित लखक की मंशा समभी जा सकती हा।	आलाक गामन जी, कहां स आगी हे यह रााबा? 8#
	वार्तिक सत्य binnst@yahoo.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/29 at 4:59pm प्रकाश जी की आलावना स या आलाक गामन की आलावना स कूछ हासिल नहीं हाननाला हे. इसस हिंदी समाज का क्या रला हा नहा हे? इस गनह आनाय-प्रत्यानाय स याठकां का क्या लना-दना हे? वहस का एक मूकाम यन यहूंवाकन, अगली यात्रा यन निकल जाना वाहिए.	कौन हे य मनालियां की रााबा वालन नाला आलाक गामन? 21#

Author	Comment	In Response To
Pankaj Parashar pkjpp@yahoo.co.in 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/28 at 6:21pm मृत्युंजय, कल लिखी मेरी प्रतिक्रिया की अंतिम पंक्तियां हैं- हां, एक तकनीकी बात यह हो सकती है कि इन लोगों को सामान्य कोटे से बहाल किया गया हो। मैंने यह अनभिज्ञता जाहिर की, कि हो सकता है उनकी नियुक्ति सामान्य श्रेणी में हुई हो, जिसकी कोई सूचना मुझे नहीं है. इसमें न तो किसी कथित ब्राह्मण शब्द का जिक्र कहीं है और न मेरे ज्ञान या अज्ञान में वह बातें हैं, जो व्याख्या की पालिमिक्स के तहत आप कह रहे हैं। मनचाही व्याख्या और अनचाही सलाह से बचना चाहिए. इस संदर्भ में अनायास मनमानी व्याख्या का विरोध करती सूसन सौंटग की 1966 में प्रकाशित पुस्तक Against Interpretation and Other Essays. की याद आ गई। खुदा खैर करे.	जेएनयू का सच : होता है शबो-रोज तमाशा मेरे आगे 16#
Pankaj Parashar pkjpp@yahoo.co.in 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/27 at 6:34pm बाकी सेंटर्स और स्कूल की सूचनाओं से व्यक्तिगत मैं अपडेट नहीं हूं, क्योंकि कैंपस गए हुए महीनों गुजर जाते हैं। पर भारतीय भाषा केंद्र से तो वाकिफ हूं. सूची में दिखाया गया है कि अनुसूचित जाति से एक भी एसोसिएट प्रोफेसर नहीं हैं, जबकि पी-एच.डी में मेरे शोध निर्देशक रहे डॉ.गोविंद प्रसाद अनुसूचित जाति से हैं और वे बाकायदा रीडर हैं। दूसरी ओर सूची में दिखाया गया है कि एक भी ओबीसी असिस्टेंट प्रोफेसर नहीं हैं, जबकि रूसी केंद्र में हमारे एक साथी हैं। मेरा ख्याल है कि ऐसे नाम और भी होंगे हैं जो सूची की त्रुटियों को साथ-साथ उजागर करते हैं। हां, एक तकनीकी बात यह हो सकती है कि इन लोगों को सामान्य कोटे से बहाल किया गया हो।	जेएनयू का सच : होता है शबो-रोज तमाशा मेरे आगे 16#
Rafugar jinita@yahoo.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/25 at 5:35pm यानि मामला व्यक्तिगत होता जा रहा है . वैसे कहाँ से कहाँ जा रही है? ब्राह्मणों, हरिजनों, ठाकुरों....यानी जातिवाद ही सत्य है...मेरा यही तो रोना का सत्य नहीं है.	प्रकाश जी की मति भ्रष्ट हो गयी है, आप सब रहम करें 53#

	Author	Comment	In Response To
	michal chandan chandan25s@gmail.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/20 at 4:18pm हाऊी लाग, आय सव मान या ना मान यनन्तु ऊ्स सयु का आय अव स्वीकान कन की प्रहाग जाशी नाम क नह महान यत्रकान-संयादक-चिंतक अव यूनी गनह स स0िया ग७ है। यूर्वाग्रह स ग्रसित हाकन आजकल उनका उऊल-रिऊल लिखना, कनी किसी अखवान डौन उनक मालिकां का टानगेट कन आलाचना कनना, कनी मानखंत क एक अखवान क वान मं कसीद लिखना डौन अव अयन मनूवादी रद्द चहन का सवक सामन यश कन चर्चा मं वन नहना ऊनक स0ियन की निशानी नहीं है गा क्या है।	प्रहाषजी क निचान माननानिनाधी हैं 30#

	Apply

मैथिल आन मिथिला ब्लॉग मॉडरेटन- ऊयनका सूचनाक अगिनिक चानिक नचना ज हम एकटा ब्लॉगम...म यकनलौ गकन वाद ऊ धूर्ग लखक एतिट कय ऊकना वदसूना कविताक शब्र द दलक, सम्यादक हमन प्रमाध क ऊना दलक आ अयन जागिनादी हवाक हन प्रमाध दलक आ आव वशीन वद्र क एकटा कविता जागिनादी लाकनि द्वाना चाना कय अयना नाम कनवाक सूचना आयल अछि, ऊ अयन गल्छि स्वीकना ना हन अयन नचना एतिट कना दखा चाही हम हाजिन हायच अहंक समऊ शीघ्र... जागिनादी साच क मानय टा यना मिथिलाक विकास लल. जावशीन वद्र क कविता जागिनादी लाकनि द्वाना चाना कय अयना नाम कनवाक सूचना आयल छल आ हम कहन नही ज ऊ अयन गल्छि स्वीकना ना हन अयन नचना एतिट कना दखा चाही हम हाजिन हल छी अहंक समऊ, चान महानाजक टटका नचनायन चान महानाजक मौसना हाऊक

कर्मठ आयल अछि जाहि स ॢॢी सिद्ध रल ज ओ ॢॢशाना बूमि गेल ज ओकना चानि यकता गेलैक। ओकन करेत छै चान-चान मौसना राॢॢ।- मैथिल आन मिथिला ब्लॉग सँ यंकज यनाशनकँ निकालल जा नहल अछि।- मैथिल आन मिथिला ब्लॉग मॉडनेटन

Recently Some Maithil Brahmin Samaj Organisation has started selling prizes in the name of Yatri (Vaidyanath Mishra, Nagarjun) and Kiran (Kanchinath Jha). There has been trend recently to grant these prizes to those intellectual thiefs who are basically opposed to the ideology's of Kiran and Yatri (Nagarjun). The caste based organisations are killing the spirit of Yatriji and Kiranji, recently the fraud Pankaj Jha alias Pankaj Kumar Jha alias Pankaj Parashar alias Dr. Pankaj Parashar) was stage managed to get this casteist award, The lecturer of Hindi at Aligarh Muslim University, just appointed as adhoc staff, will teach now how to lift verbatim articles of [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]. [illegible] (समय कँ अकानैत) [illegible] (श्रीकान्द नर्मा- मगध) and his Vilambit

Kalk Yug [illegible] (विलम्बित कल्कि युग मे निबद्ध) [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible].ई संग्रह शैलजानी सिंह, श्रीकान्त वर्मा, राजेन्द्र ठाकुर, राजकमल चौधरी आदि कविक पंकज पराशर द्वारा चोरा-चोरी रचनाक कारण चोर कए देल गेल। "रचना"पत्रिकाक कथित अतिथि सम्पादकक नुयम पंकज पराशर द्वारा कवि-कहानीकार सभसँ रचना सेहो मँगवाओल गेल आ एकरा अपना नामसँ छपवाओल गेल। ई छद्म साहित्यकार पराशर गोत्रक (!!)पंकज कुमार झा उर्फ पंकज पराशर बहुत लेखकक अप्रकाशित रचना अनुवाद करबा लेल सेहो लेलक आ अपना नामेँ छपवा लेलक। पाठकक आग्रहपर आर्काइवमे ई तथ्य राखल जा रहल अछि।— **सम्पादक, विदेह**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

𑓔. 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒫𑒹𑒭𑒝

४. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

सूचना

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The

journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

१

"विदेहक जीवित साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी- रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"

विदेह अपन ३६९ म (०१ मई २०२३) अंकमे मैथिली लेखक अशोक पर आ ३७० म (१५ मई २०२३) अंकमे मैथिली लेखक रमानन्द झा 'रमण' पर विशेषांक निकालत। विशेषांक लेल रचनाकार/ कलाकर्मीक काज, रचना-संपादन, संस्मरण आ अन्य रचनात्मक कार्यपर सभ प्रकारक रचना (संस्मरण, आलोचना, समालोचना, समीक्षा आदि) आमंत्रित अछि। अहाँ अपन रचना ३६९म अंकक विशेषांक लेल २४ अप्रैल २०२३ धरि आ ३७०म अंकक विशेषांक लेल ८ मई २०२३ धरि वर्ड फाइलमे ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छी।

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह द्वारा एक बरख बाद एकटा संस्थाक समग्र मूल्यांकन शृंखला"

विदेह अंक ३७१ म (०१ जून २०२३) अंकमे "मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.)" पर विशेषांक निकालत। मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.) पर निबन्ध लीखल विद्वजन मैथिलीमे आलेख आमंत्रित अछि।

१) एम.एस.यू. केर गठनक प्रमाणिक इतिहास,

२) एम.एस.यू. आ मिथिला केर नव रचना,

३) एम.एस.यू. आ विभिन्न जाति केर समन्वय,

४) एम.एस.यू. द्वारा चल विभिन्न आंदोलन आ ओकर लेखा-जोखा एवम् ठाकुर प्रकाश वा

५) एम.एस.यू. संदर्भित आन कोनो लेख।

३११म अंकक विशेषांक लेल अहाँ अपन रचना २५ मई २०२३ धरि नीचाँ देल ई-पत्र सङ्केत □□□□□□□□□□.□□□□□.□□□□□□@□□□□□.□□□ पर पठा सकै छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

"विदेह मानाचार्य" शृंखला

विदेह अपन जीवित रचनाकार/ कलाकर्मी पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' आ (८) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक निकालने अछि।

अही सन्दर्भमे आठो साहित्यकार पर "विदेह मानाचार्य" शृंखला अन्तर्गत "मानाचार्य" आमंत्रित कयल जा रहल अछि।

"𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤" 𑒬𑒵𑓀𑒐𑒪𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒩𑒝 𑒢𑒱𑒧𑓂𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱:

(𑓑) 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒳𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒅𑒣𑒩𑒧 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒋𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 editorial.staff.videha@gmail.com𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒫𑒡𑒱 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑓁 𑒋𑒏 𑒧𑒰𑒮 𑒩𑒯𑒞।

(𑓒) 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒂𑒚 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒂𑒚 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒔𑒨𑒢𑒱𑒞 𑒏𑓄 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑒰𑒩𑓂𑒫𑒖𑒢𑒱𑒏 𑒒𑒼𑒭𑒝𑒰 𑒏𑒩𑒞।

"𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤" 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒨𑒧:

(𑓑) 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒯𑒳𑒁𑒨। 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲, 𑒋𑒢.𑒥𑒲.𑒙𑒲. 𑒂 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤/ 𑒥𑒰𑒨𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤𑒲𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒂 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑 𑒖𑒼𑒛𑒱 𑒏𑒨 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒹 𑒁𑒣𑒢-𑒂𑒞𑓂𑒧-𑒣𑓂𑒩𑒬𑓀𑒮𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। "𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤" 𑒤𑒲𑒤𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒪𑓂𑒛 𑒏𑒣 𑒤𑒳𑒙𑒥𑒰𑒪 𑒮𑒢 𑒩𑒯𑒞। 𑒤𑒲𑒤𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒪𑓂𑒛 𑒏𑒣 𑒤𑒳𑒙𑒥𑒰𑒪 𑒋𑒯𑒢 𑒋𑒏𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒙𑒴𑒩𑓂𑒢𑒰𑒧𑒹𑒝𑓂𑒙 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒞𑒨 𑒏𑒼𑒢𑒼 "𑒍𑒣𑒢𑒱𑓀𑒑" 𑒫𑒰 "𑒏𑓂𑒪𑒼𑒖𑒱𑓀𑒑" 𑒮𑒹𑒩𑒹𑒧𑒢𑒲 𑒢𑒻 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻 𑒂 𑒋𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒕𑒻 𑒖𑒹 "𑒍𑒣𑒢𑒱𑓀𑒑" 𑒫𑒰 "𑒏𑓂𑒪𑒼𑒖𑒱𑓀𑒑" 𑒧𑒹 𑒙𑒴𑒩𑓂𑒢𑒰𑒧𑒹𑒝𑓂𑒙𑒧𑒹 𑒢𑒻 𑒐𑒹𑒪𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒁𑒞𑒱𑒟𑒱/ 𑒁𑒞𑒱𑒟𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒤𑒼𑒏𑒮 𑒐𑒱𑒪𑒰𑒛𑒲 𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒤𑒲𑒤𑒰 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒤𑒳𑒙𑒥𑒰𑒪 𑒐𑒱𑒪𑒰𑒛𑒲𑒣𑒩 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒙𑒴𑒩𑓂𑒢𑒰𑒧𑒹𑒝𑓂𑒙 "𑒍𑒣𑒢𑒱𑓀𑒑 𑒮𑒹𑒩𑒹𑒧𑒢𑒲" 𑒢𑒻 𑒫𑒩𑒢𑓂 𑒮𑒼𑒗 "𑒍𑒣𑒢𑒱𑓀𑒑 𑒧𑒻𑒔" 𑒮𑒿 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒰𑒣𑒢 "𑒏𑓂𑒪𑒼𑒖𑒱𑓀𑒑 𑒮𑒹𑒩𑒹𑒧𑒢𑒲"𑒮𑒿 𑒢𑒻 𑒫𑒩𑒢𑓂 "𑒤𑒰𑒃𑒢𑒪 𑒧𑒻𑒔 𑒂 𑒙𑓂𑒩𑒰𑒤𑒲"𑒮𑒿 𑒐𑒞𑒧 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒤𑒼𑒏𑒮 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒐𑒱𑒪𑒰𑒛𑒲 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 "𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤" 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒍 "𑒮𑒰𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩"𑒣𑒩 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒞 𑒂 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒂𑒠𑒱 𑒖𑒼𑒛𑒱 𑒏𑒨 𑒤𑒼𑒏𑒮 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒮𑒿

अयनायन काङ्कि कनवाक अनुमति नै नहल।

(२) मानाग्रारु लल "विदेह यटान"म उयलव्ध सामग्रीक सहुर्द सहित उययाग कयल जा सकैत।

(३) विदहम ई-प्रकाशित नवना सरक कॉयीनाइट लखक/संग्रहकर्ता लाकनिक लगम नहतन्हि। सम्यादक 'विदह' ई-यत्रिकाम प्रकाशित नवनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकान नखैत छथि। ऐ ई-यत्रिकाम काना नोयल्टीक/ यानिश्रमिकक प्रावधान नै छै।

(४) "विदह मानाग्रारु"क फॉर्मेट: नवनाकानक यनिचय (नवनाकानक जन्म, निवास-स्थान आ कार्यस्थलक भौगोलिक-सांस्कृतिक विवचना सहित) आ नवनावली (समीक्षा सहित)।

घाषणा: "विदह मानाग्रारु" शृंखला अन्तर्गत (१) नाजनहन लाल दास जी यन मानाग्रारु निर्मला कर्ण, (२) नवीन्द्र नाथ ठाकुन यन मुन्नी कामत आ (३) कदान नाथ चौधनी यन प्रम माहन मिश्र द्वाना लिखल जायत। मैथिली यूत्र प्रदीय यन "विदह मानाग्रारु" लिखबाक प्रमशंकन मा "यनन"।

शेष ३ गोटयन निर्णय शीघ्र कएल जायत।

घाषणा २: ऊाना गँ मैथिली यूत्र प्रदीय यन विदह विशेषांक नै निकालल अछि, मुदा हुनकन अवदान कँ दखैत प्रमशंकन मा "यनन"क हुनका ऊयन "विदह मानाग्रारु" लिखबाक विचान आयल गँ ऊकना स्वीकान कयल गेल।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (१)

विदेह द्वारा जे विशेषांक प्रकाशित होइ छै तकर संग विदेह उठाओल लेखक-साहित्यकार अपन ध्यान सेहो केन्द्रित करत जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नै प्रकाशित भऽ सकल। ऐ नव विचारक मुख्य बिंदु एना अछि-

१) हम एकटा कोनो लेखक वा कलाकारपर एकाग्र आलोचना करब जकर भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी हएत। ऐ पोथीक पहिल रूप ई-बुक केर रूपमे हएत आ प्रयास हएत जे एकर प्रिंट सेहो आबए जे कि परिस्थितिपर निर्भर करत।

२) ऐ शृंखलामे सुभाष चंद्र यादवपर केन्द्रित "नित नवल सुभाष चंद्र यादव" एवं नागेन्द्र मंडलपर केन्द्रित "□□□□□□ □□□□□□-□□□□□□□□ □□□□□□" प्रकाशित भेल अछि। दुनू पोथीक लोकार्पण ३१ दिसम्बर २०२२ केँ १११म सगर राति दीप जरय मे कएल गेल।

३) आगाँक घोषणा लेल http://videha.co.in/investigation.htm देखैत रही।

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई पोथी हुनकर किछु सन्दर्भ

उपन्यासकारमे किछु सिण्डिकेटक कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी ह्वाइटवाशिंगमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जाहि ई सेहो जायत, अनजानसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ई पाँचो पाइक सामग्री नै अछि।

एऽ एकटा फूल स्थान अछि, एकटा गैर सवर्ण लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दू पाँति लिखलन्हि आ निपटा देलन्हि, ओ दूनू पाँति हम एऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो पढ़ने छियै होएब, जँ नै पढ़ने छी तँ पहिने पढ़ि लिअ, कारण तखन बेसी मनोरंजक अनुभव होएत, गुलो सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे एहि http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

जेना उपन्यासमे राजनीति दूर-दूर धरि नै छै ओतऽ 'राजनैतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्ने नै छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साक्ष्य धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त कएलन्हि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'घाट' जे २०२२मे आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे एहि http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, से राजनीतियुक्त अछि मुदा ओतहु सुभाषजीक रचना शैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साक्ष्यक आवश्यकता नै पड़लै। पढ़ू हमर पोथी 'निर नवल सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि

ई http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक निन्दा ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतरनाक घटना अछि। जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैत कमलानन्द झा वामपंथक साइन पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तखन प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। ई अपन सनर्कसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेन्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेन्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किनदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोकक लेल मैथिली वाङ्मयक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

आब अहाँ पूछब जे तखन प्रतिकार समानान्तर धारा कोना कएलक, जा गाँ कन्नारोहट नै कएने, गाँ तखन उत्तर अछि हमर ३ टा पोथी जे ११११म सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित भेल ३१ दिसम्बर २०२२ केँ, वएह सगर राति दीप जरय जकरा साहित्य अकादमी गत दस वर्खसँ गीड़ि लेबाक प्रयास कऽ रहल अछि। अहाँसँ ई तीनू पोथीपर टिप्पणी ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि। पहिल दू पोथी मे राजदेव मण्डल आ सुभाष चन्द्र यादवक साहित्यक समीक्षा अछि जे हमर तेसर पोथी मैथिली समीक्षाशास्त्रक सिद्धांतक आधारपर कएल गेल अछि।

गीनु याथीक लिंक नीचाँ देल गेल अछि।

Rajdeo Mandal- Maithili Writer(Now with Supplement I & II)

निरु नवल सुभाष चन्द्र यादव

निरु नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

मैथिली समीक्षाशास्त्र
मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)
संगम पर कमलानन्द झा क ब्राह्मणवादयन प्रहार:
दुखद यात्री- The Black Book
दुखद यात्री- □□□ □□□□□ □□□□ (मिथिलाक्षर)
-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४(२)

निरु नवल दिनेश कुमार मिश्र

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन क बीच म' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बहिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन क बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, गण्डक नदी

ऊौन गकनीकी माउ-रूंक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समितिक सदस्य यंकज मा यनाशन द्वारा हिनकन याथी सरसँ येनाक येना मैथिली अनुवाद कs अयना नाम उयन्यास छयवाउल गेल अछि, जकना छत्र समीउक कमलानन्द मा ऐ वान लखकक निसर्व करै छथि। एगs स्यष्ट कs दी ज ऐी वान लखक आ छत्र समीउक दूनू अलीगढ मुस्लिम विश्वालयक हिन्दी विभागम छथि। ऐी निसर्व दिनश कुमान मिश्रक थीक, ज आई.आई.टी. खउगयूनसँ सिविल ऐञ्जीनियनिढ म वी. एक. १९६८म आ स्ट्रक्चनल ऐञ्जीनियनिढम एम.एक. १९७०म कन छथि, आ उऐ निसर्व लल क्वालिहाइत छथि। जखन काना विषयम नामांकन नै हाऐ छै गखन लाक हानि-थाकि हिन्दीम नामांकन लऐए, नै गँ कमलानन्द मा कँ वूमs म आवि जऐगहि ज ऐी निसर्व काना सिविल ऐञ्जीनियनक हs सकैग अछि, हs सकैए वूमला हाऐह। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

दिनश कुमान मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सरर धानक कथा उा लिखन छथि, हम सर हुनका प्रगि कृगज्ञ छी आ हुनकन मृढ्सँ मिथिलावासी कहिया उमृढ नै हs सकगा, मुदा मूलधानाक यूनस्थान आ याऐ लालुय लाकसँ कृगघ्नग हरग स हुन सिद्ध हला। ऐ लखककँ दस वानह वर्ष यहिन सहा गानानन्द वियागी उद्धानक हरल छलखिह ज लिखन नहथिह ज उा कविगाम प्रशानग हs

अनायास अयन नवनाम दासनक सामिग्री वानि कs लऽऽ छथि, ओहन सन। आव ओ कमलानन्द मा क आश्रय गकलन्हि मुदा दुर्रोग्य! जऽऽ हिसाव व्राह्मणनायकँ आगाँ वढवैल कमलानन्द मा नामयंथक साळन यकउ छथि आ सामाजिक न्यायक वलि चढवs वाहै छथि, गकन प्रति समानान्तन धाना सवग अछि। सीलिंगसँ ववना लल जमीन-जछावला लाक कम्युनिस्ट वनला आ आव व्राह्मणनाद ववालल नामयंथक शनध, ओहन लाक सरसँ कम्युनिस्मकँ वहुग नूकसान हल छै।

दिनश कुमान मिश्रक सरटा पाथी आव हुनकन अनुमतिसँ उपलब्ध अछि निदह आर्काऽऽवमः

http://videha.co.in/pothi.htm

ओगs ओकरा गय मान याति दी ज जखन विल (गम्रकँ युछल (गलन्हि ज की उा ओक्ष वाॅक्ष हानगम याऽऽनशीक तनसँ दनीसँ आनि नहल छथि? गँ हुनकन उन्दन नहन्हि ज माऽऽक्रासाॅङ याऽऽनशीक तन काना उयाद दनीसँ नै उानन्न अछि। स निदह यटानम हम सर ओ गनहक निष्क नहिग। ओकना आन समृद्ध कनैग नहव, कानध समानान्तन धानाम सउल माँछ ह्वान याखनिक सर माँछ नै सउन, ओगुक्का मलाह (गार-(गार कs सउल माँछ निकालैग नहल छथि, निकालैग नहगा।

सिद्धीकरउ समीजायन अन्तिम प्रदान।

मुल दिनश कुमान मिश्र (दुऽऽ याटन क वीच मं... २००६): यह

ध्यान देने की बात है कि 1923 से 1946 के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया से 5,10,000, कालाजार से 2,10,000, हैजे से 60,000 तथा चेचक से 3,000 मौतें (कुल 7,83,000) हुईं।

श्री पंकज झा पराशर (**साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य**) [जलप्रांतर २०११ (पृ. १०३)]:

> ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'वीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'वीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा। क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इस किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो

आम धारणा बनी है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबंध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबंध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

प्रसिद्ध समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा पाठ उपन्यासकारक पी० एकाक, देखू प्रसिद्ध समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उल्लेख पाठ पंकज झा पराशर (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २५७-२५८):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर' (2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

चान यंकज मा यनाशन (साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतन २०११ (यृ. ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): कोसी क प्रवाह कि रयानदगी की एक मलकहिनाजशाह तुगलक की खोज

के सन् 1354 में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँचीं तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजें मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह वही हाजी शम्सुद्दीन थे जिन्होंने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाये थे। फिरोज की फौजें शायद कुरसेला के आस-पास किसी जगह पर कोसी के किनारे साथ में पड़ गईं। नदी की रफ्तार उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। आखिरकार फैसला हुआ कि नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ा जाय और जहाँ नदी पार करने लायक हो जाय वहाँ पानी की थाह ली जाय। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कोस ऊपर गईं और चम्पारन के पास, जो कि उसी स्थान पर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ों से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की धारा तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना तेज था कि पाँच-पाँच सौ मन के हाथी पड़ते नदी में तिनकों की तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन लगा उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और नीचे वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इन रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शम्सुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उस को इस बात का पता लगा कि सुल्तान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

श्री पंकज झा पराशर **(साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य)** [जलप्रांतर २०११ (पृ. १०७)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कें नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनें कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनें शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कें जतय नदी पार करब कनें आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कें ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनें छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कें पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(... शीघ्र एहि लिंकपर आन स्क्रीनशॉट अपलोड कएल जाएत।)

विदेह ३६३ म अंक दिनांक ०१ जनवरी २०२३ सँ प्रारम्भ... निरन्तर दिनेश कुमार मिश्र

http://videha.co.in/ विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पर।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (३)

निग नवल सुशील

कमलानन्द झाकेँ हम किए छद्म समीक्षक कहलियनि?

कारण ओ छद्म समीक्षक छथि।

ओ लिखै छथि- "मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सए वर्षक बाद मैथिल अन्तर्जातीय विवाहक रचना, संघर्ष आ विडम्बना पर गतिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।"

तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलनि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकार- जे हम ककरा चढ़ा सकै छिऐ आ ककरा उतारि सकै छिऐ- कर पराकाष्ठा थीक, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण?

चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा कर स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादुवला साहित्यिक निश्छल दुनियाँमा।

अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यिक दुनियाँमा।

प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामवाली' (१९८२) जे आब उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवम लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर।

पहिल पाँतीम उपन्यास आनन्दसँ पहिनहिये 'गामवाली' उपन्यासक सम्बन्धम सुशील लिखै छथि-

"विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे।"

आ उपन्यास आरम्भ।

गामवालीक मृत्यु आ पंचक मामला, गामवालीक दारू संस्थान क कतौ? ब्राह्मण समाज कि जादव समाज?

मैथिलीक सिन्धीकरण समीक्षायन अन्तिम प्रहार।

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ फरवरी २०२३ सँ प्रारम्भ... **लेख नवल सुशील**

http://videha.co.in/ विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पर।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

१

संजय दास जीक चित्रकलायन बहुत चलि रहल अछि। किछु लोक एकरा अश्लील मानि रहल छथि तँ किछु लोक एकरा कलाक स्वातंत्र्य हेबाक परिचायक मानै छथि। विदेह दुनू पक्षसँ टाइप कएल आलेखक अपील कऽ रहल अछि, आलेख पाठ्यक्रमक हेबाक चाही। व्यक्तिगत लगाव वा दुश्मनी बला आलेख नै हुअय। अपन आलेख □□□□□□□□□□.□□□□□.□□□□□□□@□□□□□.□□□ पर सेहो पठाउ।

२

विदेहक "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक"

विदेह "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल [illegible] पर आमंत्रित अछि।

१. साहित्य, कला आ सरकारी अकादमी:-

(क) पुरस्कारक राजनीति

(ख) सरकारी अकादमीमे पैसाक गैर-लोकतांत्रिक विधान

(ग) सभागृह आ अकादमी केर काज करबाक तरीका

(घ) सरकारी सभाक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सभाक कार्यपद्धति

(ङ) अकादमी पुरस्कारमे पाइ फैक्टर: मिथक वा यथार्थ

२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति

३. प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक

४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सभक आचरण।

५. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

६. साहित्यिक पत्रकारिता, विद्यु, मंच-माला-माइक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा।

७. लेखक सभक जन्म-मरण शताब्दी केर चुनाव , कीर्तनकार आ

रचना पाठकक राजनीति

८. दलित एवं लेखिका सबहक संग भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध रूपक

९. कोनो आन विषय।

१

विदेह ब्रॉडकास्ट लिस्ट

विदेह WWW.VIDEHA.CO.IN सम्बन्धी सूचना लेल अपन □□□□□□□□ नम्बर देमन □□□□□□□□ □□ +919560960721 पर पठाउ, ओकर प्रयोग मात्र विदेह सम्बन्धी समाचार देबाक लेल कएल जाएत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

अनुलग्नक ३: मैथिलीमे छन्द समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- चोर लेखक पंकज झा पराशरक पुरान साहित्यिक चोरिक खुलासापर किछु प्रमाण)

अनुलग्नक ३: मैथिलीमे छद्म समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- चोर लेखक पंकज झा पराशरक पुरान साहित्यिक चोरिक खुलासापर किछु प्रमाण)

Read the original Article by Douglas Kellner and then blatant copying in hindi version in his own name by Pankaj Parashar published in Pahal-86

After that read blatant intellectual theft/ copying of Maithili Poem by Pankaj Parashar Published in Aarambh-23 (March 2000) and then Shri Arun Kamal's original Hindi Poem "Naye Ilake Me" Ist published by Vani Prakashan in 1996.

Thanks Readers for coming out with so much information.

Intellectuals, the New Public Spheres, and Techno-Politics

By

Douglas Kellner

The category of the intellectual, like everything else these days, is highly contested and up for grabs. Zygmunt Bauman contrasts intellectuals as legislators who wished to legislate universal values, usually in the service of state institutions, with intellectuals as interpreters, who merely interpret texts, public events, and other artifacts, deploying their specialized knowledge to explain or interpret things for publics (1987; 1992). He thus claims that there is a shift from modern intellectuals as legislators of universal values who legitimated the new modern social order to postmodern intellectuals as interpreters of social meanings, and thus theorizes a depoliticalization of the role of intellectuals in social life.

I, however, want to make another distinction between functional intellectuals who serve to reproduce and legitimate the values of existing societies contrasted to critical-oppositional intellectuals who oppose the existing order. Sometimes oppositional intellectuals voice their criticisms in the name of existing values which they claim are being violated (i.e. truth, rights, rule by law, justice, etc.) and sometimes in the name of values or ideas which are said to be higher potentialities of the existing order (i.e. participatory democracy, socialism, genuine equality for women and blacks, ecological restoration, etc.). Functional intellectuals were earlier the classical ideologues, whereas today they tend to be functionaries of parties or interest groups, or mere technicians who devise more efficient means to obtain certain ends, or who apply their skills to increase technical knowledge in various specialized domains (medicine, physics, history, etc.) without questioning the ends, goals, or values that they are serving, or the social utility or disutility of their activities.

Functional intellectuals are thus servants of existing societies who are specialists in legitimation and technical knowledge, while oppositional intellectuals are critics who struggle to create a better society. Critical intellectuals were traditionally those who utilized their skills of speaking and writing to denounce injustices and abuses of power, and to fight for truth, justice, progress, and other universal values. In the words of Jean-Paul Sartre (1974: 285), "the duty of the intellectual is to denounce injustice wherever it occurs." For Sartre, the domain of the critical intellectual is to write and speak within the public sphere, denouncing oppression and fighting for human freedom and emancipation. On this model, a critical intellectual's task is to bear witness, to analyze, to expose, and to criticize a wide range of social evils. The sphere and arena of the critical/oppositional intellectual is the word, and his or her function is to describe and denounce injustice wherever it may occur.

The modern critical intellectual's field of action was what Habermas (1989) called the public sphere of democratic debate, political dialogue, and the writing and discussion of newspapers, journals, pamphlets, and books. Of course, not all intellectuals were critical or by any means progressive. With the rise of modern societies, there was a division between physical and mental labor, and intellectuals became those who specialized in mental labor, producing and distributing ideas and culture, with some opposing and some legitimating the established forms of society.

Thus, intellectuals were split into those critical and oppositional individuals who opposed injustice and oppression, as contrasted to functional intellectuals who produced technical knowledge that served the existing society and those producers of ideology who legitimated the forms of class, race, and gender domination and inequality in modern societies. In the following reflections, I want to discuss some challenges from postmodern theory to the classical conceptions of the critical-oppositional intellectual and some of the ways that new technologies and new public spheres offer new possibilities for democratic discussion and intervention, which call for a redefinition of the critical intellectual. Consequently, I will discuss some changes in the concept of the public sphere and how new technologies and new spheres of public debate and conflict suggest some new possibilities for redefining intellectuals in the present era.

The Public Sphere and the Intellectual

Democracy involves a separation of powers and popular participation in governmental affairs. During the era of the Enlightenment and 18th century democratic revolutions, public spheres emerged where individuals could discuss and debate issues of common concern (see Habermas 1989). The public was also a site where criticism of the state and existing society could circulate. The institutions and spaces of the 18th century democratic public sphere included newspapers, journals,

and a press independent from state ownership and control, coffee houses where individuals read newspapers and engaged in political discussion, literary salons where ideas and criticism were produced, and public assemblies which were the sites of public oratory and debate.

Bourgeois societies split, of course, across class lines and different class factions produced different political parties, organizations, and ideologies with each party attracting specialists in words and writing known as intellectuals. Oppressed groups also developed their own insurgent intellectuals, ranging from representatives of working class organizations, to women like Mary Wollstonecraft fighting for women's rights, to leaders of oppressed groups of color, ethnicity, sexual preference, and so on. Insurgent intellectuals attacked oppression and promoted action that would address the causes of oppression, linking thought to action, theory to practice. Thus, during the 19th century, the working class developed its own oppositional public spheres in union halls, party cells and meeting places, saloons, and institutions of working class culture. With the rise of Social Democracy and other working class movements in Europe and the United States, an alternative press, radical cultural organizations, and the spaces of the strike, sit-in, and political insurrection emerged as sites of an oppositional public sphere.

Intellectuals in modern societies were thus conflicted beings with contradictory social functions. The classical critical intellectual -- represented by figures like the French Enlightenment ideologues, Thomas Paine, Mary Wollstonecraft, and later figures like Heine, Marx, Hugo, Dreyfus, Du Bois, Sartre, and Marcuse -- was to speak out against injustice and oppression and to fight for justice, equality, and the other values of the Enlightenment. Indeed, the Enlightenment itself represents one of the most successful discourses of the critical individual, a discourse and movement which assigns intellectuals key social functions. And yet conservative intellectuals attacked the Enlightenment and its prodigy the French Revolution and produced discourses that legitimated every conceivable form of oppression from class to race, gender, and ethnic domination.

Against the EN and Sartre's model of the committed intellectual who is engaged for freedom (engagé), Michel Foucault complained that Sartre represented an ideal of the universal intellectual who fought for universal values such as truth and freedom, and assumed the task of speaking for humanity (1977). Against such an exalted and in his view exaggerated conception, Foucault militated for a conception of the specific intellectual who intervened on the side of the oppressed in specific issues, not claiming to speak for the oppressed, but to intervene as an intellectual in specific issues and debates.

Foucault's conception of the specific intellectual has been accompanied within a new postmodern politics with a turn toward new social movements as the domain of contemporary politics (Laclau and Mouffe 1985), replacing the state and the national realm of party politics. For a postmodern politics, power is diffuse and local and not merely to be found in macroinstitutions like the workplace, the state, or patriarchy. Macropolitics that goes after big institutions like the state or capital is to be replaced by micropolitics, with specific intellectuals intervening in spheres like the university, the prison, the hospital, or for the rights of specific oppressed groups like sexual or ethnic minorities. Global and national politics and theories are rejected in favor of more local micro politics, and the discourse and function of the intellectuals is seen as more specific, provisional, and modest than in modern theory and politics, subordinate to local struggles rather than more ambitious projects of emancipation and social transformation.

In my view, such a binary distinction between macro and micro theory and politics is problematical, as are absolutist commitments to either modern or postmodern theory tout court (Best and Kellner 1991 and 1997). Using the example of the events of 1989 that saw the collapse of communism, for instance, it is clear that the popular offensives against oppressive communist power combined micro and macropolitics, moving from local and specific struggles rooted in union halls, universities, churches, and small groups to mass demonstrations forcing democratic reforms and even classical mass insurrection aiming at an overthrow of the existing order, as in Romania. In these struggles, intellectuals played a variety of roles and deployed a diversity of discourses, ranging from the local and specific to the national and general.

Thus, whereas I would argue that postmodern theory contains important criticism of some of the illusions and ideologies of the traditional modern intellectual, it goes too far in rejecting the classical role of the critical intellectual. Moreover, I shall suggest that some of the modern conception of the critical and oppositional intellectual remains useful. I would, in fact, reject the particular/universal intellectual dichotomy in favor of developing a normative concept of the critical public intellectual. The public intellectual -- on this conception -- intervenes in the public sphere, fights against lies, oppression, and injustice and fights for rights, freedom, and democracy à la Sartre's committed intellectual. But a democratic public intellectual on my conception does not speak for others, does not abrogate or monopolize the function of speaking the truth, but simply participates in discussion and debate, defending specific ideas, values, or norms or principle that may be particular or universal. But if universal, like human rights, they are contextual, provisional, normative and general and not valid for all time. Indeed, rights are products of social struggles and are thus social constructs and not innate or natural

entities -- as the classical natural rights theorists would have it. But rights can be generalized, extended, and can take universal forms -- as with, for instance, a UN charter of human rights that holds that certain rights are valid for all individuals -- at least in this world at this point in time.

Consequently, one does not need all of the baggage of the universal intellectual to maintain a conception of a public or democratic intellectual in the present era. Intellectuals may well seek to occupy a higher ground than particularistic interests, a common ground seeking public interests and goods. But intellectuals should not abrogate the right to speak for all and should be aware that they are speaking from a determinate position with its own biases and limitations. Moreover, intellectuals should learn to get out of their particular frame of reference for more general ones, as well as to be able to take the position of the other, to empathize with more marginal and oppressed groups, to learn from them, and to support their struggles. To perpetually criticize oneself, to develop the capacity for self-reflection and critique -- as well as self-expression -- is thus part of the duty of the democratic intellectual.

New Technologies, New Public Spheres, and New Intellectuals

In the following discussion, I will argue that although the public intellectual should assume new functions and activities today, the critical capacities and vision of the classical critical intellectual are still relevant, thus I suggest building on models of the past, rather than simply throwing them over, as in some types of postmodern theory. I want to suggest that rethinking the intellectual and the public sphere today requires rethinking the relationship between intellectuals and technology.

In a certain sense, there was no important connection between the classical intellectual and technology. To be sure, intellectuals -- especially scientific scholars like Leonardo de Vinci, Galileo, or Darwin -- deployed technologies and entire groups like the British Royal Society were concerned with technologies and were indeed often inventors themselves. Some intellectuals used printing presses and were themselves printers and many, though not all, of the major intellectuals of the 20th century probably used a typewriter, though I personally know of no major studies of the relationship between the typewriter and intellectuals. Yet a classical intellectual did not have to intrinsically deploy any specific technology and there was thus no intimate connection between intellectuals and technology.

I now want to argue that in the contemporary high-tech societies there is emerging a significant expansion and redefinition of the public sphere and that these developments, connected primarily with media and computer technologies, require a reformulation and expansion of the concept of critical or committed intellectual,

as well as a redefinition of the public intellectual. Earlier in the century, John Dewey envisaged developing a newspaper that would convey "thought news," bringing all the latest ideas in science, technology, and the intellectual world to a general public, which would also promote democracy (see the discussion of this project in Czitrom 1982: 104ff). In addition, Bertolt Brecht and Walter Benjamin (1969) saw the revolutionary potential of new technologies like film and radio and urged radical intellectuals to seize these new forces of production, to "refunction" them, and to turn them into instruments to democratize and revolutionize society. Sartre too worked on radio and television series and insisted that "committed writers must get into these relay station arts of the movies and radio" (1974: 177; for discussion of his Les temps modernes radio series, see 177-180).

Previously, radio, television, and the other electronic media of communication tended to be closed to critical and oppositional voices both in systems controlled by the state and in private corporations. Public access and low power television, and community and guerilla radio, however, open these technologies to intervention and use by critical intellectuals. For some years now, I have been urging progressives to make use of new communications broadcast media (Kellner 1979; 1985; 1990; 1992) and have in fact been involved in a public access television program in Austin, Texas since 1978 which has produced over 600 programs and won the George Stoney Award for public affairs television. My argument was that radio, television, and other electronic modes of communication were creating new public spheres of debate, discussion, and information and that intellectuals who wanted to engage the public, to be where the people were at, and who thus wanted to intervene in the public affairs of their society should make use of these new media technologies and institutions, and develop new communication politics and new media projects.

In fact, one can argue that the victory of Reagan and the Right in the United States in 1980 was related to the Right's effective mobilization of conservative intellectuals and their use of television, radio, fax and computer communication, direct mailings, telephones, and other sophisticated political uses of new technologies, as well as more traditional print media. Furthermore, one could argue that Clinton's victory over Bush in 1992, and the surprising success of the Perot campaign, were related to effective uses of communication technologies. And more recently in the U.S., the Republican and rightwing success in the 1994 elections can be related to their use of talk radio, computer bulletin boards, and other technologies. Indeed, Newt Grinrich, William Bennett, and other conservatives have made very effective use of public access television, radio, computer networks, book promotion tours with high media exposure, and other technologies to promote their ideas. Yet it is generally acknowledged that the Clinton administration deployed much more effective communications politics in the 1996 election than the Dole

campaign. Effective CU politics are thus now essential to political success in national and local conflicts and often which side has the most effective politics of CU wins the struggle in question.

Consequently, I would argue that effective use of technology is essential in contemporary politics and that intellectuals who wish to intervene in the new public spheres need to deploy new communications media to participate in democratic debate and to shape the future of contemporary societies and culture. My argument is that first broadcast media like radio and television, and now computers have produced new public spheres and spaces for information, debate, and participation that contain both the potential to invigorate democracy and to increase the dissemination of critical and progressive ideas -- as well as new possibilities for manipulation, social control, and the promotion of conservative positions. But participation in these new public spheres -- computer bulletin boards and discussion groups, talk radio and television, and the emerging sphere of what I call cyberspace democracy require critical intellectuals to gain new technical skills and to master new technologies.

I am thus suggesting that intellectuals in the present moment must master new technologies and that there is thus a more intimate relationship between intellectuals and technology than in previous social configurations. To be an intellectual today involves use of the most advanced forces of production to develop and circulate ideas, to do research and involve oneself in political debate and discussion, and to intervene in the new public spheres produced by broadcasting and computing technologies. New public intellectuals should attempt to develop strategies that will use these technologies to attack domination and to promote education, democracy, and political struggle -- or whatever goals are normatively posited as desirable to attain. There is thus an intrinsic connection in this argument between the fate of intellectuals and the forces of production which, as always, can be used for conservative or progressive ends.

Toward a Radical Democratic Techno-Politics

A revitalization of democracy in capitalist societies will therefore require a democratic media politics. Such a politics could involve a two-fold strategy of, first, attempting to democratize existing media to make them more responsive to the "public interest, convenience, and necessity." In the United States, the media watchdog group FAIR (Fairness and Accuracy in Media) has developed this alternative, criticizing mainstream media for failing to assume their democratic and journalistic responsibilities and calling for an expansion of voices and ideas within the media system. Another strategy involves the development of oppositional media, alternatives to the mainstream, developed outside of the established media

system. On my view, both strategies are necessary for the development of a democratic media politics and it is a mistake to pursue one at the neglect of the other.

Developing a radical democratic media politics thus involves continued relentless criticism of the existing media system, attempts to democratize and reform it, and the production of alternative progressive media. On my account, democratizing our media system will require expansion of the alternative press, a revitalization of public television, an increased role for public access television, the eventual development of a public satellite system, democratized computer networks, and oppositional cultural politics within every sphere of culture, ranging from music to visual to print culture.

Community and Low-Power Radio

Community radio has long provided an alternative set of voices to the highly commercialized mainstream radio. Citizen-band (CB) and short-wave radio allows individuals to directly communicate with each other. Many countries have also experimented with low-power community radio, which enables groups to actually bring individuals out of their homes to public places to engage in discussion or communal activity. Low-power radio enables individuals to directly communicate with their neighbors through call-in telephone connections, or through discussions in nearby studios, and thus provide democratic and participatory institutions (see Box 3).

Low-power radio, however, is subject to quick suppression by the state, as happened in Japan which had an extensive low-power radio culture in play that was shut-down almost overnight when the state outlawed low-power broadcasting. In the U.S., there have been some low-power radio experiments, but the government too has cracked down on these local attempts to democratize radio. A democratic media politics should thus struggle for low-power radio and to increase the possibilities of direct communication through radio technology.

Ironically, despite the higher costs of television technology, there are probably more immediate possibilities for democratic alternative television than in radio. As mentioned, while low-power radio technologies are relatively inexpensive, they are easily suppressed by a state which opposes democratic and free-wheeling communication. Community radio has been curtailed by saturation of FM and AM frequencies and in most places there is simply not room for legal community radio stations. During the early 1990s in Austin, Texas, for instance, a vicious battle took place between the University of Texas and a local community-based co-op radio group for the remaining FM frequency band. Hence, it has been difficult to develop

new radio outlets for public communication with the previous limited spectrum allotment, although fiber-optic community cable system and the Internet also make possible a dramatic expansion of community and alternative road which could make possible Brecht's vision of a radio system with every individual a sender.

Public Access Television

Public access television has been for some decades now an established venue for alternative democratic communication. The rapid expansion of public access television in the 1970s in the U.S. provided new possibilities for progressive individuals and groups to produce video programming that cuts against the conservative programming which dominates mainstream television in the United States. Progressive access programming is now being cablecast regularly in such places as New York, Los Angeles, Boston, Chicago, Atlanta, Madison, Urbana, New Orleans, Austin, and perhaps as many as 2,000 other towns or regions of the country. Public access television, in most cases, provides free equipment and airtime to individuals and groups who want to make their own programming. Usually, one must take a course to actually use studio and editing equipment and a few systems lease the equipment and airtime, but, for the most part, where there are public access channels, the cable systems make them available for public use and they are usually managed by an independent body, answerable to the community, and often financed by the cable system.

When cable television began to be widely introduced in the early 1970s, the Federal Communications Commission mandated in 1972 that "beginning in 1972, new cable systems {and after 1977, all cable systems} in the 100 largest television markets be required to provide channels for government, for educational purposes, and most importantly, for public access." This mandate suggested that cable systems should make available three public access channels to be used for state and local government, education, and community public access use. "Public access" was construed to mean that the cable company should make available equipment and air time so that literally anybody could make noncommercial use of the access channel, and say and do anything that they wished on a first-come, first-served basis, subject only to obscenity and libel laws and prohibitions against advertising and pitches for money. Creating an access system required, in many cases, setting up a local organization to manage the access channels, though in other systems the cable company itself managed the access center.

In the beginning, however, few, if any, cable systems made as many as three channels available, but some systems began offering one or two access channels in the early to mid 1970s. The availability of access channels depended, for the most part, on the political clout of local governments and committed, and often unpaid,

local groups to convince the cable companies, almost all privately owned, to make available an access channel. Here in Austin, for example, a small group of video activists formed Austin Community Television in 1973 and began broadcasting with their own equipment through the cable system that year. Eventually, they received foundation and CentertainmentA government grants to support their activities, buy equipment, and pay regular employees salaries. A new cable contract signed in the early 1980s called for the cable company to provide $500,000 a year for access and after a difficult political struggle, which I shall mention later, were able to get at least $300,000-$400,000 a year to support Austin Community Television activities.

A 1979 Supreme Court decision, however, struck down the 1972 FCC ruling on the grounds that the FCC did not have the authority to mandate access, an authority which supposedly belongs to the U.S. Congress. Nonetheless, cable was expanding so rapidly and becoming such a high-growth competitive industry that city governments considering cable systems were besieged by companies making lucrative offers (20 to 80 channel cable systems) and were able to negotiate access channels and financial support for a public access system. Consequently, public access grew significantly during the early 1980s.

Where there are operative public access systems, individuals have promising, though not sufficiently explored, possibilities to produce and broadcast their own television programs. In Austin, Texas, for example, there have been weekly anti-nuclear programs, black and chicano series, gay programs, countercultural and anarchist programs, an atheist program, feminist and women's programs, labor programming, and a weekly progressive news magazine, Alternative Views, with which I am involved, that has produced over 470 hour-long programs from 1978 to the present on a wide variety of topics. We combine news reports from alternative sources with discussion, documentaries, and video-footage from alternative sources. Paper Tiger Television in New York combines critique of corporate media by media critics with imaginative sets, visuals, editing, and so on. A labor-oriented program, The Mill Hunk News, in Pittsburgh used to combine news reports of labor issues with documentary interviews with workers, music-videos, and other creative visuals, while Labor Beat in Chicago also uses documentary footage, music, drama, and collages of images, as well as interview and talking head formats, to present alternative information (see Box 4).

There have been some experiments with national progressive satellite networks, although they have suffered from inadequate funding and the failure of often conservative-owned cable systems to carry progressive programming. While public access television is still in a relatively early stage of development in the U.S. and Europe, it contains the promise of providing a different type of alternative television.

Despite obstacles to its use, public access provides the one institution in the commercial and state broadcasting systems that is at least potentially open to progressive intervention. It is self-defeating simply to dismiss broadcast media as tools of manipulation and to think that print media are the only tools of communication and political education open to progressives. Surveys have shown that people take more seriously individuals, groups, and politics that appear on TV; thus the use of television could help progressive movements and struggles gain legitimacy and force in the shifting and contradictory field of U.S. politics. The Right has been making effective use of new technologies and media of communication, and for progressives to remain aloof is a luxury that they can no longer afford.

Of course, many will claim that democratic politics involves face-to-face conversation, discussion, and producing consensus. But for intelligent debate and consensus to be reached, individuals must be informed and radio, television, and computers are important sources of information in the present age. Thus I am not proposing that media politics supplement all political activity and organizing, but am suggesting that a media politics should be developed to help activist groups and individuals obtain and disseminate information. In Austin, Texas, for instance, a group, Council for Public Media, has been working to inform activist groups how they can get information through the new computer technologies and how they can use the press, broadcast media, and other methods of communication to get their messages out. Activist groups are coming to see that media politics is a key element of political organization and struggle and thus more work on developing institutions and strategies for media politics is necessary.

Indeed, if progressive groups and movements are to produce a genuine alternative to the Right, they must increase their mass base and circulate their struggles to more segments of the population. After all, most people get their news and information from television, and the broadcast media arguably play a decisive role in defining political realities, shaping public opinion, and determining what is or what is not to be taken seriously. If progressives want to play a role in local and national political life, they must come to terms with the realities of electronic communication and computer technologies in order to develop strategies to make use of new technologies and possibilities for intervention.

The Democratization of Computers and Information

Other possibilities for expanding a system of democratic techno-politics reside in new computer and information technologies. It appears that there will be a merger of entertainment and information centers in the homes of the future with all possible print media information accessible by computer and all visual media entertainment and information resources available for home

computer/entertainment center access. But the threat--and likelihood if alternative concepts are not developed and disseminated--is that this information and entertainment material will be thoroughly commodified, available only to those who can afford to pay. Consequently, it is necessary to begin devising public alternatives to these private/corporate information and entertainment systems of the future.

Given the growing importance of computers and information in the new techno-capitalist society, producing new information networks and systems must therefore be an essential ingredient of a progressive media and information politics. The computerization of the world is well underway and possibilities are growing for new information networks and computer communication systems. To avoid corporate and government monopolization and control of information, new public information networks and centers are also necessary so that citizens of the future can have access to the information needed to intelligently participate in a democratic society. For computers, like broadcasting, can be used for or against democracy.

Indeed, computers are a potentially democratic technology. While broadcast communication tends to be one-way and unidirectional, computer communication is potentially bi-, or even omni-, directional. Individuals can use computers to do word-processing to communicate with other individuals, or can directly communicate with others via modems which use the telephone to link individuals with each other. Modems can tap into community bulletin boards, web sites, or computer conference programs, that make possible a new type of public communication and progressives should intervene in these information modes as well as participating in public debate and discussion. For instance, many computer bulletin boards and web sites have a political debate conference where individuals can type in their opinions and other individuals can read them and if they wish respond. This constitutes a new form of public dialogue and interaction.

Computer data bases and web sites provide essential sources of information and new technologies that tremendously facilitates information-searching and research. Mainstream data bases include Lexis/Nexis and Dialogue which contain a tremendous array of newspapers, magazines, journals, transcripts of TV programs, news conferences, congressional hearings, and newsletters, reproduced in full. Alternative data bases include Peacenet which has over 600 conferences on topics of ecology, war and peace, feminism, and hundreds of other topics. Here progressives put in alternative information and some of the conferences have lively debates. Between the mainstream and alternative computer data bases, individuals and groups can access a tremendous amount of information in a relatively short time.

I was able to research my book on the media and the Gulf war, for instance, because I was able to access information on various topics from a variety of sources

simply by punching in code words which enabled me to discern the conflicting media versions of the Gulf war and to put in question the version being promoted by the Bush administration and Pentagon. Eventually, the lies and disinformation promoted by the U.S. government in the war were thoroughly exposed by a variety of sources, accessible to computer data base searches. Corporations, government institutions, the major political parties, and other groups are taking advantage of these computer data bases and progressive must learn to access and use them to produce the information necessary to prevail in the public debates of the future.

But the politics of information in the future must struggle to see that alternative information is accessible in mainstream computer data bases, as well as alternative ones. Many data bases and information services omit leftist, feminist, environmentalist, and other alternative information sources from their listings, thus in effect shutting out radical alternatives in information sources, much as the broadcasting networks exclude dissident voices from broadcast communication. Progressive groups and alternative publications should struggle to make sure that their information sources and services are listed in data base bibliographies and source material.

Yet the proliferation of the World Wide Web enables independent and alternative groups and individuals to creat their own web sites, to make their information available to people through the globe, often free of charge. In the next section, I will give some examples of how computer techno-politics have deployed web sites, bulletin-boards, mailing lists, and email campaigns to promote a variety of political struggles. First, however, I want to conclude this section by noting that a synergy is emerging between the new sources of information, new media and technologies, and political organization and struggle. Print and broadcast media organs can obtain information from computers and disseminate it to the public. Political groups can obtain information from these sources and disseminate it back through print, broadcast, and computer technologies. Information critical of, say, transnational corporate policies can be disseminated through a multiplicity of sites, so political groups need to be aware of the potential for the transmission of information through a variety of media in the contemporary era.

Moreover, the Internet may be a vehicle for new forms of alternative radio, television, film, art, and every form of culture as well as information and print material. New multimedia technologies are already visible on web sites and Internet radio and television is now in its infancy. This would truly make possible Brecht's dream of a communications system where everyone was a sender and receiver and would greatly proliferate the range and diversity of voices and texts and would also no doubt give a new dimension of the concept of information/cultural overload.

Indeed, we must obviously gain a whole set of new literacies to use and deploy the new technologies (see Kellner, forthcoming). But in conclusion, I want to limit my focus on new technologies and techno-politics of the present day.

Techno-Politics and Political Struggle

Since new technologies are in any case dramatically transforming every sphere of life, the key challenge is how to theorize this great transformation and how to devise strategies to make productive use of the new technologies. Obviously, radical critique of dehumanizing, exploitative, and oppressive uses of new technologies in the workplace, schooling, public sphere, and everyday life are more necessary than ever, but so are strategies that use new technologies to rebuild our cities, schools, economy, and society. I want to focus, therefore, in the remainder of this section on how new technologies can be used for increasing democratization and empowering individuals.

Given the extent to which capital and its logic of commodification have colonized ever more areas of everyday life in recent years, it is somewhat astonishing that cyberspace is by and large decommodified for large numbers of people -- at least in the overdeveloped countries like the United States. In the U.S., government and educational institutions, and some businesses, provide free Internet access and in some cases free computers, or at least workplace access. With flat-rate monthly phone bills (which I know do not exist in much of the world), one can thus have access to a cornucopia of information and entertainment on the Internet for free, one of the few decommodified spaces in the ultracommodified world of technocapitalism.

Obviously, much of the world does not even have telephone service, much less computers, and there are vast inequalities in terms of who has access to computers and who participates in the technological revolution and cyberdemocracy today. Critics of new technologies and cyberspace repeat incessantly that it is by and large young, white, middle or upper class males who are the dominant players in the cyberspaces of the present, and while this is true, statistics and surveys indicate that many more women, people of color, seniors, and other minority categories are becoming increasingly active. Moreover, it appears that computers are becoming part of the standard household consumer package and will perhaps be as common as television sets by the beginning of the next century, and certainly more important for work, social life, and education than the TV set. Moreover, there are plans afoot to wire the entire world with satellites that would make the Internet and communication revolution accessible to people who do not now even have telephones, televisions, or even electricity.

However widespread and common -- or not -- computers and new technologies become, it is clear that they are of essential importance for labor, politics, education, and social life, and that people who want to participate in the public and cultural life of the future will need to have computer access and literacy. Moreover, although there is the threat and real danger that the computerization of society will increase the current inequalities and inequities in the configurations of class, race, and gender power, there is the possibility that a democratized and computerized public sphere might provide opportunities to overcome these inequities. I will accordingly address below some of the ways that oppressed and disempowered groups are using the new technologies to advance their interests and progressive political agendas. But first I want to dispose of another frequent criticism of the Internet and computer activism.

Critics of the Internet and cyberdemocracy frequently point to the military origins of the technology and its central role in the processes of dominant corporate and state powers. Yet it is amazing that the Internet for large numbers is decommodified and is becoming more and more decentralized, becoming open to more and more voices and groups. Thus, cyberdemocracy and the Internet should be seen as a site of struggle, as a contested terrain, and progressives should look to its possibilities for resistance and circulation of struggle. Dominant corporate and state powers, as well as conservative and rightist groups, have been making serious use of new technologies to advance their agendas and if progressives want to become players in the political battles of the future they must devise ways to use new technologies to advance a progressive agenda and the interests of the oppressed and forces of resistance and struggle.

There are by now copious examples of how the Internet and cyberdemocracy have been used in progressive political struggles. A large number of insurgent intellectuals are already making use of these new technologies and public spheres in their political projects. The peasants and guerilla armies struggling in Chiapas, Mexico from the beginning used computer data bases, guerrilla radio, and other forms of media to circulate their struggles and ideas. Every manifesto, text, and bulletin produced by the Zapatista Army of National Liberation who occupied land in the southern Mexican state of Chiapas in 1994 was immediately circulated through the world via computer networks. In January 1995, the Mexican government moved against the movement and computer networks were used to inform and mobilize individuals and groups throughout the world to support the Zapatistas struggles against repressive Mexican government action. There were many demonstrations in support of the rebels throughout the world, prominent journalists, human rights observers, and delegations travelled to Chiapas in solidarity and to report on the uprising, and the Mexican and U.S. governments were bombarded with messages

arguing for negotiations rather than repression; the Mexican government accordingly backed off their repression of the insurgents and as of this writing in August 1997, they have continued to negotiate with them.

Earlier, audiotapes were used to promote the revolution in Iran and to promote alternative information by political movements throughout the world (see Downing 1984). The Tianenaman Square democracy movement in China and various groups struggling against the remanents of Stalinism in the former communist bloc and Soviet Union used computer bulletin boards and networks, as well as a variety of forms of communications, to circulate their struggles. Opponents involved in anti-nafta struggles made extensive use of the new communication technology (see Brenner 1994 and Fredericks 1994). Such multinational networking and circulation of information failed to stop nafta, but created alliances useful for the struggles of the future. As Witheford (forthcoming) notes: "The anti-nafta coalitions, while mobilizing a depth of opposition entirely unexpected by capital, failed in their immediate objectives. But the transcontinental dialogues which emerged checked --though by no means eliminated--the chauvinist element in North American opposition to free trade. The movement created a powerful pedagogical crucible for cross-sectoral and cross-border organizing. And it opened pathways for future connections, including electronic ones, which were later effectively mobilized by the Zapatista uprising and in continuing initiatives against maquilladora exploitation."

Thus, using new technologies to link information and practice, to circulate struggles, is neither extraneous to political battles nor merely utopian. Even if material gains are not won, often the information circulated or alliances formed can be of use. For example, two British activists were sued by the fastfood chain McDonald's for distributing leaflets denouncing the corporation's low wages, advertising practices, involvement in deforestization, harvesting of animals, and promotion of junk food and an unhealthy diet. The activists counterattacked, organized a McLibel campaign, assembled a website with a tremendous amount of information criticizing the corporation, and assembled experts to testify and confirm their criticisms. The five-year civil trial, ending ambiguously in July 1997, created unprecedented bad publicity for McDonald's and was circulated throughout the world via Internet websites, mailing lists, and discussion groups. The McLibel group claims that their website was accessed over twelve million times and the Guardian reported that the site "claimed to be the most comprehensive source of information on a multinational corporation ever assembled" and was indeed one of the more successful anticorporate campaigns (February 22, 1996; visit http://www. envirolink.org/mcspotlight/home.html).

Many labor organizations are also beginning to make use of the new technologies. Mike Cooley (1987) has written of how computer systems can reskill rather than deskill workers, while Shosana Zuboff (1988) has discussed the ways in which high-tech can be used to "informate" workplaces rather than automate them, expanding workers knowledge and control over operations rather than reducing and eliminating it. The Clean Clothes Campaign, a movement started by Dutch women in 1990 in support of Filipino garment workers has supported strikes throughout the world, exposing exploitative working conditions (see their website at http://www.cleanclothes.org/1/index.html). In 1997, activists involved in Korean workers strikes and Merseyside dock strike in England used websites to gain international solidarity (for the latter see http://www.gn.apc.org/lbournet/docks/).

Most labor organizations, such as the North South Dignity of Labor group, note that computer networks are useful for coordinating and distributing information, but cannot replace print media that is more accessible to more of its members, face-to-face meetings, and traditional forms of political struggle. Thus, the trick is to articulate one's communications politics with actual political movements and struggles so that cyberstruggle is an arm of political battle rather than its replacement or substitute. The most efficacious Internet struggles have indeed intersected with real struggles ranging from campaigns to free political prisoners, to boycotts of corporate projects, to actual political struggles, as noted above.

Hence, to capital's globalization from above, cyberactivists have been attempting to carry out globalization from below, developing networks of solidarity and circulating struggle throughout the globe. To the capitalist international of transnational corporate globalization, a Fifth International of computer-mediated activism is emerging, to use Waterman's phrase (1992), that is qualitatively different from the party-based socialist and communist Internationals. Such networking links labor, feminist, ecological, peace, and other progressive groups providing the basis for a new politics of alliance and solidarity to overcome the limitations of postmodern identity politics (on the latter, see Best and Kellner 1991, 1997, and forthcoming).

Moreover, a series of struggles around gender and race are also mediated by new communications technologies. After the 1991 Clarence Thomas Hearings in the United States on his fitness to be Supreme Court Justice, Thomas's assault on claims of sexual harassment by Anita Hill and others, and the failure of the almost all male US Senate to disqualify the obviously unqualified Thomas, prompted women to use computer and other technologies to attack male privilege in the political system in the United States and to rally women to support women candidates. The result in

the 1992 election was the election of more women candidates than in any previous election and a general rejection of conservative rule.

Many feminists have now established websites, mailing lists, and other forms of cybercommunication to circulate their struggles. Likewise, African-American insurgent intellectuals have made use of broadcast and computer technologies to advance their struggles. John Fiske (1994) has described some African-American radio projects in the "techostruggles" of the present age and the central role of the media in recent struggles around race and gender. African-American "knowledge warriors" are using radio, computer networks, and other media to circulate their ideas and counter-knowledge on a variety of issues, contesting the mainstream and offering alternative views and politics. Likewise, activists in communities of color -- like Oakland, Harlem, and Los Angeles -- are setting up community computer and media centers to teach the skills necessary to survive the onslaught of the mediazation of culture and computerization of society to people in their communities.

Obviously, rightwing and reactionary groups can and have used the Internet to promote their political agendas. In a short time, one can easily access an exotic witch's brew of ultraright websites maintained by the Ku Klux Klan, myriad neo-Nazi groups including Aryan Nations and various Patriot militia groups. Internet discussion lists also promote these views and the ultraright is extremely active on many computer forums, as well as their radio programs and stations, public access television programs, fax campaigns, video and even rock music production. These groups are hardly harmless, having promoted terrorism of various sorts ranging from church burnings to the bombings of public buildings. Adopting quasi-Leninist discourse and tactics for ultraright causes, these groups have been successful in recruiting working class members devastated by the developments of global capitalism which have resulted in widespread unemployment for traditional forms of industrial, agricultural, and unskilled labor.

The Internet is thus a contested terrain, used by Left, Right, and Center to promote their own agendas and interests. The political battles of the future may well be fought in the streets, factories, parliaments, and other sites of past struggle, but all political struggle is already mediated by media, computer, and information technologies and will increasingly be so in the future. Those interested in the politics and culture of the future should therefore be clear on the important role of the new public spheres and intervene accordingly.

पंकज पराशर

बुद्धिजीवी, लोक वृत्त और टेक्नो पॉलिटिक्स



बौद्धिक जगत में इन दिनों बुद्धिजीवियों का वर्गीकरण भी विवाद का विषय बनता जा रहा है। जिगमेंट बोमन बुद्धिजीवियों को समाज की एक ऐसी इकाई के रूप में देखते हैं जो सामाजिक संस्थाओं की सेवा करने के लिए वैश्विक मूल्यों का विधेयन करते हैं। इस वर्ग के बुद्धिजीवियों के बारे में ऐसा माना जाता है कि ये बुद्धिजीवी अपनी योग्यता के आधार पर आम जनमानस के लिए मानवाकृतियों, लोक में घटित घटनाओं आदि की बेहतर व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। अमेरिकी बौद्धिक जगत में इन दिनों बुद्धिजीवियों की भूमिका को लेकर जो गरमा-गरम बहस छिड़ी हुई है उनमें से एक धड़े का मानना है कि फिलवक्त जो सामाजिक और वैश्विक हालात हैं उसमें बुद्धिजीवियों की स्थिति में आधुनिक बुद्धिजीवियों से लेकर उत्तर आधुनिक बुद्धिजीवियों तक में बदलाव आया है। दिलचस्प यह है कि पश्चिम के बुद्धिजीवियों में जैसे ही यह बदलाव आया उसका त्वरित असर हिंदी के उन उत्तर-आधुनिक बुद्धिजीवियों पर भी पड़ा, जो कुछ साल पहले तक उत्तर-आधुनिकता के भारतीय प्रवक्ता होने का दावा करते नहीं अघाते थे। जहाँ एक ओर आधुनिक बुद्धिजीवी वैश्विक मूल्यों के कार्यकारी इकाई के तौर पर नई आधुनिक समाज-व्यवस्था का विधेयन करते हैं वहीं दूसरी ओर इस प्रकार सामाजिक जीवन में बुद्धिजीवियों की भूमिका के राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के सिद्धांत का भी प्रतिपादन करते हैं।

नोम चोम्स्की के बाद की पीढ़ी में वामपंथी रुझान के कवियों/विचारकों और बुद्धिजीवियों की संख्या में निरंतर बढ़ोत्तरी जारी है। बुश प्रशासन अपनी तमाम नीतियों को लेकर पनप रहे असंतोष और मुखर होते प्रतिरोधी स्वर को लेकर भी हैरान-परेशान है। गौरतलब है कि 2003 में इराक हमले की पीठिका बनते समय भी वहां के बुद्धिजीवियों ने बुश प्रशासन की आलोचना की थी और आज आम जनता वहाँ से अमेरिकी सैनिकों की अविलंब वापसी की मांग कर रही है। मगर राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू. बुश के सिपहसालारों ने इन विरोधों की न तब परवाह की और न अब ऐसा लगता है कि उन पर कोई खास असर पड़ा है। अमेरिका स्थित कोलंबिया यूनिवर्सिटी में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर डगलस कैलनर ने कुछ वर्ष पूर्व, 2005 के आखिर में छपी अपनी किताब 'मीडिया स्पेक्टैकल्स एंड द क्राइसिस ऑफ डेमोक्रेसी' में इन मुद्दे पर जोरदार बहस की है कि इन दिनों मीडिया में जिन मुद्दों को जनहित के नाम पर उठाया जा रहा है वह असल में जनहित के वास्तविक मुद्दों से लोगों का ध्यान हटाने की एक शातिर चाल है। 9/11 के बाद मीडिया ने जिस तरह से अपना चेहरा और चाल दोनों को बदला है - कैलनर खास तौर पर इससे चिंतित होते हैं और बुद्धिजीवियों के बीच खास-

खास बिन्दुओं पर चिंतन का आह्वान करते हैं। इसी तरह 'द वार फॉर द व्हाइट हाउस' किताब में वे अमेरिकी विदेश, रक्षा और आर्थिक नीतियों की गंभीरता से नये-नये तथ्यों की रोशनी में न सिर्फ आलोचना करते हैं बल्कि खासी मज़म्मत भी करते हैं।

अभी हाल ही में छपी वाशिंगटन डी.सी. के बाशिंदे मिखाइल मैकडोनाल्ड की 'द अमेरिकन इंटरेस्ट' नामक छपी किताब में खास तौर पर अमरीकी हितों और वैश्विक परिदृश्य की पड़ताल की गई है। उन्होंने एक और बेहद दिलचस्प किताब 'द स्ट्रेंजर इन क्राउफोर्ड' में जार्ज बुश और कालजयी फ्रेंच उपन्यासकार अल्बेयर कामू के बीच तुलना करते हुए एक किताब ही लिख मारी है। बहरहाल, असली मुद्दा यह है कि मीडिया की बदली प्राथमिकता और चाल की बेहतर समीक्षा प्रस्तुत करते हुए डगलस कैलनर ने 'टेक्नो पॉलिटिक्स' जैसी शब्दावली के सहारे बुद्धिजीवियों की भूमिका और नई-नई आने वाली चुनौतियों को रेखांकित किया है। बुद्धिजीवियों को दो वर्गों में वर्गीकृत करते हुए कैलनर कार्यकारी बुद्धिजीवी (फंक्शनल इंटेलेक्चुअल) के बारे में कहते हैं, ये स्थापित सामाजिक मूल्यों का उत्पादन और विधेयन करते हैं। जबकि इसके ठीक विपरीत विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी (क्रिटिकल-अपोजीशनल इंटेलेक्चुअल) स्थापित सामाजिक व्यवस्था का विरोध करते हैं। कभी-कभी विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी समाज में मौजूद मूल्यों के खिलाफ ही अपनी आवाज बुलंद करते हैं और ऐसा मानकर चलते हैं कि इन मूल्यों का समाज में दबदबा बढ़ रहा है। मसलन कानून, न्याय, सत्य और अधिकार आदि। ऐसे बुद्धिजीवी कई बार और भी गंभीर मुद्दों का विरोध करते हैं - जैसे लोकतंत्र, समाजवाद, अश्वेत लोग और स्त्रियों की समानता आदि।

कार्यकारी बुद्धिजीवी पहले रूढ़ और काफी हद तक आदर्शवादी थे, जबकि आज उन वर्गों और तकनीकविदों के हितों के संरक्षक बने हुए हैं जो परिणामों तक पहुँचने के लिए समर्थ साधनों का इस्तेमाल करते हैं। ये बुद्धिजीवी अपनी क्षमताओं को विभिन्न क्षेत्रों, जैसे दवा, भौतिक विज्ञान और अतीत में मौजूद तकनीकी ज्ञान को बढ़ाने के लिए करते हैं। बिना नतीजे की ओर उँगली उठाये और किसी चीज की परवाह किये बगैर वे जिन मूल्यों की स्थापना और वापसी के लिए प्रयत्नशील रहते हैं - उसकी उपयोगिता और अनुपयोगिता पर आज विमर्श करना बहुत आवश्यक है।

कार्यकारी बुद्धिजीवी समाज को बेहतर बनाने (अपने तरीके से) के लिए तकनीकी जानकारियों में दक्षता हासिल करते हैं, वहीं विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी आलोचक सामाजिक बेहतरी के लिए संघर्षरत हैं। देश-विदेश में ऐसे बुद्धिजीवियों की एक लंबी फेहरिस्त है जिन्होंने आंदोलनों में न सिर्फ शिरकत की, बल्कि ता-उम्र के लिए उससे जुड़ ही गए। तेलुगू में वरवर राव, अंग्रेजी में अरुंधति राय, बांग्ला में महाश्वेता देवी आदि लेखकों-बुद्धिजीवियों को भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी परंपरागत तौर पर अपने ज्ञान और लेखन का प्रयोग अन्याय, शक्ति के दुरुपयोग, सत्य के लिए संघर्ष और अन्य वैश्विक मूल्यों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए करते हैं। ज्याँ पॉल सार्त्र के शब्दों में कहें तो, ''विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का कार्यक्षेत्र आम जनता तक सीमित है।'' सार्त्र के इस कथन के आधार पर एक विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का काम समाज की विभिन्न कुरीतियों का विश्लेषण करना तथा उनको और अधिक मुखरता प्रदान करना है। यह बुद्धिजीवी के शाब्दिक हथियार हैं जिनके जरिये उन्हें समाज में कहीं भी हो रहे अन्याय का विरोध करना है। हेबरमास (1989) के कथन की रोशनी में अगर देखें तो ''आधुनिक समय में विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का कार्यक्षेत्र आम जनता से जुड़े मुद्दे, राजनीतिक वाद-विवाद और विभिन्न किताबों, पत्र-पत्रिकाओं में छपी चीजों पर लिखना और विमर्श करना है।'' हालांकि सभी विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी वैचारिक रूप से प्रगतिशील नहीं हैं, बावजूद इसके समाज के आधुनिक होने से बुद्धिजीवियों की भौतिक और मानसिक दशाओं में तब्दीलियाँ आई हैं। इन दिनों बुद्धिजीवी वे लोग हैं जो नये विचारों और नये

संस्कारों को पैदा करने में माहिर होते हैं। इनमें से भी कुछ बुद्धिजीवी वर्तमान समाज का समर्थन करते हैं तो कुछ उसका विरोध करते हैं। शायद इन वजहों से भी बुद्धिजीवी, कार्यकारी और विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी के रूप में बँट गए। कार्यकारी बुद्धिजीवी जहाँ एक तरफ समाज की सेवा तकनीकी जानकारियों से करते हैं वहीं नये आदर्श पैदा करके वर्ग, रंग और लिंग को वैधता प्रदान करते हैं। कहना न होगा कि अपने देश में भी सांप्रदायिक शक्तियों के सत्तासीन होते ही ऐसे-ऐसे तुर्रम खाँ, 'बुद्धिजीवी' का बिल्ला लगाये हुए कभी 'वाजपेयी क्लब' बना रहे थे, तो कभी उनकी कविताओं को नये-नये 'रागों' में गाकर सत्ता की आराधना में तन्मयता दिखा रहे थे – अभूतपूर्व समाजवादियों के समर्थन पर टिकी भाजपा राज के समय।

विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी अन्यायी और शोषकों के खिलाफ आवाज बुलंद करते हैं। जबकि विरोधी खेमे के परंपरागत बुद्धिजीवी उत्तर आधुनिक सिद्धांतों द्वारा पैदा की गई चुनौतियों के साथ-साथ नई तकनीकों द्वारा तलाशी गई लोकतांत्रिक बहसों की संभावनाओं पर चर्चा करना मुफीद समझते हैं। यह सारी बातें विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी और उनकी भूमिका को ठीक से पुनर्परिभाषित करने की माँग करता है।

लोकक्षेत्र (पब्लिक स्फीयर) और बुद्धिजीवी

अगर मूल परिभाषा पर नजर दौड़ाएं तो लोकतंत्र मूलत: सत्ता के विकेन्द्रीकरण के साथ-साथ सरकारी मामलों में जनता की भागीदारी का नाम है। पुनर्जागरण और 18 वीं शताब्दी की राजनीतिक क्रांति के काल में एक ऐसा लोकक्षेत्र उभरकर सामने आया जहाँ आम आदमी अपने से जुड़े मुद्दों पर बहसें कर सकता था। दिलचस्प यह है कि उस काल में सरकार की आलोचना खास तौर पर आम जनता तक पहुँचाई जाती थी। खुद को अभिव्यक्त करने का साधन बना अखबार और पत्र-पत्रिकाएं। उस वक्त तत्कालीन प्रेस की आजादी आम जन को काफी कुछ सही रूप से चीजों को जानने-समझने का रास्ता फराहम कराती थी। वैचारिक आदान-प्रदान के लिए लोग कॉफी हाउस, पान की दुकान, नाई की दुकान आदि जगहों पर बैठा करते थे और वहीं विभिन्न मुद्दों पर चर्चाएं छिड़ जाती थीं। दुखद यह है कि बूर्ज्वा समाज के टूटने के बाद तमाम लोगों ने अपनी-अपनी पार्टियाँ बना लीं, संस्थाएं बना लीं और विचारधाराएं विकसित कर लीं। बकौल डगलस कैलनर, "आम जनता को रिझाने के लिए विभिन्न पार्टी और संस्था के लोग लिखने लगे और खुद को खुद के ही द्वारा बुद्धिजीवी का दर्जा दे दिया। देखते-देखते शोषित वर्गों ने भी अपने बुद्धिजीवी पैदा कर लिए। हालांकि ये बुद्धिजीवी विद्रोही विचारधारा के थे और शोषकों के मुकाबले शोषितों के बुद्धिजीवियों में खास बात यह थी, वे समाज के सारे तबके का प्रतिनिधित्व करते थे।" ध्यान रहे कि मेरी वोलेस्टोनक्राफ्ट जैसी महिलाओं ने महिला अधिकारों के लिए आवाज बुलंद की थी। शोषित वर्ग के विद्रोही विचारधारा वाले इन बुद्धिजीवियों ने दमन और उनके कारणों के खिलाफ तो आवाज बुलंद की ही साथ ही इसके हल के लिए इनके समाधानों को सिद्धांत से उठाकर वास्तविकता के धरातल पर प्रयोग करने की बात कही। इसलिए 19 वीं शताब्दी में कर्मचारी वर्ग के लोगों ने शोषकों के खिलाफ अपना एक अलग ही लोकक्षेत्र विकसित किया। यूनियन हॉलों, दफ्तरों, सार्वजनिक स्थानों में इनकी सभाएं, चर्चाएं होने लगीं। इसी दौर में बकौल जुरगेन हेबरमास, "अमेरिका और यूरोप में पनप रहे लोकतंत्र और श्रमिक आंदोलनों ने एक वैकल्पिक प्रेस को जन्म दिया। इसके साथ ही हड़ताल और बैठकों जैसी चीज ने शोषक-विरोधी लोकक्षेत्र को एक नया मंच प्रदान किया।"

आधुनिक समाज के बुद्धिजीवियों में विरोधाभासी रूप से सामाजिक कार्यों को लेकर हमेशा एक मतभेद बना रहा। पारंपरिक रूप से विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों जैसे टॉमस पेन, मेरी वोलेस्टोनक्राफ्ट और बाद में मार्क्स, ह्यूगो, सार्त्र और मार्क्वेज जैसे लोगों ने पुनर्जागरण के दरम्यान अन्याय और शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। इसके बावजूद संकीर्ण विचारों के बुद्धिजीवियों ने पुनर्जागरण और

फ्रांसीसी क्रांति की कामयाबियों पर हमला करते हुए कुछ इस तरह का इजहार-ए-खयाल किया जिसके तहत वर्ग, लिंग और रंग के नाम पर दमन और उत्पीड़न को जायज ठहराया गया।

इन बुद्धिजीवियों के विरोध में मिशेल फूको ने शिकायत की थी, ''सार्त्र ने एक आदर्शवादी नमूना प्रस्तुत किया है, जो बुद्धिजीवियों को वैश्विक मूल्यों, मसलन, सत्य, अहिंसा, आजादी और मानवता आदि के लिए लड़ने की सलाह देता है।'' फूको ने इसके विरोध में विशेष बुद्धिजीवी का प्रस्ताव किया जो बिलकुल तटस्थ होकर शोषितों-उत्पीड़ितों के सवालों से जुड़े खास मुद्दों के लिए अपनी आवाज बुलंद करे। फूको का यह विचार उत्तर-आधुनिक राजनीति में प्रासंगिक हो गया और राजनीति को पार्टी की राजनीति से हटाकर सामाजिक आंदोलनों की तरफ मोड़ दिया गया। उत्तर-आधुनिक राजनीति के लिए शक्ति का विकेन्द्रीकरण जरूरी है।

डगलस कैलनर कहते हैं, ''मैं यह मानता हूँ कि आलोचक बुद्धिजीवी या कहें विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों के कुछ विचार उपयोगी हैं। आम बुद्धिजीवी वैश्विक मूल्यों के हनन के खिलाफ आवाज उठाते हैं, जबकि आम लोकतांत्रिक बुद्धिजीवी दूसरों के लिए आवाज उठाने के बदले व्यक्तिगत या वैश्विक मुद्दों से जुड़े खास मुद्दों पर ही अपनी राय जाहिर करते हैं।'' नतीजा यह होता है कि वर्तमान परिवेश में लोकतांत्रिक बुद्धिजीवी कहलाने के लिए वैश्विक बुद्धिजीवी के पूरे गुण होने की आवश्यकता नहीं है। कहना न होगा कि बुद्धिजीवियों को व्यक्तिगत इच्छाओं/अनिच्छाओं से ऊपर उठकर सोचना चाहिए। बिना किसी पक्षपात के अपनी बात कहनी चाहिए - तमाम पूर्वग्रहों को छोड़कर। इसके साथ-साथ अपनी सीमाएं जानते हुए खुद को दूसरे की जगह रखकर सोचना चाहिए।

नई तकनीक, लोकक्षेत्र और नये बुद्धिजीवी

कुछ मामलों में बुद्धिजीवियों और तकनीक में कोई खास संबंध नहीं होता। आज के उच्च तकनीक से संपन्न समाज में कंप्यूटर और त्वरित मीडिया युग में प्रतिबद्ध आम बुद्धिजीवियों को परिभाषित करने की जरूरत है। बीसवीं सदी की शुरुआत में जॉन डिवे ने 'थॉट न्यूज' नामक एक ऐसे अख़बार की परिकल्पना की थी जिसमें विज्ञान की नवीनतम खोजों और विचारों को जगह दी जाए। इसके अलावा बर्टोल्ट ब्रेख़्त और वाल्टर बेंजामिन ने सिनेमा और रेडियो के क्रांतिकारी परिणामों को देखा था और दूसरे बुद्धिजीवियों से यह अपील की, कि वे इन साधनों का इस्तेमाल समाज को और अधिक लोकतांत्रिक बनाने और उसे बदलने में करें। ज्याँ पॉल सार्त्र ने भी रेडियो धारावाहिकों का अध्ययन किया और इस बात पर बल दिया कि प्रतिबद्ध लेखकों को भी रेडियो और सिनेमा का इस्तेमाल करना चाहिए। इससे भागना ठीक नहीं है।

पहले रेडियो, टेलीविजन और दूसरी इलैक्ट्रानिक मीडिया पर तमाम तरह की बंदिशें आयद थीं। रेडियो और टेलीविजन का विवाद, बहसें, जानकारियां आदि एक नये लोक वृत्त का निर्माण करते दिखाई दे रहे हैं। डगलस कैलनर जोर देकर कहते हैं कि, ''बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वे इन माध्यमों का उपयोग करके जन मामलों में सीधे जनता की भागीदारियों को सुनिश्चित करें और एक नयी संचार राजनीति और मीडिया-परियोजनाओं का निर्माण करें।''

यह तथ्य अब धीरे-धीरे असलियत को काफी हद तक स्पष्ट करता जा रहा है कि आज की राजनीति में यदि कोई बुद्धिजीवी लोकवृत्त (पब्लिक स्फीयर) में अपनी पैठ बनाना चाहता है, समाज को नई दिशा देना चाहता है - तो नई तकनीकों का उन्हें अधिक से अधिक इस्तेमाल करना चाहिए। पहले रेडियो और टेलीविजन ने एक लोकक्षेत्र का या कहें लोकवृत्त का निर्माण किया था लेकिन अब कंप्यूटर और इंटरनेट ने अपने अलग लोकवृत्त बनाये हैं। जानकारियां, बहसें, लोकतांत्रिक सहभागिता और विचारों को पहुँचाने के

लिए नई संभावनाओं को भी पैदा किया है। ...और यह कहना शायद गैर-जरूरी है कि इस्तेमाल में लाने से पूर्व इन तकनीकों का बारीकी से अध्ययन जरूरी है।

आज के समय में बुद्धिजीवी होने का मतलब है नई तकनीकों का उपयोग करके विचारों के क्षेत्र में नई और ऊर्जस्वी विचारों की खोज, उसका संपूर्ण वितरण और इससे तैयार हुए लोकवृत्त में अपनी पूरी भागीदारी। डगलस कैलनर इस मुद्दे पर अपनी राय साफ-साफ जाहिर करते हैं, कुछ इस तरह, ''आज के नये बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वह अपनी नीतियां इस तरह से बनाएं कि शिक्षा, लोकतांत्रिक विकास के साथ ही अपनी नीतियों को बेहतर ढंग से प्रसारित करने के लिए नई तकनीक का बेहतर इस्तेमाल करें। भविष्य में जो वक्त आएगा उसमें बुद्धिजीवियों और नई तकनीक के बीच नाभिनालबद्ध रिश्ता बनाना अनिवार्य हो जाएगा।'' इसके बगैर नई तकनीक से भागने वाले लोग अपनी मेधा का सही इस्तेमाल कर ही नहीं पाएँगे और तब वे कैसा लोकवृत्त बनाएँगे और किस तरह के बुद्धिजीवी रह जाएंगे, यह मुद्दा बहसतलब है।

नव पूँजीवादी समाज में लोकतंत्र की मजबूती के लिए यह और भी आवश्यक है कि लोकतांत्रिक मीडिया राजनीति (डेमोक्रेटिक मीडिया पॉलिटिक्स) नई रणनीति के तहत की जाए। मीडिया की लोकतांत्रिक राजनीति में दो तरह की नीतियां होती हैं - पहली कार्यरत मीडिया को लोकतांत्रिक बनाना और दूसरी आम जनता की सुविधाओं, इच्छाओं और जरूरतों के प्रति मीडिया को जिम्मेवार बनाना।

मुख्य धारा की मीडिया के विकल्प के तौर पर एक विपक्षी मीडिया को तैयार करना भी आने वाली 'टैक्नो पॉलिटिक्स' का मुकाबला करने के लिए आवश्यक है। लोकतांत्रिक मीडिया राजनीति के लिए मुख्य धारा की पूँजीवादी मीडिया समर्थित नीतियों की तीखी आलोचना, उसमें सुधार और वैकल्पिक मीडिया का विकास, इसकी जरूरी शर्तें हैं। मीडिया को लोकतांत्रिक बनाने का प्रयास तभी संभव है जब एक वैकल्पिक प्रेस का निर्माण हो। आम जनता की पहुँच में टेलीविजन हो और एक सकारात्मक विपक्षी राजनीति के साथ-साथ ऐसी वैचारिक दृढ़ता से सम्पन्न नीतियां हों जो मुख्यधारा की मीडिया को प्रभावित करें। उसकी नीतियों की परत-दर-परत पड़ताल करके उपयुक्त भाषा-शैली और अंदाज में बेनकाब करने का बेहतर एजेंडा हो।

पिछले कुछ दशकों में टेलीविजन संचार माध्यम के एक बेहतर विकल्प के रूप में देखा जाने लगा है। 1970 में अमेरिका में हुए टेलीविजन के विकास में प्रगतिशील बुद्धिजीवियों के लिए नई संभावनाएं पैदा की थीं। उसने इस तरह के कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जो तत्कालीन संकीर्ण समाज की कठोर आलोचनाएं करता था - उन दिनों मुख्यधारा की मीडिया में इसकी भरमार थी। 1970 में जब टेलीविजनों की संख्या में इजाफा होने लगा तब वहाँ 'फेडरल कम्युनिकेशन कमीशन' का एक आदेश आया जिसके अंतर्गत 1972 के बाद के नए 'केबल सिस्टम' को कम-अज़-कम एक चैनल सरकार को शिक्षा और आम आदमी को नई जानकारियां मुहैया कराने के लिए देने होंगे। शुरुआती दौर में कुछ कंपनियों ने एक चैनल मुहैया कराई तो कुछेक ने दो या तीन।

कई लोग ऐसा मानते हैं कि लोकतांत्रिक राजनीति में आम सहमति बनाने के लिए आमने-सामने बैठकर बातचीत करना जरूरी है लेकिन एक चतुराई पूर्ण सहमति के लिए जनता का जागरूक और जानकार दोनों होना बेहद आवश्यक है। कहना न होगा कि वर्तमान संदर्भ में यह रेडियो और टेलीविजन के द्वारा ही मुमकिन है। यह जरूरी नहीं है कि मीडिया वर्तमान राजनीति की पूरक बने लेकिन मीडिया राजनीति को बढ़ावा अवश्य दिया जाना चाहिए ताकि इसके माध्यम से जागरूक और जानकार लोग सूचनाओं को

अधिक-से-अधिक लोगों तक प्रसारित कर सकें। अमेरिका के टेक्सास राज्य में 'काउंसिल फॉर पब्लिक मीडिया' अपने कार्यकर्ताओं और आमजनों को यह बताता है कि नई तकनीक और कम्प्यूटर वगैरह का इस्तेमाल अपने विचारों को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए कैसे करें? मीडिया राजनीति में ज़्यादा लोगों की भागीदारी, राजनैतिक संरचना की इसकी आवश्यकताओं को दर्शाती है। इसलिए आज नव पूँजीवाद और भूमंडलीकृत शोषण के हथियारों को मात देने के लिए मीडिया राजनीति को और अधिक विकसित करने की जरूरत है - साथ ही इसके लिए और अधिक मेहनत करने की जरूरत भी है।

अगर कोई विकासशील समूह या आंदोलन से जुड़े आंदोलनकर्मी वर्तमान राजनीतिक माहौल में 'अधिकारों' का कोई विकल्प तलाश करना चाहते हैं तो हर हाल में उन्हें अपनी बात अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचानी होगी और खुद से ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को जोड़ना होगा। आखिर ज्यादातर लोग समाचार और अन्य अनेक सूचनाएं टेलीविजन से ही प्राप्त करते हैं। प्रसार माध्यम ही आम जनता के विचारों को बनाने में एक अहम भूमिका निभाता है और यह तय करता है कि किस चीज को गंभीरता से लें और किसको गंभीरता से नहीं लें। अगर वैकल्पिक विकास के यूटोपिया से लैस लोग राष्ट्रीय राजनीति में अपनी पैठ बनाना चाहते हैं तो उन्हें नई तकनीकों को ध्यान में रखकर ही अपनी नीतियों का निर्माण करना पड़ेगा।

लोकतांत्रिक समाज के निर्माण और विकास में 'टैक्नो पॉलिटिक्स' को बढ़ावा देने के लिए कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी नई-नई संभावनाएं पैदा करता जा रहा है। ऐसा लगता है कि आने वाले समय में घर-घर में मनोरंजन और जानकारियों का भंडार होगा - मगर वे भारतीय नागरिक हर चीज की तरह इससे भी अंततः वंचित रह जाएंगे जो आज भी दो वक़्त की रोटी के लिए संघर्षरत हैं और कल भी संघर्ष से शायद नहीं उबर पाएंगे। यह सारा ताम-झाम अंततः इन मध्यवर्गीय नागरिकों को फायदा पहुँचाएगा जिन्हें मूलभूत आवश्यकताओं के लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है। दूसरी चिंता इसके साथ यह जुड़ी हुई है कि अगर वैकल्पिक विचारों वाले मीडिया का विकास नहीं हुआ तो इसका उपयोग वही कर पाएंगे जो आर्थिक रूप से बेहद मजबूत स्थितियों में होंगे। नतीजा यह होगा कि गरीब मुल्कों के लोग किसी भी तरह इसका लाभ नहीं उठा पाएंगे। नाइजीरिया, कांगो गणराज्य और दक्षिण अफ्रीकी मूल के लोगों की इस तक पहुंच हो ही नहीं सकेगी। भारत के 'हिंदी पट्टी' के लोग तो आज भी छोटी-से-छोटी जानकारियां नहीं पा सकते हैं। फलस्वरूप, इन निजी मनोरंजन माध्यमों का विकल्प ढूँढ़ना जरूरी होता जा रहा है।

आज के इस टैक्नो पूँजीवादी समाज में कंप्यूटर और प्रौद्योगिकी की बढ़ती महत्ता विकासशील मीडिया की जरूरत के रूप में उभरा है। पूरी दुनिया कंप्यूटरीकृत होने जा रही है और आने वाले वक्त में जिस देश के नागरिक की इस दुनिया तक पहुँच और दखल नहीं होगी वे हर तरीके से दुनिया में रहकर भी किसी और दुनिया के वासी में तब्दील होते चले जाएंगे। गरीब मुल्कों की सरकारें जिस तरीके से बहुराष्ट्रीय पूँजी के आकाओं और पूंजीवादी मीडिया के सेठों को अपने यहाँ बुलाकर मनचाहे तरीके से काम करने के लिए सारी सुविधाएं उपलब्ध करवा रही हैं उसके कारण भी जनता अपनी मूलभूत जरूरत की चिंताओं में ही गर्क है। उन्हें यह सोचने और जानने का मौका ही उपलब्ध नहीं करवाया जा रहा है कि हमारा आनेवाला वक्त कैसा होगा और हमारी सरकारें किस तरह की दुनिया बनाने वालों के साथ हैं, सहयोगी हैं? इसलिए निजी कंपनियों और सरकारों के एकाधिकार से बचने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि नये-नये जानकारी केन्द्रों की स्थापना की जाए ताकि लोकतांत्रिक समाज में अपनी सहभागिता को सुनिश्चित किया जा सके।

कंप्यूटर अपनी क्षमताओं के कारण अंततः एक लोकतांत्रिक तकनीक है, जहां प्रसारण के माध्यम मात्र 'वन वे ट्रैफिक' हैं वहीं कंप्यूटर और इंटरनेट द्विपक्षीय माध्यम है। कंप्यूटर, इंटरनेट, चैटिंग आदि का उपयोग आम जनता एक दूसरे से बातचीत करने के लिए कर सकती है। मोडेम और टेलीफोन लाइनों की

सहायता से तमाम लोग – जो इससे जुड़े हैं, जुड़ सकते हैं – वे लोग तमाम मुद्दों पर विमर्श कर सकते हैं। इस तरह यह एक नये संसार और प्रतिक्रियाओं को जन्म देता है। वर्तमान समय में जन सरोकारों से जुड़े लोगों के लिए यह और भी जरूरी हो जाता है कि वे ऐसे कार्यक्रमों से जुड़कर, इस दुनिया में प्रवेश करके गरीब मुल्कों की व्याख्या प्रस्तुत करें, जिससे उन दमित और शोषित तबकों तक भी इसका लाभ पहुंच सके – जो आज तक तो वंचित हैं ही और सरकार की जैसी नीतियाँ हैं, राजनीतिज्ञों की जो कार्य शैली और प्रतिबद्धताएं हैं उससे आगे भी दुनिया में हो रही हलचलों से वे वंचित रहेंगे। 'टैक्नो पॉलिटिक्स' में शामिल विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों पर ही अंततः यह जिम्मेदारी आयद होती है कि वे एक वास्तविक लोकवृत्त के निर्माण के लिए जन–जन तक सूचनाएं अपने–अपने तरीके से पहुँचाएं।

सहायक ग्रंथ

1. फ्रेडरिक जेमसन : ए क्रिटिकल रीडर, सं. डगलस कैलनर एंड सीन होमर, 2004
2. मीडिया स्पेक्टेकल्स एंड द क्राइसिस ऑफ डेमोक्रेसी : डगलस कैलनर, 2005
3. मीडिया कल्चर : कल्चरल स्टडीज, आइडेंटिटी एंड पॉलिटिक्स बिटवीन द मॉडर्न एंड द पोस्ट मॉडर्न : डगलस कैलनर (1995)
4. द रोल ऑफ पब्लिक इंटेलेक्चुअल : एलन लाइटमैन।
5. द स्ट्रक्चरल ट्रांसफॉरमेशन ऑफ द पब्लिक स्फीयर : एन इनइक्विटी इंटू ए कैटेगरी ऑफ बूर्ज्वाजी सोसाइटी, जुरगेन हेबरमास, 1991, अनुवाद : थॉमस बर्जर, एम.आई.टी. प्रेस।
6. मासेज, क्लासेज, एंड द पब्लिक स्फीयर : माइक हिल, वारेन मोन्टाग, वर्सो, 2001
7. पावर एंड पॉलिटिक्स इन ग्लोबलाइजेशन : द इंडिस्पेंसबल स्टेट : होवार्ड एच. लैन्टर, 2004
8. रूल ऑफ एक्सपर्ट्स : इजिप्ट, टैक्नो पॉलिटिक्स, मॉडर्निटी : टिमोथी मिथेल, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2002

पंकज पराशर प्रायः, महत्वपूर्ण किताबों को लेकर 'पहल' में लिख रहे हैं। नोम चोम्स्की के बाद पूंजीवादी दुनिया में वामपंथी रूझान बढ़ने के दृश्य पर वे विस्तृत काम कर रहे हैं। नोम चोम्स्की की ताज़ा किताब 'फेल्ड स्टेट्स' पर अगले अंक में संपादकीय टिप्पणी पाठक पढ़ सकेंगे।

सांझ होइत गाममे

भारतक नक्शापर
जकर कोनो टा जिक्र
कतहु देखार नहि होइत अछि
से एकटा कोनो गाम
आ ओहि गामक एकटा साँझमे हम
ठाढ़ छी चुपचाप
बहुत दिनपर घुरल
कोनो बटोही जकाँ

जे तकैत अछि अपन घर
घरक आगूमे रोपल सिंगरहार
आ सिंगरहारकेँ नहि देखि

घुरि अबैए बेर-बेर
हिया हारिकें
भ' जाइए ठाढ़
चुपचाप

चुपचाप ठाढ़ ओ बटोही
तकैत रहैए
ठकनबैत रहैए
सोचैत रहैए
किनसाइत ...
किनसाइत ...
किनसाइत ...

चिन्हबाक प्रक्रियामे
बेर-बेर असफल होइत ओ
बेर-बेर तकैए किछु परिचित निशान
बेर-बेर तकैए किछु पहिचान
अपन स्मृतिक दरिद्रतापर कानि
बैसि जाइत अछि थसथसाक'
चुपचाप कोनो ठाम

ओ तकैत अछि
अपन हृदयमे बसल गाम
गाममे अपन घर
घरक आगूमे रोपल सिंगरहार
ओ तकैत अछि बेर-बेर

मोन पड़ैत छैक
बेर-बेर पड़ैत छैक मोन
'ने ओ नगरी, ने ओ ठाम ...
फकड़ा गुनबैत ओ बुढ़िया

बुढ़ियाक तमाकुल माँगब
मोन पड़ैत छैक
एक-एक क' सबटा

मोन नहि पड़ैत छैक घर ?

घर नहि मोन पड़ैत अछि
वा घरे नहि मोन पाड़ैत अछि
घर ओ नहि चिन्हि पबैए
वा घरे ओकरा नहि चिन्हैए
घरसँ ओ गेल छल
कि घरे ओत'सँ गेल छल
ई एकटा भयंकर समस्या अछि उपस्थित

एहि मुन्हारि साँझमे
जे निरन्तर गाढ़ भेल जा रहल-ए
तेज आँचपर खौलैत दूध जकाँ
ओ ठाढ़ अछि
निरन्तर अस्पष्ट होइत जा रहल
साँझक गाछ तर
ओ ठाढ़ अछि
ठकमकाएल
साँझ क' घुरल सुग्गा जकाँ
घर कें तकैत

साँझक गाछमे
गाछक झाँखुड़ सबहक दोगमे
निरन्तर अस्पष्ट होइत गाम

आ गाममे ठाढ़ ओ
निरन्तर अस्पष्ट भेल जा रहल-ए
निरन्तर
बाढ़िमे आस्ते-आस्ते डुबैत
आ अंततः चक्कडुम होइत
घर जकाँ
ओ अस्पष्ट भेल जा रहल-ए
साँझ खन गाममे
गाममे साँझे खन
ओ विलीन भेल जा रहल-ए
आस्ते -आस्ते--
आस्ते -आस्ते--
आस्ते आस्ते--

□

नये इलाके में

इन नये बसते इलाकों में
जहाँ रोज बन रहे हैं नये नये मकान
मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ

धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बायें
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंग वाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंजिला

और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता

यहाँ रोज कुछ बन रहा है
रोज कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे वसन्त का गया पतझड़ को लौटा हूँ

जैसे बैशाख का गया भादों को लौटा हूँ

अब यही है उपाय कि हर दरवाजा खटखटाओ
और पूछो–
क्या यही है वो घर ?

समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देख कर

घरबाली आ बगिया। संगहि सड़क नाटक अछि : चिन्हियौ नेपाल, लेहुआयल आँचर, नै आब नै, ककर लाल, कोंटा सिंगार आदि।

द्वितीय : रूपम श्री (सहरसा)

सुश्री रूपम श्रीक जन्म सहरसामेँ भेलन्हि। अहाँ स्नातकमे पढ़ैत छी संगहि संगीतसँ सेहो प्रभाकर कऽ रहल छी। रंगमंचसँ लगाव अहाँकेँ सुजीक प्रयाससँ १९९५ सँ भेल। रूपम श्री विभिन्न संस्था संग रंगमंच कऽ रहल छथि। जाहिमे प्रमुख अछि इप्टा, पंच कोसी। हिनका द्वारा कएल गेल महत्वपूर्ण नाट्य प्रस्तुति अछि : मधुश्रावणी, कनियाँ पुतरा, पाँच पत्र। रूपम श्रीक प्रिय नाटककार छथि महेन्द्र मलंगिया आ प्रिय निर्देशक छथिन उत्पल झा। मैथिली रंगमंचमेँ काज क'र' मे नीक लगैत अछि। २००३ मे खगौल, पटनामे अहाँकेँ सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्रीसँ सम्मानित कएल गेल, तरंग महोत्सवमे उत्कृष्ठ नृत्यक लेल द्वितीय पुरस्कार राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा सिंहदेवी पाटीलसँ अहाँ ग्रहण केलहुँ।

तृतीय : कल्पना मिश्रा (दिल्ली)

सुश्री कल्पना मिश्राक जन्म मिथिलाक नागदह गाममे भेलन्हि। बच्चेसँ कल्पना जीक लगाव संगीतसँ भऽ गेलन्हि। अहाँ शास्त्रीय संगीतक प्रशिक्षण प्रयाग विद्यापीठ संगीत समिति, इलाहाबादसँ प्राप्त केलहुँ। अहाँक शिक्षा दिक्षा बेगूसरायमे भेल। पहिने हिनक झुकाव मैथिली संगीत दिस भेल, तत्पचात ई अभिनय दिस सेहो आकर्षित भेलीह। अहाँ दिल्ली स्थित मिथिलांगन संस्थासँ रंगकर्म कऽ रहल छी। मैथिलीक संग भोजपुरी, हिन्दीमे सेहो अहाँ लगातार अपन पहचान बनेबामे सफल भेलहुँ अछि। रंगमंचक संग अहाँ लगातार फिल्म, टेलीविजनक लेल काज कऽ रहल छी। कल्पना जी कतेको मैथिली नाट्य प्रस्तुतिमे अपन अभिनय प्रतिभा देखा चुकल छथि। जाहिमे प्रमुख अछि : जट जटिन, उगना हॉल्ट, सामा चकेबा आदि। हिनक इच्छा छनि जे महिला कलाकारक प्रति मिथिला समाजक नजरियामे बदलाव अएबाक चाही। कल्पना जीक प्रिय निर्देशक छथि संजय चौधरी आ प्रिय नाटककार महेन्द्र मलंगिया।

सूचना: पंकज पराशरकेँ डगलस केलनर आ अरुण कमलक रचनाक चोरिक पुष्टिक बाद (http://www.box.net/shared/७५xgdy३७dr)बैन कए विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनसँ निकालि देल गेल अछि।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP २२०.२२७.१६३.१०५, १६४.१००.८.३, २२०.२२७.१७४.२४३ उर्फ.....**पंकज पराशरकेँ बैन कए विदेह साहित्य आन्दोलनसँ। निकालल जा रहल अछि।**

सम्पूर्ण दस्तावेज मूल आ पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ , २२०.२२७.१७४.२४३ उर्फ.....क चोरुक्का *नीचाँक लिंकपर सेहो अछि।*

http://www.box.net/shared/७५xgdy३७dr

विदेहमे किछु अनोनिमस ई-मेल अएलाक बाद ओकर इन्क्वायरीक बाद चेतना समिति द्वारा पंकज पराशरकेँ देल सम्मानकेँ वापस लेबा लेल आ एहि लेखककेँ बैन करबा लेल ई हमर (चेतना समितिक आजीवन मेम्बरक हैसियतसँ) आधिकारिक अनुरोध अछि आ इन्क्वायरीक विस्तृत विविचन नीचा देल जा रहल अछि। कृपया चेतना समिति एहि विषयपर अपन आपात बैसकी करए आ उचित निर्णय लए से अनुरोध।- गजेन्द्र ठाकुर

इन्क्वायरीक विवरण:

पाठकक सूचनाक बाद ई पता चलल अछि (आ ओकर सत्यापन कएल गेल) जे एहि लेखकक ई एहि तरहक पहिल कृत्य नहि अछि। ई लेखक पहिने सेहो Douglas Kellner क Technopolitics क पंक्तिशः अनुवाद मूल लेखकक रूपमे नामसँ ज्ञानरंजनक हिन्दी पत्रिका "पहल"मे धोखासँ छपबओलक। तकर पता चललाक बाद "पहल"मे एहि लेखकक रचनाक प्रकाशन बन्द भऽ गेल। एहि सम्बन्धमे विस्तृत आलेख विदेहक अगला अंकक सम्पादकीयमे देल जाएत।

२. एहि सभ घटनाक बाद पंकज पराशरकेँ विदेहसँ बैन कएल जा रहल अछि। विदेह आर्काइवसँ "विलम्बित कइक युगमे निबद्ध" पोथीकेँ हटाओल जा रहल अछि। प्रकाशककेँ सेहो उचित पुलिसिया कार्यवाही (यदि आवश्यक हुअए तँ) आ आन कार्रवाही लेल एहि समस्त घटनाक्रमक सूचना दऽ देल गेल अछि। ३.पाठक डगलस केलनरसँ ई-मेल kellner@gseis.ucla.edu पर "पहल" पत्रिका वा तकर सम्पादक श्री ज्ञानरंजनसँ editor.pahal@gmail.com, edpahaljbp@yahoo.co.in वा info@deshkaal.com पर आ दैनिक जागरणसँ nishikant@jagran.com, sanjay@jagran.com पर सम्पर्क कए विस्तृत जानकारी लऽ सकैत छथि। डगलस केलनरक आर्टिकल गूगल सर्चपर technopolitics टाइप कए ताकि सकै छी आ पढ़ि सकै छी। पहल पत्रिकाक वेबसाइट www.deshkaal.com पर सेहो पहल पत्रिकाक पुरान अंक सभ आस्ते-आस्ते देबाक प्रारम्भ भेल अछि।

विस्तृत जानकारीक लेल सुधी पाठकगण अहाँक धन्यवाद। भविष्यमे सेहो एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि हुअए ताहि लेल अहाँक पारखी नजरिक आस आगाँ सेहो रहत। एहि तरहक कोनो घटनाक जानकारी हमर ई-पत्र ggajendra@gmail.com पर अवश्य पठाबी।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ.....

डगलस केलनरक नीचाँक आलेखकक पंकज पराशर द्वारा चोरि सिद्ध कएलक जे एक दशक पहिने एहि लेखक द्वारा अरुण कमलक चोरि सँ आइ

धरि हुनकामे कोनो तरहक परिवर्तन नहि आएल छन्हि। हँ, आब ओ पटना विश्वविद्यालयक प्रोफेसरक रचना चोरेबासँ आगाँ बढ़ि गेल छथि आ कैलिफोर्निया वि.वि.क प्रोफेसरक रचना चोराबए लागल छथि। एहि सन्दर्भमे हमरा एकटा खिस्सा मोन पड़ैत अछि। २०-२२ बरख पुरान सत्य कथा। दरभंगामे रहैत रही, छतपर हम आ हमर एकटा पिसियौत भाइ साँझमे ठाढ़ रही। सोझाँमे सरवनजीक घरक बाअड़ीमे खूब लताम फड़ल छलन्हि। हमर पिसियौत भाइ हुनका इशारा दऽ कहलखिन्ह जे दस टा लताम आनू। ओ बेचारे दसटा लताम तोड़लन्हि आ आबि रहल छलाह आकि रस्तामे हमसभ देखलहुँ जे एकटा छोट बच्चा संग हुनका किछु गप भेलन्हि आ ओ पाँचटा लताम ओहि बच्चाकेँ दऽ देलखिन्ह। जखन सरवन जी अएलाह तँ कहलन्हि जे ओ बच्चा हुनका भैया कहि सम्बोधित कएलकन्हि आ पाँचटा लताम मँगलकन्हि- से कोना नञि दितियैक- सरवनजीक कहब छलन्हि। आब पंकज पराशर प्रसंगमे की भेल से देखी। प्रदीप बिहारीजीक बेटा प्रणवकेँ पंकज पराशर नोम चोम्स्की आ डगलस केलनरक रचना दैत छथिन्ह आ तकर अनुवाद करबा लेल कहै छथिन्ह। बेचारा जान लगा कऽ अनुवाद कऽ दैत छन्हि, ई सोचि जे जिनका ओ चच्चा कहै छथि- जे क्रान्तिकारी विचारक छथि (मार्क्सवादी!!!) से कोनो नीक पत्रिकामे ई अनुवाद छपबा देथिन्ह। मुदा छह मासक बाद चच्चाजी कहै छथिन्ह जे नोम चोम्स्की बला रचना हेरा गेल आ डगलस केलनर बला रचनाक अनुवाद नञि नीक रहए से रिजेक्ट भऽ गेल। मुदा क्रान्तिकारी कवि (चोरुक्का सेहो विवरण नीचाँमे अछि) दुनू रचना पहल पत्रिकामे पठा दै छथि- पहल-८६ मे डगलस केलनर बला रचना छपितो छन्हि (आ से अनुवादक रूपमे नहि वरन् मूल लेखकक रूपमे) आ ओ बैन सेहो कऽ देल जाइ छथि। हमर सरवन जी एकटा बच्चा द्वारा भैया कहलापर पाँचटा लताम ओकरा दऽ दै छथिन्ह मुदा हमर पराशरजी भातिजोक पाँचटा लताम निर्लज्जतासँ छीनि लैत छथि।

आ हम हुनकर खोजबीन तखन करै छी जखन ओ विदेहंमे आइडेन्टिटी बदलि हमरा गारि पढ़ैत छथि- हुनकर रियल आइडेन्टीटी नाङट करै छी। फेर सभसँ गप करै छी आ पाठकक सहयोगसँ *आरम्भ*, *पहल* क पुरान अंक भेटि जाइत अछि जतए हिनकर कुकृत्य छन्हि।

डॉ. जेकील आ मिस्टर हाइडक कथा अंग्रेजी विषएमे स्कूलमे पढ़ने रही। एकटा वैज्ञानिक रहथि डॉ. जेकील हृदएसँ कलुषित। मोन करन्हि जे चोरि-उच्क्कागिरी करी। से एकटा द्रवक खोज कएलन्हि जकरा पीबि कऽ ओ मिस्टर हाइड बनि जाथि आ रातिमे चोरि-उच्क्कागिरी करथि। एक रातुक गप अछि जे मिस्टर हाइड ककरो हत्या कऽ भागि रहल रहथि मुदा भोर भऽ गेल रहै से लोक सभ हुनका खेहारए लगलन्हि। ओ डॉ.जेकीलक घरमे पैसि गेलाह (कारण डॉ.जेकील तँ ओ स्वयं छलाह) आ केबार भीतरसँ लगा लेलन्हि। लोक सभ चिन्तित जे डॉ. जेकीलकेँ ई बदमाश मारि देतन्हि से ओ सभ केबार पीटए लगलाह। मिस्टर हाइड द्रव पीअब शुरु केलन्हि मुदा ओहि दिन दवाइमे रिएक्शन

नहि भेलैक आ हुनकर रूप डॉ. जेकीलमे नहि बदलि सकलन्हि। आब एहि कथाक अन्तमे मिस्टर हाइड माथ नोचि रहल छथि जे हुनका अपन समस्त पापक प्रायश्चित मिस्टर हाइड बनि करए पड़तन्हि।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ..... हिनकर रियल आइडेन्टिटी हम नाङट करै छी आ ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड रहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

मैथिलमे ई एकटा तथ्य छै जे चुपचाप जे गारि सुनै अछि तकरा कहल जाइ छै जे ओ बड़ड नीक लोक छथि। मुदा समए आबि गेल अछि मिस्टर हाइड सभकेँ देखार करबाक आ ओकरा कठोर सजा देबाक। मुदा ई तँ मात्र प्रारम्भ अछि। मैथिलीमे बहुत गोटे छथि जे हिन्दीमे बैन भेल लेखककेँ पोसै छथि (मैथिली सेवाक लेल) जे जखन ककरो गारि पढ़बाक होए तँ ओ तकर प्रयोग कऽ सकथि।

एहि ब्लैकमेलरक डॉ. जेकील आ मिस्टर हाइड बला चरित्र मैथिल सर्जनाक विरोधमे मैथिल-जन पत्रिकामे एक दशक पहिने उजागर भऽ गेल छल मुदा लोक हिनका पोसैत रहल।

आरम्भमे सेहो ई एकटा चिट्ठी मैथिलीक सम्पादकक विरोधमे देलन्हि जे छपि गेल आ ओकर घृणित भाषाक कारण भाइ साहेब राजमोहन झाकेँ माफी माँगए पड़लन्हि आ फेर ई मिस्टर हाइड सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी मँगलन्हि।

एकटा आग्रह आ आह्वान: सुभेश कर्ण आ समस्त मैथिली-प्रेमी-गण- एहि मिस्टर हाइडक ब्लैकमेलिंग आ एब्युजक द्वारे अहाँ सभकेँ मैथिली छोड़ि कऽ जएबाक आवश्यकता नहि अछि, कारण पापक घैला भरि गेलाक बाद ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड रहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

जे.एन.यू.मे छात्र-छात्रा सभसँ पोस्टकार्ड पर साइन लऽ ओहिपर अपन रचना लेल प्रशंसा-पत्र पठबैत घुमैत अपस्याँत कथित गोल्ड मेडेलिस्ट(!!!) मिस्टर हाइडकेँ चिड़ैक खोता तोड़बाक सख शुरुहेसँ छन्हि। पहिल कथा गोष्ठीमे जखन ई सहरसामे सभसँ पुछने फिरै छथि जे साहित्यकार बनबासँ की-की सभ फाएदा छै तखन ई एकटा पाइ आ पुरस्कारक लेल अपस्याँत मैथिल युवा-पीढ़ीक प्रतिनिधित्व करै छथि, जे राजमोहन झा जीक शब्दमे मैथिलीसँ प्रेम नञि करैत अछि। ई मिस्टर हाइड सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी मँगलन्हि आ जखन ओ माफ कऽ देलखिन्ह तखन फेर हुनका गारि पढ़ब शुरु कऽ देलन्हि। हमरासँ लिखित मेल-माफी अस्वीकार भेलाक बाद मिस्टर हाइडक माथ नोचब स्वाभाविके। मिस्टर हाइड ककरो इनकम टैक्स, कस्टम वा सरकारी नोकरीमे देखै छथि, सुनै छथि तँ पाइक मारल जेकाँ हिनका मोनमे ब्लैकमेलिंग कुलुबुलाए लगै छन्हि, प्रायः आनन्द फिल्मक एक गोट कलाकार जेकाँ- जे एहने मिस्टर

हाइड लेल कहै अछि- जे ई डॉक्टर रहितए तँ किडनी बेचितए, से ओ जतए छथि ओतहु ब्लैकमेलिंगक धन्धा शुरू कैये देने छथि। मुदा चिड़ैक खोता उजाड़ैत-उजाड़ैत मधुमाखीक छत्ता उजाड़बाक गल्ती एहेन ब्लैकमेलर कैये दैत अछि। जे सरकारी नोकरी वा इन्कम-टैक्स, कस्टममे ई ब्लैकमेलर रहितए तँ देश जरूर बेचि दैतए।

जे कियो सूचनाक स्वतंत्रताक नाम पर, अन्तर्जालपर स्वतंत्रताक नामपर वा साहित्यिक समालोचनाक नामपर गारि पढ़ैत अछि तँ सर्वदा मोन राखू जे ई सभ स्वतंत्रता अहूँकेँ प्राप्त अछि। एहि घटनाक विषएमे अहाँसँ पत्रकार, न्यूजपेपर, पत्रिका आ हिन्दीक गणमान्य लेखकगण/ प्रोफेसर/ विश्वविद्यालय आदिकेँ एहि घटनासँ सूचित करेबाक अनुरोध अछि। विशेष जानकारी लेबाक आ देबाक लेल ggajendra@gmail.com पर सूचित करू।

कोना पकड़ाएल ई चोर:-स्टेप बाइ स्टेप:-

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
But this time he has not used his name as maithil, mithila aa subodhkant but as Pankaj Parashar pparasharjnu@gmail.com
Reply ०१/२५/२०१० at ०९:४८ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
The same blackmail letter has been sent by the blackmailer to my email address which has been spammed through ISP address २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ aa २२०.२२७.१७४.२४३.
Reply ०१/२५/२०१० at ०९:४५ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
pahal=- ८६, aarambh -२३ aa arunkamalak naye ilake me ka sambandhit prishtha pathebak lel dhanyavad pathakgan.
Reply ०१/२५/२०१० at ०८:१६ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
http://www.gseis.ucla.edu/courses/ed२५३a/newDK/intell.htm ehi link par douglas kellner ke lekhak anuvad pahal-८६ ke page १२५-१३१ par achhi-soochnak lel dhanyad pathakgan.
Reply ०१/२४/२०१० at ०८:१६ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
ehi ghatnakram me kono pathak lag je Arun Kamal jik kavita "Naye Ilake

Me" hoinh aa Aarambh (ank २३, maithili magazine editor Sh. Rajmohan Jha (March २०००) me prakashist maithili kavita "Sanjh Hoit Gam Me" te kripya ggajendra@gmail.com par soochit karathi- Dhanyavad.
Reply ०१/२४/२०१० at ०८:०२ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
ehi ghatnakram me bahut ras aar jankari aa dher ras samarthan debak lel dhanyavad pathakgan.
Reply ०१/२३/२०१० at ११:४० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
out of these three addresses of the spammer i.e. pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com the address pkjpp@yahoo.co.in, is fails verification test and addresses parasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com stands verified and confirmed.
Reply ०१/२१/२०१० at १०:०० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
the htpps host matches reliance communications and the corresponding email gamghar at gmail dot com and maithilaurmithila at gmail dot com is fake ids related with the actual spammers id i.e.pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com
Reply ०१/२१/२०१० at ०८:५० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
The office premise has been located, the blackmailer works in Dainik Jagran, the organisation being taken into confidence.
Reply ०१/२१/२०१० at ०६:१३ PM
१४

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
maithil, mithila aa subodhkant nam se abhadra aa blackmail karay bala blackmailer ke cheenhi lel gel achhi,ISP address २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ aa २२०.२२७.१७४.२४३ aa ban kayal ja rahal achhi, agan ohi organisation se seho sampark kayal jaayat jatay se ee email aayal achhi.
Reply ०१/१८/२०१० at ११:१९ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
comment moderation lagoo kayal ja rahal achhi
Reply ०१/१८/२०१० at ०९:२७ PM
from ISP २२०.२२७.१७४.२४३ of Dainik Jagran he abused many times earlier too to others. अविनाशकेँ सेहो २२०.२२७.१७४.२४३ आइ.एस.पी.सँ एहि प्रकारक ई-पत्र अबैत रहै मुदा ओ मामिला खतम कs देने रहथिन। ओ टिप्पणी सभ एतेक घृणित छैक जे एतए नहि देल जा रहल अछि।

पाठकक संदेश: एहि घटनाक्रमपर

kellner@ucla.edu" <kellner@ucla.edu
Dear Gajendra
thanks for the detective work. was there a response?
best regards,
Douglas Kellner
Philosophy of Education Chair
Social Sciences and Comparative Education
University of California-Los Angeles
Box 951521, 3022B Moore Hall
Los Angeles, CA 90095-1521

Fax 310 206 6293
Phone 310 825 0977
http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html

dear Gajendraji,
apnek mail milal. Pankajjik kritya janike bar dukh bhel. Ahi se maithilik nam kharab hoyat achhi. Apnek kadam ekdum uchit achhi.
Rajiv K Verma

dhanyvad. muda ehne lok sabjagah aadar pabait achi
shridharam

ओकरा सार्वजनिक नहि करबै।अहां कें सूचनार्थ पठेने छी जे पंकज पहिनेहो इ सब काज करैत रहय छलैए।
avinash

ठीक छै--_-सम्पादक।

Dear Gajendra g

You are doing very well in the field of collecting all the documents related to the Maithili. Videha. Com realy a adventureous collection. I will also find some time to learm the article published through the videha.

Now your detective style theft the sleeping of many of the so called literary personnel. Go a head jai Maithili jai Mithila

Sunil Mallick

President

MINAP, Janakpur

your efforts are commendable. Anysuch ghost writer or fake identity holder must be boycotted from literature at once Thanks.

shyamanand choudhary

Namaskar.

Chetna samitik sachiv ken mailak copy hastgat kara del achi.

Dr. Ramanand Jha' Raman'

गजेन्द्र जी ,

चेतना समिति हिनका सम्मानित कएलक अछि सेहो हमरा ज्ञात नहिं | यद्यपि हमहू चेतना क स्थाई सदस्य | जे हो. मुदा निंदास्पद घटना तं ई थिके तें दुखी कयलक | कतिपय नव मैथिल-प्रतिभाक आकलन-मूल्यानकनक हमर अपन स्नेग्रही स्वभाव, एहि दुर्घटनाक बाद तं आब चिंता मे ध' देलकय|

देखी,

हम अपने विस्मित भेलहुँ| बहुत दु:खद दृश्य | सृजन विरूद्ध साहित्यिक सन्दर्भ मे ई घटना आधुनिक मैथिलीक बहुत कुरूप प्रसंग क' क' स्मरण कैल जायत

सस्नेह,

गंगेश गुंजन.

PRIYA MAITHILJAN

APPAN BHASHA- SANSKAR-SANSKRITI KE ASMARAN KARU AA EHAN VIVADAASAPAD LEKANI B KARANI KE VIRAM DIYA. DHANYABAD.

SAPREM,

PK CHOUDHARY

Gajendra babu

pankaj puran chor achhi. Ham sab okar likhit ninda das sal pahine aarambh me kene rahi. Okra ban k kay ahan nik kayal. Chetna samiti ke

seho samman wapas lebak chahi aa okar ninda karbak chahi.
subhash Chandra yadav

प्रिय ठाकुरजी!
(माननीय संपादक)
"विदेह ई-पत्रिका" [मैथिली]
एखन धरिक उपलब्ध साक्ष्यक आधार पर हम अपनहिक संग जाएब पसिन्न करब।
शंभु कुमार सिंह
Sir I have sent the link of Parashar's duplicacy to several people along with Pranabh Bihari who had traslated that article. I had telephonic conversation with him also and he was quite upset over Parashar;s duplicay
Pranav is my junior and a good friend of mine. since you have referred Pranav who had traslated that article it is unfortunate that he was misused by Parashar. But i must congratulate you for exposing scam run by Parashar and his team. Parashar, though must not be blamed if he lifted the article of Nom Chomskey . Now i must doubt the artistic sensibility of Parashar who is now a pseudo-- intellectuals. I am amazed that how did he dare to publish the article of Nom Chomskey as his own. God bless him no more
In the past Pankaj Parasar was accused for lifting the senses and emotions from poems of doyens of Hindi and Maithili poets. What Pankaj did should be condemned. I regret for him.

These People are hellbent to bring down the literary discourse down to the gutter. Now you have been receiving mails like one. We are with you and i have forwarded your mails to Maithili speaking people all across the country .–

VIJAY DEO JHA
Dear Gajendraji,
I fully agree with you that we must fight against blatant cases of wrongful appropriation.
हां अपन मेल में लिखने छी जे विदेह आर्काइव से संबंधित लेखक'क सबटा रचना हटा लेल जायत। अहि से आर्काइव सं ई प्रसंग सेहो, एकर साक्ष्य सेहो मेटा जायत। हमर मत ई जा साक्ष्यब रहबाक चाही निक आ अधलाह दुनु तरहक काज'क। अहां अप्पसन कामेंट आ र्निणय सेहो आर्काइव मे जा के संबंधित रचना के पोस्टा-स्क्रिाप्टर के रुप मे भविष्या'क पाठक'क लेल सुरक्षित राखि सकैत छियन्हि।

ई दोहरेबाक बहुत औचित्यक नहि जे विदेह निक लागि रहल अछि आ अहांक परिश्रम एकदम देखा रहल अछि।
ईति,
सदन।

Thanx Gajendraji, for your immediate response. I must congratulate you for the work you have done to save the sanctity of the literature world as a whole.
I feel proud for the person like you who shows the courrage to bell the cat. If the so called writers like Parasharji are there to spoil the sea, on the other side it is very hopeful sight to have a person like you who is alert enough to take care of such filth & keep the sea clean.

Thanx for enlightening me on the subject.

Regards,
Bhalchandra Jha.

पंकज पराशरकेर एहन कार्य पर स्मरण अबैत अछि करीब बीस-पचीस साल पहिलुक घटना, जहिया आकाशवाणी दरभंगासँ म,म,डॉ, सर गंगानाथ झाक एकमात्र मैथिलीक कारुणिक पदकेँ एक गोट कवि द्वारा अपन कहि प्रसारित कए देल गेल छल, जे बादमे (सजग श्रोता द्वारा सूचना देलाक बाद) आजन्म बैन कए देल गेलाह । कहबाक तात्पर्य जे जँ हम मैथिल दरभैगा- मधुबनीमे गंगानाथ बाबूक पदकेँ अपन कहि सकैत छी तँ ई कोन बड़का गप । निश्चये एहन रचनाकारकेर सङ्ग कड़गर डेग उठाएब आवश्यक ।
ajit mishra

Dear Gajendrajee,
We should take strong step to prevent such intellectual cheats.
My support is always with you.
K N Jha
This seems to be a dangerous trend and we should also try and refrain from publishing anything from such authors. Regards,
Prof. Udaya Narayana Singh
प्रियवर ठाकुर जी,
मैथिल साहित्यकार आब साइबर क्राइम सेहो क रहल छथि, ई जानि अपार प्रसन्नता भेल |
पंकज पराशर के नकारात्मक बुद्धिक पूर्ण उपयोग करबाक लेल हम नोबेल प्राइज सा सम्मानित कराय चाहैत छी |
बुद्धिनाथ मिश्र

Sampadak Mahoday
Apne ehi prakarak durachar rokwak lel je prayash ka rahal chhee
ohi lel dhanyabad.Ehen blackmailer sa maithili ken bachayab aawashyak achhi
Sadar
SHIV KUMAR JHA

गजेन्द्र भाई,
नमस्कार ! मैथिली मे एहि तरहक काज लगातार भ' रहल अछि । किछु व्यक्ति एहि धंधा मे अग्रसर छथि । मैथिलीक सम्पादक लोकनिक अनभिज्ञताक फायदा कतेको अंग्रेजी पढ़निहार तथाकथित साहित्यकार लोकनि उठा रहल छथि। पंकज जीक पहल मे छपल लेख के हम सेहो पढ़ने हीं आ किछुए दिनक बाद हम नेट पर मूल लेखकक आलेख के सेहो पढ़लहु । हमरा त' आश्चर्य लागल छल जे पंकज जी आलेखक कम स कम शीर्षक त' बदलि लैतथि मुदा हुनका एतेक ज्ञान रहितनि तखन की छल।

एतबे नहि , हिनक बहुत रास कवितो अंग्रेजी साहित्य स' हेर-फेर कयल गेल अछि । खैर ! जे करथि ... । मुदा एहि बेर कहाबत ठीक होबाक चाही " सौ सोनार के त' एक लोहार के "। प्रकाशन मे जे भी कियो व्यक्ति गलती क' रहल छथि हुनका गंभीर क्रिमिनल बुझबाक चाही। धन्यवाद एहि लेल अहाँ के जे एतेक जोरदार तरीका स' एहि गप्प के उठैलहु।
अहाँक
प्रकाश चन्द्र ।
pankaj parashar vala prasang bar dukhad laagal
kamini

Gajendr jee,
maamailaa ke tool jatabe debainhi, sabhak oorjaa otabe svaahaa hetai.
हमर मनतब एतबे, जे एक बेर अहां देखार क देलहुं, आब छोडि देल जाओ. हिन्दीयो मे एहिना भ रहल छै. बेर बेर आ खराब भाषा मे लिखल मोन के दुखी करैत अछि. फेर लागैत अछि जे अहि मे समय कियैक नष्ट करी?
हिन्दुस्तान मे जाति आ सेहो मैथिली से जाति नयि जाएत. हम एकरा नयि मानैत छलहुं मुदा आब 30 बरख से मैथिली मे लिखनाक बाद आब देखल जे एक ओर
1 मैथिली साहित्य मे लिली जी, उषा जी आ शेफलिका जी के बाद यदि किओ नाम लैत अछि त हमर.
2 एखनो कोनो पत्रिका बै छै त हमरा लेल रचनाक आग्रह होइते छै.
3 एखनो हम ओतबे सक्रिय छी आ निरंतर लिखि रहल छी.
4 दुखद जे हमरा बाद (सुस्मिता पाठक आ ज्योत्स्ना मिलन के हम अपने तुरिया बुझैत छी) के बाद एहेन कोनो सशक्त कोन, महिला लेखने नयि आएलए.

5 ई स्थिति रहलाक बादो, आब जहन हम देखै छी, त पाबै छी जे हमरा पर, हमर रचना यात्रा अथव हमर रचना पर किछु नयि लिखल गेलए, चाहे ओ मोहन भारद्वाज रहथु अथवा आन किओ. जहन हमर दशक केर चर्च होइत छै, तीन चारिटा नाम पर सविस्तार चर्चा होइत छै, जाहि मे हमर नाम नयि रहैत छै. हमर नाम मात्र सन्दर्भ लेल जोडि देल जाइत छै.

6 एतेक दिन मे मात्र रमण जी हमरा पर एक गोट लेख लिखलन्हि. हम ओकरा पुन: टाइप करबा के अहां लग पठायब.

7 जाति पाति धर्म आ द्वेष पर कहियो ध्यान नयि देलाक कारणे त कही हमर ई स्थिति नयि छै, आब हमरा ई सोचबा मे आबि रहल अछि.

8 हमर शिक्षक, जे स्वयं हिन्दी के ख्यातिलब्ध कथाकार छथि, हमरा बुझेने रहलाह जे हम मैथिली मे लिखब बन्न क; दी, कियैक त हम गैर मैथिल (जाति विशेष) से नयि छी, तैं हमर लेखन के कहियो मैथिल सभ नयि नोटिस करताह, कहियो किछु नयि करता.. अपन भाषाक प्रति प्रेम के आगरह कारणे हम हुनकर बात नयि माननियै, लिखैत गेलहुं, मुदा आब लागि रहलअए जे हुनकर कहबी सही छलन्हि की?

9 एखनो की हाल छै मैथिली मे, देखियो. ओकरा विरुद्ध किछु करियु. मैथिली मे जे पैघ पैघ संस्था चाइ, चेतना समिति सनक, सभ बेर विद्यापति पर्व मनबैत छथि. लाखो खर्च करै छथि, मुदा नीक लेखक केर पोथी सभ बेर 5-7 टा निकालैथु, से नयि होबैत छन्हि.

10 हमरा भेटल जानकारी के मोताबिक विद्यापति हॉल किराया पर चढै छै. तकरा मे कोनो आपत्ति नयि, यदो ओकरा से किछु आय होबै. मुदा ओकरा मैथिलीक काज अथवा नाटक आदि लेल मांगल जाएत, त; नयि भेटै छै. यदि ओकर शुल्क चुका दी, तहन त किरायाके रूप मे किऊ ल' सकि छै. एकरा सभ के उजागर करी.

11 व्यक्ति से संस्था पैघ होइत छै. जतेक संस्था सभ छै, तकरा पर लिखी, साहित्य अकादमीक मैथिली विभाग सहित.

12 लिली रेक सभटा रचनाक अनुवाद अधिकार हमरा देने छथि. हुनक साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त पोथी 'मरीचिका' केर हिन्दी अनुवाद लेल पिछला 2-3 साल से हम लिखि रहल छी. साहित्य अकादमीक पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य" मे हम पिछला 25 साल से अनुवाद सहित छपि रहल छी. मुदा हमरा से अनुवादक नमूना मांगल गेल. ओहि कुर्सी पर जे स्वनाम धन्य बैसल छथि, हुनका हमरा मादे नयि बूझल त कोनो मैथिल साहित्यकार से पूछि सकैत छलाह. ई तहिने भेलै, जेना एक बेर एक गोट चैनल ऋषिकेश मुखर्जी से हुनकर बायोडाटा मंगने छल आ एखनि पढल समाचारक अनुसारे आ. जानकी वल्लभ श्हस्त्री से हुनकर बायोडाटा पद्मश्री लेल मांअगल गेलैय.

13 अपन विनम्रता दर्शाबैत हम लिली जीक दू तीन टा कथाक हिन्दी अनुवाद हम पठा देलियन्हि. तैयो अई पर कोनो विचार नयि. लिखला के बाद हमरा कहल गेल जे हम लिली जी से साहित्य अकादमी के अनुवादक अधिकार दियाबे मे मददि करी. आरे भाई, अहां के अनुवाद से मतलब अछि ने, आ जहन हम अनुवाद क; के देब' लेल तैयार छी तहन अकादमी के किअयैक अधिकार चाही? अई लेल जे अकादमी अपन पसीनक आदमी के अनुवाद लेल द; सकय. एखनि धरि ओकरा पर निपटारा नयि भेलैये. अकादमी से फेर कोनो पत्र नयि आएल अछे. अनुवाद तैयार राखल छै. लिली जी आब बहुत बुजुर्ग भ; गेल छथि. हुनक मात्र इयैह इच्छा छै (आ बहुत स्वाभाविक) जे हुनकर पोथी सभ हुनका सोझा मे प्रकाशित भ; जाए.

14 लिली जी के पोथी हिन्दी मे आनबाक श्रेय हमरे अछि, ई मनितहुं ओकरा रेकॉर्ड केनाए मैथिल

समीक्षक आवश्यक नयि बुझैत छथि. एकरा पर लडू.
15 मैथिली के भारतीय ज्ञानपीठ से पुस्तक प्रकाशन लेल हमही आगां एलहुं आ प्रभास जी आ लिली जी के पोथी बहार भेलै.भारतीय ज्ञानपीठ से मैथिली पुस्तक प्रकाशन के श्रेय हमरे छन्हि, ईहो मनैत ओकरा रेकॉर्ड केनाए मैथिल समीक्षक आवश्यक नयि बुझैत छथि. एकरा पर लडू.
गजेन्द्र जी, मैथिलीक ई सभ मानसिकता पर आन्दोलन करी जाहि से रचनाकार आ वरिष्ठ रचनाकार सभ के अपमानित नयि होब' पडै. अहां चाही त' एकरा विदेह पर द' सकै छी.
हम दोसर बात सेहो लिखि के पठायब. मुदा हम फेर कहब, जे हम व्यक्ति के नयि संस्था आ व्यक्ति के मानसिकता के दोष देबन्हि. लोक पढथु आ पूचाथु ई स्वनामधन्य सभ से जे जकरा से अहां के गोलौंसी अछे, तकरा पर अहां लिखब आ जकरा से नयि अछे, जे मौन भावे लिखि रहलए कोनो विविआद मे पडल बगैर, हुनका लेल ई व्यवहार?
-विभा रानी.
Shri gajendraji
good work.
Anha sa ehina neer khshir vivekakak ummeed lagatar banal rahat.
chor ke ehina dekhar kelak baad dandit seho karbak prayas karbaak chahi. anha bahut raas neek pahal ka rahal chhi.
Saadhuvaad.
manoj pathak.

संगहि "विदेह" केँ एखन धरि (१ जनवरी २००८ सँ १४ जनबरी २०१०) ९३ देशक १,०४२ ठामसँ ३६,७१७ गोटे द्वारा विभिन्न आइ.एस.पी.सँ २,११,८९१ बेर देखल गेल अछि (गूगल एनेलेटिक्स डाटा)- धन्यवाद पाठकगण।- गजेन्द्र ठाकुर

संदेश-

[विदेह ई-पत्रिका, विदेह:सदेह मिथिलाक्षर आ देवनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डक- निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक (संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-मंडली-किशोर जगत- संग्रह कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक मादेँ।]

१. श्री गोविन्द झा- विदेहकेँ तरंगजालपर उतारि विश्वभरिमे मातृभाषा मैथिलीक लहरि जगाओल, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ। सुनैत छी अपनेकेँ सुझाओ आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि तेँ किछु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपलब्ध रहत।

२. श्री रमानन्द रेणु- मैथिलीमे ई-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ चला कऽ जे अपन मातृभाषाक प्रचार कऽ रहल छी, से धन्यवाद। आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दऽ रहल छी।



रमेश

बहस- पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक

विदेह-सदेह २ (२००९-१०) सँ पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि आ साइबर अपराधक पापक घैलक महा-विस्फोट भेल अछि। ई पैघ श्रेय पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरकेँ जाइत छनि। हुनकर अपराध पकड़बाक चेतना केर जतेक प्रशंसा कयल जाय, कम होयत। “विदेह”क मैथिली प्रबन्ध-समालोचना- अंक, अइ पोल-खोल लेल कएक युग धरि विलम्बित भऽ कऽ निबद्ध रहत, से “समय कैँ अकानैत” कहब कठिन अछि।

साहित्योमे चौर्यकलाक उदाहरण पहिनहुँ अबैत रहल अछि गोटपगरा। मुदा एक बेरक चोरि पकड़ा गेलाक बाद प्रायः चोरिक आरोपी साहित्यकार मौन-व्रत धारण करैत रहलाह अछि आ मामिला ठंढ़ाइत रहल अछि।

मुदा ताहि परम्पराक विपरीत अइ बेरक चोर ’सिन्हा चोर’ निकलल अछि आ विगत एक दशकसँ निरन्तर चोरि करैत जा रहल अछि- सेन्ह काटिकऽ। आ तेहेन महाचोरकेँ मैथिलीक साहित्यकार आ संस्था सभ तरहत्थीपर उठा-उठा कऽ पुरस्कृत केलक अछि आ समीक्षाक

चासनीमे चोरायल कविता सबकँ बोरि देल गेल अछि।

विदेह-सदेह-२ प्रमाण-पुरस्सर अभियोगे टा नहि लगौलक, अपितु एहेन महत्वाकांक्षी असामाजिक तत्वक विरुद्ध साहित्यिक दण्ड आरोपित कऽ अपन ‘‘बोल्डनेस’’ सेहो प्रदर्शित केलक अछि। एक दशकमे तीन बेर पकड़ायल चोर प्रायः ‘‘डेयर डेभिल’’ होइत अछि आ अपन अनुचित। सीमाहीन महत्वाकांक्षाक पूर्ति लेल अपन वरीय संवर्गीय व्यक्तिकँ सीढ़ीक रूपमे उपयोग करैत अछि आ स्वार्थ-सिद्धिक उपरान्त अपन पयर सँ ओही सीढ़ीकँ निचाँ खसा दैत अछि। फेर ओकरा अपन ट्विटर-फेसबुक-नेट वा पत्रिकामे गारिक निकृष्टतम स्तरपर उतरऽ मे कनियों देरी नहि होइत छै। ओ नाम बदलि-बदलि कऽ गारि पढ़ैत अछि आ अपन प्रशंसामे जे.एन.यू.क छात्र-छात्राक पोस्टकार्ड लिखेबामे अपस्याँत भऽ जाइत अछि। ओ हिन्दीक कोनो बड़का साहित्यकारक बेटीक संग अपन नाम जोड़ि विवाहक वा प्रेम-प्रसंगक खिस्सा रस लऽ लऽ कऽ प्रचारित करैत अछि। एहेन प्रवृत्ति कएटा आओर तिकड़मबाजमे देखल गेल अछि जे हिन्दीक पैघ-पैघ नामक माला जपि कऽ मठोमाठ होअय चाहैत अछि। वस्तुतः ई चिन्ताजनक तथ्य थिक जे मैथिलीक नव-तूरकँ हिन्दीक पैघ-पैघ नामक वैशाखीक एतेक जरुरति किऐक होइत छनि?

‘‘विदेहक’’ ‘‘इनक्वायरीक विवरण’’ पढ़ि कऽ रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। पहल-८६ आ आरम्भ-२३ मे जे पोल खूजल छल, अइ तथाकथित साहित्यकारक, तकरा बादे मैथिली साहित्यसँ बारि देल जेवाक चाहैत छल। मुदा विडम्बना देखू जे चेतना समिति सम्मानित कऽ देलक। ‘‘मैथिल ब्राह्मण समाज’’, रहिका (मधुबनी) सन अँखिगर संस्थाकँ चकचोन्ही लागि गेल, जखनकि संस्थामे विख्यात साहित्यकार उदयचन्द्र झा ‘‘विनोद’’ आ पढ़ाकू प्रोफेसरगण छथि। ई संशयविहीन

अछि जे पुरस्कृत करेबामे विनोदजीक महत्वपूर्ण भूमिका रहल हैत। “विदेह” द्वारा रहस्योद्घाटन केलाक बावजूद एखन धरि चेतना समिति अथवा मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिकाकैँ अपन पुरस्कार आपस करेवाक वा आने कोनोटा कार्रवाई करवाक बेगरता नहि बुझा रहल छै आ सर्द गुम्मी लधने अछि। एहेन “जड़-संस्था” सभ मैथिली साहित्यक उपकार करैत अछि वा अपकार? ई केना मानल जाय जे पहल-८६ वा आरम्भ-२३ अइ दुनू संस्थाक कोनो अधिकारी वा साहित्यकारकैँ पढ़ल नहि छलनि?

ई आश्चर्यजनक सत्य थिक जे मैथिलीक कएटा पैघ साहित्यकार पंकज पराशरक कृत्रिम काव्य आ आयातित शब्दावलीमे फँसि गेलाह अछि। “विलम्बित कएक युग मे निबद्ध” क भूमिकामे अनेरो विदेशी साहित्यकारगणक तीस-चालिस टा नाम ओहिना नहि गनाओल गेल अछि, अपन कविता कैँ विश्वस्तरीय प्रमाणित करबाक लेल अँखिगर चोरे एना कऽ सकैत अछि। सम्भावना बनैत अछि जे डगलस केलनर जकाँ ओहू सभ कविक रचनाक भावभूमिक वा शब्दावलीक चोरिक प्रमाण एही काव्य-पोथीमे भेटि जाय। अंततः मि. हाइडक कोन ठेकान? मैथिलीमे तँ लोक विश्व-साहित्य कम पढ़ैत अछि। तकर नाजायज फायदा कोनो ब्लैकमेलर किऐक नहि उठाओत? आखिर टेक्नो-पोलिटिक्स की थिक- टेकनिकल पोलिटिक्स थिक, सैह किने? एकरा बदौलत झाँसा दऽ कऽ पाकिस्तानोक यात्रा कयल जा सकैत अछि। “टेक्नो-पोलिटिक्सक” बदौलत किरण-यात्री पुरस्कार, वैदेही-माहेश्वरी सिंह “महेश” पुरस्कार, एतेक धरि जे विदितजीक अकादमीयोक पुरस्कार लेल जा सकैत अछि। प्रदीप बिहारीक सुपुत्रक भातिज-कका सम्बन्धक मर्यादाक अतिक्रमण कयल जा सकैत अछि। प्रो. अरुण कमलक “नये इलाके में” सेंधमारी कऽ कऽ “समय कैँ

अकानल'' जा सकैत अछि। आर तँ आर, अइ टेकनिकल पॉलिटिक्सक बदौलत जीवकान्तजी सन महारथी साहित्यकारसँ ''विलम्बित कएक युग...'' पोथीक समीक्षा लिखबा कऽ ''मिथिला दर्शन'' (५) सन पत्रिकामे छपवा कऽ स्थापित आ अमर भेल जा सकैत चछि। मैथिली साहित्यक सभसँ पैघ सफल औजार थिक ''टेक्नो पोलिटिक्स''!

ई मानल जा सकैत अछि जे मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ आरम्भ-२३ आ पहल-८६ कोलकातामे नहि भेटल होइन्हि। मुदा जीवकान्तजी नहि पढ़ने हेताह से मानबामे असौकर्य भऽ रहल अछि। जीवकान्त जी तँ प्रयाग शुक्लक ''चन्द्रभागा में सूर्योदय'' आ एही शीर्षकक नारायणजीक कविता (चन्द्रभागामे सूर्योदय) सेहो पढ़ने हेताह जे छपल अछि मैथिलीमे। तखन पंकज पराशरक समुद्रसँ असंख्य प्रश्न पूछऽवला कविताक भावार्थ किऐक नहि लगलनि जे समीक्षामे कलम तोड़ि प्रशंसा करऽ पड़लनि वा करा गेलनि? एकरा ''प्रायोजित समीक्षा'' किऐक नहि मानल जाय? की प्रयाग शुक्ल वा नारायणजीक समुद्र विषयक कवितासँ वेशी मौलिकता पंकज पराशरक कवितामे भेटलनि जीवकान्तजीकेँ? ओइ सभ कविताक कनियोँ ''छाया''क शंको नहि भेलनि समीक्षककेँ? ''सभ्यताक सभटा मर्मान्तक पुकार''क नोटिस लेबऽवला समीक्षककेँ साहित्यिक चोरि असभ्य आ मर्मान्तक पीड़ादायक नहि लगलनि? आब जीवकान्तजी सन समीक्षकक ''पोजीशन फॉल्स'' भऽ जेतनि से अन्दाज तँ मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ नहियें रहनि, उदय चन्द्र झा ''विनोद'' केँ सेहो नहि रहनि। ई अभिज्ञान तँ पंकजे पराशर टाकेँ रहल हेतनि? बेचारे ''पराशर'' मुनिक आत्मा स्वर्गमे कनैत हेतनि आ पंकसँ जनमल जतेक कमल अछि सब अविश्वसनीय यथार्थक सामना करैत हेताह। पराशर गोत्री भऽ कऽ तीन बेर चोरि

केनाइ ‘‘पराशर’’ महाकाव्यक रचयिता स्व. किरणजीकेँ सेहो कनबैत हेतनि। आखिर जीवकान्तजी साहित्यिक चोरिक नोटिस किए ने लेलनि, जखनकि हुनका विचारेँ ‘‘मैथिलीक समीक्षक प्रायः मूर्खता पीबिकऽ विषवमन करैत अछि’’(विदेह-सदेह-२-२००९-१०)/ विनीत उत्पल-साक्षात्कार आ जीवकान्तजी स्वयं पंकज पराशरक चोरिवला कविता-पोथीक समीक्षक छथि, अपितु चौर्यकला प्रवीण कविक घोर प्रशंसक छथि। तखन अइ समीक्षा-आलेखमे अन्तर्निहित असीम-प्रशंसा साकांक्ष-पाठककेँ ‘‘विष-वमन’’ कोना ने लगौक? हुनका सन ‘‘पढ़ाकू’’ समीक्षक-पाठककेँ ‘‘फॉल्स पोजीशन’’मे अननिहार ‘‘एक्सपर्ट आ हैबिचुएटेड’’ साहित्य-चोरसँ प्रशंसा आ पुरस्कार दुनू पाबि जाय तँ मैथिली-काव्यक ई उत्कर्ष थिक वा दुर्भाग्य? अंततः विदेह-सदेह टा किऐक निन्दा केलक एहि घटनाक? आन कोनो पत्रिका किऐक नहि केलक? डॉ. रमानन्द झा ‘‘रमण’’ इन्टरनेटपर निन्दा करैत छथि तँ घर-बाहर पत्रिकामे किऐक नहि जकर ओ सम्पादक छथि? चेतना समिति, पटना सम्मानित करैत अछि एहने-एहने साहित्यकारकेँ तखन अपने पत्रिकामे कोना निन्दा करत, जखनकि पुरस्कार आपसो नहि लैत अछि, जानकारी भेलाक वा साकांक्ष साहित्यकारक अनुरोध प्राप्त भेलाक बादो? नचिकेताजी नेटपर निन्दा करताह आ ‘‘विदेह’’मे छपत तँ ‘‘मिथिला दर्शन’’मे किऐक नहि निन्दा वा सूचना छपल? कारण स्पष्ट अछि- जीवकान्तक समीक्षा पंकज पराशरक काव्य-पोथीपर छपत, तखन ओही पोथीक चोरि कयल कविताक निन्दा कोना छपत? चारु भाग साहित्यिक आदर्श, मर्यादा आ नैतिकताक धज्जी उड़ि रहल अछि- पितामह आ आचार्यगणक समक्ष आ (अनजाने मे सही) हुनको लोकनिक द्वारा। मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिका; चेतना समिति, पटना आ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीमे अन्ततः कोन अन्तर अछि वा

रहल? एहेन नामी पुरस्कारक संचालन आ चयनकर्ता महारथी सभकेँ नव लोककेँ पढ़बाक बेगरता किऐक नहि बुझाइत छनि? बिना पढ़ने पुरस्कारक निर्णय वा समीक्षाक निर्णय कतेक उचित, जखन कि ई चोरि तेसर बेरक चोरि थिक आ से छपि-कऽ भण्डाफोड़ भेल अछि। एकरा वरेण्य आ वरीय साहित्यकारगण द्वारा काव्य-चोरि, आलेख-चोरिकेँ प्रश्रय देल जायब किऐक नहि मानल जाय, जखनकि आरम्भ, मैथिल-जन, पहल आ विदेह-सदेह पहिनहि छापि चुकल छल? की साहित्यिक चोरिकेँ प्रश्रय देब, दलाल वर्गकेँ प्रश्रय देब नहि थिक? एहेन सम्भावनायुक्त नव कविकेँ प्रश्रय देब मैथिली साहित्य लेल घातक अछि वा कल्याणकारी, जकरा मौलिकतापर तीन बेर प्रश्न चेन्ह लागल होइक? की पोथीक आकर्षक गत्ता देखि वा विदेशी कविगणक नामावली (भूमिकामे) पढ़ि कऽ समीक्षा लिखल जाइत अछि वा पुरस्कारक निर्णय लेल जाइत अछि? जँ से भेल हो तँ सब किछु ''ठिक्के छै भाइ''? अइ सबसँ तँ जीवकान्तजीक बात सत्य बुझाइत अछि जे समीक्षकगण दारू पीबि कऽ वा पैसा पीबि कऽ वा मूर्खता पीबि कऽ समीक्षा लिखैत छथि। डगलस केलनरक ''टेक्नोपोलिटिक्स'' तँ छपि गेल ''पहल''मे चोरा कऽ। आब जीवकान्तजी, ज्ञान रंजनजी अथवा हिन्दी जगतक आन साहित्यकार-सम्पादकसँ पूछथु जे नोम चोम्स्कीवला रचना कतय गेल, की भेल, कोन नामें छपल? पंकज पराशरक नामें कि पदीप बिहारीजीक सुपुत्रक नामेँ (अनुवाद रूपमे)। ई रिसर्च एखन नहि भेल तँ भविष्यमे पुनः एकटा साहित्यिक चोरिक पोल खूजत? अंततः एकटा माँछकेँ कएटा पोखरिकेँ प्रदूषित करए देल जाय आ से कए बेर? उदय-कान्त बनि कऽ गारि पढ़वाक आदति तँ पुरान छनि डॉ. महाचोर केँ। ककरो ''सरीसृप'' कहि सकैत छथि (मैथिल-जन) आ कोनो परिवारमे घोंसिया कऽ विष वमन कऽ सकैत छथि। ऑक्टोपसक

सभ गुणसँ परिपूर्ण डॉ. पॉल बाबाकेँ चोरिक भविष्यवाणी करवाक बड़का गुण छनि तेँ हिनका नामी फुटबॉल टीम द्वारा पोसल जाइत अछि, जाहिसँ "विश्व-कप"केँ दौरान अइ "अमोघ अस्त्रक" उपयोग अपना हिसाबेँ कयल जा सकय।

सहरसा-कथागोष्ठीमे पठित हिनकर पहिल कथाक शीर्षक छल- हम पागल नहि छी। ई उद्घोषणा करवाक की बेगरता रहैक- से आइ लोककेँ बुझा रहल छैक। अविनाश आ पंकज पराशरक मामाजी तहिया हिनकर कथाकेँ "टिप्पणीक"क्रममे मैथिली-कथाक "टर्निंग प्वाइन्ट" मानने छलाह। आइ ओ "टर्निंग प्वाइन्ट" ठीके एक हिसाबेँ "टर्निंग प्वाइन्ट" प्रमाणित भेल, कारण कथाक ओहि शीर्षकमे सँ "नहि" हटि गेल अछि, हिनकर तेबारा चोरिसँ। हिनकर पहिल चोरि (अरुण कमलक कविता- नए इलाके में) क निन्दा प्रस्तावमे "मामाजी" आ डॉ. महेन्द्रकेँ छोड़ि, सहरसाक शेष सभ साहित्यकार हस्ताक्षर कऽ "आरम्भ"केँ पठौने छलाह। आइ ओ हस्ताक्षर नहि केनिहार सभ कन्छी काटि कऽ वाम-दहिन ताक-झाँक करवाक लेल बाध्य छथि। द्वैध-चरित्र आ दोहरा मानदण्डक परिणाम सैह होइत अछि। अविनाश तखन तँ देखार भऽ जाइत छथि जखन ओ विदेह-सदेह-२ मे लिखैत छथि जे "एकरा सार्वजनिक नहि करबै"। नुका कऽ सूचना देवाक कोन बेगरता? पंकज पराशरसँ सम्बन्ध खराब हेवाक डर वा कोनो "टेक्नोपोलिटिक्स"(?) केर चिन्ता?

विदेह-सदेह-२ क पाठकक संदेश तँ कएटा साहित्यकारकेँ देखार कऽ दैत अछि। जतय राजीव कुमार वर्मा, श्रीधरम, सुनील मल्लिक, श्यामानन्द चौधरी, गंगेश गुंजन, पी.के.चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, शम्भु कुमार सिंह, विजयदेव झा, भालचन्द झा, अजित मिश्र, के.एन.झा, प्रो.नचिकेता, बुद्धिनाथ मिश्र, शिव कुमार झा, प्रकाश चन्द्र

झा, कामिनी, मनोज पाठक आदि अपन मुखर भाषामे प्रखरतापूर्वक निन्दनीय घटनाक निन्दा केलनि अछि, ततहि अविनाश, डॉ. रमानन्द झा "रमण", विभारानीक झाँपल-तोपल शब्द आश्चर्य-भावक उद्रेक करैत अछि। मुदा संतोषक बात ई अछि जे पाठकक "प्रबल भाव-भंगिमा" साहित्यकारोक "मेंहायल आवाज"क कोनो चिन्ता नहि करैत अछि। विभारानी तँ कमाले कऽ देलनि। एहि ठाम मैथिली भाषा-साहित्यक एक सय समस्या गनेवाक उचित स्थान नहि छल। ई ओनाठ काल खोनाठ आ महादेवक विवाह कालक लगनी भऽ गेल। कोनो चोर बेर-बेर अपन कु-कृत्यक परिचय दऽ रहल अछि आ हुनका समय नष्ट करब बुझा रहल छनि आ चोरकेँ देखार केलासँ दुःख भऽ रहल छनि? ओ अपन प्रतिक्रियामे कतेक आत्म श्लाघा आ हीन-भावना व्यक्त केलनि अछि से अपने पत्र अपने ठंढ़ा भऽ कऽ पढ़ि कऽ बूझि सकैत छथि। हिन्दीयोमे एहिना भऽ रहल अछि, तँ मैथिलीमे माफ कऽ देल जाय? आब हिन्दीसँ पूछि-पूछि कऽ मैथिलीमे कोनो काज होयत? विभारानी ज्योत्सना चन्द्रमकेँ ज्योत्सना मिलन केना कहैत छथि? हुनकर उपेक्षा कोना मानल जाय? ओ सभ साहित्यिक कार्यक्रममे नोतल जाइत छथि, सम्मान आ पुरस्कार पबैत छथि, पाठक द्वारा पठित आ चर्चित होइत छथि। समीक्षाक शिकाइत की उच्चवर्णीय (?) साहित्यकारकेँ मैथिलीमे नहि छनि? समीक्षाक दुःस्थिति सभ जातिक मैथिली साहित्यकार लेल एके रंग विषम अछि। ओइ मे जातिगत विभेद एना भेलए जे ब्राह्मण-समीक्षक, आरक्षणक दृष्टिकोणेँ निम्न जाति (?)क साहित्यकारक किछु बेशीए समीक्षा (सेहो सकारात्मक रूपेँ) केलनि अछि। समीक्षा आ आलोचनाक विषम स्थितिक कारणें जँ नैराश्यक शिकार भऽ जाय लेखक, तँ लेखकीय प्रतिबद्धताक की अर्थ रहि जायत? विभाजीकेँ बुझले नहि छनि जे हुनका लोकनिक

बाद मैथिली महिला लेखनमे कामिनी, नूतन चन्द्र झा, वन्दना झा, माला झा आदि अपन तेवरक संग पदार्पण कऽ चुकल छथि। हुनका ने कामिनीक कविता संग्रह पढ़ल छनि आ ने ‘‘इजोड़ियाक अडैठी मोड़’’। हुनका अपन गुरुदेवक बात मानि हिन्दीमे जाइसँ के कहिया रोकलकनि? ओ गेलो छथि हिन्दीमे। मातृभाषाक प्रेरणा अद्वितीय होइत छै। मैथिलीक जड़ संस्था अथवा समीक्षक सभपर प्रहार करबामे हमरा कोनो आपत्ति नहि, मुदा अर्थालाभ तँ एतय नगण्य अछिए। सामाजिक सम्मान विभाजीकेँ अवश्य भेटलनि अछि। समाजमे ‘‘जड़’’लोक छै तँ ‘‘चेतन’’ लोक सेहो छैक। हुनकासँ मैथिली भाषा-साहित्य आ मिथिला-समाजकेँ पैघ आशा छै, हीनभाव वा आत्मश्लाघासँ ऊपर उठि काज करवाक बेगरता छैक। सक्षम छथि ओ। हुनका श्रेय लेवाक होड़सँ बँचवाक चाही। अन्यथा साहित्य अकादेमी प्रतिनिधि, दिवालियापन केर शिकार जूरीगण आ मैथिलीक सक्षम साहित्यकारमे की की अन्तर रहि जायत? विभारानीक विचलनक दिशा हमरा चिन्तित आ व्यथित करैत अछि। ओ दमगर लेखिका छथि, सशक्त रचना केलनि अछि, आइ ने काल्हि समीक्षकगण कलम उठेबापर बाध्य हेबे करताह। समीक्षकक कर्तव्यहीनतासँ कतौ लेखक निराश हो?

पंकज पराशरक श्रृंखलाबद्ध साहित्यिक चोरिपर सार्थक प्रतिक्रिया देब कोनो साहित्यकार लेल अनुचित नहि अछि कतहुसँ। साहित्यकार लेल साहित्यिक मूल्यक प्रति ओकर प्रतिबद्धता मुख्य कारक होइत अछि आ हेवाको चाही आ तकरा देखार करवाक ‘‘बोल्डनेसो’’ हेवाक चाही। ‘‘चाही’’वला पक्ष साहित्यमे बेशीए होइत अछि। एहेन-एहेन गम्भीर विषयपर साहित्य आ समाजक ‘‘चुप्पी’’ एहेन घटनाकेँ प्रोत्साहित करैत अछि आ जबदाह जड़ताकेँ बढ़बैत अछि, भाषा-साहित्यकेँ बदनाम

तँ करिते अछि। जाधरि पंकज पराशरक चोरि-काव्यक समीक्षा लिखल जाइत रहत, विभारानीक मूल-रचनाक समीक्षा के लिखत? ककरा जरूरी बुझेतैक? विभारानी अपने तँ समीक्षा प्रायोजित नहि करओती? सक्षम लेखकक व्यवहारोक अपन स्तर होइत छै। तँ संगठित भऽ चोरिक भर्त्सना हेवाक चाही।

